Pak. IV.

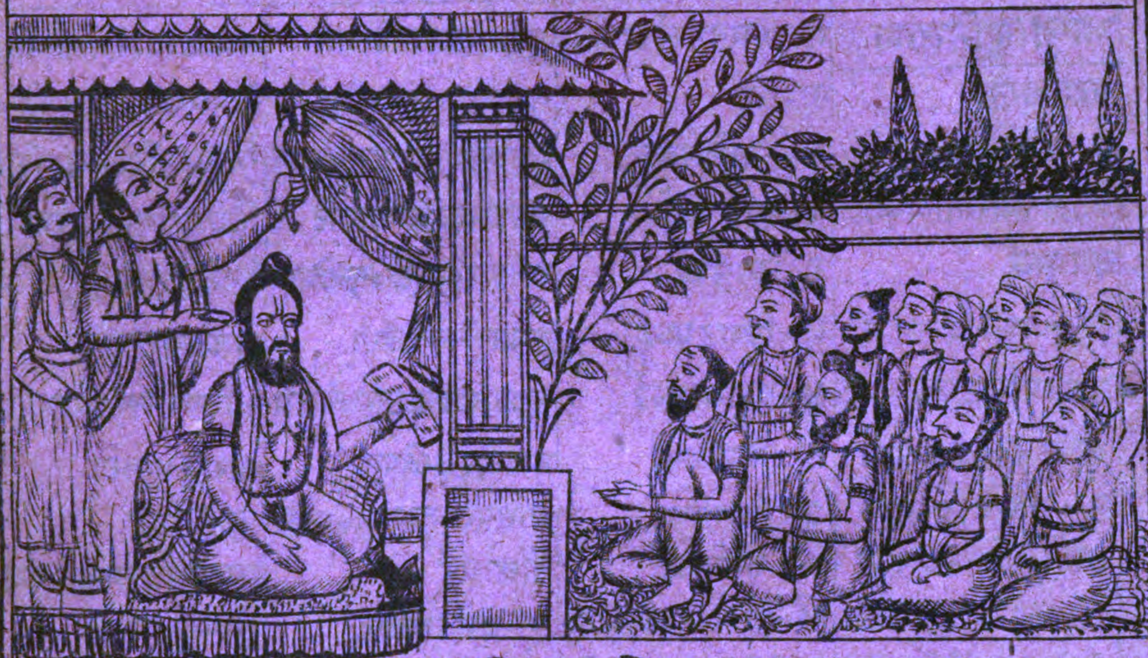
Rāmāyaṇa. — Kishkindhākāṇḍa.

Kiskindha Kand

रामायण बालमीकीय भाषा

راماین بالمیکی

किष्किन्धाकाण्ड



जिसको

सकल हरिभक्त व महात्माओं के रामचरित्र श्रवणार्थ श्री मुन्शी नवलकिशोर
अवध समाचार सम्पादक ने अयोध्या संस्कृत पाठशाला के तृतीयाध्यापक
श्री पण्डित महेशदत्त जी से संस्कृत बाल्मीकीय रामायण से
भाषा में यथा तथ्य उल्था कराया

लखनऊ
मुन्शी नवलकिशोर के छापेख़ाने में छापी गई
दिसम्बर सन् १८८२ ई०

विज्ञाप्ति

इस महीने अर्थात् दिसम्बर सन् १८८२ ई॰ पर्य्यन्त जो पुस्तकें बेचने के लिये तय्यार हैं वह इस फ़ेहरिस्त में लिखी हैं और उनका मोल भी बहुत किफ़ायत से घटाकर लिखा है परन्तु व्यापारियों के लिये और भी सस्ती होंगी जिनको व्यापार की इच्छा हो वह छापेखाने के मुहतमिम अथवा मालिक के नाम खत भेजकर कीमत का निर्णय करलें ॥

नाम किताब	नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
भाषा (इतिहास)	महाभारत पर्व्व अलेह-	रामायण रसबिलास	रामायण गीतावली स-
महा भारत	दा भी हैं	रामायण तुलसीकृत	विनय पत्रिका वा मो-
१- पहिले हिस्सा में	१-आदि पर्व्व	रामायण सटीक मय मान	विनय पत्रिका वा शि-
आदि पर्व्व सभा पर्व्व	२-सभा पर्व्व	सदीपिका कोष आदि	विष्णु पुराण भाषा
बन पर्व्व	३-बन पर्व्व	रामायण तु॰टी॰ सुखदेवकृ-	लिंग पुराण
२- दूसरे हिस्सा में	४-विराट् पर्व्व	तथा जिल्द बँधी	ब्रह्मोत्तर खण्ड
विराट पर्व्व उद्योग पर्व्व	५-उद्योग पर्व्व	तथा मोटे अक्षरों की मय	भविष्योत्तर पुराण
भीष्म पर्व्व द्रोण पर्व्व	६-भीष्म पर्व्व	तसवीर व क्षेपक	बाराह पुराण
३- तीसरे हिस्सा में	७-द्रोण पर्व्व	रामायण तुलसीकृत सा-	शुक्र नीति
कर्ण पर्व्व शल्य पर्व्व	८-कर्ण पर्व्व	तों काण्ड	रसवृष्टि व रसचंद्रोदय
गदा पर्व्व सौप्तिक पर्व्व	९-शल्य पर्व्व व गदा	१-बाल काण्ड	सुदामा चरित्र
योशिक पर्व्व विशोक प-	पर्व्व सौप्तिक मय योशि-	२-अयोध्या काण्ड	कृष्ण गीतावली
र्व्व स्त्री पर्व्व शान्ति पर्व्व	क व विशोक व स्त्री पर्व्व	३-आरण्य काण्ड	श्री अनुरागरस
में राज धर्म्म आपद ध-	१०-शान्ति पर्व्व में राज	४-किष्किन्धा काण्ड	सौदागर लीला
र्म्म मोक्ष धर्म्म	धर्म्म मोक्ष धर्म्म व दान	५-सुन्दर काण्ड	रासलीला
४- चौथे हिस्सा में	धर्म्म	६-लंका काण्ड	भुवनेश भूषण
शान्ति पर्व्व दान धर्म्म	११-अश्वमेध आश्र-	७-उत्तर काण्ड	**नाटक**
अश्वमेध आश्रम वा-	म बासिक मुशल पर्व्व	रामायण शब्दार्थकोष	प्रबोध चन्द्रोदय
सिक पर्व्व व मौशल पर्व्व	महा प्रस्थान स्वर्गा-	रामायण का इतिहास	रामाभिषेक
व महा प्रस्थान स्वर्गारो-	रोहण	रामायण मानसदीपिका	आनंद रघुनंदन
हण पर्व्व हरिवंश पर्व्व	१२- हरिवंश पर्व्व	रामायण कवितावली	भ्रमजाल

श्रीरामोविजयतेतराम्म् ॥

रामायणवाल्मीकीय भाषा ॥



किष्किन्धाकाण्ड ॥

दो० सीतान्वेषणहितचरण चरण शरण ह्वैआज ॥
किष्किन्धा विवरणकरत धरत हृदय रघुराज १
पवनतनय सुनियेविनय सनयविनयकरिराम ॥
दिह्यहुमिलायसुकण्ठकहँजिमितिमिपुरवहुकाम २

कमल मछलीयुक्त उस पम्पानाम तालावको देख जानकीजी के विरहसे व्याकुल लक्ष्मणसहित श्रीराम विलाप करनेलगे १ व तिसको देखतेही मारे हर्षके श्रीरामचन्द्रजी की सब इन्द्रियाँ कांपउठीं जानकी, जी के अङ्गोंके समान कमलादि देख मानो कामके वशीभूतही से हो लक्ष्मणजी से बोले २ हेलक्ष्मण वैदूर्य्यमणिके समान बिमल जलभरी फुलाने कमलोंसे पूर्ण किनारेपै विविध प्रकारके वृक्षोंके लगनेसे यह पम्पा शोभित होतीहै ३ हे लक्ष्मण देखोतो इस पम्पाके किनारेकिनारे कैसा सुहावन बनलगाहै व इसके तीरपै जो वृक्षलगेहैं सब कँगूरासहित पर्व्वतोंके समान शोभितहोतेहैं४परन्तु भरतके दुःखसे व जानकीकेहरण दुःखसे सन्तप्त हमको मनकी व्यथा पीड़ा देतीहैं ५ यद्यपि हम मारे शोकके कष्टितभीहैं तथापि जानकीके अङ्गोंके समान चित्रविचित्र बन सहित व विविधप्रकार के पुष्पोंसेयुक्त शीतल व निर्म्मल जलयुक्त ६ कमलोंके पुष्प व पत्रोंसे मुंदी सर्प्प मृगपक्षी संयुक्त अतिसुहावनी पम्पा हमको अच्छीलगती है ७ वृक्षोंके विविधप्रकारके पुष्पोंके ढेरके ढेरोंको परनेके कारण यह हरीहरी घास सहित पम्पाकाकाछा नीला पीला होगयाहै इससे अधिक सुहावन लगताहै ८ वइसकेनिकट ये जोपर्व्वतों के कँगूराहैं वे फुलानी लताओंसे घिरजाने से फूलोंके भारसे मानों झुकी

पड़तीहैं ९ हे लक्ष्मण इसकाल में कामियों को काम बहुत सताता है क्योंकि यह सुखदायी पवन बहताहै व फूलेफले वृक्षों के कारण यह चैत्रमास सुगन्धित होरहाहै १० हे लक्ष्मण देखोतो जैसे वर्षाकाल में बादरोंसे पानीके बूंद गिरतेहैं वैसेही येफुलानेबन फूलोंकीवर्षा करते हैं ११ व अति रमणीय पत्थरोंपै वायुके वेगसे चलायमान बनके नाना-प्रकारके वृक्ष फूलोंसे पृथिवी को मूंदेलेतेहैं १२ हे लक्ष्मण देखोतो गिरे परे व डारोंसेटूटे व डारोंमें लगे पुष्पोंसे पवन मानों सबओरसे क्रीड़ाही कररहाहै १३ व मारेफूलोंके भारसे झुकीवृक्षोंकी शाखाओंको कँपाता पवनमानों भँवरोंसे गवाताहै १४ व मतवाले कोकिलकेशब्दसे वृक्षोंको नचाताहीहुआ पवन मानों पर्व्वतकी कन्दरासे गाताहीहुआ निकलता है १५ तिसपवनके जोरसे कँपानेकेकारण एकमें सबकी फुनगी मिल-जानेसे मानों सबवृक्ष एकमें बाँधही दियेगये हैं १६ व वहीपवन चन्दन के समान शीतल स्पर्शकरतेही सुख देनेवाला महकाताहुआ बहता है इसीसे पुण्यरूप व मार्ग्गादि चलनेसे उत्पन्न श्रमको दूरकरता है १७ व सुगन्धित बनोंमें फुलाने वृक्ष भँवरों की गुंजारसे पवन से हिलने के कारण मानों नादही कररहे हैं १८ फिर रमणीय पर्व्वतोंके ऊपर उत्पन्न बड़ेबड़े फूले सुन्दर वृक्षोंके होनेसे पर्व्वत शोभित होतेहैं १९ येवृक्ष पुष्पों से शिरमूंदजाने व पवनसे चलायमान होने व भँवरोंके बोलनेसे मानों कुछ गायहीरहेहैं २० हे लक्ष्मण देखो तो ये कठचम्पा के वृक्षचारों ओर से फुलानेके कारण सुवर्णके भूषण पहिने व पीतांबर ओढ़े मनुष्यों के समान शोभायमान हो रहेहैं २१ व नानाप्रकारके पक्षियोंके बोलने से यह बसन्तऋतु बिनासीताके हमको शोक उत्पन्न कराता है २२ व मारे शोकके दबेहुये हमको काम जारेडारताहै व कोकिला मारेखुशी के जानों हमकोपुकारतीहै २३हे लक्ष्मण यह जलकुक्कुट पक्षीभीबारबार पुकारपुकाररमणीय इसबनके झरनों में बैठा हमको शोचहीकरेगा २४ आगे जब हमारी प्राणप्यारी सीता आश्रमपैथीं तो इसपक्षी का बोल सुन हमको बुलाय परमानन्दित होतीथीं २५ इसी तरहसे चित्रबिचित्र नानाप्रकारकी बोली बोलते पक्षियोंको देखिये कि छोटेछोटे बड़ेबड़े वृक्षों व लताओं पै उड़उड़ बैठतेहैं २६ हे लक्ष्मण इनपक्षिणियोंको देखतेहो

कि अपने अपने जोड़े के पक्षियोंके व अपनी जातिवालों के झुण्डोंके साथ भँवरोंकासा मधुरबोल बोलती हैं २७ इसपम्पाके तीरपै पक्षियों के झुण्ड जलमुरगी व कोकिला की बोलीके समानबोलबोल आनन्दित होते हैं २८ व ये सब वृक्ष भँवरोंके बोलने से शब्दकररहेहैं इसीसे हम को भी कामोद्दीपन करातेहैं व अशोकके पल्लव वही मानों अङ्गार हैं भ्रमरोंकी गुंजारही मानों बड़ाशब्दहै २६ नये नये पल्लवही मानों अरुण रङ्गकी ज्वाला हैं इनसबके साथ बसन्तऋतुही मानों अग्निहो हमको भस्मकरेगा अब सूक्ष्म पलकनयनी व सुन्दर केशवाली व मृदुभाषिणी प्राणप्रियाको ३० बिनादेखे हमारे जीनेका कुछ प्रयोजन नहींहै क्योंकि यहसुन्दर बनयुक्त बसन्तसमय ३१ जिसका डांड़कोकिलाका शब्द है वह हमको व जानकीको दोनोंको एक सङ्गरहने में सुखदायीहोता फिर कामक प्रयासोंसमेत बसन्तके गणोंसेबढ़ा ३२ यह शोकाग्नि हमको शीघ्रही भस्मकरेगा व जानकीजी को बिनादेखे इनसुन्दर वृक्षोंके देखनेसे ३३ यहकामबढ़ताही जायगा फिर बिनादेखे जानकी हमको शोकही बढ़ातीहै ३४ व यह बसन्तऋतु देखतेही देखते शीतलपवन चलाय पसीना को बन्दकरता है व हरिणके बच्चेके समान नयनी जानकी चिन्ता व शोककेमारे व्याकुल हमको ३५ सन्तापित करातीहै व तैसेही यह महाक्रूर चित्ररथनाम बनका पवनभी सन्तापित करताहै व ये मोर इधर उधर नाचतेहुये शोभित होतेहैं ३६ मानों स्फटिकमणिके झरोखों में बैठेहुये पवनसे अपने पङ्ख हिलारहेहैं व सब अपनी अपनी मुरैलियों के साथ बैठे मतवाले होरहेहैं ३७ ये सब कामसे व्याकुलहमको अधिक काम बढ़ातेहैं हे लक्ष्मण देखोतो इसनाचते मोरके समीप ३८ काम से व्याकुल मुरैली कैसे पर्व्वतकी कँगूरा पै नाचरही हैं व उसी मुरैली को मनसे मोर भी दौड़ता है ३६ फिर पंख फैलाके खड़ा हो जाता कुछ बेरमें अपनी बोली बोल बोल मानों उसको हँसाताही है हम जानते हैं कि जिस बनसे हमारी प्राणप्यारी हरगई है उस वनमें मुरैला नहींथे ४० इसीसे यहमोर अपनी स्त्रीके साथ रम्यवनमें नाचताहै यदि इसके सामने सीताहरण होता तो मारे शोकके इसको नाचने की सुधि न रहती हे लक्ष्मण बिना जानकी इस चैत्रमास में यहां का वास

हमको तो बड़ाही दुखदायी जान पड़ताहै ४१ क्योंकि देखिये तो इन पशु पक्षियोंकी योनियों में रागकी कैसी वृद्धिहै देखो यह मुरैली कामसे पीड़ितहो अपने पतिके पास दौड़ीजातीहै ४२ यदि हमारी प्राणप्यारी जानकी हर न जाती तो कामसे पीड़ितहो इसीतरह हमको अवश्य प्राप्त होती ४३ हे लक्ष्मण देखो वसन्तऋतुमें फूलोंके भारोंसे भरेहुये वनोंमें जो ये फूल गिरतेहैं वे बिना जानकी हमारे लेखे निष्फलहैं ४४ हा वृक्षों के ये सुन्दर २ भी फूल पृथिवीमें गिरतेहैं पर बिना सीता निष्फलहाहैं यद्यपि भँवर भी बैठे बोल रहेहैं ४५ देखो ये पक्षियों के झुण्ड के झुण्ड मीठी बोली बोल बोल शब्द करते हैं मानो आपसमें एक दूसरेको गोहराते ही हैं व हमको कामोन्मादकराते हैं ४६ जहां हमारीप्यारी सीता हैं व वहां भी यही वसन्तहीऋतु होगा तो हमारीही तरह वे भी शोचती होंगी ४७ हम जानते हैं कि सत्य सत्य बसन्तऋतु उस देशमें नहीं है जहां सीता हैं क्योंकि यदि वहांभी वसन्त होता तो बिना हमारे हमारी प्रिया न जीती ४८ अथवा जहां हमारी प्रिया हैं तहां वसन्त भी है तो वे शत्रुओं से डरवाई सीता क्या करेंगी ४९ चाहे जो हो यदि वसन्त वहां भीहै तो नित्य षोड़शवर्षकी अवस्थावाली व कमलदलनयना मृदुभाषिणी हमारी प्रिया वसन्तको पाय प्राणत्याग करदेगी ५० क्योंकि हमारे हृदय में यह दृढ़मति है कि हमारे विरह को हमारी प्रिया नहीं सहसक्ती ५१ क्योंकि जानकीजीने हममें अपना भाव निश्चयसे स्थापित कियाहै और हमने भी सीता में सबप्रकार से अपना भाव स्थापित किया है ५२ यह शीतल मन्द सुगन्ध पवन जानकीजी को चिन्तना करतेहुये हमको अग्निके समान उष्ण लगताहै ५३ आगे जब सीता थीं तो जिस पवन को उनके साथ सुखदायी समझतेथे अब बिना उनके वही हमको शोक उत्पन्न कराता है ५४ देखो यह काक पक्षी जब जानकी का हमारा सँय्योग था तो वियोग करानेके लिये कठोर बोली बोलता था अब वही काक वृक्षपै बैठा प्रसन्नता से बोल रहाहै इससे जानपड़ता है कि अब शीघ्रही फिर प्राणप्रियाका सँय्योग होगा वियोग का समय गया ५५ हे लक्ष्मण हम जानते हैं कि यह पक्षी वैदेहीजीका दूतहै हमको बुलाने आयाहै इससे उन विशालनयनासीताके निकट हमेंजरूर लेजायगा५६

लक्ष्मण देखिये फूले वृक्षोंके ऊपर बैठे पक्षी बोलरहे हैं इनका बोल इस वनमें और मद बढ़ाताहै ५७ देखो यह भ्रमर पवनसे हिलती हुई तिलक बृक्षकी मंजरीपै कैसे एकाएकी जाय पहुंचता है जैसे कोई मदसे कम्पित अपनी प्रियाको प्राप्त होताहै ५८ भाई यह अशोक कामी पुरुषों को बहुत शोक बढ़ाताहै क्योंकि पवनसे कम्पित अपने पल्लवोंसे जानों हमको भी डरवाता है तो औरों को कौन कहै ५९ हे लक्ष्मण ये फुलाने आम्रके वृक्ष शृङ्गार विषययुक्त मनवाले मनुष्यों के समान अंग-राग लगाये से देख पड़ते हैं ६० हे लक्ष्मण देखो पम्पासर के किनारे वाले वनोंमें इधर उधर किन्नर घूमरहे हैं ६१ लक्ष्मण देखिये ये सुगंधित कमल जलमें अरुण सूर्य्य के समान प्रकाशित होरहे हैं ६२ देखो यह पम्पासर प्रसन्न जलयुक्त नील अरुण कमल सहित हंस कारण्डवादि पक्षियोंसे शोभित है इसीसे सुगन्धित है ६३ देखिये प्रातःकालके सूर्य के रंग के समान रंगवाले कमलों से कि जिनपै भ्रमर बैठे हैं पम्पासर चारोंओरसे शोभित होताहै ६४ चकई चकवा पक्षी सब ओर बैठे हैं चित्र विचित्र वन सब ओर लगा है पानी पीनेके लिये आये हाथियों से यह पम्पासर शोभित होता ६५ हे लक्ष्मण पवन के बेग से उठी लहरों से ताड्यमान कमल विमल जलमें विराजते हैं ६६ इससे अब कमलदल विशाल नयनी व सदा कमलों के प्रिय करनेवाली वैदेही बिना हमको जीना नहीं अच्छा लगता ६७ बड़े आश्चर्य्य की बात है भाई कामकी गति बड़ीही टेढ़ी है कि जो कि चलीभी गई जानकी जीको कि जिनका मिलना अब दुर्लभहै व जो सदाकल्याण युक्तही बचन बोल-तीथीं तिनका बारबार स्मरण करातीहै ६८ जो पुष्पित वृक्षयुक्त बसन्त फिरहमको न मारता तो हमकामके वेगको धारणकरलेते कोई कठिनबात नथी ६९ जोजो पदार्थ तिनजानकी जीकेसंग रहनेसे हमको रमणीय लगतेथे अबबिनाउनके वेसब अरमणीय लगतेहैं ७० हेलक्ष्मण जिससेकि सीताके नेत्रोंके समान येकमलहैं इससे दृष्टि यहीचाहती है कि इन को देखाकरें ७१ व कमलके शरकापवन जोऔर वृक्षोंके मध्यमें होकर बह-ताहै वह मानोंसीताका मनोहर श्वासहै ७२ हेलक्ष्मण देखोतो पम्पाके दक्षिण पर्व्वतके कँगूरापै फुलानेकठचम्पा की शाखा शोभितहोरहीहै

७३ गेरूआदि धातुओंसे अधिक बिभूषित यह पर्व्वतराज वायु का वेग लगनेसे बिचित्र धूलिछोड़ता है ७४ हेलक्ष्मण बिना पत्रके फुलाने टेसूके वृक्षोंके सबओरसे लगने मानोंये पर्व्वत स्थलियां अग्निसे जलतीहैं ७५ पम्पाके किनारे किनारेमधुगन्धि सहित येमालती मल्लिका कमल कँदैला ७६ केतकी सिन्दुवार चमेली बिजौरानेंबू पुरैना कुन्द ७७ चिलौल महुआ अशोक बकुल चम्पा तिलक नागवृक्ष ७८ नीलकमल पुष्पितनील अशोक लोध सिङ्केसर पिंजर ७६ अङ्कोल कटसरैया चुन्ना नींब आम्र पाड़रडार कोबिदार ८० मुचुकुन्द अर्जुन केतकीकी दूसरीजात शतावरी शिरसा खैर ८१ सेमर टेसू लालकरसरैया तिमिश किरवार चन्द स्यन्दन ८२ तालदूसरी जातिके तिलक नागतरु ये सब वृक्ष फुलारहे हैं व फुलानी लतायें इनमेंलपटानीहैं इससे अतिशोभितहोतेहैं ८३ हेलक्ष्मण पम्पाके किनारे येअति चित्रबिचित्र बिविधप्रकारके वृक्षदेखो तो पवनके लगनेसे हिलरहेहैं कैसी शोभा होरहीहै ८४ वृक्षोंमें लतायें लपटीहैं जैसे कामसे मतवालीहो श्रेष्ठस्त्रियां अपनेअपने पतिकोलपटाजातीहैं देखोतो व पवनकैसा इसवृक्षसे उसवृक्षको वा इसपर्व्वतसे उसपर्व्वतको व इस बनसे उसबनको जाता ८५ जानोंसबका स्वादुलेले आनन्दित होता इसीसे महकताहै व कोईकोई वृक्षफुलानेके कारण बहुतही सुगन्धित होरहेहैं ८६ व कोईवृक्ष अभीअच्छीतरह नहींफुलाने केवलश्याम वर्णहोनेसे शोभितहोतेहैं व यहस्वच्छहै यहस्वादुहै यहफुलानाहै ८७ ऐसासमझ भ्रमर उड़उड़ फूलोंपै बैठताहै फिर रसलेकर उड़के औरफूलों पैजाताहै ८८ पम्पातीर के वृक्षोंपै पुष्परस का लोभी भवँरा इसीतरह घूमताहै देखोतो इसभूमिपै कैसेफूल बिछेहैं इससेसुखसहित शयनकरने केयोग्यहै ८६ येफूल अपने आपगिरेहैं किसीने तोड़कर नहींबिछाया पर मानों सोनेहीकेलिये चुनेगयेहैं हेलक्ष्मण इस पर्व्वतके कँगूरोंपर विविध तरहके फूलोंके बिछनेसे ६० ये पत्थर पीलेलालेहोगयेहैं देखिये अबजाड़ बीता वृक्षोंमें फूलफुलाने ६१ इसचैत्रमासमें मानोंवृक्षोंके आपसमें घिसनेसेही फूलडालोंसे निकलआतेहैं व सबोंके ऊपरबैठभ्रमर गुंजार करते हैं मानों येवृक्ष आपसमें एकदूसरेको पुकारतेहैं ६२ फूलोंके शिरोभूषण बनायेयेवृक्ष अतिशोभित होतेहैं व देखोयह जलमुर्ग़ पक्षी पम्पाके सुन्दर

जलमें बुडडीमार ९३ अपनी पक्षिणी केसाथ कैसे बिहारकरता है यह कामीपुरुषोंको जानों कामोद्दीपनही करताहै व इस पम्पाका मन्दाकिनी हीकेसमान रूपहै इससे अतिमनोरमहै ९४ क्योंकि मन्दाकिनीके गुण तो संसारमें प्रसिद्धहैं कि सबसे अधिक मनोरमहै हे लक्ष्मण यदि वह हमारी पतिव्रता यहां देखपड़े व जो हम यहीं बसेंतो ९५ फिर न हम इंद्र हीके सुखकी इच्छाकरें न कभी अयोध्याही की इच्छाकरें क्योंकि तिसके संग इसके किनारे की रमणीय हरी घासपै ९६ विहार करतेहुये हमको किसीबातकी न चिन्ताहीहोगी न अन्य पदार्थोंकेलनेहीकी इच्छाहोगी ९७ इस वनमें ये नानाप्रकारके पुष्प पल्लवोंसे शोभितबृक्ष बिना प्राणप्यारी के हमको चिन्ताउत्पन्नकरते हैं ९८ हे लक्ष्मण शीतल जलयुक्त व कमल सहित चकई चकवा जलमुरगी बतक आदि पक्षि सेवित इस पम्पाकोदेखो ९९ व करांकुल जलबुड्डी आदिजलचारी पक्षियोंसेसेवितकिनारेकिनारे अन्य पक्षियोंकेबोलनेसे यह पम्पा अधिक शोभित होताहै १०० ये बिबिध तरहके पक्षीजानो हमको दीपितहीकरातेहैं क्योंकिइनकोदेखनित्य षोड़शवार्षिकी वचन्द्रमुखी कमलनयनी प्राणप्रियाका हमें स्मरण आताहै हे लक्ष्मणदेखो इन चित्रविचित्रशिलाओंपै मृगियोंके संगमृगबैठे हैं १०१ व वैदेहीके वियोगसे व्याकुल हमको इधर उधर घूमतेये सबव्यथितकराते हैं १०२ जो मतवाले पक्षियों के बोल सहित इस कँगूरापै हम अपनी प्राणप्रिया को देखें तो हमको स्वस्ति हो १०३ जो हमारे साथ वैदेही इसस्थानको प्राप्तहो पम्पा के पवनको सेवनकरे तो हम जीजायँ १०४ कमलकी सुगन्धि बहानेवाला कल्याणरूप व शोकनाशन पम्पाके वनका पवन जो लोग सेवन करतेहैं वे धन्यहैं १०५ नित्य षोड़शवार्षिकी कमल दलनयना प्राणप्यारी विचारी परवश हो बिना हमारे कैसे प्राणधारण करती होगी १०६ भला जब सभामें सबके सामने धर्म्मज्ञ सत्यवादी राजाजनक जानकी की कुशल पूंछेंगे तो हम क्या कहेंगे यह बड़ी विस्मय है १०७ हाय पिताने हमको वनवास दिया तो भी जो प्राणप्रिया धर्ममें टिक हमारे पीछे पीछे चलीआई अब वह कहांहै १०८ जो प्रिया राज्यसे भ्रष्टहोने व तेजही न होनेपै भी हमारे साथ वनको चलीआई बिना तिसके अब हम कैसे प्राण धारण करें १०९ तिसका रमणीय पूजित सुग-

न्धित शुभ बिस्फोटकादि के चिह्न रहित मुख बिना देखे हमारा मन कांपता है ११० हे लक्ष्मण मन्द हास सहित गुणवत् मधुर व हित वैदेही के वचन कब सुनेंगे १११ सदा षोड़श वार्षिकी सीता बन में दुःखित भी रहती तथापि जब हमको काम कर्षित देखती तब वह पतिव्रताप्रसन्न हो हँसकेही बोलती ११२ भला. जब हम अयोध्या में जायँगे तो कौशल्याजी पूंछेंगी कि हमारी मनस्विनी पतोहू कहां है तो हम क्या बतावेंगे ११३ ॥

दो० जाहु लषन गृह भ्रातृहित भरतहिं देखहु तात ॥
जनक सुतहि देखे बिना हमहिंनजिअबपोसात १।११४
इमि प्राकृत नरसम महा पुरुष रघुपतिहि देखि ॥
बिलपतबोल्यहु लषणशुभ बचन समयसमपेखि २।११५
पुरुषोत्तम रघुबंश मणि शोच न करहु महान ॥
तुमसम पुरुषन इमिकरत मलिनप्रकृतिगुणखान ३।११६

हे राम बियोगज दुःख स्मरणकर प्रियजनों में स्नेह छोड़िये बहुत स्नेह करनाहीं दुःख का मूल है क्योंकि देखिये जब बहुत तेल में पड़ती है तो ओदी भी बत्ती जलजाती है ११७ व रावण जो पाताल को भी चलाजायगा वा वहां से भी नीचे चला जायगा तोभी वह माराही पड़ा है आप के सामने जीता नहीं रह सक्ता ११८ हां तब तक उस दुष्ट राक्षस रावण का खोज करना चाहिये कि कहां रहता है फिर कि तो जानकी जीको छोड़ही देगा वा यमपुरही को जायगा ११९ यदि रावण जानकीजीको न देगा तो चाहे सहित सीता दैत्योंकी मातादिति के गर्भ मेंभी जाय लुके तो भी उसको वहीं जाय मारडालेंगे इसमें कुछ भी अन्तर नहीं १२० हे भाई स्वास्थ्य धारण कीजिये इस कृपण मतिको छोड़िये व सीताके ढूंढ़ने का उपाय कीजिये क्योंकि जो बस्तु खोजाती है वह बिना यत्न किये नहीं मिलती १२१ हे आर्य्य संसार में उत्साहही वलवान् है उत्साह से बल श्रेष्ठ नहीं है जो उत्साह सहित पुरुष होता उसको कुछभी दुर्ल्लभ नहीं १२२ उत्साहवान् पुरुष काम करने में कभी क्लेश नहीं पाते केवल उत्साहही से जानकी को पावेंगे १२३ ये कामी पुरुषों केसे वृत्त छोड़ दीजिये व

शोक पीछे कीजिये यद्यपि हमजानतेहैं कि स्त्री संगियोंकी दुर्दशा देखा-ने के लिये आपने ऐसा बिलाप किया बास्तव में कुछभी नहीं तथापि आपको समझाते हैं कि सर्व्व पूज्य ब्रह्माबिष्णुमहादेव इन तीनों देवों के आत्मा प्रेरक किये तीनों अपना आत्मा किये रहते हैं ऐसे अपने आत्मास्वरूप को क्योंनहीं जानते इन स्त्रैण पुरुषों के से वचन क्यों कहते हैं १२४ जब इस तरह लक्ष्मणजी ने समझाया तो जो शोक मोह कामी पुरुषोंकी दीनता देखाने के लिये श्री रामचन्द्रजी किये थे उन्हें त्याग धैर्य्य को प्राप्त हुये १२५ व उस परम रुचिर व पवन से हिलते वृक्षोंसे शोभित उस पम्पासरको अचिन्त्यपराक्रमश्रीराम घूम २ देखने लगे १२६ सब बन झरना कन्दरा आदि देखते महात्मा श्री राम उद्विग्न चित्त हो बिचार करते सहित लक्ष्मण वहां से आगे चले १२७ तिन चलते हुये श्री रामचन्द्रजी की रक्षा मतवाले हाथीके बि-लास के समान चलने वाले सुस्थिर चित्त महात्मा व सुन्दर चेष्टाकिये लक्ष्मणजी करते रहे १२८ तिन अद्भुत दर्शनीय रूप दोनों भाइयों को ऋष्यमूक पर्व्वत के समीप घूमत हुये बानरों के राजा सुग्रीव ने देखा इनका प्रतापी रूपदेख बाली के भेजे जान वे मनमें बहुत डरे इससे उनको कुछ इष्ट पदार्थ न देख पड़ा १२९ ॥

दो० मत्त गयँद गामी महात्मा सुग्रीव निहारि ॥
तहँबिचरत द्वौबीरबहु चिन्तालहि मनहारि १ । १३०
कपिसेवित सुखप्रद शरण करिपुण्यसुस्थान ॥
तहँबिचरत रघुबरलषण लखि कपिडर अयान २ । १३१

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेकिष्किन्धाकाण्डेप्रथमस्सर्गः १ ॥

धनुर्व्वाण खड्गादि श्रेष्ठ आयुध धारणकिये महात्मा राम लक्ष्मण दोनों भाइयोंको देख सुग्रीव डरे १ इससे ब्याकुल चित्तहो सब दिशा-ओं की ओर देखते हुये सुग्रीव किसी स्थान में न टिके २ इन महा-बली दोनों जनों को देख कपिराज ने वहां टिकने को मन न किया इसी से परम भयभीत सुग्रीव का चित्त बहुत अकुलाया ३ तब वे धर्मात्मा सुग्रीव चिन्तनाकर सोचने लगे कि बाली का बलतो बहुत

हैं व हमारा थोड़ा इससे सबबानरों के साथ बहुत ऊबे ४ व दोनों भाइयों को देखबड़ी ऊबके साथ अपने मंत्रियों से कहनेलगे ५ कि येदोनों मनुष्य जो छलसेही चीरबसन धारण किये हैं हमनिश्चय करकहते हैं कि बाली हमारे भाई के भेजे इसबन में आये हैं ६ इनदोनों जनों को परम धनुर्द्धर देख सुग्रीव के जितने मन्त्रीथे उस पर्व्वतस्थली परसे दूसरे कँगूरा पै जाय होरहे ७ व सबके सब सुग्रीव को चारों ओरखड़े हुये ८ फिर इधर उधर कूदफांद पर्व्वतों के शिखर व वृक्ष कँपाने लगे ६ व सबके सबबड़े बलवान् तोथेही इधर से उधर कूदते फांदते फूलेफले वृक्ष तोड़ने लगे १० ऐसेसब बानर उस पर्व्वत पै कूदेफांदे व वृक्षादि तोड़े कि जितने मृग बिलाड़ बाघादि थे सब डरगये ११ फिरसब सुग्रीव के मन्त्री हाथजोर जोर सुग्रीव की ओर मुखकर उसपर्व्वत पै खड़ेहुये १२ तब बतकही करने में बड़ेचतुर उनकेपरम मन्त्री हनुमान्जी बाली की ओरसे अतिडरे डराये सुग्रीव से बोले १३ कि आप सबलोग बाली की ओरसे यहांशंका न करो क्योंकि यह मलयाचलहै यहांबाली का भयनहीं है १४ हे बानरश्रेष्ठ सुग्रीवजी जिसके भयसे ब्याकुल हो तुमयहां भाग आयेहो उसक्रूर दर्शन व महाक्रूर स्वभाव बाली को हम यहांनहीं देखते क्यों डरतेहो १५ जिसपापी बड़ेभाई से तुमको भयहै वहदुष्टात्मा बाली यहांनहीं है इससे हमतुम को भयनहीं देखते १६ परन्तु जिससे कि तुम अपना छोटाचित्त करलेने से अपना को उत्तम बुद्धि में नहीं स्थापित कराते इसस तुम्हारा प्राकृत बानरत्व प्रकट होताहै बड़ेआश्चर्य्य की बातहै जो तुमभीसब बानरों के समान बनेजातेहो १७ आपबुद्धि बिज्ञान सम्पन्न हैं इससे मनसे बिचारकर सबकाम कीजिये क्योंकि अबुद्धि को प्राप्तहो राजासब प्राणियों की रक्षानहीं करसक्ता १८ हनुमान्जी के ऐसे शुभबचन सुन सुग्रीवजी उनसे अतिशुभ बचन बोले १६ कि भला आजानुबाहु बिशालनयन व बाण धनुष धारण किये ऐसेदेव समान रूप इनदोनों जनों को देख किसको न भयहोगी २० ये पुरुषोत्तम बालीकेही भेजेहुये हैं हमतो ज़रूर शंकाकरते हैं क्योंकि राजालोगों के बहुत मित्रहोते हैं इससे इस बिषय में बिश्वास न करना चाहिये २१ मनुष्य को चाहिये कि शत्रुओं को सदा छलका-

रीही समझै क्योंकि वेलोग औरोंको बिश्वास में लाय आप उनके बिश्वास में न परके समय पाय मारडालते हैं २२ राजालोग सब बहुदर्शी होते उनमें फिरबाली तो राजकृत्यों में बड़ाही बुद्धिमान् है सबराजा अपने शत्रुओंको मारडालते हैं फिर क्या वह हमको छोड़देगा इससे मनुष्योंको चाहिये कि शत्रुओंको खूबजाने रहें २३ हे हनुमन् उनदोनों जनों के समाचार तुमस्वभाव रूप व बोलीचाली से अच्छीतरह जान आवो २४ पहिले उनको विश्वास में लायबड़ाई करकराय जान लेना जो वे प्रसन्न मनहों तोतो अच्छाही है नहींतो फिरदेखा जायगा २५ व हमारीही ओर को मुखकर धनुर्व्वाण धारणकर वनके आने का प्रयोजन उनसे पूंछो २६ बोलने चालने व रूपसे जो वे शुद्धात्मा जान पड़ें तो तो खैरयदि दुष्टता जानपड़े तो फिर औरही उपाय कियाजाय २७ जब इसतरह कपिराजने हनुमानजीसेकहा तो जहां रामचन्द्र व लक्ष्मणथे वहां जाने को उन्होंने मनकिया २८ ॥

कुण्डलिका ॥

सुनिकै बचन सभीत कपिराजकेर हनुमान ।
महानुभाव महातमा चलनहेतु अनुमान ॥
चलनहेतु अनुमान कीन जहँ लषण समेता ।
बिचरत थे श्रीराम सकल बिधि कृपा निकेता ॥
चलेतबहिं चितलाय पवनसुतनिजमन गुनिकै ।
वानर पतिके वचन भलीविधि चितसों सुनिकै १ । २६

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेकिष्किन्धाकाण्डेद्वितीयस्सर्ग्गः २ ॥

महात्मा सुग्रीवके वचन सुन हनुमान्जी जहां दोनोंभाई श्रीरामचन्द्र व लक्ष्मणजी थे वहां ऋष्यमूक पर्व्वतसे कूदकर गये १ जब थोड़ी दूर रहगया तो वानरका रूपछोड़ भिक्षुक का रूप धारणकिया क्योंकि अपने मनमेंशोचा कि वानरों की शठबुद्धि होतीहै इससे उसरूपको देख सायद रामचन्द्रजी हमसे न बोलें इसके सिवाय रामचन्द्रजी दीनदयालुहैं भिक्षुरूप देख अवश्य दया करेंगे इसीसे हनुमान्जी बेष बदलकर गये २ व जाय नम्रहो दोनों भाइयोंके प्रणाम कर प्रिय व मधुर वचन

बोले ३ प्रथमतो दोनों वीरोंकी बड़ी प्रशंसाकी फिरदोनों भाइयोंकीबड़ी पूजाकी ४ फिर राजर्षि देवरूप तपस्वी व प्रशंसा करने के योग्य व्रत धारण किये सत्य पराक्रम व कोमल स्वभाव दोनों वीरोंसे बोले ५ कि श्रेष्ठ ब्रह्मचारी का रूप धारणकिये मृगगण व अन्य वनचारियों कोभय-भीत करते आपलोग इस स्थान पै किस लिये आये ६ यहां पम्पाके किनारेके वृक्ष देखरहे हो व इस नदीके आकार पम्पासर को शोभित कराते हो ७ हौतो बड़े धैर्य्यवान् व कञ्चपक्के सुवर्ण कासादोनोंवीरों का रंग परचीर बसन धारण किये ऊधीसांसे लेते बिशाल भुजवाले आप लोग कौनहैं जो अपना अपूर्व्वरूप देखाय इनवन बासिनी प्रजाओं को पीड़ित करातेहो ८ फिर आपलोगों का ऐसा सिंहवत् अवलोकन है जिससे बीरता प्रकट होतीहै वरन सिंहसे भी अधिक पराक्रमी विदित होतेहो धनुष दोनोंजनों के इन्द्रही के धनुषके समानहैं इनबातोंसे पाया जाता है कि देखतेही शत्रुओं का नाशकर दोगे ९ फिर शोभायमान रूप सम्पन्न अति श्रेष्ठ वृषभसे भी अधिक पराक्रमी हाथी की शूंड़ के समान गोल चढ़ा उतार व लम्बीभुज धारण किये बड़ेतेजस्वी मनुष्यों में श्रेष्ठ १० कि जिन दोनोंजनों की प्रभासे यहपर्व्वत प्रकाशित होरहा है व दोनों जन राज्य करने के योग्य हैं भला यहां कैसे आये ११ फिर दोनों कमल दल समान नयन जटा समूह धारण किये परस्पर एक दूसरे से मिलता हुआ रूप धारण किये हमारी जान देवलोकही से यहां आये हो १२ भला अपनेही मनसे चन्द्रमा व सूर्य्यतो तुमदोनों नहीं हो जो यहां भूलोक में आयेहो व बिशालवक्षस्स्थल सहित मनुष्योंका रूप धारण किये हो पर हौ कोईदेवही १३ फिर दोनों बीरों का कांधा सिंह के कांधे के समान है मानों बीर रसके रूपही हो जानों सहित मद वृषभहीहो बांहें लम्बी व गोली होने से मानों परिघ हैं १४ हो सब भूषणों के योग्य पर भूषण धारण क्यों नहीं किये हो हमतो दोनों जनोंको इसपृथिवीकी रक्षा करनेके योग्य समझते हैं १५ फिर यह नहीं कि कहीं थोड़ीसीही पृथिवी की रक्षाके योग्य बरन सागर वन बिन्ध्य हिमालयादि पर्व्वत सहित भूमिकी पालकताके योग्य हो व ये धनुष भी तुम धारण किये हो ये चित्र बिचित्र सचिक्कण व

चित्र विचित्र चन्दनाद्यनुलेपन युक्त हैं १६ व सुवर्ण भूषित इन्द्र के धनुषके समान प्रकाशित होतेहैं तरकसभी जो दोनोंजनों केहैं सबतीक्ष्णबा-णोंसे भरेहैं १७ जितने बाण हैं सब जिसके छूजायँगे उसके प्राण ले-हीलेंगे व ऐसे देदीप्यमानहैं मानों प्रज्वलित सर्पही हैं फिर बड़े लम्बे चौड़े तप्त सुवर्णके कबुजे लगे १८ ये खड्ग बिराजतहैं मानों केंचुल छोड़े सर्प्प हैं फिर हम इसतरह से आपसे बोल रहे हैं आपलोग हम से बोलते क्योंनहीं हैं १९ यदि बिना हमको जाने बूझे न बोलते हो तो एक बड़े बीर व धर्म्मात्मा वानरों में श्रेष्ठ सुग्रीव नाम बानर हैं उनको उनके भाई ने घरसे निकाल दिया है इससे वे संसार में दुःखित घूमा करते हैं २० उन्हीं महात्मा बानरोंके राजा सुग्रीवने हम को यहां भेजा है हमारा हनुमान बानर नाम है २१ वेआप दोनों भा-इयों से मित्रता किया चाहते हैं हम उन्हीं के मन्त्री हैं व पवनके पुत्र २२ भिक्षुका रूप धारण किये हैं व सुग्रीवका प्रिय चाहते हैं ऋष्यमूक पर्व्वत परसे यहां आये हैं यह हमको शक्ति है कि जब जितना चाहें चलें व जैसा चाहें बैसा रूप धारण करलें २३ वचन जाननेवाले व बोलने में चतुर हनुमानूजी श्रीराम लक्ष्मण जीसे ऐसाकह फिर कुछ न बोले २४ तिन के ऐसे बचन सुन हर्षित मनहो श्रीरामचन्द्र जोबगलमें खड़े लक्ष्मणजीसे बोले २५ कि ये बानरों के राजा महात्मा सुग्रीवजीके मन्त्रीहैं व तिन्हीं सुग्रीव कीकांक्षा किये हमारे पास आये हैं २६ हे लक्ष्मण तिन इन सुग्रीवके मन्त्री हनुमानूजी से स्नेह युक्त मधुर बचन बोले क्योंकि बचन के बड़े जानने वाले हैं २७ व बिना ऋग्वेदपढ़े बिना यजुर्व्वेद धारण किये वबिना सामवेदके पढ़े ऐसे शुद्ध शब्दकोई नहीं बोलसक्ता २८ हम जानते हैं कि इन्होंने जरूर सब व्याकरण अच्छीतरहसे कई बार पढ़ेहैं क्योंकि बड़ी देरसे ये संस्कृत बोल रहे हैं पर अशुद्ध थोड़ाभी नहीं बोले २९ इसके सिवाय मुख नेत्र मस्तक भौंह आदि अन्य सब अंगोंमें कोई इनके बोलने के समय दोषनहीं विदित होता ३० व न इनकाशब्द संक्षेप होता न सन्देहयुक्त न देरीमें उच्चारण होता न सुननेवाले को व्यथा होती छाती व कंठ में प्राप्त मध्यम स्वरसे बोलते हैं ३१ व जो वाणी बोलते सब व्याकरण

शास्त्रानुसार शुद्धही बोलते बड़ी शीघ्रताके साथ अरबराहट से नहीं बोलते जो वचन कहते सुननेवाले का चित्त उससे हर्षित होजाताहै ३२ छातीकंठ शिर इनतीनों स्थानोंमें टिकी हुई अति चित्र बिचित्र इनकी वाणी ऐसाकौन पुरुषहै जिसको न प्रसन्नकरै चाहेवह खड्गलिये मारने को उद्यत शत्रुभी हो पर सुनतेही प्रसन्न होजाय ३३ हे लक्ष्मण जिस राजाका दूतऐसा भी न हो तो उसके कार्य्य कैसे सिद्धहों ३४ जिसके कार्य्य साधक ऐसे गुणीहों तिसके दूतोंकेही वचनोंसे प्रेरित सब प्रयोजन सिद्ध होजाते हैं ३५ इसतरह जब रामचन्द्रजीने लक्ष्मणजी से कहा तो वे सुग्रीवजीके मन्त्री बोलने में बड़े चतुरपवन तनयसेबोले ३६ हे विद्वन् हमलोग महात्मा सुग्रीव के गुण जानते हैं इससे तिन्हींवानरों के राजा सुग्रीवही को ढूंढ़तेहैं ३७ हेहनुमान्जी सुग्रीवकीओरसेजैसा तुम कहते हो तुम्हारे वचनके गौरवसे वैसाही हमलोग करेंगे ३८ ॥

दो० लषण निपुण वचसुनि पवन तनय प्रहर्षित रूप ॥
मन लगाय जयसिद्धि महँ तिनमैत्री अनुरूप १ । ३९

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेकिष्किन्धाकाण्डेतृतीयस्सर्ग्गः ३ ॥

सुग्रीव के विषयमें रामचन्द्रजी व लक्ष्मणजी का मधुर भावसुन हर्षित हो हनुमान्जीने मनसे सुग्रीवके कार्य्यकी सिद्धिजानी १ व विचारा कि जिससे इन श्रीरामचन्द्रजीका भी कुछकार्य्य है व सुग्रीवकाजानों बड़ाही कार्य्यहै व रामचन्द्रजी अकस्मात् यहां आय भी गये इससे महात्मा सुग्रीव जीको राज्यफिर मिलेगा २ यह मनमें शोच वानरोंमें श्रेष्ठ हनुमान्जी हर्षितहो वचन बोलने समझने में बड़े कुशल श्रीरामचन्द्र जीसे बोले ३ कि आप अपने छोटे भाईको संगलिये अति विहड़ नानाप्रकारके सर्प्पमृगादि युत अतिभयंकर पम्पाके वनसे भूषित इस वनमें किस निमित्त आये ४ हनुमान्जीके ऐसे वचन सुन रामचन्द्रजी की प्रेरणासे रामचन्द्रजी को हनुमान्जीसे बताने लगे ५ कि महातेजस्वी धर्म्मवत्सल अयोध्यापुरी के महाराज दशरथजीहुये जो चारों वर्णों का पालन अपने धर्म्मसे करतेरहे ६ न तोकोई उनका बैरीरहा न वे किसी से बैररखते बरन सब प्राणियों में प्रीति रखने पालने आदि बिषयोंमें

मानों दूसरे ब्रह्माही थे ७ उन्होंने बहुत बहुत दक्षिणादे अनेक अग्निष्टो-
मादियज्ञ कियेतिन्हींकेये ज्येष्ठपुत्रहैं लोग इनका रामचन्द्र ऐसानामक-
हतेहैं ८ ये दशरथजी के सब पुत्रोंमें ज्येष्ठ व गुणवान्हैं व सब प्राणि-
योंके पालन करनेवाले व पिताकी आज्ञाके अनुसार चलने वालेहैं ९ व
जितने राजाओं में लक्षण चाहिये सब इनमें विद्यमान्हैं इसीसे इनको
राज्य लक्ष्मी सौंपी गईथी पर राज्यतो छूटगया अब हमारे साथ वन में
बसनेको यहां आयेहैं १० हे महाभाग ये अपनी स्त्री सीताजीको भीसंग
लाये थे जैसे सन्ध्या समय सूर्य्य अपनी प्रभासे शोभित होते वैसेही
ये भी सीता जीके संग शोभित होते थे ११ व कृतज्ञ बहुज्ञ इन्हीं राम-
चन्द्रजीके हम छोटे भाईहैं इसीसे इनकी सेवा करते हैं व लक्ष्मण हमा-
रानाम है १२ व सुख भोगने के योग्य पूजनीय सब प्राणियों के हित-
कारी ऐश्वर्य्य से बिहीन वनबासमें रत १३ इन रामचन्द्रजीकी भार्य्या
राक्षसने हरली उस समय हम दोनों भाई वहांनहीं थे व वह राक्षस
यथेच्छा चारी था पर हम ठीक ठीक यहनहीं जानते कि वह कौनराक्षस
था १४ हां दितिका पुत्र एक दनुनाम था वहशापसे राक्षस होगया था
उसने बताया कि वानरों के राजा सुग्रीव बड़े समर्त्थ हैं १५ वे महापः-
राक्रमी तुम्हारी भार्य्या हरनेवालेको जानते होंगे यहकह देदीप्यमान्
दनु शोभितहो स्वर्गको चलागया १६ इसतरह तुम्हारे पूछनेसे हमने
सत्य सत्य जो हालथा कहदिया हम व रामदोनों सुग्रीवके घरको आये
हैं १७ इन रामचन्द्रजी ने बहुत धन ब्राह्मणों कोदे बहुत यश बटोरा है
व इस अवतार के पहिले बहुत दिनों के आगे सब लोकोंके ये पतिथेसो
अब सुग्रीवके गृहको आये हैं १८ जिस राजा दशरथजीको अपनारक्षक
सब देवादि बनाते थे व जिनकी पतोहू सीताजी हैं तिनके पुत्रशरण्य
व धर्म्मवत्सल श्रीरामसुग्रीव के शरण में आये १९ जो हमारे गुरू पर-
मधर्म्मात्मा श्रीरामचन्द्र सब लोकके शरण्य थे वे अब सुग्रीवके शरणमें
आये हैं २० जिस रामचन्द्रजी के प्रसन्न होने पर सब प्रजा प्रसन्नहोती
थीं वे रामचन्द्रजी सुग्रीवकी प्रसन्नता चाहते हैं २१ जिन राजा दश-
रथजी ने पूर्व्व समय में सब गुणी राजाओं कामान कियाथा २२ तीनों
लोकोंमें प्रसिद्धतिनकेज्येष्ठपुत्र श्रीरामचन्द्रजी वानरों के राजा सुग्रीवके

शरणमें आये हैं २३ इससे अब सुग्रीवको उचितहै कि मारेशोककेव्याकुल हो शरणमें आये हुये रामचन्द्र के ऊपर अपने सेनापतियों सहित प्रसन्नहों २४ जब लक्ष्मणजीने रोय रोय ऐसे वचन कहे तो वार्ताकरने वालोंमें परम चतुर हनुमान्‌जी बोले २५ कि इस तरह के बुद्धिमान् क्रोध व इन्द्रियों के जीतनेवाले आपलोगों के हमको दर्शनहुये यह बड़े भाग्यकीबातहै अब आपलोग बलके समीपसे सुग्रीवको भी दर्शनदें २६ क्योंकि आजकल सुग्रीव का भी राज्य छूटगया है व बालीके साथ बैर भीहै इसीसे उसने इनकी स्त्री भी लेलीहै व बनको भी निकाल दिया है इसीसे वे सदा डराकरते हैं २७ पर सीताजीके ढूंढ़ने के विषय में हम लोगोंके साथ सुग्रीव अवश्य आपकी सहायता करेंगे २८ इस तरह मधुर वचन कह हनुमान् जी फिर बोलेकि अब आवो सबजन सुग्रीव के निकट चलें २९ ऐसा कहते हुये हनुमान्‌जी की बड़ाई कर धर्म्मात्मा लक्ष्मणजी श्रीरामचन्द्र जीसे बोले ३० हेराघव जैसा हर्षितहो येपवनके पुत्र हनुमान्‌जी कहते हैं कि सुग्रीव को भी अपना कार्य्य आपसेकरानाहै व आपको सुग्रीव से तिससे बहुत अच्छातो है चलिये आपका कार्य्य सिद्धही धराहै ३१ देखिये बड़ी प्रसन्नता व हर्षके साथ साफ साफ ये हनुमान्‌जी कहते हैं इसमें कोई झुंठाई भी नहीं पाईजाती ३२ रामचन्द्रजी ने भी कहा अच्छातो है चलिये यहसुन व जान महाप्राज्ञ पवन के पुत्र हनुमान्‌जी दोनों भाइयों को ले वहांको चले ३३ भिक्षुका रूप छोड़ वानरका रूप धारण कर अपनी पीठपै दोनों भाइयों को चढ़ाय वानरकी चालसे श्रीहनुमान्‌जी दोनों भाइयों को लेगये ३४॥

दो० विपुल यशी प्रमुदित पवन सुतगिरि विक्रमबीर॥
रामलषण सँग लैचल्यहु तब सुकण्ठ के तीर १।३५

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेकिष्किन्धाकाण्डेचतुर्थस्सर्गः ४॥

ऋष्यमूक पर्वत परसे मलयाचल पै जाय हनुमानजी ने दोनोंभाइयों को सुग्रीवजीके आगे खड़े करदिया व बताया १ हे महप्राज्ञ परम दृढ़ विक्रम व सत्यप्रतिज्ञ ये रामचन्द्रजी हैं जो लक्ष्मण अपने भाई के साथ यहां प्राप्तहुयेहैं २ येइक्ष्वाकु बंशियों के कुलमें उत्पन्न हुयेहैं राजा

दशरथजी के पुत्रहैं धर्म्मात्माओं में सबसे आगे गिनेजाने के योग्यहैं क्योंकि अपने पिताके बड़ेआज्ञाकारीहैं ३ जिन महाराजाधिराज दशरथ जीने राजसूय अश्वमेधादि यज्ञोंसे अग्निको तृप्त करदिया व नानाप्रकार के मणिगाय आदि दक्षिणाभी बहुतदीं ४ तपस्या व सत्यवचन से उन्होंने धरणीका पालन किया परन्तु स्त्रीके कहने से रामचन्द्र ऐसे पुत्र को वनको भेजा इसीसे ये यहां आयेहैं ५ ये महात्मा जितेन्द्रिय यहां दण्डकारण्य में बसते थे कि इनकी स्त्री रावण हरलेगया इससे आपके निकट आयेहैं ६ इनकी इच्छाहै कि आपसे मित्रता करें इससे आपको चाहिये कि इन दोनों भाई राम व लक्ष्मण को अच्छीतरह पूजा करें क्योंकि ये अति पूजनीय तमहैं ७ हनुमान्‌जीके वचनसुन हर्षितमन हो रामचन्द्रजी की ओरसे भयछोड़ सुग्रीवजी परमानन्दित हुये ८ व तब वानरोंके राजा सुग्रीवजी अपना मनुष्यका रूप बनाय अति दर्शनीयहो प्रीतिसे रामचन्द्रजी से बोले ९ कि आप धर्म्ममूर्त्ति महातपस्वी व सब के ऊपर दया करनेवाले हैं हमने हनुमान् के कहने से आपके गुण अच्छीतरह से जाने १० जोकि आप हमसे मित्रता चाहते हैं सो तो इसमें हमाराही बड़ा सत्कार व लाभहै क्योंकि कहां हम वानर कहां आप बहुतअच्छा मित्रता कीजिये ११ यदि हमारेसाथ आपको मित्रता करनी अंगीकार होतो हम अपना हाथ फैलाते हैं अपने कर कमल से ग्रहण कीजिये व हमारे अपने बीचमें किसीको साखीकर दीजिये १२ सुग्रीवके ऐसे बचन सुन प्रसन्न मनहो श्रीरामचन्द्रजी ने अपने हाथ से सुग्रीवका हाथपकड़ा १३ तब सुग्रीवजी भी सीताजीके बियोगसेपीड़ित रामचन्द्रजी को अच्छीतरह लपटाय मिले तिसके पीछे हनुमान्‌जी ने सुग्रीवके निकट पहुंचते पहुंचते जो उनके बिश्वास के लियेफिर भिक्षुक का रूप धारण करलियाथा उसे फिर त्यागदिया १४ दोलकड़ियांलाय उनको आपस में घिस अग्नि उत्पन्नकर उसको अच्छीतरह प्रज्वलित कर व पुष्पादिकों से पूज १५ सुग्रीव व श्रीरामचन्द्रजी के बीचमें धर-दिया तब वे दोनोंजन उसप्रज्वलित अग्निकी प्रदक्षिणा करने लगे१६ इसतरह सुग्रीव व रामचन्द्र दोनों मित्र होगये तिसके पीछे वानरराज व नरराज दोनों १७ परस्पर एक दूसरेको निहारे जातेथे पर तृप्तनहीं

होते थे उनमें सुग्रीवजीने कहा तुम हमारे सखा व हृदयनिवासी हो ह-
मारा व आपका सुख दुःख एकहै १८ तिसकेपीछेएक सांखूकी डार
जिसमें बहुत पुष्प व पल्लव थे अपने हाथोंसे तोड़ १९ भूमिमें बिछाय
सुग्रीव व श्रीरामचन्द्र जी उसीपर बैठे व हनुमान्‌जी ने हर्षित हो २०
अति पुष्पित चन्दन की एक शाखा तोड़ लक्ष्मणजी को बैठनेको दी
तिसके पीछे प्रसन्न व हर्षित हो सुग्रीवजी मधुरबाणीसे २१ मारे हर्षके
व्याकुल हो श्रीरामचन्द्रजीसे बोले हे रामचन्द्रजी हम घरसे निकालेहुये
मारे भयके पीड़ित यहां भ्रमतेहैं २२ हमारी स्त्री भी हरगई इसीसे इस
दुर्गम वनमें घूमते हैं रात्रिदिन मारेभयके व्याकुल रहते क्षणमात्र भी
चित्तस्थिर नहीं रहता २३ कोई अनारीने नहीं निकाला हमारे भाई
बालीनेहीं हमको निकाल दिया है व अबभी वह हमसे वैर मानता है
इससे अब आप बालीके भयसे व्याकुल हमको बालीसेही बचाइये २४
ऐसा उपाय कीजिये जिसमें बाली से हमको भय न हो जब सुग्रीवने
श्रीरामचन्द्रजी से ऐसाकहा तो परम धर्म्मज्ञ व धर्म्मवत्सल श्रीराम-
चन्द्र जी २५ हँसकर सुग्रीवजीसे बोले हे वानरराज हमने उपकार का
फल जानलिया २६ तुम्हारी भार्य्या हरनेवाले उस दुष्ट बाली को
हम मार डारेंगे व ये सूर्य्यसम प्रकाशित सफल तीखे हमारे बाण २७
तिस दुराचारी भ्रातृजायापहारी बालीके ऊपर अति वेगसे गिरेंगे व वे
बाण कङ्कपक्ष लगे इन्द्रके बज्रके समान २८ अति तीक्ष्णसीधे सरोषसर्प्प
के समान तीक्ष्णबाणोंसे बालीको मारेंगे २९ हमारे बाणोंसे हत भिन्न
पर्व्वतके समान भूमिमें उसको पराही समझो अपने हित रामचन्द्रजीके
वचनसुन सुग्रीव बहुत प्रसन्नहुये व रामचन्द्रजी से बोले कि ३० ॥

कुण्डलिका ॥

तवप्रसाद लहि नृहरिवर वीर धीर रणधीर ।
प्राणप्रियाअरुराज्यनिज पाउबसुखितशरीर ॥
पाउबसुखित शरीर पीर जाइहि मम मनकी ।
तथा करहु नरदेव हनहु मम बैरिजननकी ॥
सकलप्रतिष्ठाजौन बहुरि नहिं हनैमोहिंगहि ।
तिमिवहिहतहुमहीपकहौंजिमितवप्रसादलहि १ । ३१

राजिवलोचन सीयके वालिनयन जिमिसोन ।
अग्नि सरिस राक्षस नयन फरके बायें कोन ॥
फरके बायेंकोन जबहिं करि प्रीति दृढ़ाई ।
रघुबरअरु सुग्रीव कीन मिलि बहुत मिताई ॥
एकहिसँगइन नयन जबहिंफरकेसिय शोचन ।
अरुनिशिचरकपिराजअशुभकर राजिवलोचन २ । ३२

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेकिष्किन्धाकाण्डेपंचमस्सर्गः ५ ॥

इतनाकह अति प्रसन्नहो सुग्रीवजी श्रीरामचन्द्रजी से फिर बोले हे रामचन्द्रजी ये हमारे सेवक व मंत्रियोंमें श्रेष्ठ हनुमान्‌जी कहते हैं १ जिस लिये आपवनको आयेहैं व यहां लक्ष्मण अपने भाईके साथ वनमें वसनेके समय२ जनककुमारी मैथिली आपकीभार्य्या राक्षस हरलेगया उस समय न आप वहांथे न आपके भाई लक्ष्मण इसीसे रोदन करती सीताको वह लेगया ३ व वह अन्तरही देख रहाथा जैसे आपलोग उधरगये लेगया कुछ दूर चलनेपै गृध्रराज जटायु मिले उनको भी उसने मारडारा उसी राक्षसने आपको भार्याके वियोगकादुःख पहुंचाया ४ परन्तु स्त्रीके वियोग सेजोदुःख आपको है वहशीघ्रही छूटजायगा क्योंकि हम आपकीभार्य्या आनदेंगे जैसेवेदकी श्रुति नष्टहोजानेपर ढूंढ़ीजाती है ५ चाहे रसातल में होयँ चाहे आकाशमें परहम आपकी भार्य्या आनदेंगे ६ हे राघव यह हमारा बचन सत्यही मानना इन्द्रादि देवता वा सब दैत्य कोईआप की भार्य्या नहीं छिपासक्ता ७ क्योंकि हे महाबाहु श्रीराम आपकी भार्य्या औरको हलाहल बिषके समानहै आप शोक छोड़दीजिये आपकी प्राणप्रिया हम आनेदेते हैं ८ हम अनुमान से जानते हैं कि मैथिलीजी वहीं होंगी इसमें संशय नहीं जिसको हमनेदेखाहै कि दुराचारी राक्षस हरेलिये जाताथा ६ व वे रामराम लक्ष्मण लक्ष्मण कहकह बारबार रोदनकरती राक्षस के अङ्कमें विवश परी चलीजातीथीं जैसे नागेन्द्रकी बधू १० जबयहां आकाशमार्ग में जातीहुई पहुंचीं तो उन्होंने चाहै बानरोंके साथ बैठे हमको यहांदेख अपना उत्तरीय वस्त्र व कुछभूषण उन्होंने छोड़दिये ११ हे राघव तौनसब हमलोगोंने लेकर धररक्खा

अभी लियेआतेहैं आप चीन्हें उनके हैं यानहीं १२ यहसुन श्रीरामचन्द्र जी सुग्रीवजी से बोले हे सखे लाइये अबकिसलिये विलम्ब करतेहो१३ रामचन्द्रजीके वचनसुन सुग्रीवजी पर्व्वतकी गहन कन्दरामें जाय रामचन्द्रजी का प्रियकरनेकी इच्छासे बहुतजल्द आय १४ वह उत्तरीय व वे भूषण लाय रामचन्द्रजी से कहा देखिये येहैं या नहीं १५ तब वह उत्तरीय वस्त्र व वे भूषण हाथमें ले श्रीरामचन्द्रजी आँशुआय आये व मारे स्नेहके कण्ठावरोधन होआया जैसे कुहिरासे चन्द्रमा अच्छादित हो जाताहै १६ सीताजीकेस्नेह से उठे आंशुओंसे दूषितहो हाप्रिये यहकह धैर्य्यछोड़ पृथिवीमें गिरपरे १७ व उनभूषणोंको बारबार बड़ेजोर से हृदय में लगाय बिलमें बैठे रोषित सर्प्पके समान ऊर्ध्वसांसें लेनेलगे १८जब आँशुओंकावेग कुछकमपरा तो बगलमें बैठे लक्ष्मणजीको देख अतिदुःखितहो श्रीरामचन्द्रजी रोदन करनेलगे १९ व बोले हे लक्ष्मण देखो जब जानकीजी हरीजाती थीं तब उन्होंने यह वस्त्र व ये भूषण अपने अङ्गोंसे निकाल भूमिमें छोड़ दिये हैं २० व जहां गिरे हैं वहां हरीघासथी इसीसे मलिन नहींहुये देखो उसीतरहके बनेहैं जैसेपहिरने के समय में थे २१ ॥

दो० इमिसुनि रघुबर केबचन लषणकही बिलखाय ॥
हमनहिं जानत अङ्गदहु नहिंकुण्डल सुनुभाय १ । २२
नित्यचरण बन्दनकरत नूपुर चीन्हत आहिं ॥
यहसुनि रघुपति सुगलसोंबोल्यहुअति बिलखाहिं २ । २३
कहुसुकण्ठ क्यहिंदिशहि लैगयहु निशाचर ताहि ॥
प्राणप्रिया ममप्रिय प्रिया रौद्रकर्म्म तिन आहि ३ । २४
ममबहु दुखप्रदरात्रिचर कहां बसत वहनीच ॥
ज्यहि लगि सगरे निश्चरन हमपहुंचाउबमीच ४ । २५
जनकसुतहि लैगयहु अरु कोप करायउ मोहिं ॥
मरणहेतु निज खोलिदियमृत्यु अररमति टोहिं ५ । २६

हरिगीतिका ॥

वनसे हरी मम प्राणप्यारी पापकारी निश्चरा ।
झकझोरकरिबरजोरिलैगोकहुसुकण्ठकपीश्वरा॥

ममबैरिकहँसोरहतयमपुरत्यहिपठावहुं आजही ।
नहिंतनिककरहु विलम्बकपिपतितुमहुंसाजहुसाजहीछ। २७

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेकिष्किन्धाकाण्डेषष्ठस्सर्गः ६ ॥

जब दुःखित श्रीरामचन्द्रजीने सुग्रीवजीसे ऐसाकहा तो हाथजोड़ अँशुआय गद्गद स्वरसे सुग्रीवजी बोले १ कि हमउसपापी राक्षस का स्थान अच्छीतरह नहीं जानते व सामर्थ्य बिक्रम व उसदुष्कुल का कुलभी नहीं जानते २ हां सत्यसत्य यहजानते हैं कि आपशोक छोड़दें हमवैसाही यत्नकरेंगे जिससे मैथिली पावोगे ३ सहितगण रावण को मार अपने पौरुष को सन्तुष्टकर वही कामकरेंगे जिससे आप प्रसन्नहोंगे ४ ऐसी बिकलता आप न अंगीकार करें अपनेधैर्य्य कोस्मरणकरें आप रसरीखे लोगोंके योग्य ऐसी बुद्धिकी लघुता उचितनहीं ५ हमने भी स्त्रीके बिरह से उत्पन्न बड़ादुःख पायाहै परहम इसतरह नहींशोच करते न धैर्य्यहीछोड़ते हैं६ देखिये हमप्राकृत बानरहोके भीअपनी स्त्री का शोचनहीं करते व फिर महात्मा सुशिक्षित धारणावाले व महान् आपको क्याकहें ७ धैर्य्यसे आंशु जो बहते हैं रोंकिये क्योंकि पराक्रमी पुरुषों की मर्य्यादा व धारणा शक्ति आप न छोड़ने के योग्यनहीं ८ चाहे दुःखपरे वा धनकी कमीहो व चाहे मरणहोने की युक्ति लगजाय परजो धारणाधारी पुरुषहोते वे अपनी बुद्धिसे बिचार कष्टित नहींहोते ९ व जो पुरुष अनारीहोता वहीबिकलता में परारहता व अवशहो शोकमें बूड़ता है जैसेबहुत बोझालदी नावजल में डूबती है १० हमआपसे हाथजोड़ते हैं व मारे प्रेमके आपको प्रसन्न करते हैं कि आप पौरुष करने में तत्पर हों व शोकको अपने अन्तःकरण में बैठने का अवकाश न दें ११ क्योंकि जो शोककिया करते हैं उनको सुखनहीं मिलता व तेजभी क्षीणहोता है इससे आपशोच न करें १२ जो पुरुष सदा शोकही में परारहता उसके जीनेमें भी सन्देह होता है राजेन्द्र इससे आपशोच छोड़िये केवल धैर्य्य धारण कीजिये १३ हमआपको सिखाते नहीं किन्तु मित्रभाव से हितकीबात कहतेहैं इससे हमारी मित्रता का आदरकर आप शोच न कीजिये १४ जबसुग्रीवजीने ऐसी मधुरबाणी से श्रीरामचन्द्रजीको सम-

आया तो आँशुआना मुखारविन्द वस्त्रसे उन्होंने पोंछा १५ सुग्रीवजी के वचन से महाराज श्रीरामचन्द्रजी अपनी प्रकृति में टिक स्वस्थ चित्त हुये व सुग्रीवको लपटाय मिलबोले १६ हे सुग्रीव जो अच्छे चतुर मित्रों का करनाचाहिये उसकेअनुरूप व योग्य तुमने किया१७कि हमकोहमारी प्रकृति परतुमने फिर टिकाया इसतरह का बन्धु संसार में दुर्लभ है विशेष कर ऐसे समय में १८ और यहतो हुआ अब आप मैथिली के ढूंढ़ने के विषय में यत्न कीजिये व अति घोर दुष्टात्मा राक्षस रावण के लिये १९ जो हमको कर्त्तव्यहै सोभी बताइये क्योंकि जैसे वर्षा समय में खेतों में जोचाहो उत्पन्न होताहै वैसेही तुम्हारे विषय में सब विचार सिद्ध हैं २० व हेवानर शार्दूल हमने जो अभिमान से ऐसे वचन कहे हैं कि बालीको मारही डारेंगे वे तुम सत्यही जानना २१ क्योंकिआज तक हमने कभी झूंठ नहीं कहा व न कभी कहेंगे यह बात हम जानते हैं व अपने सत्य बोलने की सौगन्द खाते हैं २२ तब श्रीरामचन्द्रजी के वचन सुन सुग्रीव जी अपने मन्त्रियों सहित बहुत प्रसन्न हुये व जाना कि रामचन्द्रजी ने जिस बातकी प्रतिज्ञाकी वह हुआही धराहै २३ इस तरह दोनों मित्र एकान्त में बैठ सम्मति करने लगे व परस्पर वे उनके सुख दुःख में सुखी दुःखी व वे उन के २४ राजाओं के राजा धिराज श्रीरामचन्द्रजी के वचन सुन वानरोंमें श्रेष्ठ सुग्रीवजी ने अपनेमनसे मान लिया कि अब हमारा कार्य्य होगया किसीतरहका संदेहनहीं२५॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेकिष्किन्धाकाण्डेसप्तमस्सर्गः ७ ॥

श्री रामचन्द्रजी के वचन सुन मनमें गुण सुग्रीव बहुत हर्षित हो लक्ष्मण के बड़े भाई श्रीरामचन्द्रजी से बोले १ कि हम सबतरह से देवताओं केभी अनुग्रह करने के योग्यहुये इसमेंकुछ संदेहनहीं क्योंकि जिस हमारे सब शुभ गुण युक्त आप सखा हैं २ हे पाप रहित श्री राम आपकी सहायता से तो हम देवताओं का भी राज्य पायसक्ते हैं फिर इस राज्यको क्याकहें यहतो जानों अपनाहीहै ३ हे राघवहमअब बन्धुओंसे व सुहृदोंसे भी पूजनीय हुये क्योंकि हमने अग्नि को साखी कर रघुवंश में उत्पन्न आप सरीखा मित्र पाया ४ व हमभी आप को

योग्यही मित्र मिले हैं सो आप धीरे धीरे जानोंगे हम अब अपनेही मुखसे अपने गुण क्या कहें ५ व महात्मा अपने बश चित्त रखने वाले व निश्चल धैर्य्य वाले आपके समान लोगों की प्रीति धैर्य्यही के समान होती हैं ६ व सज्जन सखा लोग चांदी सोना व सुन्दर भूषण अपने व मित्र के में भेद नहीं रखते अपने बस्तु हैं तोजानों मित्रही की सम-झते व मित्र की अपनी ७ इसीसे चाहे मित्र धनाढ्यहो वा दरिद्र चाहे सुखी हो वा दुःखी चाहे निर्दोष हो वा सदोष पर मित्रही को परम गति समझते हैं ८ हे पाप रहित चाहे धन जाता रहै व सुख जातारहै व चाहे देशभी छूटजाय परजो मित्र में उत्तम स्नेह देखते हैं तो उसीके अनुसार बर्त्ताव बर्त्ततेहैं उसकोकभी नहीं छोड़ते ६ रामचन्द्रजीनेऐसासुन कहा सुग्रीव जो तुमकहतेहो वह वैसाहीहै यह बात बुद्धिमान लक्ष्मण जीके आगे श्रीरामचन्द्रजी ने कहा १० तब रामचन्द्रजी व लक्ष्मणजी को देख सुग्रीवजी ने चारोंओर निहारा ११ तो समीपही एक साखूका वृक्ष लगाथा वह खूब फूलरहाथा भ्रमर उसपै घूमते थे १२ उसवृक्षकी एक बहुत पत्तोंवाली डाल तोड़ बिछाय सुग्रीव ने श्रीरामचंद्रजी को उस पै बैठाया व आपभी सुग्रीव उसी पर बैठे १३ तिन दोनों जनों को बैठे देख हनुमानजीने एक साखूकी बहुत पातोंकी डार तोड़ी उसपै लक्ष्मण जी को बैठाया १४ जब प्रसन्न मनहो रामचंद्रजी समुद्र के समान ग-म्भीर स्वभाव साँखूकी डार पल्लवोंपर उस पर्वत पै बैठे १५ तो प्रसन्न हो सुग्रीवजी सचिक्कण बाणीसे मारे हर्षके श्रीरामचंद्रजी से बोले १६ हे श्रीरामचंद्रजी जब हमारी स्त्री बालीने लेलीतो हमदुःखितहो ऋष्य-मूक पर्व्वत पर आये १७ सो हम यहां वनमें भी बालीके भयसे भयमें डूबे रहते व नेत्र सदा घूमाकरते क्योंकि हमारे भाई बाली ने हमको निकाल दियाथा अभी उसने बैर नहींछोड़ा १८ हे सब लोकोंके अभय दान देनेवाले श्रीराम हम बाली के भयसे पीड़ित हैं इससे हम अनाथ के ऊपर आप प्रसन्न हों १६ जब इसतरह सुग्रीवजी ने श्रीरामचंद्रजी से कहा तो महातेजस्वी धर्म्मवत्सल व धर्मज्ञ श्रीरामचंद्रजी हँसके सु-ग्रीवजीसे बोले २० कि मित्रका फल उपकारहै व शत्रुका फल अपकार है इससे आजही तुम्हारी भार्याहरनेवाले बालीको मारेंगे २१ हे महा-

भाग्य ये हमारे तीक्ष्णतेज कार्त्तिकेय वनमेंउत्पन्न सुवर्णविभूषित वाण २२ जिनकी उजली चील्ह के पंखों से शिखा बनीहै व इन्द्र के वज्र के समान हैं पर्व्व उनके बहुत अच्छे तीखे बहुत जानों रोष सहित सर्प हैं २३ सो ऐसे हमारे वाणों से बाली नाम अपने वैरी व भाई को जोकि तुम्हारे साथ बैर रखता है माराही समझो २४ श्रीरामचंद्रजी के ऐसे वचनसुन सेनापति सुग्रीव बड़े हर्षित हुये व बहुतअच्छा बहुतअच्छा ऐसा कह बोले २५ हे रामचंद्रजी हम मारे शोक के व्याकुल हैं व आप शोकार्त्तोंकी गतिहैं आपको मित्र पायभी हम रोदन करते हैं २६ आपने अग्निको साखी दे हमारा हाथ पकड़ा है इससे आप हमारे मित्र हैं व प्राणों से भी अधिक आपको मानते हैं यह अपने सत्यकी सौगंद खाय कहतेहैं २७ जिससे आपने मित्रकहके हमको विश्वास दे रक्खाहै इससे हम अपना समाचार कहतेहैं कि हमारे हृदय में जो दुःखहै वह रोज रोज हमारे मनको हरेलेता है २८ इस तरह रोदन करतहुये सुग्रीवकी वाणी गद्गद होआई मारे कफके बोल न सके २६ उस समय आँशुओं का बेग नदी के बेगही के समान चला पर रामचन्द्रजी के सामने रोना अनुचित जान धैर्य्य धारण किया ३० व आँशु पोंछ कंठावरोध समझ महातेजस्वी सुग्रीवजी श्रीरामचंद्रजी से बोले ३१ कि आगेकी बातहै हमको बालीने घरसे निकाल दिया व राज्य छीन लिया बलवान् तो थाही हमको बहुत कठोर कह पीड़ित किया ३२ व प्राणोंसे भी गरीयसी हमारी भार्य्या भी उसने हरली व जो हमारे मित्र लोगथे उनको उसने बंधन में डारदिया ३३ व हमारे मारने के लिये वह दुष्टात्मा यत्न करतारहा इसलिये बहुत वानर उसने हमारे पास भेजे पर उन सबको हमने मारडारा ३४ इसी शंका से आपको भी देख हम निकट नहीं आये क्योंकि भयसे सबलोग डरतेहैं ३५ अब केवल यही हनुमानादि हमारे सहायक हैं इसीसे दुःखित भी हैं तोहम प्राण धारण करते हैं ३६ ये हमारे मित्र वानर हमारी रक्षा करतेहैं जब हम कहीं को चलतेहैं तो ये संग जाते जब हम बैठतेहैं ये लोग भी बैठते हैं ३७ हे राम हमने यह संक्षेप अपना वृत्तांत कहा विस्तार सहित कहने से क्या है हमारा ज्येष्ठ भाई बाली जो बड़ा पौरुषी है वही शत्रु है ३८ इससे जब वह

मृतक होजायगा तभी हमको सुखहोगा व तिसीके मरनेपर हमारे प्राणभी निर्भय रहेंगे ३९ हे रामचन्द्रजी शोकसे पीड़ित हमने जो युक्ति बताई है यही हमारे शोकके अंत करनेवालीहै चाहे दुःखित हो व सुखी सखाकी गति सखाही होताहै ४० ऐसे बचन सुन रामचंद्रजी सुग्रीव से बोले हे सुग्रीव तुमसे तुम्हारे भाईसे किस निमित्त बैर हुआ ४१ हमारे सुनने की इच्छा है बताओ जब बैर का कारण सुन लेंगे तो बलाबल बिचार पीछे तुम्हारा काम करेंगे ४२ क्योंकि हमारा क्रोध बड़ा बलवान् है तुम्हारा अपमान सुन हृदयको कँपाता हुआ वर्षाकालके जलके समान बाढ़ेगा ४३ इससे हमारा विश्वासमान हर्षित हो व्योरावार समाचार कहो व यह अपने मनमेंजानलो कि जैसेही हमने धनुषपै चढ़ाय बाण छोंड़ा तैसेही तुम्हारा शत्रु मरापरा है ४४ इसतरहजब महात्मा श्रीरामचंद्रजी ने सुग्रीव से कहा तो वे अपने चारों वानरों सहित बहुत हर्षित हुये ४५ ॥

दो० तब प्रसन्न मुख ह्वै सुगल रघुपति महँ विश्वास ॥
करि कारण निज बैर कर लागे करन प्रकाश १ । ४६ ॥

इत्यार्षरामायणेवाल्मीकीयेकिष्किन्धाकाण्डेऽष्टमस्सर्गः ८ ॥

शत्रुओं के मारनेवाले व सबसे ज्येष्ठ हमारे भाईका बाली नाम है पिताजी उनको बहुत मानते थे व जबतक बैर नहीं हुआ तबतक हमभी वैसाही उनको बहुत मानते थे १ जब हमारे पिताजी मरे तो मन्त्रियों ने बिचारा कि ये सबसे ज्येष्ठ हैं इसीसे उनको वानरोंका राजा बनाया इस विषय में सबका सम्मत होगयाथा कि यही राजा हों २ इससे वे राजा हो पिता पितामहादिकों का राज्यकरनेलगे व हम सब कालों में हाथ जोरे सेवक के समान उनके आगे खड़ेरहतेथे ३ एक महातेजस्वी प्रथम मयका पुत्र था फिर दुन्दुभिकापुत्र हुआ वहमायावी नामदैत्य था उससे व बाली से कभी स्त्री के लिये बैर हुआ ४ वह मायावी एक समय जब रात्रिको सबलोग सोयगये तो किष्किन्धानगर के द्वारपै आय जोरसे गर्ज्जनेलगा व लड़ने के लिये बाली को बुलाने लगा ५ हमारे भाई बाली उस समय सोतेथे जैसेही उसने बड़े जोरसे पुकारा वह सुनबाली

न सहसके मारे वेगके झटपट उठे ६ जब मारे क्रोध के उसके मारने के लिये तैयार हुये तो स्त्रियों ने रोंका व हमने भी बड़ी प्रार्थनाकी ७ पर वे सब स्त्रियों को फटकार लड़ने के लिये चलदिये महाबलवान् तो थेही उनके पीछे पीछे मारे स्नेह के हमभी वहीं चलेगये ८ वह असुर हमारे भाई को व उन्हीं के थोड़ीही दूर पीछे हमकोआतेदेख मारे भय के बड़े जोरसे भागा ९ वहतो आगेआगेबड़ीशीघ्रतासेभागा चलाजाताथा उसी के पीछे हम दोनों भाई बड़े वेग से दौड़े जाते क्योंकि उस समय चन्द्रमा के उदय होने से उजिआरी थी १० वह असुर भागते भागते जाय तृणों से ढके हुये एक बड़े भारी पृथिवी के खोह में पैठ गया व हम दोनों भाई उस गुहा के द्वारे खड़े होगये ११ उसको बिल में पैठा देख हमारे भाई मारे क्रोध के मूच्छितहो हमसे बोले १२ कि हे सुग्रीव जब तक हम इसको मार लौट न आवें तब तक तुम इस गुहा के द्वारे खड़े रहना १३ तब हमने ऐसा वचन सुन संग जाने के लिये प्रार्थना की पर उन्होंने न माना अपने चरणोंको सौगन्द खवाय हमको वहीं खड़ाकर आप बिलमें पैठ गये १४ बिल में उनके पैठने व हमको द्वार पै खड़े रहने में एक पूरा वर्ष बीतगया १५ जब इसतरह वर्ष बीतगया व हमने अपने भाई को आये न देखा तो हमारे मनमें शंकाहुई कि हमारे भाईको मायावी ने मारडारा इससे हमको और स्नेह हुआ १६ तथापि हम वहां खड़े रहे कहीं को गये नहीं कुछ दिनों के पीछे उस गुहासे सहित फेना रुधिर की बड़ी भारी धारा निकली वह देख हम बहुतही ब्याकुल हुये १७ उस समय उसके भीतर जोरसे पुकारते हुये असुरों का शब्द हमको सुनाई दिया पर संग्राम में हारे हुये व घिघरते हुये भी भाईसाहब का बोल हमको न सुनपरा १८ हमने इन सब चिह्नोंसे जाना कि भाई मारगये इससे उस गुहा के द्वारे पर एक शिला धर १९ मारे शोक के दुःखितहो उसी स्थानपै भाईको जलदे किष्किन्धा को चले आये यहां सब हाल ज्योंका त्यों मन्त्रियों से कहा उन्होंने विचारा कि अब बिना राजाका राज्य तो अच्छा नहीं २० इससे उन लोगों ने हमको जबरदस्ती राज्य देदिया व हम न्यायपूर्व्वक राज्य करने लगे २१ कुछ दिनों के पीछे उस बैरीको मार बाली घर को आया

हमको राज्य सिंहासनपै बैठे देख मारे क्रोध के जरबर गया व नेत्र लाल कर लिये २२ व हमारे मन्त्रियोंको बँधुआकर उनसे कठोर वचन बोला हे राघव यद्यपि हममें इतनी सामर्थ्य थी कि उस पापी बाली को भी बँधुआ करलें २३ पर भाई का गौरव मान हमारी बुद्धि ऐसी न हुई कि उसको बंधुआ करते जब वे हमारे भाई शत्रु को मार पुरको आये थे तब हमने २४ तिनको महात्मा जान प्रणाम किया व बड़ी भक्ति देखाई पर वे न प्रसन्नही हुये न प्रसन्नता से उन्होंने आशीर्व्वाद ही दिया २५ तब हमने मुकुट धरे अपना मस्तक उनके चरणोंपै धर दिया पर मारे क्रोधके बाली हमारे ऊपर न प्रसन्न हुआ २६ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेकिष्किन्धाकाण्डेनवमस्सर्गः ९ ॥

तब क्रोध संयुक्त व अति बेग से आये हुये भाई को अपने व उनके हित के लिये हम उनको प्रसन्न करने लगे १ हमने कहा कि बड़े भाग्य की बात है जो आप संग्राम में शत्रु को मार कुशलपूर्व्वक फिर अपने स्थान को आये व हम अनाथ के एक आपही नाथहैं २ यह जो बहुत कामियों का चन्द्र समान प्रकाशित छत्र व चमर है जोकि इन दिनों में हम धारण करतेथे आप अपने लीजिये व धारण कीजिये ३ क्या करें हम उस गुहा के द्वारे पै वर्ष दिन तक खड़े रहे इससे बनायव्याकुल हो गये तथापि वहां से नहीं आये पर जब उस गुहासेरुधिर की बड़ी भारी धारा निकली ४ तोमारेशोकके व्याकुलेन्द्रियहोबनाय ऊबके उसके निकलनेकेभयसे एकशिला गुहाके द्वारपैदे ५ वहांसे हमभाग किष्किन्धा को चलेआये यहांमार बिषादके मन्त्रियों ने राज्य खालीदेख ६ हमको राजा बनाय दिया कुछहमारी इच्छा नहींरही तथापि आप यह हमारा अपराध क्षमा कीजिये मानकेयोग्य राजाआपहीहैंहमजैसेतबआपके सेवक रहे वैसहीअबहैं ७ व जोहमराजा बनायेगयेहैं वहतोतुम्हारेनहोने पर बातथी अब हमको राज्यसे कुछप्रयोजन नहीं है व न अभीराज्य में कोई खराबी हुईहै जैसे तबथा वैसेही मन्त्रीदीवान् अबभी सब बिद्यमान हैं शत्रुभी कोईनहीं है ८ हमारे पासतो यहराज्य जानों धरोहर की राति पर धरारहा अबआप अपनालें खुशीसे निबेदन करते हैं हे शत्रु निष-

सुन हमारे ऊपर आपक्रोध न कीजिये ६ हे राजन् हमआप से हाथजोड़
महप्रार्थना करते हैं मन्त्रियों व पुरबासियों ने जबरदस्ती १० हमको
राजाबनाय लियाथा जिसमें शून्यदेश पराहनेसे कोई शत्रु न चढ़आवे
हेराम हमने ऐसी नम्रतासे ऐसे मधुर बचनकहे परउन हमारे भाईने
हमारा बड़ा निरादर कर ११ कहा तुझको धिक्कार है ऐसे सैकरों
बचन कहे तिसके पीछे सबमन्त्री व अन्य नौकर चाकरों को बुलाय १२
सबके सामने हमको भी बुलाय बहुत ऊंचानीचा कहा व फिरसब लोगों
से कहने लगा कि आपलोगोंने भी तो जानाहोगा जो एकरात्रि में मायावी
नाम महाअसुर आयाथा १३ व उसदुष्ट ने युद्धकरने की इच्छासे हमको
पुकारा तिसका बोलसुन हम राजमन्दिरसे निकले १४ हमारे पीछेयह
दारुण हमारा भाईभी निकला वह महाबलवान् हमको दोजनों को देख
१५ मारेडर के भाग खड़ाहुआ हमदोनों भाई भी उसके पीछे दौड़ेगये
वहबेग से भागताहुआ जाय एकगुहामें पैठगया १६ तो हमने उसदुष्ट ब
कठोर चित्तको वहांपैठा देख इस महाक्रूर अपने भाई से कहा १७ कि
बिना इसदुष्ट दैत्यको मारे हमपुरी को नहीं जायसक्ते इससे जबतक
हमइसकोमार वहांसे न आवें तबतक तुम इसगुहाके द्वारेखड़े हमारीराह
परखते रहना १८ हमने जाना कि यहतो द्वार पै खड़ाही है इससे
उसभयानक गुहामें पैठगयेवहांहमको उसको ढूंढ़तेही ढूंढ़त एकपूरावर्ष
लगगया १६ तिसकेपीछे मारेभयके ब्याकुल वह शत्रु हमारी नजरपरा
देखतेही सहित परिवार उसको हमने मारडारा २० मारने के समय
वहऐसा जोरसे चिल्लाया कि उससे व उसके मुखसे निकली रुधिर की
धारासे वहगुहा भरहुई २१ जबबड़े बलसे उसकोमार हमलौटे व चाहा
कि अब इसमेंसे निकलें तो उसगुहा का मुखही न हमको ढूंढ़मिला
क्योंकि उसका मुंहतो इनमहात्माने मूंदिदयाथा २२ तबहम सुग्रीव
सुग्रीव कहजोरसे पुकारनेलगे जब ये न बोले तो हम बनाय दुःखित हो
गये २३ फिर ढाढ़सबांध अपने पैरोंसे किसीतरह उसशिला को ढकेल
उसमेंसे निकले व घरआये २४ आपलोगों नेजाना उसगुहा में हमको
राज्यके लोभसे इसमूर्ख सुग्रीवने बन्द करलियाथा इसने भाई के स्नेह
कीओरकुछभी दृष्टिनदी२५ हेरामचन्द्रजी ऐसाकह केवल एकधोतीपहि-

रायहमकोबालीने घरसे व राज्यसेनिकालदिया २६ उससमय हमको उस दुष्ट बाली ने मारा भी व हमारी स्त्री भी उसने लेली तिसकेभयसे पर्व्वत वन व समुद्र युक्त सब पृथिवी हम घुम आये २७ स्त्रीके हरणके दुःख से दुःखित हम इस ऋष्यमूक पर्वत पर आयेहैं क्योंकि यहां वह किसी कारण से नहीं आयसक्ता २८ बैर होनेका यह सब कारण आपसे हमने कहा देखिये ब्यर्थ हमको यह दुःखमिला इसमें हमाराकुछभी अपराध नहीं है २९ हे सर्वलोकके भयनाशनेवाले श्रीरामचंद्रजी तिस बाली के भय से ब्याकुल हमारे ऊपर बालीको मार प्रसाद कीजिये ३० इस तरह तेजस्वी व धर्म्मज्ञ श्रीरामचंद्रजी सुग्रीवके वचन सुन हँसकरबोले ३१ हे सुग्रीव सूर्यसमान प्रकाशित व सफल व पैनें हमारे ये बाण उस दुराचारी बाली के ऊपर क्रोधयुक्त गिरेंगे ३२ जब तक तुम्हारी भार्या हरनेवाले उसदुष्ट बालीको हम देखते नहीं तभी तक वह दुराचारी व पापात्मा जीताहै ३३ हम अपने अनुमान से जानते हैं कि तुम शोक के समुद्र में डूबते हो इससे हम तुमको जरूर उबारेंगे व अपना राज्यऋद्धि पावोगे ३४ रामचंद्रजीके हर्ष पौरुष संयुक्त वचन सुन सुग्रीव बहुत प्रसन्न हो प्रेमपूर्व्वक बोले ३५ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेकिष्किन्धाकांडे दशमस्सर्गः १० ॥

हर्ष पौरुष युक्त रामचंद्रजी के वचन सुन सुग्रीव बड़ी पूजाकर बड़ाई करनेलगे १ कि हां इसमें तो कुछ संदेह नहीं कि जो आप कोपकर प्रज्वलित व तीक्ष्ण व मर्मभेदी बाण चलावें तो सबलोक भस्म होजावें जैसे प्रलयकाल में सूर्यके उदय से सबलोक भस्म होजातेहैं २ अब हम से बाली का जितना पौरुष वीर्य व धृति है सुन एक चित्तहो उस का विचार कर जो कुछहो आप पीछे से करेंगे अभी एकाएकी कुछ न करना चाहिये ३ यह बाली प्रतिदिन बड़े प्रातःकाल उठके पश्चिम समुद्रके किनारे से चल पूर्व्व समुद्र तक चलाजाता फिर वहांसे दक्षिण समुद्र के किनारे आता वहांसे फिर उत्तर समुद्र के किनारे चलाजाता व थकता नहीं ४ पर्व्वतों के ऊपरचढ़ बड़ेबड़े शिखर बड़ी जल्दबाजीके साथ उखाड़ पकड़लेता ऐसा वीर्य्यवान् है ५ व अपनाबल फैलाने के लिये

बालीने वनोंमें जाय जाय बड़ेबड़े भारी बहुतसे वृक्ष उखाड़ बेगसेदूर फेंकदिये हैं कि वे चूर्णीभूत होगये हैं ६ एकभैंसा का रूपधारण किये कैलास पर्व्वत के समान रूप दुन्दुभिनामथा वहअति बीर्य्यवान् हजार हाथियोंका बल अपने शरीर में रखताथा ७ वहदुष्टात्मा बरदानसे मोहित हो मारेबीर्य्य के बड़ाभारी शरीर धारणकर समुद्रके किनारेपर पहुँचा ८ महाभयंकर लहरीयुक्त व बहुतरत्न भरेहुये समुद्रके पारजाय समुद्र से बोला कि हमको युद्धदानदो ६ तबधर्म्मात्मा व महाबलवान् समुद्रने उठके कालप्रेरित उसदुष्ट असुरसे कहा १० कि हेयुद्ध बिशारद हमतुम को युद्धदेने में समर्त्थ नहींहैं परसुनो जो तुमको युद्ध देगा उसको बतलावें गे ११ एक महारण्य में तपस्वियों के रहने के स्थान महादेवजी के श्वशुर हिमवान्‌नाम पर्व्वतराज हैं १२ उनके ऊपरसे बहुत नदियां बहतीं व बहुत कन्दरा व झरना बिद्यमान हैं हां वे तुम्हारी अतुल प्रीतिकरने में समर्त्थ हैं १३ वहअसुर ऐसासुन समुद्र को भयभीत जानधनुष से छूटे बाणके समानसीघ्रहिमवान पर्व्वतके बनको चलागया १४ व वहांपहुंच श्वेत गजेन्द्राकार हिमवानपर्व्वतकी शिला उठायउठायदुन्दुभिभूमि में फेकने व बड़ानाद करने लगा १५ तब श्वेत बादर के आकार सौम्य स्वभाव प्रीति करनेवाली आकृति बनाय अपने एक शिखरपै खड़ेहो हिमवान जी बोले १६ हे धर्म्मवत्सल दुन्दुभे हमको आप क्लेश न दें क्योंकि हम रण कर्म्म में कुशल नहीं हैं हमारे ऊपर तो तपस्वी लोग तपस्या किया करते हैं हम लड़ना क्या जानें १७ बुद्धिवान् पर्व्वतराज के वचन सुन मारे क्रोधके लालनेत्रकर दुन्दुभि बोला १८ कि जो तुम युद्ध करने में असमर्त्थहो वा हमारेभयसेअब निरुद्यम होतो हम से उसका नाम बताओ जो लड़ने की इच्छा किये हमको युद्धदान दे सक्ताहो १९ बोलने में बड़े चतुर हिमवान जी उसके वचन सुन उस दुष्टात्मा दैत्यसे बड़े धर्म्म के साथ कुछ क्रोध युक्त हो बोले २० कि इन्द्रका पुत्र महापण्डित व महाप्रतापी श्रीमान् एक बाली नाम बानर अति रमणीय किष्किन्धापुरी में रहता है २१ वह महाप्राज्ञ तुम्हारे संग युद्ध करनेकी सामर्त्थ्यरखताहै व युद्धकरनेमें बड़ाहीचतुर है तुमको द्वन्द्व युद्ध वही देसक्ताहै जैसे नमुचिको इन्द्रने दिया था २२

इससे जो इस भूतल में तुम युद्ध चाहतेहो तो शीघ्रही उसी के निकट चले जाव क्योंकि वह समर कर्म्म में बड़ा शूरहै व अन्य बीर का तेज सहताही नहीं २३ हिमवान् का वचन सुन बड़ा कोप कर वह दुन्दुभि बाली की किष्किन्धापुरीको आया २४ उसका भैंसाकासा तो रूपही था बड़ी बड़ी व तीक्ष्ण सींगेंथीं जिनके देखतेही भय होती थी जैसे बर्षाकालमें जलभरा मेघ आकाश में शोभित होता उसीतरह वह शोभायमान होताथा २५ तबवह महाबलवान् दुन्दुभि किष्किन्धा के द्वारपै आय भूमि कँपाता डकरा उसका शब्द नगारे के समान बिदित होता २६ पहुंचतेही पहुंचते उस नगर के किनारे के बड़े बड़े पेड़ उखाड़ उखाड़ बहाने लगा व खुरों से पृथ्वी खोदनेलगा सींगोंसे पुरी का द्वार खोद डारता जानपरता कि कोई मतवाला हाथी है २७ उस समय बाली घरके भीतर स्त्रियों के बीच में बैठाथा उसका बोल सुन न सह सका अपनी सब स्त्रियोंको संग लिये दौर आया जैसे नक्षत्रों के साथ चन्द्रमा कहीं को दौरे २८ व आय सब बनचारी बानरों का राजा बाली साफ साफ थोड़े वचन दुन्दुभिसे बोला २९ हेदुन्दुभे तुम हमारे नगर का द्वार रूंधे क्यों डकरते हो हम तुमको जानते हैं हे महाबल अब अपने प्राण बचावो ३० तिस बुद्धिवान् बानरराज के वचन सुन मारे क्रोध के आंखें लालीकर दुन्दुभि बोला ३१ कि तुम स्त्रियोंके निकट बीरोंकेसे वचन न कहो किन्तु हमको युद्ध दान दो तब हम तुम्हारा बल जानेंगे ३२ व जो तुम स्त्रियों का संग न छोड़ सक्ते हो तो हम रात्रिभर और अपना क्रोध धारण किये रहेंगे तुम जाव विहार करो जब सूर्य्योदय होगातो ३३ हमको आय युद्धदान देना अभी सब बानरों सेभी जाय मिल भेंटलो क्योंकि तुम सब शाखामृगों के राजा हो सब सुहृदों का आदर सत्कार अच्छीतरह करलो ३४ किष्किन्धा पुरी अच्छीतरह निहारलो व स्त्रियों के संग अच्छीतरह क्रीड़ाकर लो क्योंकि हम तुम्हारा अहंकार नाश करने को आये हैं कौन जानें जीते बचते हो वा नहीं ३५ अभी इस समय हम तुमको न मारेंगे क्योंकि ॥

दो० सुप्त प्रमत्तरुमत्त मद मोहित तुमसम जोय ॥
अस्त्र रहित पुनिजो हनत गर्भघातिसो होय १ । ३६

यह सुन तारादि स्त्रियों को छोड़ प्रथम कुछ हँस फिर क्रोध कर बाली उस असुर से बोला ३७ कि यदि संग्राम से डरते न होतो हम को मत्त न मानो क्योंकि यह स्त्रियोंसे उत्पन्न मद युद्ध में बल होने के लिये बीरों के मदिरा पान के समान समझो ३८ यहकह महाक्रोध कर बाली अपने पिता इन्द्रजीकी दीहुई सुवर्ण की माला गले में पहिर युद्ध के लिये खड़ा होगया ३९ व झपट दुन्दुभि की दोनों सींगें पकड़ बानरों में हाथी रूप बाली ने उसको घसीटा ४० व बड़े जोरसे सींगें नीचे को दबाये बड़े जोर से शब्द किया यहांतक दबाया कि दुन्दुभि के कानों से रुधिर बहने लगा ४१ फिर दोनों परस्पर जीतने की इच्छा से महा क्रोधकर ऐसा लड़े कि बाली व दुन्दुभि का महाघोर युद्ध हुआ ४२ उन में इन्द्र के समान पराक्रमी बाली मूका जांघें चरण शिला व वृक्षोंसे लड़ताथा ४३ इसतरह परस्पर युद्ध होते होते समर में उस असुरका बलहीन परा व इन्द्र के पुत्र बाली का बल अधिक बढ़ा ४४ तब बाली ने बड़े जोरसे घुमाय दुन्दुभि को भूमिमें पटक डारा कि दुन्दुभि के सब अंग चूर्ण हो गये ४५ व उसके कानों से रुधिर की धारा बहने लगी व पृथिवी में गिरा प्राण निकलगये ४६ जब उसके प्राण निकलगये तो बाली ने उठाय बड़े जोर से घुमाय फेंकदिया वह जाय चार कोशपै गिरा ४७ उसको बाली ने जो बड़ बेग से फेंका तो मुखसे ऐसी रक्तकी धाराछूटी कि पवनसे उड़मतंग मुनिका सब आश्रमभीज गया ४८ रुधिरके बहुत बूंद बरन धारा देख मतंगमुनिको पकर बिचारने लगे कि यह कौनहै ४९ कि जिसने हमको रुधिर से न हलादिया यह दुष्टात्मा मूर्ख दुर्बुद्धि अज्ञानी कौनहै ५० यह कह मुनि ने जो उठके देखा तो पर्ब्बताकार मरा एक भैंसा आश्रम पै पराहै ५१ मुनि ने अपनी तपस्या के प्रभाव से जान लिया कि यह बाली बानरका किया कर्म्महै इसलिये उसके फेंकनेवाले बानरको महा शापदिया ५२ कि जिसने रुधिरके बहने से हमारा बन दूषित करायदियाहै वह दुष्ट अब यहां न आयसके व जो कभी आवे तो तुरन्त मृतक होजाय ५३ जिस दुष्ट बानर ने यह बड़ी भारी असुर की देह जोरसे फेंक हमारे आश्रम के बहुतसे वृक्ष तोड़डाले वह जरूर यहां आने परमरै सोयह नहीं कि जो हमारे आश्रमहीं परआने

से मरे नहीं जब हमारे आश्रम के चार चारकोश किनारे किनारे ५४
वह दुर्ब्बुद्धि आवे तोभी मरजाय व जो कोई उसके मन्त्री आदि
भी हमारे बनमें रहते हैं ५५ वेभी अबयहां न बसें हमारे बचनसुन यथा
सुखयहां से चलेजायँ नहींतो जो वेभी यहां रहजायँगे तोउनको भी हम
शापदेंगे ५६ क्योंकि इसबनकी रक्षा हमअपने पुत्रके समान करते हैं
व जोकोई बालीके पक्षका बानर यहांरहेगा कि जिसके रहनेसे पत्रअंकुर
का बिनाश होता व फरमूलादि भी नहींरहते ५७ अबआज के दिनभर
मर्य्यादाहै जोकोई बाली का पक्षी बानर कल फिर हमको हमारे बनमें
देखपरेगा वहकिड़ोरों बर्षतक पर्व्वतहोगा ५८ वहांके रहनेवाले बानर
मुनिके बचनसुन तिसबनसे निकलगये तिनबानरों को देख बालिबोला
५९ कि तुमसब मतंग बनकेबासी बानरो हमारे समीप क्यों आये भला
तुम बनबासियों का कल्याणतोहै ६० यहसुन उनबानरोंने सबशाप का
कारण व जोबालि को शापहुआथा सुवर्णकी मालापहिरे बालिसे वर्णन
किया ६१ बानरोंके कहेऐसे बचनसुन बालिउन महर्षिजी के निकटजाय
हाथजोर याचना करनेलगा जिसमें शापनिवृत्त होजाय ६२ परमहर्षि
मतङ्गजीने बालि का अनादर करदिया कुछबोलेही नहीं बरन अपने
आश्रम को चलेगये व शापके धारणसेडर बालीब्याकुल होगया ६३
हे श्रीरामचन्द्रजी उसीशाप के भयसे डरखाय बाली ऋष्यमूक पर्व्वत
पै प्रबेश करनेको कौनकहै कभी इस महापर्व्वत को देखनेभी नहींआता
६४ हे रामचन्द्रजी हम उसीशापके कारण तिसका यहां न आनाजान
इस महाबनमें सहित अपने मन्त्रियों के बिषाद रहित यहां बिचरते हैं
६५ व उसदुन्दुभि नामदैत्य के हाड़ों का यहीढेर है जो प्रकाशित होता
है जिसको कि बालीने अपने बीर्य्यकी बढ़ती से उठाय यहांफेंक दिया
है उसीका यह पर्व्वताकार हाड़ों का ढेरहै ६६ व येसाल सांखूके वृक्ष
बहुत बहुत डारोंके एकही जगह जमेहैं बालीजब कभी अपने बीर्य्य का
प्रकाश करनेके लिये एकवृक्ष की जड़पकर हिलाताथा तो ये सालो
छिलतेथे ६७ हेराम बालि का हमने जो इतना बीर्य्य बताया इसके
बराबर औरकिसी का नहींहै फिरतिस बालीको आपकैसे मारसकेंगे ६८
सुग्रीवने जब ऐसाकहा तो लक्ष्मणजी बहुत हँसके बोले कि भला ऐसा

कौनकर्म्म कियाजाय जिसमें तुमको बालिके मारजाने का बिश्वासहो ६९ यहसुन सुग्रीव लक्ष्मणजी से बोले कि इनसातो साखूके वृक्षोंको बाली जब चाहताथा तो एकवार में एकको जड़पकर हिलादेताथा ७० जो रामचन्द्रजी एकबाण से इनमें का एककोई वृक्ष तोड़डारें तो रामचन्द्रजी का बिक्रमदेख हमबाली को माराहुआ मानें ७१ व बालीके मारे हुये उसभैंसा के आकार दुन्दुभि के पेहाड़ एकत्रपरे हैं रामचंद्रजी अपने एकचरण से उठाय दोसौ धनुष की दूरीपर फेंकदें तोभी हमबाली को मारासमझें ७२ इसतरह लक्ष्मणजी से कह अरुण नयन श्रीरामचंद्रजी का एक मुहूर्त्तभर ध्यानकर सुग्रीव जी फिरबोले ७३ हे रामचंद्र जी यह बाली बानर बड़ाशूर बड़ाशूरमानी व बलपौरुष से बिख्यात बलवान्हैं व समरों में आजतक कहीं हारानहीं ७४ इसके सबकर्म्म ऐसेही देखाई देतेहैं जिनको देवता लोगभी बड़ेदुःख से करसकें तिन्हीं कर्म्मों को हम अपने मनसे चिन्तनाकर इस ऋष्यमूक पर्व्वत पै चले आये हैं ७५ व अबभी तिस बालीको अपना से अजेय व ढिठाई करने से बाहर व असहज शील जान उसकी चिन्तना कर यह ऋष्यमूक पर्व्वत नहीं छोड़ते ७६ व इस बनमें भी हम हनुमानादि अपने मन्त्रियों के साथ शंकित व उद्विग्न बिचरते हैं ७७ दैवयोग से यहां अब मित्रों के ऊपर कृपा करनेवाले व बड़ाई के योग्य आप ऐसा सत मित्र पाया जानों हिमवान् पर्व्वतही को पाया ७८ यद्यपि अब किसी तरह का सन्देह नहीं तथापि हम उस अपने दुष्ट भाई बाली का बल जानते हैं क्योंकि वह हमने अपने नेत्रों से देखा है व आपका वीर्य्य अभी हमने कहीं संग्राम में नहीं देखा इससे अब भी बालीके मारजाने में शंका होती है ७९ पर हम आपकी न बालीकी बराबरी करें न आप का निरादर करें न आप को डरवावें किन्तु तिसके अति भयंकर कर्म्मों से हमारे जीमें कातरता उत्पन्न हुई है ८० पर हे राम तुम्हारी बाणी प्रमाण धैर्य्य व आकृति आपका श्रेष्ठ तेज सूचित कराते हैं जैसे भस्म में मूदा अग्नि ८१ तिन महात्मा सुग्रीव के ऐसे वचन सुन श्रीरामचन्द्र जी कुछ मुसुकाय सुग्रीवसे बोले ८२ हे बानर जो हमारे बिक्रम में तुमको बिश्वास नहीं है तो समर में हम प्रशंसनीय बिश्वास तुम्हारे

लिये उत्पन्न कराते हैं ८३ श्रीरामचन्द्र सुग्रीवजी से ऐसाकह उनको बहुत समझाय दुन्दुभिका शरीर अपने पाद के अगूंठे से लीलापूर्व्वक उठाय ८४ फेंकदिया वह जाय चालीश कोश पर गिरा व असुर का शरीर बनाय सूखगया था ८५ जब रामचन्द्रजी ने दुन्दुभि का शरीर फेंक दिया तो सुग्रीव फिए बोले लक्ष्मणजी भी उसी स्थान पै बैठे थे व सब बानर लोग भी थे उन्हीं के आगे फिर बोले ८६ हे सखे जब हमारे भाई बाली ने बड़े श्रमसे यह दुन्दुभि का शरीर उठाय फेंकाथा तो यह गीला सहित मांस नस सहित था इससे बहुत गरूथा ८७ व अब वह सूख जाने के कारण निर्म्मांस होगया इससे तृण के समान हलका होगया है इसी से आपने बड़े हर्ष के साथ बिना श्रम के फेंक दिया ८८ इससे आपका व बालीका बल नहीं जान परता कि किसमें अधिकता है क्योंकि ओदे सूखे में बड़ाभारी अन्तर होता है ८९ हेताऽस अबतो तुम्हारा व तिसका बलावल जब एक वृक्ष एक बाण से काट डारोगे तभी जान परेगा ९० इससे इस धनुष पै प्रत्यंचा चढ़ाय मानों हाथी की शूंड़ के समान करो व कानतक खींच बाण चलाओ ९१ हम जानते हैं कि आपका प्रेरित बाण अवश्यही इस साखू के वृक्ष को तोड़ डारेगा अब बिचार करनेकी कुछ जरूरत नहीं आप हमारा यह कार्य करें हम अपनी सौगन्द कराते हैं ९२ ॥

कुंडलिका ॥

जिमि तेजस्विन माहिं बर सबसे रबिन सँदेह ।
अरु जिमिसब पर्ब्बतनमहँ बरहिमगिरि धरिदेह ॥
बरहिम गिरि धरि देह यथा चौपायन माहीं ।
सबसे बरहै सिंह तनिक यहँ संशय नाहीं ॥
सकल नरन महँ रामश्रेष्ठ विक्रम महँ तुमतिम्मि ।
हमहुं गिनाये जौन खोजि देखहु हैं वे जिमि १ । ९३

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेकिष्किन्धाकाण्डेएकादशस्सर्गः ११ ॥

इसतरह सुग्रीव के बचनसुन उनके बिश्वासके लिये महातेजस्वी श्रीरामचंद्रजी ने धनुष उठाया १ व अतिघोर धनुष पै एकबाणभी चढ़ाया

बड़ेजोरसे ऐसाखींच सांखू के वृक्षकी ओर चलाया कि उसके शब्दसे सबदिशा पूर्णहोगईं २ ऐसे बलवान् का चलाया वहसुवर्ण से भूषित बाण एकहीबार सातोवृक्षों को तोड़पर्व्वतफोड़ जाय भूमिमें पैठगया ३ वह महाबेगसे चलाबाण एकमुहूर्त्त भरमें सातो सांखूके वृक्षतोड़ घूम घाम फिर तरकस में आय अपने स्थानमें पैठा ४ रामचंद्रजी के बाणके बेगसे सातोवृक्ष गिरेदेख बानरश्रेष्ठ सुग्रीवजी बहुत बिस्मित हुये ५ व आयरामचंद्रजी के चरणों पै शिरधर नीचेको मोहन मालादि भूषण लटकाय हाथजोर बहुत प्रसन्न हुये ६ तिनरामचंद्रजी के इसकर्म्म से हर्षितहो रामचंद्रजी को अस्त्रशस्त्र के बिषय जाननेवाले लोगों में श्रेष्ठ व शूरजान तिनसे बोले ७ हे महाराजाधिराज श्रीरामचंद्रजी आप अपने बाणोंसे सहित इन्द्र सबदेवताओं को भी समर में मारने को समर्थ हैं तो फिर बाली को क्या कहना ८ हे रामचंद्र जिस अपने एकही बाणसे सात बड़ेभारी सांखूके वृक्ष पर्व्वत व भूमि सबतोड़फोड़ डारा तिस आपके सामने समर में कौनखड़ा होसकेगा ९ आजइन्द्र व वरुण के समान आपको सुहृदय पाय हमारा शोकगया व बड़ीप्रीति हुई १० हे राम अब अभी भ्रातृरूप हमारे बैरीबाली को हमारा प्रिय करने के लिये मारडालिये हमआपसे हाथजोड़ते हैं ११ तब प्रियदर्शन सुग्रीव को लपटाय मिल महाप्राज्ञ रामचन्द्रजी लक्ष्मणकी ओरनिहार सुग्रीव से बोले १२ कि अच्छा अबआवो यहांसे किष्किन्धा को चलें परतुम आगे आगे चलो व वहांजाय अपने भाईबाली को पुकारो १३ यहकह सबजन बालीकी पुरी किष्किन्धा को गये व बड़ेगहन बनमें वृक्षोंकी आड़में खड़ेहुये १४ तबबाली के पुकारने के लिये सुग्रीव बड़ेजोर से मारेशब्द के मानों आकाशही उड़ाये देतेथे गर्ज्जे १५ तबअपने भाई सुग्रीव का गर्ज्जनासुन महाबली बाली लड़ने के लिये बड़ेबेग से आय पहुंचा जैसे सूर्य्यनारायण अस्ताचल के समीप से निकलते हैं १६ तब बालि व सुग्रीवसे बड़ाभारी युद्धहुआ जैसे आकाश में बुध व मंगल से अति घोरयुद्ध होताहै १७ मारेक्रोध के मूर्च्छितहो दोनोंभाई बज्रसमान लातों से व बज्रसमान मूकोंसे समर में एकदूसरे को मारनेलगे १८ तबहाथ में धनुषलिये श्रीरामचन्द्रजीने दोनोंभाइयों को देखा वे दोनों एकही

तरहकेथे जैसे अश्विनीकुमार दोनोंभाई एकहीतरहके हैं१६ जबरामचंद्र जीने यह न जानपाया कि इनमें कौनबालि है व कौनसुग्रीव तबनाश करनेवाला बाणछोड़ने का बिचार न किया २० इतनेमें बालीसे हारसुग्रीव भागे व रामचन्द्रको न देख ऋष्यमूक पर्व्वत की ओरदौरे २१ बालीने ऐसाजोर से माराथा कि सुग्रीवके सबअंग रुधिरमें डूबगयेथे बनाय ब्याकुल होगयेथे मारेप्रहारों के देहजर्ज्जरीभूत हो गया इससे वहांसे भाग महाबन में पैठगये २२ जबवे बनमें पैठगये तोबाली इनको निहार शापके भयसे कहा जाव बचगये यहकह महाबली बालीलौट आया २३ रामचन्द्रजीभी अपनेभाई व हनुमान् के साथ जहां सुग्रीवथे उसी बनको चलेआये २४ तबलक्ष्मण सहित श्रीरामचन्द्रजी को लौटदेख लज्जितहो अतिदुःखित नीचेमुखकर सुग्रीव बोले २५हे रामहमसे आप ने कहा कि जाय बालीको पुकारो व अपनाबिक्रमभी देखाया पर हमको बैरीसे मरवायायह क्याकिया २६ हेराघवआप तभी कह देते कि हम बालीको न मारेंगे तो हमकाहेको यहांसे जाते २७ महात्मा सुग्रीव ने जब ऐसाकहा तो बड़ी दीन व करुणासहित बाणी से श्रीरामचन्द्र जी बोले २८ हे परमप्रियसुग्रीव जिसकारण हमने बाण नहीं चलाया वह सुनिये व क्रोध दूर कीजिये २९तुम व बालीदोनोंजन भूषणबेष प्रमाण व चालसेएक दूसरेकेसमान थे किसी में कुछभी अन्तर न था ३० स्वर वचन देखना बिक्रमव वाक्य इन सबसे तुम दोनों समानही थे इससे हमनेचीन्ह नहींपाया ३१ इसीसे तुम दोनोंकाएकतरहका रूपदेख हम मोहित होगये महावेग बाण तुम्हारे शत्रु के ऊपर नहींछोड़ा३२ हमने बिचाराकिये दोनों एकही तरह केहैं ऐसा नहो कि सुग्रीवहीके बाणलग जायजिससे वे मरजायँ न उनको राज्यही मिले न हमको स्त्री बस इसीसे बाण नहीं चलाया ३३ हे वीर जोअज्ञान से मारे जल्दबाजी के हमारे बाणसे तुम मरजाते तो हमारी मूढ़ता व अनरपन सबकहीं प्रसिद्ध होजाता ३४ व अभयदान दे फिरउसी को बधकरना यह बड़ा भारी हमको पाप होता हे सुग्रीव हम लक्ष्मण व बर बर्णिनी सीताजी ३५ ये सब तुम्हारे अधीनहैं क्योंकि इसबनमेंहम लोगोंके रक्षकआपही हैं तिससे हे बानर अबकी फिरजायलड़ो कुछभीशंका न करो ३६ चलो

इसी मुहूर्त में समर में पहुंचतेही पहुंचते हमारे एकही बाण से मरेहुये बाली को भूमि में लोटतेही देखोगे ३७ पर हेबानरेश्वर अपने अंग में कोई चिह्नबनायलो जिससे हम तुमको द्वन्द्वयुद्ध में लड़ते जानलें ३८ हे लक्ष्मण यह शुभ लक्षण फुलानी गजपुष्पी इन महात्मा सुग्रीवके गले में पहिनादो ३९ यह सुन लक्ष्मणजी ने पर्व्वत के किनारे जमी हजारों फूलोंकी गजपुष्पी ले महात्मा सुग्रीव के गले में पहिनाय दी ४० कण्ठ में परी उस लतासे श्रीमान् सुग्रीव बगुलों की पांति से शोभित सन्ध्याकाल के बादर के समान शोभित हुये ४१ शरीर से शोभायमान व श्री रामचन्द्र जी के वचन से एकाग्र चित्त हो रामचन्द्र जी के साथ सुग्रीव बालि पालित किष्किन्धा नगरी को गये ४२ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेकिष्किन्धाकाण्डेद्वादशस्सर्ग्गः १२ ॥

धर्म्मात्मा श्री रामचन्द्रजी सुग्रीवकेसाथ ऋष्यमूकपर्व्वतपरसेवालि के पराक्रमसे पालित किष्किन्धापुरीको गये १ सुवर्ण भूषित महा धनुष व सूर्य्य समानप्रकाशित रणकर्म्मके साधक बाणले रामचन्द्रजी २ आगे आगे चले व तिन महात्मा श्रीरामचन्द्रजीके पीछे लक्ष्मणके कन्धे पर हाथधरे महाबली सुग्रीव चले ३ इनकेपीछे हनुमान वीर व वीर्य्यवान नल नील व महातेजस्वी तार नामचले ये चारोबानर सुग्रीवजीकेमन्त्री व सेनापति थे ४ ये सब बीर मार्ग्ग मेंफूलों से झुके वृक्ष व साफजल बहनेवाली नदियां व तड़ाग देखते जातेथे ५ व कन्दरा पर्व्वत झरना गुहा शिखर व प्रियदर्शनदरी देखते ६ व वैदूर्य्यमणि समान स्वच्छजल बहते कमल फुलाने मार्ग्गमें बड़ेबड़े तालाव देखते जाते ७ इनतड़ागों में कारण्ड सारस हंस वंजुल जलकुक्कुट चक्रवाक आदिपक्षी बोलरहेथे ८ व बनस्थलियों में कोमल घास व अंकुर चरनेवाले निर्भय बनमें रहने वाले हरण बैठेदेखते ९ व तड़ागों के बैरी उजले दांतोंसे बिभूषित घोर रूप अकेले चरनेवाले नदियों के कूल गिरानेवाले बनके हाथीभी देखते जाते १० व मतवाले पर्व्वतों के किनारे किलकिलाते चर पर्व्वताकार हाथियों के समान व पृथिवी की धूलिउड़ाते बानरभी देखते जाते ११ बनमें इनको छोड़ औरभी बनेचर आकाश में चरनेवाले पक्षियों को

देखते देखाते सुग्रीव के पक्षी ये सबलोग चलेजाते १२ ये सबलोग बड़े बेग से चलेजातेथे कि मार्ग्ग में एकवृक्षों का झुण्ड देखपरा वहदेख श्रीरामचन्द्रजी सुग्रीव से बोले १३ कि यहवृक्षों का झुण्ड आकाश में मेघके समान प्रकाशित होताहै इसके चारोंओर से केलालगे हैं मानों बादरों के समूह हैं १४ इससे यह क्या है हमको इसके जानने की इच्छाहै यहइच्छा हमतुमसे सुनदूरकियाचाहते हैं १५ तिनमहात्मा राघवजी के बचनसुन मार्ग्गमें चलत चलते सुग्रीव उस बन का हाल कहने लगे १६ हे रामचन्द्रजी श्रमनाशने वाला उद्यान बनसंयुक्तस्वादुमूल फलजल सहित बड़ाभारी यह आश्रम १७ जो देखाई देताहै इसपरबड़े जितेन्द्रिय नीचेको शिरकिये रात्रिदिन जलमें रहनेवाले सप्तजन नाम सातमुनि रहतेथे १८ येलोग सातवें दिन केवल बायु पीतेथे व अचलवास करते इसतरह सातसौ वर्षतक यहां तपस्याकर सहित शरीर स्वर्ग्ग को चलेगये १९ तिन्हींलोगों के प्रभाव से इस आश्रम के चारोंओर वृक्षों का घेराबना है इसआश्रम पै इन्द्रादि देवता व दैत्य कोईआयकुछ बिघ्ननहीं करसक्ते २० न आयही सक्ते इसस्थान पै पक्षी वा अन्यबनचारी कोईनहीं आते कदाचित् मोहकेमारे कोई यहां चलेजाते हैं तोफिर लौटते नहीं २१ यहां भूषणों के शब्द सुनाई दियां करते हैं तबलों की गमक व गीतभी सुनाई देती व दिव्यगन्ध भी आया करता है २२ तीन अग्निभी यहां बराकरते हैं देखिये कबूतर के रंगका अरुण बन भर में धुआंछाय रहाहै २३ धुआं लगनेसे ये वृक्ष बादरों से घिरेहुये वैदूर्य्यमणि के पर्व्वतों के समान प्रकाशित होतेहैं २४ इससे हेराघव अपने भाई लक्ष्मण के साथ हाथजोर तिनमुनियों के निमित्त प्रणाम कीजिये २५ क्योंकि जोलोग तिन सिद्धमुनियों के प्रणाम करते हैं तिनके शरीरों में अशुभ नहीं रहजाता २६ तब अपने भाई लक्ष्मण सहित श्री रामचन्द्र जी ने हाथ जोर तिन मुनियों के निमित्त प्रणाम किया २७ तिसके पीछे सब लोगोंने प्रणाम किया व सब रामचन्द्रजी लक्ष्मण सुग्रीव हनुमानादि प्रसन्नमन होआगे चले २८ वेलोग उस सप्तजनाश्रम से चल बालिकी पाली किष्किन्धा पुरी में पहुंचे २९ पहुंचतेही श्रीराम लक्ष्मण सुग्रीव व सब बानर इन्द्रपुत्र

बालीकी पाली किष्किन्धापुरीमें शत्रु के मारनेके लिये अपने अपने आयुध उठाय तैयार हुये ३० ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेकिष्किन्धाकाण्डेत्रयोदशस्सर्गः १३ ॥

वे सब जन बाली की पुरी किष्किन्धा में बड़ी जल्दबाजी के साथ जाय वृक्षों के बीच में छिप बनमें छिके १ व सुग्रीव ने सब और बन में निहार बड़ा कोप किया २ व बड़े जोरसे नाद कर बालीको संग्राम करने के लिये ललकारा ऐसा शब्द किया जानों शब्द से आकाश फोरे डारतेथे ३ उस समय सुग्रीव का गर्ज्जना प्रचण्ड पवन के साथ बादरकासाथा तिसके पीछे प्रातःकाल के सूर्य्यके समान देदीप्यमान सिंह समान गति ४ सुग्रीव रामचन्द्रजी को देख बोले कि हेराम बानरों के बन्धन से घिरी तपाये सुवर्ण से भूषित ५ पताका विजय यन्त्र युक्त बालि की पुरी किष्किन्धा में हम लोग पहुंचे हे बीर पूर्व्व समय बालि के मारने के लिये आपने जो प्रतिज्ञा कीथी ६ उसको पूर्ण कीजिये जैसे फरने फूलने का समय वृक्षको फूलने फरने से पूर्ण करता है जब इस तरह सुग्रीव ने धर्म्मात्मा श्री रामचन्द्र जीसे कहा ७ तो शत्रुओंके नाश करनवाले श्री रामचन्द्रजी बोले यह गजपुष्पी पहिराय तुम्हारे अंग में जो चिह्न ८ लक्ष्मण ने बनाया है उस लता के पहिरने से तुम्हारा गल और भी शोभित होता है ९ जैसे कभी आकाशमें नक्षत्रोंकी पांति के निकट होने से सूर्य्य शोभित होतेहैं आज अभी बालीका किया बैर व भय तुमको है १० वह संग्राम में एकही बाण से हम छोड़ा देंगे केवल भ्रातरूप वह बैरी हमको देखादो ११ तो बाली माराहुआ धूलिमें लोटेगा कदाचित फिर बाली को जीता देखना १२ तोहम में दोष लगाना वा हमारी निन्दा करना तुम्हारे सामने सात साखूके वृक्ष हमने एकही बाणसे भंजन किया १३ तिससे बालीको भी रणमेंमाराही समझो हे वीर हम कभी कष्ट परनेपर भी झूठ नहीं कहते १४ क्योंकि हमको धर्म्म का बड़ा लोभ है इसीसे मिथ्यानहीं कहते हम अपनी प्रतिज्ञा सफल करेंगे तुम शोक व भ्रम छोड़ो १५ जैसे इन्द्र के भरोसे जड़हन का खेत बोयाजाता है फिर इन्द्र बरस के उसको सफल करतेहैं

तिससे हे सुग्रीव सुवर्णकी माला पहिरे बालीके गोहरानेके लिये १६ ऐसा शब्द करो जिसमें वह सुनतेही दौड़ आवे यह न समझना कि सायद अब वह न आवे नहीं जरूर आवेगा क्योंकि बिजय हेतु सदा घूमा करता व बिजये बड़ाई चाहताहै फिर कभी तुमने उसका निरादर भी नहीं कर पाया १७ इससे तुम्हारा शब्द सुनतेही बाली तुरन्त आवेगा क्योंकि उसको समर बहुत प्रिय है इसके सिवाय समरमें शत्रुओं का शब्द सुन ऐसे लोग नहीं सह सक्के १८ जो अपना वीर्य्य समझते हैं सोभी स्त्रियोंके सामने तो बिशेष कर शत्रु का शब्द लोगनहीं सहसक्के रामचन्द्र जीके वचन सुनि सुवर्ण सम पिङ्गल १६ सुग्रीव ऐसे गर्ज्जे जिससे जानों आकाश फटा जाताथा तिस शब्द से व्याकुल हो गाय बैलोंकी प्रभा जाती रही इससे सब इधर उधर भाग खड़ेहुये २० जैसे राजा की ओर से कुछ उपद्रव होनेसे कुल की स्त्रियां व्याकुल हो भागी भागी फिरतीहैं मृग गण इधर उधर भगने लगे जैसे संग्राम में मारेजाने से घोड़े भागखड़े होतेहैं २१ व क्षीण पुण्य ग्रहोंके समान पक्षी वृक्षोंपरसे भूमिमें गिर परे २२ तिसके पीछे बादर के समान गर्ज्जे फिर सुग्रीव ने शब्द किया व उनका तेजबहुतही बढ़ा जैसेपवन लगनेसे चंचल लहर हो समुद्र नाद करता है २३ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेकिष्किन्धाकाण्डेचतुर्दशस्सर्गः १४ ॥

तब महात्मा सुग्रीवजी का शब्द स्त्रियों के बीचमें बैठा बाली सुन न सह सका १ क्योंकि वह शब्द सुननेसे सब प्राणी कांप उठेथे सो उस के सुनतेही बाली का मदतो तुरन्तही नष्ट होगया पर कोप बहुत हुआ २ तिसके पीछे बाली मारे क्रोध के सुवर्ण के रंगका होगया जैसे ग्रहण के समय सूर्य्य बिना तेज के होजाते हैं ३ व मारे क्रोध के प्रज्वलित अग्नि समान नेत्र बड़े बड़े दांत निकालने से कराल रूप बाली कमल निकल गये सहित कमल नाल कुण्ड के समान प्रभाहीन होगया ४ परन्तु बड़ा भयानक व असह्य शब्द बड़े बेगसे चलने को उठ खड़ा हुआ मानों मारे बेगके पैरोंसे पृथिवी खोदेही डारताथा ५ तिसको मारे स्नेह के लपटाय व सौहृद देखाती तारा भयके मारे व्याकुलहो हित

सहित वचन बोली ६ हे वीर नदी के बेग समान बढ़ा यह क्रोध त्या-
गिये जैसे शयन से उठ प्रातःकाल लोग रात्रिकी पहिरी माला त्याग
देते हैं ७ हे वीर प्रातःकाल इस सुग्रीव से युद्ध करलेना कुछ तुम्हारा
शत्रु बड़ा प्रबलतो हईनहीं कि फिर ना जीतसकोगे व न इसमें तुम्हारी
कुछ थोरीही है ८ आपका शीघ्रही काजाना हमको नहीं अच्छा लगता
व जिस निमित्त हम रोकतीहैं उसका कारणभी बतावेंगी सुनिये ९ यह
सुग्रीवजो इस समय बड़े क्रोधसे लड़नेके लिये तुम को पुकारताहै जब
पहिले यह आया था तब तुमने ऐसा माराथाकि भागता चलागया १०
फिर तुमने इसको ऐसा पीड़ित कियाथा व निकाल दियाथा व अपनी
जान जीतानहीं छोड़ाथा व फिरभी यहआया तो इससे हमको शंका
होतीहै ११ इसके सिवाय अबकी अहंकार निश्चय व शब्द करनेमें बढ़ती
अल्पहोने का कारण नहींहै १२ जो सुग्रीव यहां फिर आया तो हम
उसको बिन सहाय का नहींसमझतीं बरन कोई बड़ाभारी उसकी सहा-
यक मिला है जिसकोपाय वह ऐसा गर्ज्जता है १३ फिर सुग्रीव
स्वभावसे निपुण व बुद्धिमान् बानर है उसने जबतक अच्छीतरह वीर्य्य
की परीक्षा न लेलीहोगी तबतक मित्रता न कीहोगी १४ हमने यहवृ-
त्तान्त पहिलेही अंगदकुमार से सुनरक्खा है वह तुमसे कहेंगी १५
यहअंगद कहीं बनके समीपतक गयाथा वहांसे हमारे पास आय सुग्रीव
का हालकहा उसनेभी दूतोंके मुखसे सुनाथा क्योंकि इसीके लिये व-
हांदूत भेजाथा १६ उसनेकहा कि अयोध्या के महाराज दशरथजी के
पुत्र बड़ेशूर व समरमें दुर्ज्जय इक्ष्वाकुवंश में उत्पन्न रामचन्द्र व लक्ष्मण
किसीकारण से बनको आये १७ आते आते बड़ेदुर्द्धर्ष दोनोंभाई सुग्रीव
को प्रिय करने के लिये ऋष्यमूकपर आये वहीरामचन्द्र रणकर्म्म करने
के लिये तुम्हारे भाईके सहायक हुयेहैं १८ येरामचन्द्रजी शत्रुओं का
बलमर्दन करने के लिये युगान्त के अग्निही के समान जानों उठेहैं व
साधुलोगों के रहने के लिये निवास वृक्षही के समान हैं दुःखीलोगों के
तो परमगति हैं १९ पीड़ितलोगों के अभय करनेवाले व यशके पात्रही
हैं महाज्ञानी महाविज्ञानी भी हैं अपने पिताकी आज्ञामें तत्पर हैं २०
जैसेसब धातुओं की खानि हिमालय है वैसेही सबगुणों की खानि ये

हैं तिससे तिनमहात्मा श्रीरामचन्द्र के साथ तुमको बिरोध करना उचित नहीं २१ क्योंकि वे रणके कर्म्मोंमें बड़ेदुर्ज्जय व अप्रमेय हैं हेशूर अब एकबात तुमसे कहती हैं कुछ तुम्हारी निन्दानहीं किया चाहतीं २२ किन्तु जो तुम्हारे हितकी बात हमकहेंगी वहसुनिये व कीजिये वहयह है कि बहुतही शीग्घ्र सुग्रीव को युवराज पदवी दीजिये २३ हेराजन् छोटे भाई से विग्रह न कीजिये व हम चाहतीहैं कि तुम्हारी व रामचन्द्रजीकी मित्रता होजाय २४ व बैर दूरसे छोड़ सुग्रीव पर तुम्हारी प्रीति चाहतीहैं क्योंकि यह सुग्रीव तुम्हारा छोटाभाई है तुम्हें इसका लालन व पालन करनाचाहिये २५ चाहे वह ऋष्यमूकपै टिकाहो चाहे यहांहो पर तुम्हारा सबतरहसे बन्धुहीहै क्योंकि पृथिवी में हम तिसके समान कोई बन्धु नहीं देखतीं २६ इससे दानमानादि सत्कार पहिले उसके संग करो फिर वह आप बैर छोड़ तुम्हारे निकट रहने लगेगा २७ बिशाल ग्रीव सुग्रीव तुम्हारा महाबन्धुहै इससे उसकेसंग भाईपन करनेके सिवायऔर कुछ न करनाचाहिये २८ जो तुमहमारा प्रियकिया चाहतेहो व हमको अपनीप्रिया जानतेहो तो हम तुम्हारा प्रियहीकरनेके लिये प्रार्थना करतीहैं हमारे वचन अच्छीतरह करो २९ आप प्रसन्नहों हम जो हित कहती हैं सुनिये इस विषयमें क्रोध न कीजिये इन्द्रसे भी अधिक तेजस्वी महाराजकुमार श्रीरामचन्द्रजीसे विग्रह न कीजिये ३०॥

दो० तारा बहुबिधि हितबचन बालिहि कहे बुझाय।
काल बिवश त्यहिनहिं रुचे मतिगत कुछ न सुझाय ॥१॥ ३१

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीये किष्किन्धाकाण्डेपंचदशस्सर्गः १५ ॥

चन्द्रसममुखी ताराने जब ऐसाकहा तो बाली उसका निरादर करबोला १ हेवराननेभला क्रोधकर गर्ज्जते इसभाई व शत्रुके बचन हमकिस कारणसे सहलें २ क्योंकि जो शूर कभी अनादरितनहीं हुये व संग्रामसे बिनाजीते नहीं लौटे उनका जोनिरादर हुआ व किसीकी कड़ीबातसहनी परी तोजानों मरनेसेभीअधिक दुःखहोचुका ३ इससे हीनग्रीव सुग्रीवका क्रोधसहित युद्धकरनेकी इच्छासे गर्ज्जना हम संग्राम में नहीं सहसक्ते ४ व हमारे निमित्त श्रीरामचंद्र जीकी ओरसे भी बिषाद न करो क्योंकिवेतो

बड़े धर्म्मज्ञ व कृतज्ञहैं पाप काहेको करेंगे ५ तुम इनसब स्त्रियों सहित लौटजाव क्यों चलीआतीहो जाव तुमने सौहृद दिखादिया व भक्तिभी कीहै६हमजाय सुग्रीवसेयुद्धकरेंगे केवल उसका अहंकारही दूरकरेंगे प्राणोंसे न मारिडारेंगे तुम यह शंका छोड़ो कि कहीं भाईको न मार डारें ७ हम इनसुग्रीव को संग्राम में जो तुम चाहतीहो कि मारे न जायँ वहीकरेंगे केवल वृक्षोंसे व मूकोंसे मारेंगे जिसमें पीड़ितहो अपनी कन्दराको चलेजायँगे ८ वह दुष्टात्मा अब हमारे अहंकारयुक्तबचन नसहैगा इससे यहां न रहसकेगा हेतारे तुमने सुग्रीवकी सहायताकी व हमको सौहृद देखाया ६ तुमको हमारे प्राणोंकी शपथहै इनस्त्रियोंके संग लौटजाव आनेका कुछ प्रयोजन नहीं हम उस अपनेभाईको समर में जीत लौट आवैंगे १० तब तारा लपटाय बालीको मिली व प्रिय बचन कहती व रोदनकरती प्रदक्षिणा करनेलगी ११ फिर मन्त्रजाननेवाली तारा बिजयकी इच्छासे स्वस्त्ययनादिमंगल पाठपढ़ शोकसंमोहितहो स्त्रियोंके संगभीतरको चलीगई १२ जबस्त्रियोंके साथतारा अपने घरको चलीगई तो क्रोधयुक्त हो सर्प्पके समान गरमी सांसलेता बाली नगरसे बाहर निकला १३ नगरसे बाहरजाय बहुत जल्दी सांसले परम वेगवान् बालीने शत्रुके देखनेकी इच्छासे सबओर नजर फैलाई १४ सुवर्णसमान रंग युद्धकरने को तैयार देदीप्यमान अग्निके समान शोभित सुग्रीवको खड़ेदेखा १५ सुग्रीवको बहुतकसे बस्त्र धारणकिये लड़नेको उद्यत खड़ेदेख बालीने बड़ा कोपकिया १६ बड़ेजोरसे मूका बांध सुग्रीवके सामने युद्ध करनेको दौरा १७ तब सुग्रीवभी बड़ीमजबूती केसाथ मूकातान सुवर्णकी मालापहिरे बालीकी ओर दौरे १८ मारेक्रोधके लालनेत्र किये संग्राम करनेमें परमचतुर व महावेगसे लड़नेकेलिये दौरेआते सुग्रीवसेबालीबोला १६ कि हमनेजो अंगुली सिकोर बड़ेवेगसे यहमूठी बांधीहै वहजैसे तुम्हारे ऊपरचलाई कि तुम्हारेप्राणहीलेजायगी २० यहसुन बड़ा क्रोधकर सुग्रीवने भी बालीसे कहा कि हमाराभी मूकातुम्हारे शिरपै परतेही प्राण हरलेगा २१ जब सुग्रीवनेभी प्रत्युत्तर दिया तो बालीने अति क्रोधकर मारे वेगसे ऊपरको उंठाय सुग्रीवके मूकामारा जिससे झरना बहते पर्व्वत के समा

सुग्रीव रुधिर उगिलने लगे २२ व सँभर कर सुग्रीव जी ने भी नि-
श्शंक हो एक साखू का वृक्ष उखाड़ बालीके ऊपर मारा उससे बाली
ऐसा व्यथित हुआ जैसे बजूके लगने से पर्व्वत व्याकुल हुये थे २३
साखूके लगनेसे विह्वल व अंगभंग बाली ऐसा घबड़ाया जैसे बड़ेभार
से बोझीनाव सहित मल्लाह घबड़ा जातीहै २४ ये दोनों बड़े विक्रमी
गरुड़ सम वेगवाले बड़े युद्ध करनेवाले अतिघोर शरीरधारी लड़ने के
समय आकाश में सूर्य्य चन्द्रमा के समान शोभितहुये २५ ये दोनोंपर-
स्पर अपने अपने शत्रुओं के मारने में तत्पर व एक दूसरेका दोष ढूंढ़ता
था लड़ते लड़ते बलबीर्य्य सहित बालीतो बढ़ा २६ व महावीर्य्य सूर्य्य
पुत्र सुग्रीव हीन परगये बालीने इनका अहंकार तोड़डाला अब सुग्रीव
का बिक्रम बनाय कम होगया २७ पर श्रीरामचन्द्रजीके देखानेकेलिये
बालीके ऊपर बड़ाकोप किया व जरमूड़से वृक्ष उखार उखार पर्व्वतके
शिखरले ले व बजू सम नखों से २८ मूका जांघ चरण बाहु आदि-
कोंसे फिर लड़ने लगे बालीभी इनसब चीजोंसे लड़ता था इससे तिन
दोनोंका युद्ध इन्द्र व वृत्रासुरके युद्धके समान संग्राममें हुआ २९ यहां
तक कि दोनों बनचारी वानरोंके देहसे रुधिर बहाचलाजाताथा परबरा-
बरलड़तेजातेथे व मेघोंके समान परस्परदोनों गर्ज्जतेथे ३० इतनेमें रा-
मचन्द्रजी ने दूरसेदेखा कि सुग्रीव का बल बहुत कम होगया है इससे
बार बार सब दिशों की ओर निहारते जातेहैं ३१ महातेजस्वी श्रीराम
चन्द्रजी ने जब जाना कि अब सुग्रीव बहुत पीड़ित हैं तो बालीके मारने
की इच्छासे बाणकी ओर निहारा ३२ व बिषधर सर्प्प समान बाणध-
नुष पर चढ़ाय धनुषको शब्दित किया जैसे यमराज काल चक्रकोझंका-
रते हैं ३३ तिनकी प्रत्यंचा की झंकारसे भयभीत हो पक्षी व्हांसे उड़
भागे व मृगगण भाग खड़ेहुये उन्होंने जाना कि प्रलयका समय आय
गया ३४ व बजूके सम शब्दायमान व देदीप्यमान बजूहीके समान रा-
मचन्द्रजी का छोड़ा बाणजाय बालीकी छातीमें लगा ३५ तबतिसबाण
के लगने से महातेजस्वी महा वीर्य्यवान् बाली पृथ्वी में गिरपरा ३६
गिरने के समय ऐसा कांपा था जैसे क्वारकी पौर्णमासी को पूजाके पीछे
इन्द्रध्वज गिरता है गिरतेही बाली के प्राण निकलने लगे बिलकुल

मूर्च्छित होगया ३७ बाणके मारे कंठ रुकगया धीरेधीरे आर्त्तस्वरकरने लगा ३८ नरों में उत्तम श्रीरामचन्द्रजी ने युगान्तक कालके समानकांचन भूषित उत्तम बाण बालीकेऊपर छोड़ा जैसे महादेवजी देदीप्यमान शत्रुमर्दनकारी सहित धुआं अग्निमुखसे छोड़तेहैं ३९ ॥

कुण्डलिका ॥

शोणित उक्षित गातगत चेतन बासव पूत ।
समरभूमिब्याकुलगिर्‍योसबविधिसोंमजबूत ॥
सबविधिसोंमजबूत यथापुष्पित अशोकतरु ।
पवनवेगहत गिरततथासोगिर्‍यो धरणिपरु ॥
अरुजिमि आश्विन मास इन्द्रध्वजहू गिरुमोहित ॥
तिमिबाली तहँगिर्‍यो युगत बहुबिधिपयशोणित ११४० ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेकिष्किन्धाकाण्डेषोड़शस्सर्गः १६ ॥

जब रामचन्द्रजीने बाणमारातो रणकर्म्ममें बड़ाकर्कश बालीकटेवृक्षके समान अरण्यपृथ्वीमें गिरपरा १ गिरने पर सुवर्णके भूषणों से भूषित बालीके सब अंगभूमिमें लगगये जैसे रस्सी छोड़देनेसे इन्द्रध्वजगिरता है २ वानरोंके राजा बालीके गिरनेकेसमय पृथ्वीनहीं शोभितहोती थी जैसे बिना चन्द्रमा का आकाशनहींशोभितहोता ३ भूमि मेंगिरपरने पर भी तिस महात्मा बालीकी देहकीशोभा नहीं गई न प्राण गये न तेज न पराक्रम ४क्योंकि इन्द्रकी दीहुई सुवर्णकी माला बाली धारणकिये था वही उस वानरश्रेष्ठके प्राण तेज व शोभाको धारण कराये रही ५ तिस सुवर्णकीमालासे वहवानरराज संध्यासमयके मेघकेसमान शोभितहोता था ६ गिरा भी परा बालीथा पर उसकी माला व देह व मर्म्मस्थानघाती वहबाण ऐसे शोभित होतेथे मानों लक्ष्मी तीन रूप धारणकियेशोभित होतीथी ७ तिन वीर शिरोमणि श्रीरामचन्द्रजीके धनुषसे छुटे व बालीको स्वर्गमार्ग पहुंचानेवाले उस अस्त्रने बालीको परमधाम पहुंचानेकी इच्छाकी ८ संग्राममें दीप्तिरहित अग्निके समान पतित व पुण्यके अंत में देवलोक से ययातिके समान गिरे ९ व युगान्तसमयकालसे गिराये भूमिमें परे सूर्य्यके समान इन्द्रसम दुर्द्धर्ष बामनसम दुस्सह १० चौड़ा

छातीवाले महाबाहु प्रसन्नमुख पीलेनेत्रवाले सुवर्ण की माला पहिरे इंद्रके पुत्र बाली को ११ श्रीरामचन्द्र जी देख उसके निकट पहुंचे व तिस वीरको बुझी आगके समान पतित १२ बहुत माननेके योग्य अति वीर धीरे धीरे देखते बालीके रामचन्द्र व लक्ष्मणजी दोनोंभाई समीप गये १३ तिन श्रीरामचन्द्रजी व लक्ष्मणजीको आयेदेख नम्र धर्म्मयुक्त व कठोर वचन १४ भूमिमें लोटता अल्पतेज अल्पप्राणवाली अहङ्कार रहित श्रीरामचन्द्रजीसे अहंकारयुक्त बोला १५ कि हम आपसे युद्धनहीं करतेथे हमको मार आपने कौन गुण पाया जोकि केवल सुग्रीवसेही लड़तेथे पर आपने मारडाला १६ सबलोग आपको महाकुलीन प्राकृत विलक्षण सत्वगुणसम्पन्न महातेजस्वी वेद कर्म्मकारीकरुणाकर प्रजाओं के हितमें निरत १७ दयावान् अति प्रशंसनीय समय जाननेवाले व सत्यसंकल्प कहते हैं यह आपका यश भूतल में छाय रहाहै १८ हे राजन् दम शम क्षमा धर्म्म धृति सत्व पराक्रम वा पापकारियों को दण्ड भी देना ये सब राजाओंके गुणहैं १९ आपमें ये सबगुणजान व मुख्यकर महाकुलीनता समझ हम ताराके रोकनेपर भी सुग्रीवके साथ युद्ध करनेको यहां आये २० कि अन्य के साथ लड़ने की इच्छा किये प्रमत्त हमको श्रीरामचन्द्र निरपराध कभी न मारेंगे यह हमारी बुद्धिमें आया कि उनके तो हमको दर्शनहीं न होंगे काहेको हमें मारेंगे २१ पर हम तुमको नहीं जानतेथे कि तुम हमको मारनेवाले धर्म्मध्वज अधार्म्मिक व पाप समाचारी हो केवल तृणसे ढकेहुये अंधकूपके समान हो २२ व हम तुमको नहीं जानते कि तुम सज्जनोंका वेषधारणकिये महापापी ढँकेहुये अग्निके समान धर्म्म के ओढ़र से छिपेहो २३ जो हम तुम्हारे राज्यमें वा तुम्हारे पुरमें पाप करते होते तो तुम हमको मारते अब नहीं जानते कि क्यों निरपराधी हमको मारते हो २४ न कुछ तुम्हारालेयँ न देयँ फल मूल भोजन करते नित्यही वनमें घूमते व सुग्रीव से लड़ते तुमसे लड़ते भी न थे फिरतुमने क्यों हमको मारा २५ हे रामचन्द्रतुम महाराज दशरथजीके पुत्रहो इसीसे विश्वासकरने के योग्यहो व प्रिय दर्शनहो व तुम्हारा चिह्न भी ऐसाही है कि धर्म्मके सिवाय कभी अधर्म्म न करते होंगे २६ क्षत्रियके कुलमें उत्पन्न सकलशास्त्र पढ़े लिखे

सुने संशयरहित व धर्म्मबोधक वाक्यों के आधीन ऐसा कौनपुरुषहै जो क्रूरकर्म्म करै २७ हेराम राजकुल में उत्पन्नहो धर्म्मवान् करके प्रसिद्ध अचिन्त्यनीय प्रभाव सुग्रीवके संगक्योंवनमें फिरतेहो २८ हेराजन्साम दान क्षमा धर्म्म सत्य धारणाशक्ति पराक्रम व अपकारी पुरुषोंको दण्ड भी देना राजाओं के यही गुणहैं २९ हेरामचन्द्र हम लोग मूल फल भक्षण करनेवाले वनके रहनेवाले मृगहैं यही हमलोगोंकी प्रकृति है व तुम पुरुष तिसमें राजेश्वरहो ३० जोकहिये कि जब हम राजाठहरे तो सर्व्वत्र हमारे नियम प्रचलित होनेचाहिये सो यहबातनहींहै क्यों कि भूमि सुवर्ण चांदी यही तीन पदार्त्थ राजाके नियमों के कारणहैं इन तीनोंमेंसे वनमें तुम्हारी कौन वस्तुहै जिसका तुमको लोभहै यहां तो फलही फलहैं सो वे हमलोग वनचारियों केहैं ३१ राजाओंकी चारवृत्तियां हैं १ यथोचितआज्ञादेना २ विनय ३ अनुग्रह ४ निग्रह इनके सिवाय राजालोग स्वेच्छाचारी नहींहोते कि जब जोचाहें तबसो करैं ३२ पर तुम यथेच्छाचारी अनुचित कोपकारी व चंचल चित्तहो इसीसे राजाओंके वृत्तमें विपरीत वृत्तिहो इसीसे सदा धनुषलियेरहते जोवधके योग्य भी नहींहोते उनका वध करते हो ३३ हे मनुजेश्वर धर्म्ममें तुम्हारी बुद्धि नहींहै वरन अर्थमें तुम्हारी बुद्धि टिकीहै व सब इन्द्रियां तुम्हारी स्वेच्छाचारी हैं इसीसे उनके वशीभूत सबकहीं खिंचे फिरतेहो ३४ हेराम निरपराधी हमको बाणसे मार ऐसा निन्दित कर्म्म तुमसज्जनों के बीचमें क्या कहोगे ३५ क्योंकि राजा मारनेवाला ब्राह्मणहननेवाला गायबैल मारडारनेवाले चोर प्राणियों के वधमें सदा निपुण नास्तिक व जो बड़ेभाईका बिवाह बिनाहुये अपना बिवाह करताहै जिसे परिवेत्ता कहतेहैं ये सब नरकगामी होतेहैं ३६ ऐसेही चुगुल कादर मित्रमारनेवाला गुरुकी शय्यापर बैठनेवाला येभीपापात्माओंके लोकको जातेहैं इसमें सन्देहनहीं ३७ जो कहिये कि शिकारखेलने में मृगोंका बधकरना राजाओंका धर्म्महै सोभीनहीं तुम्हारे सदृश धर्म्मचारी सज्जनलोग न तो बानरका चर्म्मधारण करते न रोम न हाड़ भी अपने किसी काममें लगातेहैं मांसभी जानों हमलोगोंका अभक्ष्यही होता ३८ क्योंकि हेराघव ब्राह्मण क्षत्रियभी जो मांस

भक्षणकरें तो वे पंचनख वाले पशुओं मेंसे पांचही का भक्षण करसक्तेहैं औरोंका नहीं वे येहैं गैड़ा साही गोह खरगोश व कछुहा ३९ हेरामहमारा चमड़ा व हाड़ बुद्धिमान् लोगनहीं छूते व मांसजानों अभक्ष्यही है तिसपर भी मुझ पंचनखवाले पशु को तुमने मारडारा ४० क्याकहें सर्व्वज्ञातारने हमारे हित व सत्यबचन कहाथा परमारे मोहके उसके बचनका निरादर कर यहां तुम्हारे बिश्वास पर चलेआये उसका फल यहहुआ कि कालके बशको पहुंचे ४१ हेराम तुमको नाथपाय पृथ्वी न सनाथ होगी जैसे शील सम्पन्न स्त्री धर्म्मरहित पुरुष को पायनहीं सनाथहोती ४२ महात्मा महाराज दशरथजीसे शठ अपकारी नीचकर्म्मकारी मिथ्या नम्रचित्त व पापी तुम कैसे उत्पन्नहुये ४३ छिन्नसदाचार मर्य्याद व सज्जनों के धर्म्मके उल्लंघन करनेवाले व धर्म्मांकुश त्यागनेवाले हाथी रूपरामचन्द्र से हम मारेगये ४४ भला जब तुम सज्जनों की समाज में बैठोगे इसतरहका अशुभ अयोग्य सब सज्जनों केबीचमें निन्दित जो कर्म्म तुमने कियाहै कहोगे ४५ हेराम हमलोगोंके ऊपर जो न तुम्हारा भला चाहतेथे न बुरा तुमने अपना बिक्रम प्रकाशित किया परजो तुम्हारे अपकारी रावणादिहैं उनके ऊपर कुछभी बिक्रम नहीं देखते ४६ हेराजपुत्र जो संग्राम में हमारे सामने खड़ेहो युद्ध करते तो अभी हमसे मारेहुये यमराज देवको देखते ४७ तुमने अदृश्यहो मुझ ऐसे बीरको माराहै जैसे कोईमनुष्य मदिरापान किये अचेत सोताहो उस बेचारे को चुप्पे सर्प्प काटखाय ४८ व जोतुमने सुग्रीवका प्रियकरने केलिये व अपनी स्त्री प्राप्तहोने के लिये हमको मारा तोपहिले हमींसे यह प्रयोजन सिद्ध करनेके लिये कहाहोता ४९ तो संग्राम में बिना मारेही उस दुराचारी तुम्हारी भार्य्या हरनेवाले रावणको गलेमेंरस्सी से बांध पकड़ तुम्हारे हवाले करदेते५० चाहे मैथिली को कोई समुद्रके जलके भीतर लुकाय रखता वा पाताल कोलेजाता तोभी तुम्हारीआज्ञा से आनदेते जैसे मधुकैटभ दैत्योंकी हरी हुई शुक्ल यजुर्व्वेद की श्रुति हयग्रीव जी पातालसे लायेथे ५१ हमारे मरणे के पीछे जो सुग्रीवराज्य पावेंगे यह तो योग्यही है परजो तुमने हमको संग्राममें अधर्म्म से मारा वह अयोग्यहै ५२ व हमको क्या बहुतअच्छा हमारीतरह सबकुछ भरेपुरे

में व संग्राम में सबका मरण होतो योग्यही है क्या बातहै परन्तु जब तुमसेलोगपूछेंगे कि तुमने बाली को क्यों मारा तो इसकाउत्तर देनेके लिये कोई योग्य प्रत्युत्तर अभी से ढूंढ़ रखिये ५३ ॥

दो० इमि कहि सुष्कित मुख बचन शर पीड़ित हरिपूत॥
रबिसम तेज सुराम लखि मूक भयहु अनुभूत १ । ५४

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेकिष्किन्धाकाण्डेसप्तदशस्सर्गः १७॥

इसैतरह अचेत व मारेहुये बाली ने रामचन्द्रजी से नम्र धर्म्म अर्थ काम सहित हित व कठोरवचन कहे १ तिस बानरश्रेष्ठ को प्रभा रहित सूर्य्य के समान व जलरहित बादर के समान व बुझीआग के सदृश वचन कह चुप हुये २ व धर्म्म अर्थ गुण सम्पन्न उत्तम बानर-राज बाली से यद्यपि उसने दुर्ब्बचन कहेथे तथापिश्रीरामचन्द्रजी बोले ३ कि धर्म्म अर्थ काम व लौकिक समय बिना जाने अनरपन से हम को इस समय कैसे नींदतेहो ४ बिना बुद्धिमान् वृद्धि आचार्य्यों से पूंछे तुम बानर की चंचलता से हमसे ऐसा कहाचाहते हो ५ यह जितनी पृथ्वी है सब इक्ष्वाकुबंशी राजाओं कीहै पर्ब्बत समुद्र बन सहित कहीं अन्य किसी का राज्य नहीं इससे जितने मृगपक्षी आदि जीव हें उनके ऊपर अनुग्रहकरने व दण्डदेने का अधिकार उन्हीं इ-क्ष्वाकुबंशी राजाओं कोही है ६ आजकल इक्ष्वाकुबंशी राजाओं मेंसे धर्म्मात्मा सत्यवादी सरलचित्त धर्म्म कर्म्म अर्थ के जाननेवाले व सबके अनुग्रहकरने व दण्ड देने के लिये भरत राजा हैं ७ इन भ-रत जीमें नीति नम्रता व बिक्रम सत्य ये सब अच्छी तरह टिके हैं वे सब देश काल की बातें जानते हैं ८ तिन्ही के धर्म्म के अनुसा आज्ञासे हमलोग व अन्य राजा लोग धर्म्म बढ़ाने की इच्छा से सं-म्पूर्ण पृथिवी में बिचरतेहैं ९ तिन नृपतिशार्दूल धर्म्म वत्सल भरतजी के संपूर्ण पृथिवी पालन करने के समय ऐसा कौन है जो बिप्रिय करे १० ते हम सब लोग अपने परम धर्म्म में टिक जो लोग मार्ग्ग छोड़ कुपंथ में चलते उनको यथाबिधि भरत की आज्ञा के अनुसार चिन्तन करते हैं ११ तुम कामाधीनों में प्रधान व राज मार्ग्गसे बिपरीतचलने

वाले वा विवाधित धर्म्म हो इन सब कर्म्मों से अति निन्दित हो १२
धर्म्म मार्ग्ग में चलने वाले पुरुष के ज्येष्ठ भाई पिता व जो विद्या पढ़ा-
वे ये तीनों पिता के तुल्य हैं १३ व अपनासे छोटाभाई पुत्र व गुणवान्
शिष्य ये पुत्र के समान समझे जानें चाहिये इस विषय में धर्म्म कारण
है १४ हे बानर सज्जनों का धर्म्म बड़ा सूक्ष्म है उसको सब प्राणियों
के हृदय में टिका आत्मा जानता है कि इसमें क्या शुभ है क्या अशुभ
है १५ तुम चंचलअजितेन्द्रिय बानरोंके साथ बैठने उठने से चंचल
होगये हो इसीसे जन्मान्धों के साथ सम्मति लेनेसे जैसेपुरुष जन्मा-
न्धही रहता वैसे इन अविचारी चंचलोंके संग तुमभी वैसेहीहोगये १६
हमतुम्हारी चंचलता प्रकट करनेवाले इस वचन का अभिप्राय अच्छी-
तरह कहते हैं केवल रोषही से तुम हमारी निन्दा न करो १७ जिस
लिये हमने तुमको मारा है उसका कारण देखो सनातन धर्म्म को
छोड़ तुम अपने छोटे भाई की स्त्री के संग विहार करते हो १८
तुम इसमहात्मा सुग्रीव के जीतेही जीते इसकी स्त्री रुमाके संग जो तु-
म्हारी पतोहूके समानहै मैथुन करनेलगे यह बड़ाभारी पापकिया १९
हेवानर जिससे तुम धर्म्मरहित होगये अपने मनमाना काम करनेलगे
जीतेहुये छोटेभाई की स्त्रीको ग्रहण करलिया इससे तुमको हमने यह
दण्डदिया २० हे वानरेश श्रेष्ठजनोंके व्यवहारसे बाहर लोक विरुद्ध
कर्म्म करनेवाले पुरुषका प्रायश्चित्त दण्डके सिवाय और हमकुछ नहीं
देखते २१ हमक्षत्रिय हैं फिरकुलीन इससे तुम्हारा पाप नहीं सहते कि
तुमजाय यमदण्डसे शुद्धहोते हमने यहीदण्डसे शुद्ध करदिया २२ जो
अपनी सगीबहिन वा छोटेभाई की स्त्रीके संग अपने मनसे जायभोग
करताहै उसके लिये मारही डारना दण्डहै औरकुछ नहीं २३ आजकल
भरतजी तोराजाहैं व हमलोग उनके आज्ञाकारी फिर धर्म्मकी मर्य्यादा
उल्लंघन करने वाले तुमको बिना दण्ड दिये कैसे छोड़दें २४ क्योंकि
जो धर्म्मसे प्रजापालन करता वह गुरुधर्म्मसे विरुद्ध कर्म्म करनेवाले
को अवश्य दण्ड देताहै २५ भरतराजा यथेच्छाचारी लोगों कोदण्ड
देदिलाय शुद्धकरते हैं हमलोगभी यद्यपि भरतकी आज्ञासे बनकोनहीं
आये तथापि उनके राज्यमेंकोई विघ्न न होनेपावें इसलिये दुष्टोंको दण्ड

देते हैं २६ जैसे लक्ष्मणसे हमसे मित्रताहै वैसेही सुग्रीव से इससे सुग्रीव अपनी स्त्री व राज्य पानेके लिये हमारी सेवामें आयेहैं २७ व उनके आगे हमप्रतिज्ञाभी करचुके कि बाली को मारडारेंगे फिर हम ऐसे सत्यप्रतिज्ञ लोग प्रतिका पालन कैसे न करें २८ तिससे इनसब कारणों से धर्म्मानुगामी महात्मा हमसब लोगोंने जोतुम्हारे योग्यथा वह दण्डदिया इससे तुमभी इसको उचितही समझो २९ क्योंकि सर्व्वथा प्रायश्चित्त करनाहीं तुम्हारे लिये धर्म्महै व मित्रका उपकार करनाभी धर्म्मधारी पुरुषका कामहै ३० वह मित्रोपकार धर्म्मानुवर्त्ती होनेपर तुमको भी करना कराना उचितहै क्योंकि हमने तुम्हारे संग मित्रताही कीहै जो दण्डदे पापसे छुड़ाया ३१ इसविषय में मनुजीने भी दोश्लोक लिखे हैं जोऐसे चरितोंके ऊपर बड़ेवत्सलहैं उनको सबधर्म्म कुशल लोगोंने ग्रहण कियाहै इसीसे उन्हींके अनुसार हमने भी कियाहै ३२॥

वेश्लोकयेहैं ॥

राजभिर्धृतदण्डाश्चकृत्वापापानिमानवाः ॥ निर्म्मलास्स्वर्ग्गमायांतिसन्तस्सुकृतिनोयथा १ शासनाद्वापिमोक्षाद्वास्तेनहपापात्प्रमुच्यते॥ राजात्वशासन्पापस्यतदावाप्नोतिकिल्विषम् २ ॥

अर्थात्॥ मनुष्य पाप करके जब राजाओंकी ओरसे दण्ड पायजातेहैं तो निर्म्मलहो जिनलोकोंको सज्जन पुण्यात्मालोग जातेहैं उन्हींको वेभी जातेहैं १ व पापीचोर दण्ड पानेसे ब्राह्मणहुये तो देशसे निकाल देने से उसपापसे छूटजातेहैं व जो राजा दण्ड्यको दण्डनहींदेता तो उसपापका दोषउसीराजाहीको मिलताहै २ ॥

जिस तरहका पाप तुमने किया है तिसी तरहका श्रमण नाम ए पुरुष ने कियाथा तब हमारे पूर्व्वज मान्धाताजी ने उसको बड़ाघो दुःख दियाथा ३३ औरभी प्रमत्त लोगोंने बहुत पाप किये हैं उनक भी राजा लोगों ने दण्डदे शुद्धकिया है व जो गुरूलोग हैं जिनको राज को दण्ड देनेका अधिकार नहीं वे लोग पापकर फिरगायत्र्यादि जप करप्रायश्चित्त करतेहैं तबउनका पाप मिटताहै ३४ तिससे हेवानरशार्दूल अबपरिताप करनेका कुछ प्रयोजन नहीं हमने धर्म्मही से तुम्हारा व कियाहै क्याकरें हमलोग धर्म्मके अधीनहैं अपने वश में नहीं हैं ३

हेवानरश्रेष्ठ औरभी कारण अपनेबधका सुनियेव सुनबड़ा क्रोधन कीजिये
३६ हे वानरराज तिस बिषय में न हमारे मन को तापही होता न कुछ
क्रोधही होता जोकि लोग जाल फांशी व विविधप्रकार के कपट
कर३७छिपकर वा प्रसिद्धहोदौरतेहुये वा डरेहुये वा बिश्वस्त वा बैठेहुये
बहुत मृगोंको पकड़ते हैं ३८ व ओराजालोग प्रमत्त वा अप्रमत्त दुष्टमृगों
को बनमें मारते हैं उसमेंभी मनुष्य के मारने के समान पापनहीं होता
यदिमांस के अर्थ मारते हैं तो जो यज्ञकेलिये मारें तो कुछभी दोषनहीं
३९ क्योंकि बड़ेबड़े धर्म्मशास्त्र जाननेवाले सबराजर्षि लोग शिकार
खेलते चलेआये हैं उनको कुछभी दोषनहीं हुआ क्योंकि प्रायः उनलोगों
ने सिंह व्याघ्रादि दुष्टमृगों को मारा सो तो अन्य निर्व्वल मनुष्य गाय
शशकआदि जीवोंकी रक्षाके लिये व जोअन्य हरिणादिकों कोमारा तो
यज्ञके लिये तिसीसे प्रमत्तजान हमनेभी तुमको बाणसे मारा कि जबतक
तुमरहोगे पापही करते रहोगे जल्दी पापकरने से छुट्टीपावो ४० चाहे
तुम हमसे लड़तेथे वा सुग्रीवसे बानर तोथेही मृगोंमें तुमभी तोहो ४१
हे बानरश्रेष्ठ दुर्ल्लभ पदार्त्थ धर्म्म प्राण व शुभ राजालोग ये सब प-
दार्त्थ दे सक्तेहैं इसमें कुछभी सन्देहनहीं ४२ येराजालोग देवताहैं यहां
मनुष्योंकारूप धारणकिये भूतलमें घूमतेहैं इनको न तो मारना चाहिये
न नींदना न झुंठाना न अप्रियबोलना ४३ परंतु तुम बिनाधर्म्मजाने
केवल रोषमेंआय पिता पितामहादिकोंके धर्म्ममेंटिके हमको दूषितकरते
हो ४४ जब रामचन्द्रजीने ऐसाकहा तो बाली अपने मनमें बहुतदुःखित
हुआ व रामचन्द्रजीमें उस विषयमें कुछ दोष न समझा क्योंकि धर्म्ममें
उसने निश्चयकिया ४५ व वह वानरेश्वर हाथजोर श्रीरामचन्द्रजी से
बोला कि हे नरश्रेष्ठ जैसा आपनेकहा वह वैसाहीहै कुछभी संशय नहीं
है ४६ परउत्कृष्ट पुरुष के आगे नीचपुरुष बोलभी नहींसक्ता तो स्तुति
कैसेकरसकै हेराघव मारेप्रमादके जो अप्रिय बचन आपसे कहेथे ४७
उनमेंभी हमारादोष आप न समझिये क्षमाकीजिये क्योंकि आप सबके
अन्तःकरणकी बात जानतेहैं व प्रजाओंके हितकरनेमें निरतहैं ४८ व
कार्य्य कारणके विषयमें आपकी बुद्धि नाशरहितहै हे धर्म्मज्ञ इससे
धर्म्मसे बाहर महा अधर्म्मात्मा हमारी पालना धर्म्मयुक्त बाणीसे

कीजिये ४६ इतनाकह बालीके मारेप्रेमके आंशु बहनेलगेकण्ठरुँकगया फिर अति दुःखितशब्दसे धीरेमें रामचन्द्रजीको देख बोला जैसे दलदल में फँसाहाथी दीन होजाताहै वैसेही बाली ५० हे रामचन्द्र नतो में अपने आत्माको कुछ शोचकरूं न ताराको न बान्धवको जैसा कि सुवर्णकाबजुल्ला पहिरे अभी बालक ज्येष्ठपुत्र अङ्गदकोशोचताहूं ५१ क्योंकि वह हमको बिनादेखे दीनबालक कि बाल्यावस्था से जिसका लालन पालन में करतारहा जलपान कियेहुये तड़ागके समान सूखजायगा ५२ क्योंकि अभी बालकहै इसीसे बुद्धिभी उसमें नहींहै व मेरा अकेलाही पुत्रहै इससे और अधिक प्रियहै सोभीताराका पुत्रहै व महाबलवान्है आप इसकी रक्षाकीजिये ५३ सुग्रीव व इस अङ्गदके विषयमें उत्तममति रखियेगा क्योंकि आप कार्य्य अकार्य्यके विषयमें सबके शिक्षकहैं व सबके रक्षकहैं इससे इनको विशेष रीतिसे पालते व सिखाते रहियेगा ५४ हेराजन् जो आपकी प्रीति भरत व लक्ष्मणमेंहै वही सुग्रीव व अंगदमें कीजिये ५५ व हमारेही दोषोंसे बेचारी तपस्विनी ताराभी दोषयुक्त समझीजायगी वास्तवमें इसविषयमें उसका कुछदोष नहींहै इसलिये आप ऐसाकीजियेगा कि जिसमें सुग्रीव उसबेचारीका अपमान न करे ५६ हेराम जोतुम्हारी आज्ञाके अनुसार कामकरे व तुम्हारेचित्तका अनुयायीहो व तुम उसके ऊपर अनुग्रहकरो तोवह पृथ्वीमण्डलका राज्य करसक्ता ५७ व स्वर्गकाभी राज्य करसक्ताहै इस तुच्छराज्य की कौन बात है हे रामचन्द्र कल्याणसागर हमको ताराने यहां आनेको बहुततरह समझाय बुझाय रोंकाभीथा परहम आपके हाथोंसे अपना बधचहते ५८ अपने भाई सुग्रीव के साथ द्वन्द्वयुद्ध करनेको आये इतनाकह बानरोंका राजाबाली चुपरहा ५९ तबतिस ब्रह्मज्ञानी बालीको धर्म्मार्थ युक्त साधु सम्मत बाणीसे श्रीरामचन्द्रजी समझाने लगे ६० हे बानरसत्तम आपहमलोगों को न चिन्तना करें न अब अपनाहीं को शोचें क्योंकि हमलोग आपसे विशेष धर्म्मशास्त्रानुसार चलने में निश्चय किये हैं ६१ जोदण्ड्य को दण्डदेता व जोदण्ड्य दण्डपाताहै कार्य्यकारणकी सिद्धि मेंवे दोनों कष्टित नहींहोते ६२ तिससे आप हमसे दण्डपाय अवपापरहित होगये इसीसे अपनीधर्म्मकी प्रकृति को प्राप्तहुये क्योंकि दण्ड

आपको मार्ग्ग देखादिया सीधे साकेतलोक को चले जाइये ६३ हे बानर श्रेष्ठ हृदयमें टिके शोक मोह व भयछोड़ो तुमने जो बिचारकियाहै उसका उल्लंघन कोई न करैगा ६४ क्योंकि जो भाव तुम अंगद में रखतेहो वहीउसमें सुग्रीव रखते हैं व वहीहम इसमें कुछभी सन्देहन जानना ६५ तिनमहात्मा धर्म्म मार्ग्गानुगामी व एखमें दुष्टों को मर्द्दन करने-वाले श्रीरामचन्द्रजीके सावधान वचन अपने योग्यसुन बालीबोला६६॥

हरिगीतिका ॥

शरतप्त चेतन हीनदीन अजान में प्रभुको कह्यौं।
जो सकल अनुचित रामसब गुणधाम निजमन सौं वह्यौं॥
सो क्षमहु इन्द्र समान विक्रम भीम विक्रम हौ सही।
ममविनय वशसर्व्वज्ञ करुणा यतन हौ तोयौंकही १। ६७

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेकिष्किन्धाकाण्डेऽष्टादशस्सर्ग्गः १८॥

रामचन्द्रजी के बाणोंसे पीड़ित धरणी में परा बानरों का महाराज बाली रामचन्द्रजी के सकरुणा वचनसुन फिर कुछभी उत्तर न देसका १ क्योंकि प्रथम तो सुग्रीव ने पत्थरों से माराथा इससे उसकेअङ्ग अंग-भङ्ग हो गयेथे फिरवृक्षों से भी मारागयाथा पीछेजानों रामचन्द्रजी के बाणोंसे मारागया इससे प्राणान्त समयबहुत मोहित हुआ २ तिसबा-नरश्रेष्ठबाली को उसकीस्त्री तारानें सुना किसंग्राम में श्रीरामचन्द्रजी के छोड़ेबाणों से मारागया ३ पतिका अतिदारुण बधसुन अपने पुत्रसहित तारा किष्किन्धानगर से अतिउद्विग्न होचली ४ व जो अङ्गदकेरक्षाकरने वाले महाबलवान् बानरथे श्रीरामचन्द्रजी को धनुर्व्बाण धारण किये देखभागखड़ेहुये ५ तारानेयूथप मारजानेकेपीछेभागे मृगोंकेसमान भय-भीत भागतेचलेआतेबानरोंको देखा ६व उनके निकट जाय रामचन्द्रजी के भयसे व्याकुलमानों उनके भी बाणलगेहीथे इससे अतिदुःखितथे आपभी दुःखितहो उनसेबोली ७ हेबानरो जिस राजसिंहबाली के तुम लोग अगुआथे तिसकोछोड़ व्याकुलहो कैसेभागे जातेहो ८ जो राज्यके हेतु सुग्रीवने अपने भाईकोरामचन्द्रसे दूरसे लगनेवाले बाणोंसे मरवाया तो तुम क्यों भागेजातेहो सुग्रीवहीकी सेवा क्यों न करनेलगे ९ बानरकी

कीजिये ४९ इतनाकह बालीके मारेप्रेमके आंशु बहनेलगेकण्ठरुँकगया फिर अति दुःखितशब्दसे धीरेसें रामचन्द्रजीको देख बोला जैसे दलदल में फँसाहाथी दीन होजाताहै वैसेही बाली ५० हे रामचन्द्र नतो मैं अपने आत्माको कुछ शोचकरूं न ताराको न बान्धवको जैसा कि सुवर्ण कावजुल्ला पहिरें अभी बालक ज्येष्ठपुत्र अङ्गदकोशोचताहूं ५१ क्योंकि वह हमको बिनादेखे दीनबालक कि बाल्यावस्था से जिसका लालन पालन में करतारहा जलपान कियेहुये तड़ागके समान सूखजायगा ५२ क्योंकि अभी बालकहै इसीसे बुद्धिभी उसमें नहींहै व मेरा अकेलाही पुत्रहै इससे और अधिक प्रियहै सोभीताराका पुत्रहै व महाबलवानहै आप इसकी रक्षाकीजिये ५३ सुग्रीव व इस अङ्गदके विषयमें उत्तममति रखियेगा क्योंकि आप कार्य्य अकार्य्यके विषयमें सबके शिक्षकहैं व सबके रक्षकहैं इससे इनको विशेष रीतिसे पालते व सिखाते रहियेगा ५४ हेराजन् जो आपकी प्रीति भरत व लक्ष्मणमेंहै वही सुग्रीव व अंगदमें कीजिये ५५ व हमारेही दोषोंसे बेचारी तपस्विनी ताराभी दोषयुक्त समझीजायगी वास्तवमें इसविषयमें उसका कुछदोष नहींहै इसलिये आप ऐसाकीजियेगा कि जिसमें सुग्रीव उसबेचारीका अपमान न करें ५६ हेराम जोतुम्हारी आज्ञाके अनुसार कामकरे व तुम्हारेचित्तका अनुयायीहो व तुम उसके ऊपर अनुग्रहकरो तोवह पृथ्वीमण्डलका राज्य करसक्ता ५७ व स्वर्गकाभी राज्य करसक्ताहै इस तुच्छराज्य की कौन बात है हे रामचन्द्र करुणासागर हमको ताराने यहां आनेको बहुततरह समझाय बुझाय रोंकाभीथा परहम आपके हाथोंसे अपना बधचहते ५८ अपने भाई सुग्रीव के साथ द्वन्द्वयुद्ध करनेको आये इतनाकह बानरोंका राजाबाली चुपरहा ५९ तबतिस ज्ञानी बालीको धर्म्मार्थ युक्त साधु सम्मत बाणीसे श्रीरामचन्द्रजी समझाने लगे ६० हे बानरसत्तम आपहमलोगों को न चिन्तना करें न अब अपनाहीं को शोचें क्योंकि हमलोग आपसे विशेष धर्म्मशास्त्रानुसार चलने में निश्चय किये हैं ६१ जोदण्ड्य को दण्डदेता व जोदण्ड्य दण्डपाताहै कार्य्यकारणकी सिद्धि मेंवे दोनों कष्टित नहींहोते ६२ तिससे आप हमसे दण्डपाय अबपाप रहित होगये इसीसे अपनीधर्म्मकी प्रकृति को प्राप्तहुये क्योंकि दण्डने

आपको मार्ग्ग देखादिया सीधे साकेतलोक को चले जाइये ६३ हे बानर श्रेष्ठ हृदयमें टिके शोक मोह व भयछोड़ो तुमने जो बिचारकियाहै उसका उल्लंघन कोई न करैगा ६४ क्योंकि जो भाव तुम अंगद में रखतेहो वहीउसमें सुग्रीव रखते हैं व वहीहम इसमें कुछभी सन्देहन जानना ६५ तिनमहात्मा धर्म्म मार्ग्गानुगामी व रणमें दुष्टो को मर्द्दन करने-वाले श्रीरामचन्द्रजीके सावधान बचन अपने योग्यसुन बालीबोला६६॥

हरिगीतिका ॥

शरतप्त चेतन हीनदीन अजान में प्रभुको कह्यों ।
जो सकल अनुचित रामसब गुणधाम निजमन सों दह्यों ॥
सो क्षमहु इन्द्र समान बिक्रम भीम बिक्रम हौ सही ।
ममबिनय बशसर्व्वज्ञ करुणा यतन हौ तोयोंकही १ । ६७

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेकिष्किन्धाकाण्डेऽष्टादशस्सर्ग्गः १८॥

रामचन्द्रजी के बाणोंसे पीड़ित धरणी में परा बानरों का महाराज बाली रामचन्द्रजी के सकरुण बचनसुन फिर कुछभी उत्तर न देसका १ क्योंकि प्रथम तो सुग्रीव ने पत्थरों से माराथा इससे उसकेअङ्ग अंग-भङ्ग हो गयेथे फिरवृक्षों से भी मारागयाथा पीछेजानो रामचन्द्रजी के बाणोंसे मारागया इससे प्राणान्त समयबहुत मोहित हुआ २ तिसबा-नरश्रेष्ठबाली को उसकीस्त्री ताराने सुना किसंग्राम में श्रीरामचन्द्रजी के छोड़ेबाणों से मारागया ३ पतिका अतिदारुण बधसुन अपने पुत्रसहित तारा किष्किन्धानगर से अतिउद्विग्न होचली ४ व जो अङ्गदकेरक्षाकरने वाले महाबलवान् बानरथे श्रीरामचन्द्रजी को धनुर्व्बाण धारण किये देखभागखड़ेहुये ५ ताराने यूथप मारजानेकेपीछेभागे मृगोंकेसमान भय-भीत भागतेचलेआतेबानरोंको देखा ६व उनके निकट जाय रामचन्द्रजी के भयसे व्याकुलमानों उनके भी बाणलगेहीथे इससे अतिदुःखितथे आपभी दुःखितहो उनसेबोली ७ हेबानरो जिस राजसिंहबाली के तुम लोग अगुआथे तिसकोछोड़ व्याकुलहो कैसेभागे जातेहो ८ जो राज्यके हेतु सुग्रीवने अपने भाईको रामचन्द्रसे दूरसे लगनेवाले बाणोंसे मरवाया तो तुम क्यों भागेजातेहो सुग्रीवहीकी सेवा क्यों न करनेलगे ९ बानरकी

स्त्री ताराके वचनसुन कामरूपी सब वानर काल प्राप्तिबोधक वचनतिस तारासेबोले १० कि काल अब रामका रूपधारणकर वालीकोअपनेलोक कोलियेजाताहै तुम्हारे पुत्रतो जीताहीहै अब इसअंगदकीरक्षाकरो ११ क्योंकि बाली भी बड़े बड़े वृक्ष उखाड़ उखाड़ व बहुत शिला उठाय उठाय शत्रुको मारते रहे परन्तु इन्द्रसम विक्रमी रामचन्द्रजी ने बाण से उनको मारडारा १२ जब इन्द्रसम पराक्रमी बानरशार्दूल बाली मारगया तो यह सबसेना भी रामचन्द्रजीके भयसे भाग खड़ीहुई १३ अब शूरबीर वानरों से किष्किन्धापुरी की रक्षा कराइये व अंगद को राज्यसिंहासन पै बैठाइये जब बाली के पुत्र ये अंगद राज गद्दीपर बैठेंगे तो सब वानर इन्हींकी सेवा करेंगे १४ अथवायह किष्किन्धा पुरी का स्थान तुमको न अच्छालगे तो अभी सब वानर किष्किन्धा के दुर्गम स्थानों में चलेजायँ १५ चाहे स्त्री सहित हों वा बिना स्त्रीके अभी सब चलेजायँगे क्योंकि जो लोग आयेहैं उनसे हम लोगोंने बड़ा छल कियाहै इससे वे हमारा धनादि लेना चाहेंगे इससे उन लोगों से हम लोगों को बड़ा भयहै १६ कुछदूर आगे खड़े उन वानरों के वचन सुन तारा अपने योग्य वचन बोली १७ कि जब बानरसिंह महाभाग हमारा स्वामीही मारगया तो पुत्रराज्य व देहले हमको क्याकरनाहै १८ हम उन्हीं महात्मा अपने पति के चरण शरण को जायँगी जोरामचन्द्र जीके बाणोंसे मारेगयेहैं १९ इतनाकह शोकके मारे मूर्च्छित रोदन करती हाथोंसे शिर व छाती पीटती तारा दौरी २० व दौड़ती दौड़ती आय उसने भूमिमें परे व संग्राम से न भागनेवाले दैत्येन्द्रों को मारने वाले २१ व जैसे इन्द्र बज्रों को फेंकते हैं वैसेही पर्व्वतेन्द्रों को उखाड़ दूर फेंकनेवाले व प्रचण्ड पवन युक्त मेघोंके समूह के समान शब्द करनेवाले २२ व इन्द्र समान पराक्रमी व वृष्टिके पीछेगर्ज्जते मेघोंके समान वानरेन्द्रों के बीचमें भयानक गर्ज्जनेवाले व शूर व शूरश्री रामचन्द्रजी से गिराये २३ व मांसके लिये सिंहके मारेहुये हाथी के समान पतित व सबलोक से पूजित पताका व वेदी सहित २४ सर्प्पों के हेतु गरुड़ से विध्वंसित देवालय के समान स्थित अपने पतिकोदेखा २५ व उसी स्थानपै धनुष की रोदा चढ़ाये श्रीरामचन्द्रजी व लक्ष्मण

जी व अपने पतिके भाई सुग्रीवको भी देखा २६ पर इन सबको नाघ रणमें हत परे अपने पतिको देख व्यथित उद्विग्न हो गिरपरी २७ व झटपट सोतीही सी फिर उठ हे आर्य्य पुत्र ऐसाकह पति को मृत्युकी फांशीमें बँधादेख रोदन करने लगी २८ ॥

दो० त्यहि कुररी सम रोवती अरु अंगदहि निहारि ॥
दुःखित भेसुग्रीव अति बचन न सकत उचारि १ । २६

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेकिष्किन्धाकाण्डेएकोनबिंशस्सर्गः १६ ॥

श्रीरामचन्द्रजी के धन्वासेछूटे प्राणान्तकारक बाणके लगनेसे मरे भूमिमें परे बालीअपने पतिको चन्द्रमुखी तारा १ हाथीकेसमानपरा देख लपटाय अच्छीतरह से मिली २ व फिर पर्व्वतेन्द्र के समान दीप्ति-मान् वानर को उखड़े वृक्ष के समान परादेख बिलाप करनेलगी ३ हे रणमें दारुण बिक्रान्त करनेवाले बड़े उत्साह वाले हे वानरश्रेष्ठ आगे बैठी हमसे क्योंनहीं बोलते ४ हे वानरशार्दूल उठो उत्तम शय्या पै शयन करो तुम ऐसे राजश्रेष्ठ इसतरह की निखरहरी भूमिमें नहीं सोते ५ हे पृथ्वीनाथ तुमको पृथ्वी अतीव प्यारी थी इससे मरनेपरभी हमको छोड़ गात्रोंसे तिसको सेवते हो ६ हे बीर हमने जानलिया कि तुम यहां धर्म्मशास्त्रानुसारही चलते थे इससे किष्किन्धापुरीही के समान दूसरी अति रम्यपुरी स्वर्ग्ग के मार्ग्गमें तुमने बसाय लिया है ७ हमने जो जो बिहार बसन्त के कारण सुगन्धित बनों में आपके साथ किया इस समय तिन सबको आपने निवृत्त करदिया ८ व महा यूथपों केयूथप आपके मरजाने से हम निरानन्द व निराश हो शोकसागर में डूबली हैं ६ हमारा हृदय बड़ा कड़ाहै जो आपको भूमिमें परे देख मारे शोकके सन्तप्त हो फटकर सहस्र टुकड़े नहीं होजाता १० तुमने जो सुग्रीवकी भार्य्या लेली व उनको राज्यसे निकाल दिया तिसी कर्म्मका यह फल पायाहै ११ हेवानरेन्द्र तुम्हारा हितचाहनेवाली हमने तुम्हारे हित वचन कहे व सदा तुम्हारा कल्याणही चाहती थीं पर तुमनेमारे मोहके हमारी निन्दाकी कहा न माना १२ हे मानद हम निश्चय जानतीहैं कि रूप व यौवनसे मदान्ध व परम चतुर अप्सराओंके चित्त

तुम वहां जाय मथोगे १३ जिस कालने तुमको जबरदस्ती सुग्रीव के वश करदिया व तुम्हारे प्राण हरलिये वह काल निश्चयहै १४ सुग्रीव से युद्धकरते बाली को स्त्रियोंके बीचसे बुलवाय जो रामचन्द्रजीने मारा यह निन्दित कर्म्म कर अब पश्चात्ताप नहीं करते यह बड़े सन्देह की बातहै १५ पूर्व्वकालमें सुखके योग्य व उदार मति हम अनाथ के समान शोक सन्तापयुक्त वैधव्य भोगेंगी १६ भला हमारी तो जो दशा होगी सो होहीगी यह लालित पालित व सुकुमार अंगदवीर जो सदा सुखही भोगने के लायक है मारे क्रोधके मूर्च्छित अपने चचा सुग्रीवको पाय किस अवस्थाको पहुंचैगा १७ हे पुत्र धर्म्मवत्सल अपने पिताको अच्छीतरह निहारलो क्योंकि हे वत्स फिर तुमको इनके दर्शन दुर्ल्लभ होजायँगे १८ हे स्वामिन् जिससे अब तुम महाबिदेश को जाते हो इससे हमारेपुत्र अंगदका शिरसूंघ जो इसके करनेके योग्यहै आज्ञा दीजिये १९ तुमको मार रामचन्द्र ने बड़ा भारी कर्म्म किया क्योंकि जो बरदान सुग्रीव को दिया था उससे उरिण हुये २० हे सुग्रीव तुम सकाम होवो अपनी स्त्री रुमाको मिलो व निस्सन्देह हो राज्य भोगो क्योंकि तुम्हारा भाई शत्रुथा उसे तुमनें मरवाडाला २१ हेवानरेश्वर ऐसा बकतीहुई हमसे तुम क्यों नहीं बोलते हमको न सही तुम्हारी ये बहुतसी स्त्रियां खड़ी हैं भला इन्हीं को देखो २२ ताराका रोदन सुन सब ओरसे अंगद कोप कर सब बालीकी स्त्रियां मारे दुःख के पीड़ित बड़े जोरसे चिल्लाय चिल्लाय बिलाप करनेलगीं २३ हे प्रियपुत्र हे वीर हे महाबाहो क्या इस अंगद को छोड़ महाविदेश में बसा चाहते हो यहतो योग्य नहीं कि गुण सीखने के समीप पहुंचे पुत्रको छोड़चले जावो २४ हेवीर जो कुछ हमने बिना जाने तुम्हारा अप्रिय किया हो तोहेवानरवंशनाथ क्षमाकरो हम तुम्हारे चरणोंपर माथ धरतीहैं २५ ॥

कुंडलिका ॥

तारा सब बानरिन युत रोवत करुण पुकारि ।
पति समीप बैठी खड़ी लोटत करत गुहारि ॥
लोटत करत गुहारि हारि सब बिधिसों सोई ।
बालिनिकट करिनियम मरणहितब्याकुलहोई ॥

रिपुहु न नींद्यहु ताहि देखि जो नेह पसारा ।
सब विधिदीन मलीनतहां फिरिरोवत तारा १ । २६

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेकिष्किन्धाकाण्डेविंशस्सर्ग्गः २० ॥

तिसके पीछे आकाशसे गिरी ताराकेसमान ताराको भूमिमें परीरोती देख वानरों के यूथाधिप हनुमान्जी धीरासे समझाने लगे १ कि यह जन्तु गुणदोष सहित जैसे कर्म्म फल पानेके हेतुकरताहै मरनेपर जबरदस्ती अपने कर्म्मके अनुसार शुभ वा अशुभ भोगता है २ तुमको यह तो विदितही नहीं कि आगे अब क्या होगा इससे शोच करने के योग्य हो अरे यह शोच करने योग्य कौन है जिसको तुम शोचती हो व दीन हो किस दीन के ऊपर दया करतीहो इस संसार में बुल्ला के समान नश्वर देह पाय कोई किसीका शोच्य नहींहै केवल अपनाहीको शोचनाचाहिये ३ अब तुमको चाहिये कि इस अंगदकुमार को देखो व इसकी रक्षाकरो व जो कार्य्य आगेको इसके लिये अच्छे हों उनकी चिन्तना करो ४ तुम अच्छीतरह जानती हो कि प्राणियों की आनेकी गति नहीं जानपरती कि कहांसे हुई व न जानेही की गति जानपरती है इससेजैसे मरण के पीछे रोदन करना धर्म्म इसलोक का था सोतो किया अब परलोक केलिये भी जो उचितहै करो क्योंकि तुम सबतरह से चतुर हो ५ जिस बाली के समीप अर्ब्बुदों बानर प्रेरणापाय अपना अपनाकार्य्य करतेथे वह बाली अब अपने पूर्व्व कर्म्मके अनुसार इसगति को पहुंचा ६ जिससे कि यह बाली न्यायशास्त्र केअर्थ के देखने से साम दान क्षमा आदि गुणोंमें तत्पर होने के कारण धर्म्मवानों के प्राप्त होने वाली भूमिको गया इससे तुम इसका शोच न करो ७ हे अनिन्दिते ये सबबानर,तुम्हारा पुत्र अंगद बानरों व ऋक्षोंके पति का राज्य इनसबको तुम्ही सनाथ करनेवालीहो ८ तिससे अब शोक व सन्तापको तो दूर करो इसअंगदको ग्रहणकरो जिसमें तुम्हारे ग्रहण करनेसे यहपृथ्वीका राजा हो ९ तुम्हारे पुत्र विद्यमान है किसी बातकी शंका नहीं अब इससमय जो कृत्य राजा के लियेकर्त्तव्य है करो क्योंकि इससमयके जो योग्य है उसी के करनेसे ठीक होगा १० अब बानरराज बाली के तो दग्धादि

संस्कारकरो व अंगद का अभिषेक तबपुत्रको सिंहासनपर बैठादेखशान्त होजावोगी ११ पति के दुःखसे पीड़ित तारा हनुमानजी के वचन सुन तिसका उत्तर देने लगी १२ कि एक ओर अंगद के समान सौपुत्र हों व एक ओर मारे हुये भी इन वीर बाली के अंगो का लपटना हो तो पुत्रों के सुख से यह मृतकपति के अंगों का लपटना श्रेष्ठ है १३ न हम वानरराज के संस्कारही करने में समर्त्थ हैं न अंगद को राज्यही देने में किन्तु इन सबकार्य्यों के करने में अंगद के पितृव्य सुग्रीवही समर्त्थ हैं जो चाहेंगे आप करेंगे १४ हे हनुमन् अंगद में यह बुद्धि न स्थापित करना कि माताही पुत्र का बन्धु है पिता वा पितृव्य नहीं यही बुद्धि स्थापित कराना कि पिता वा पितृव्य भी अवश्य पुत्र के बन्धुहैं फिरजो ऐसा है तो सब सुग्रीवही करेंगे हमारे करनेकी कुछ भी आवश्यकता नहीं १५ इस लोक में व परलोक में चाहे जहां हो हमको वानर राज के आश्रित रहने के सिवाय और कुछ सुखदायक नहीं इससे संग्राम में सम्मुख मरेहुये इन प्राणपतिहीके शयनका सेवन हमकोयोग्यहै १६ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेकिष्किन्धाकाण्डेएकविंशस्सर्गः २१॥

बाली के प्राण तो जानों बनाय शिथिल होहीगये थे ऊर्ध्वी श्वासले व सबओर निहार पहिले अपने छोटेभाई सुग्रीवकी ओर निहारा १ व प्राप्त बिजय सुग्रीव से स्नेह सहितबोल उनको अपनी ओर करबाली बोला २ हे सुग्रीव हमारे दोषोंको स्मरण कर जोकि हमने तुमको निकाल दियाथा अब इससमय व आगेभी हमारी निन्दा न करना क्योंकि हम अब जबरदस्ती तुम्हारे बश में परे हैं किन्तु अब हमसे बैर भाव न रखना ३ हे तात ब्रह्माने एकहीसंग हमको व तुमको सुख भोगना नहीं लिखाथा इसीसे भाइयों का स्नेह हममें तुम में न रहा उसके विपरीत बैर रहा ४ तुम अभी इन वानरों का राज्य पाय हमको भी यमपुर को गयेही समझो अब कुछदेरनहीं है ५ अब हम इसी समय प्राण राज्य व बिपुल लक्ष्मी व अनिन्दितयश सब छोड़ते हैं ६ हे राजन् सुग्रीव इसअवस्था में जो वचन हमतुमसे कहें चाहे करनेमें कठिन भी होतो तुमको अवश्य करना चाहिये ७ सुखकेयोग्य व सुखहीसे बढ़े व बड़े

पण्डित रोदन करतेहुये इसअंगद बालकको देखो ८ व हमारेप्राणों से अधिक प्रियतर इस हमारेपुत्रकी अपने औरसपुत्रके समानहमारे न होने पर सब पदार्थ देसब ओरसे इसकोपालना ६ क्योंकि हेवानरेश्वर जैसे हम इसकेपिता दाता व सबकहीं से रक्षक व भयों में अभय देनेवाले थे तैसेही तुमहौ क्योंकि पिता व पितृव्यमें कुछ अन्तरनहीं होता १० यहतारा का पुत्र श्रीमानङ्गद पराक्रम में तुम्हारेही तुल्य है राक्षसों के मारने के समय तुम्हारे आगे आगे चलेगा ११ क्योंकि यहतारा का पुत्रहै जबरण में पहुँचेगा तो महातेजस्वी तरुण व बलवान् होने के कारण हमारे तुल्यकाम करेगा १२ व यहसुषेण की कन्यातारा सूक्ष्म अर्थोंके विनिश्चय करने में जोकि बहुधा उत्पातों के कर्म्मों में विविध प्रकार के होते हैं उनके विचार करनेमें बड़ीनिपुणहै १३ जिसकार्य्य को यह अच्छा कहे निस्सन्देह तुमउसे करना क्योंकि ताराकामत अन्यथा कभीनहींहोता १४ व श्रीरामचन्द्रका कार्य्यतुम सबकार्य्य छोड़निश्शङ्कहो करना क्योंकि जो न करोगे तो एकतो अधर्म्म होगा दूसरे फिर जैसे इनका अपमान हुआ तैसेही तुमको मारभी डारेंगे १५ हे सुग्रीव यह सुवर्ण की माला इन्द्रकी दीहुई हमारे गलेसे निकालतुम अभी धारण करलो क्योंकि इसमाला को जो धारण करता है उसको विजयादि लक्ष्मी मिलती हैं व जबहममरजायँगे तो मुर्दाके छूजानेके कारण इसकीश्रीजाती रहेगी इससे अभी धारण करने को कहतेहैं १६ जबभाई के सौहृद से बालीने सुग्रीव से ऐसाकहा तो राज्यपाने व शत्रुमारजाने का जोहर्षथा वहछोड़ सुग्रीव ग्रहण लगेहुये चंद्रमा के समान दुःखित होगये १७ व बालीके बचनसे शांतचित्तहो रोदन करतेहुये स्वस्थचित्त कर बालीकी आज्ञासे वहकाञ्चन की माला ग्रहण किया १८ इन्द्र की दी हुई कांचन की माला सुग्रीवकोदे देखा तो अंगद खड़ेथे परलोक जानेके लियेतयार बाली स्नेह से अंगद से बोला १६ कि तुम प्रिय वा अप्रिय वचन तुल्य मानो सुख दुःख दोनों सहो व देशकाल दोनों विचारो व इस समय सुग्रीव के बशहोवो २० क्योंकि अब तक जिसतरह हमतुम्हारा लालन पालन तुम्हारे अपराध करनेपर भीक- रतेथे जोतुम वैसेही अपराध करोगे तो सुग्रीव तुम्हारा पालन उसतरह

न करेंगे २१ इन सुग्रीव के जो शत्रुहों उनके संग न बैठना उठना न उनके शत्रुओं से मित्रताकरना व जितेन्द्रियहो अपनेस्वामी सुग्रीव का प्रयोजन सिद्धिकरते उनके बशहोवो २२ न तो इनसे अतिस्नेह करना न बैर क्योंकि येदोनों महादोषहैं तिससे मध्यमरीतिसे रहना २३ इतना कहबाली शरकी व्यथासे अतिपीड़ित हुआ नेत्र घूमनेलगे दांतनिकल आये मुख फैलउठा बनाय प्राण निकरनेही लगे बोलबंद होगया २४ तबवानरों के स्वामी बाली की यहदशा देख सबबानर चिल्लाय उठे व हूहमार रोदन करनेलगे २५ कि अबआज बानरों के राजाबाली के स्वर्गजाने से किष्किन्धानगरी शून्यहुई सब फुलवाड़ियां व पर्व्वत व बनभी शून्य होगये २६ इन बानरराज बाली के मरने से बानर प्रभा हीन होगये क्योंकि जिन बालीके महाबेग से सबछोटे छोटे बन व बड़े बड़े बन यहांसबऋतुओं में फूलाफरा करतेथे वहअब किसका प्रताप कर सकेगा २७ जिसबाली ने महाबाहु महात्मा गोलभनाम गन्धर्व्व के साथ १५ वर्षतक महायुद्ध किया २८ न वहयुद्ध रात्रिको कभी बन्दहुआ न दिनको तबसोलहयें बर्षगोलभ मारागया २९ तिसदुष्ट को मार महा कराल दांतवाले बालीने हमलोगों को सबसे अभय करदिया वहबाली कैसेमारा गया ३० जब बीर बानरों का राजा बाली मारागया तब बनेचरों ने कल्याण न पाया जैसेगायोंके रक्षक के मारजानेपर सिंहयुक्त महावन में बनकी रहनेवाली गायेंनहीं सुखपातीं ३१ तिसके पीछे मरे पतिका मुखदेख दुःखके समुद्र में डूबीतारा बालीको पकर भूमिमें गिरपरी जैसेबड़े वृक्षपर चढ़ीलता वृक्षके कटनेपर उसीकेसाथ गिरती है ३२ ॥

इत्यार्षेरामायणेबाल्मीकीयेकिष्किन्धाकाण्डेद्वाविंशस्सर्ग्गः २२ ॥

तिसके पीछे बानरराज अपने पतिका मुख चूंबती लोक में प्रसिद्ध तारा मरेपतिसे बोली १ हेबीर बड़े दुःखकी बातहै हमारा कहा तुमने न किया इससे अब पत्थरयुक्त अतिदुःखदायक विषम महीतल पर शयन करतेहो २ हे बानरेन्द्र हमसे भी तुमको पृथिवी अधिकप्यारीहै तिससे तिसको छपटे सोयरहेहो व हमसे नहीं बोलते ३ हे वीरसाहसिकप्रिय जो सुग्रीव तुमसे कईबारहारा अब तुम उसीके बशहुये विधिबड़ा बल-

वान्है जो चाहै सो करै ४ ये ऋक्ष बानरों में मुख्य २ तुमको बलीजान सेवतेथे तिनका महादुःखसे विलाप व शोचते अंगद का रोदन ५ व हमारी यह बाणीसुन तुम क्यों नहीं जागतेहे वीर जिसपर तुमसंग्राम में मारेहुये सोतेहा यह वह स्थानहै ६ जहां आगे तुमने शत्रुओंको मार सोवाया था हे विशुद्ध बलवाले लोगोंको प्रिययुद्ध करनेवाले व हमारे प्रिय ७ हमको बिनासहाय छोड़ तुमचलेगये हे मानदेनेवाले भाई जाननेवाले पुरुषको चाहिये कि शूरको अपनी कन्या न दे ८ क्योंकि हम शूरहीकी भार्य्याहैं जो तुरंतही विधवा हो मारीगईं देखो हमारामान भी भग्नहोगया व निरंतर सुखकी गति भी भग्नहोगई ९ इसीसे अगाध व बड़ेभारी शोकसागरमें हम डूबतीहैं हमारा यह हृदय अवश्य पत्थर के सारसेबना है १० इसीसे पतिको मृतकदेख इसके सौ टुकड़ेनहीं हो गये सुहृद व भर्त्ता फिर प्रकृतिसे हमको प्रिय ११ संग्राममें बड़े बलवान् शूरसो भी मृत्युबशहुये जो स्त्री पतिहीनहोतीहै चाहे उसके पुत्र भी होंतो भी वह १२ बिधवाही कहातीहै चाहे धनधान्ययुक्त भी हो हेवीर अपनेहीं अङ्गोंसे उत्पन्न रुधिर मण्डल में सोतेहो १३ मानों वीरबहूटी के रङ्ग सदृश रङ्गवाले अपने शयनही परसोतेहो हे वानरेश्वर सब ओरसे धूलि व रुधिर लगेहुये तुम्हारे अङ्गोंको १४ हम अपने भुजोंसे लपटनहीं सक्ती इस अति दारुण वैरमें सुग्रीव कृतार्त्थहुये १५ जिसका भय रामचन्द्र के एकही बाणके चलने से जातारहा हम तुमको हृदय में लगेहुये बाणसे तुम्हारे अंगछू १६ तुमको मृतकदेख रोकतीहैं तारा ऐसारोदन करतीही रही कि वालीके देहसे वह नीलरंगका बाण निकला १७ जैसे पर्व्वतके गह्वरसे विषधरसर्प्प निकलताहै उस बाणके निकलने के समय भी दीप्तिशोभितहुई १८ जैसे अस्ताचल पर्व्वत के ऊपर सूर्य्य से निकली प्रभाशोभित होतीहै तिसके पीछे वालीके सब घावोंसे रुधिर की धाराबही १९ जैसे पर्व्वत परसे गेरूमें लगकर बहतीहुई जलधारा निकलती है रणकी धूलिसे भरेपतिको २० नयन के जलसे ताराधोवने लगी व सर्व्वांग में रुधिर लगे मृतकपतिकोदेख २१ तारा अपनेपुत्र अंगदसे बोली हे पुत्र अपने पिताकी अंतकालकी अतिदारुण अवस्था देखो २२ जो जबरदस्ती बैर इन्होंने किया उसकर्म्म का फल यही

हुआ हे पुत्र प्रातःकालके सूर्य्यकेसमान ज्वलित शरीर व यमपुरकोजाते अपने पिताको देखो २३ व मानदेनेवाले इनके प्रणामकरो ताराके ऐसे वचन सुन अंगदने पिताके चरणपकरे २४ व दोनों मोटेगोले भुजोंसे चरणपकर कहा मैं अंगदहूं जैसे आगप्रणाम करने पर कहतेथे २५ कि हेपुत्र चिरंजीवीहो वैसेही अबक्यों नहींकहते सिंहसेमारेहुये बैलकोसब-त्सागायके समान मरेहुयेतुमको पुत्रसहित हमसेवतीहैं २६ संग्रामयज्ञ में देवताओं की पूजाकर रामचन्द्र प्रहरणरूप जलसे हमारेसाथ ग्रन्थि बंधन बिनाकिये आपने कैसे यज्ञान्त स्नानकिया २७ संग्राम में तुम्हारे ऊपर संतुष्ट हो इंद्रने जो सुवर्णकी अति प्रिय माला तुमको दीथी वह तुमको इससमय पहिरे नहीं देखती इसका क्या कारणहै २८ हे मानद मरनेपरभी तुमको राजश्री नहीं छोंड़ती जैसे चारोंओर घूमतेहुये सूर्य की प्रभा सुमेरुपर्व्वत को नहीं छोंड़ती २९ ॥

कुण्डलिका ॥

मेरे हित सब बचनतुम कीन नहीं महराज ।
यासों रोंकिन सकतहम जात चले तुमआज ॥
जातचले तुमआज समरमहँ मरिहम काहीं ।
मारे पुत्र समेत बात अच्छी यहनाहीं ॥
राज्यलक्ष्मि अबतजत हमहुं को प्रियसँगतेरे ।
मान्यहु नहिं कयहु भांति नाथ हितकरवच मेरे १ । ३०

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेकिष्किन्धाकाण्डेत्रयोविंशस्सर्गः २३ ॥

बड़े दुस्सह आंशुओं के वेगके शोकसागर में डूबती ताराको देख अति बेगवान् सुग्रीव असदृश भाईके बधसे जलउठे १ व आंशु बहाते नेत्रोंसे इधर उधर देखते उदासीन हो बिलाप करते अपने सेवकों के साथ अति बेगवान सुग्रीव रामचन्द्र जी के समीप गये २ व विषकर सर्प्प समबाण सय्युंक्त धनुष धारणकिये महायशस्वी लक्ष्मण से लक्षित अंग वहां खड़े रामचन्द्रजी को देख सुग्रीव बोले ३ हे नरेन्द्र आपने जैसी प्रतिज्ञा कीथी वैसाही किया कि उसका फल हमने देखा परन्तु हे राजेन्द्रकुमार इस भाई के बधहोने से हत हो हमारामन

राज्य भोगकरनेसे निवृत्त होगया ४ इससे हेरामचन्द्रजी इसरानी तारा को पूर्व्वकालका स्मरणकर रोदन करती व मारेदुःख के पुकार पुकार भूमिमें लोटते अंगदको व राजाको मरेपरे देख हमारा मनराज्य में नहीं रमता ५ पूर्व्वकाल में भाईने जो हमारा अनादर कियाथा उसके क्रोधसे उनका बध हमारी सम्मतिसे हुआथा इसमें कुछभी सन्देहनहीं परन्तु अब उन वानरराजके मारजाने पर हेइक्ष्वाकुवर हमको बड़ाही तापहुआ ६ इससे अबहम अपना कल्याण इसीमें मानते हैं कि बहुत दिनोंतक इसी ऋष्यमूक पर्व्वत पर निवास करें जैसे कैसेबने वही अपनी पूर्व्वकी वृत्ति ग्रहण किये रहें पर बाली ऐसेभाईको मार त्रिलोकी काभी राज्य नहीं चाहते ७ हेराम इन महात्मा मतिमान् बालीने जो प्रथम हमसे कहाथा कि हम तुमको मारेंगे नहीं पर यहांसे कहीं चले जाव ये बचन उन्हीं महात्माके योग्यथे व हमारेयोग्य येबचन न थे कि हमारे भाईकोआप मारडारें व यहकर्म्म कि युद्धमें आय उनकोमरवाही डाला हम बड़ेही नीच ठहरे ८ हेराम भला महागुणवान् भाई का बध भाईको कैसे रुचै चाहेवह बड़ाही लोभीहो परजब भाईकेमारे पर मिले हुये राज्य व भाईके वधसे उत्पन्न दुःखका सारांश मनमें बिचारेगा तो कभी ऐसे राज्यकी इच्छा न करेगा ९ देखो अपने महत्व के विपरीत होनेके भयसे बालीने हमारे वधमें सम्मत न किया व हमारी बुद्धिकी ऐसी दुष्टता ठहरी कि उसने ऐसी सम्मतिदी कि जिससे भाई बालीके प्राणहीहरगये १० देखो जब आपके भेजे हमप्रथम युद्ध करने गयेथे तब बाली ने हमको वृक्षकीशाखासे माराथा कि हम बनाय अंगभंग होगये व बड़ी देरतक वहीं खड़े आपको पुकारतेरहे उस बीचमें वे चाहते तो हमको मारभी डारते परन्तु उन्होंने बहुत हमको समझाय यही कहा कि अबतुम फिर हमसेयुद्ध करने न आना ११देखो उन्होंने भायपन व श्रेष्ठ भाव व धर्म्म सबकी रक्षाकी व हमने क्रोध काम व वानरता सबउनको देखाया१२ हेसखे जैसेवृत्रासुरके मारडारनेसेइन्द्र को पाप मिलाथा उसीतरह भाईके बधसे अचिन्तनीय त्याग करने के योग्यआवांछनीय व देखनेके अयोग्य पापहमकोहुआ१३इन्द्रका वहपाप तो पृथ्वी जल वृक्ष व स्त्रियोंने ग्रहण करलिया परंतु हमारा वानर का

यह पाप कौन ग्रहण करनेकी इच्छाकरेगा १४ हेरामचन्द्र अधर्म्मयुक्त व कुलनाश युक्त इसतरहका पापकर न हम अपना यह प्रजाओंका सन्मान चाहते न युवराज पदवी फिर राज्यको कौन कहे वह तो किसीतरह हमको अंगीकार नहीं १५ इसलोकमें निन्दित नीच जनोंके योग्य व लोक भरके अपकार के मूल इस पापके कर्त्ताहमहैं इससे जैसे वर्षाका जल नीची जगहमें टिकता वैसेही यह महाशोक हममें टिका है १६ सहोदर भाईके घातही को अपनी पूंछके ऊपरके बार बनाये व बिविधप्रकारके संतापों को शूंड़ नेत्र शिर दांत बनाये पापमय यह मतवाला हाथी हमको नदीके किनारोंके समान बझेगिराये देताहै १७ हेमनुष्यश्रेष्ठ जैसे सुवर्ण अग्निमें परने से अपनी मलिन कीट सन्तप्त होनेपर त्याग देताहै तैसेही यह असह्यपाप हमारे हृदयसे साधु आचरणोंको दूर कराताहै १८ हेराघव महाबलवान् इनबानरोंके यूथपोंका यह कुल हमारे निमित्त इस अंगदके भी शोकके ताप हेतुसे आधे प्राण निकलने के समानहै यहहम मानते हैं १९ हेबीर और पुत्रका होना सुलभहै व सब सुजन अच्छीतरह बशहोसक्ते हैं पर अंगदके समान पुत्रकहांसे आवेगा व वह देशभी तो विद्यमान नहींहै जिसमें बालीऐसा सहोदर भाई सन्निकट रहताहो फिरबिना भाईका राज्य किसकामका २० आज बीरोंमें श्रेष्ठ अंगद न जियेगा व जो यह जीता रहता तो इसका पालन पोषण करनेके लिये इसकी माताभी जीतीरहती परन्तु बिना पुत्र परितापके मारे दुःखित हो इसकी माता न जीवैगी यहहमको निश्चय होताहै २१ इससे अबहम भाई व पुत्रसे मैत्री की इच्छाकर प्रज्वलित अग्निमें प्रवेश करेंगे रहा आपका कार्य्य सो येवानर हमारे आज्ञाकारी हैं सीताजीको ढूंढेंगे इसमें अन्तर न परेगा २२ हेराम हेमनुजेन्द्रपुत्र हमारे न होनेपर भी आपका सब कार्य्य सिद्ध होजायगा पर कुलके नाश करनेवाले महापापी हमारे न जीनहीसे अच्छा होगा २३ बालीके छोटे भाई सुग्रीवके ऐसे बचनसुन रघुबंशियोंमें महापराक्रमी व अन्यवीर के हननेवाले श्रीरामचन्द्रजी आँशुआय एक मुहूर्त्त भर उदासीन होगये २४ व तिसकेपीछे बारबार निहारतेहुये पृथिवी के समान क्षमा करनेवाले व त्रिलोकी के रक्षक श्रीरामचन्द्रजी दुःख

सागर में डूबीताराकेदेखनेमें उत्सुक हुये व देखाभी २५तब हनुमाना-
दि सुग्रीवके मन्त्रियोंने सुनयनी बानरसिंह बालीकोनाथपाय व पतिको
लपटाय सोती अतिदीन वानरराजकी पत्नी ताराको उठाया २६ पति
के समीप बड़े प्रेमसे लपटी सोती ताराको जब मन्त्रियों ने उठाय बड़े
कष्टसे अलग किया तो उदासीन चित्त उसने अपने तेजसे सूर्य्यके
समान देदीप्यमान श्रीरामचन्द्र जीको हाथमें धनुर्व्बाण लियेदेखा२७
तो येसब राजाओंके लक्षणोंसे संय्युक्त सुलोचन पुरुषप्रधान कि जिनको
मृगशावकनयनी ताराने कभी देखा नथा पर देखतेही उसने जानलिया
कि बस रामचन्द्रजी यहीहैं २८ तिन इन्द्रसे अधिक पराक्रमी अ-
नादर के अयोग्य महानुभाव श्रीरामचन्द्रजी के समीप अति श्रेष्ठ अति
पीड़ित महादुःखको प्राप्त हालती कांपती तारा बहुत जल्द गई २९ व
तिनप्राकृत विलक्षण पराक्रमयुक्त व रणकी उत्कर्षतासे देवादिकों के भी
दर्शनीय श्रीरामचन्द्र जीसे मारशोकके व्याकुल शरीर व मनस्विनीतारा
बोली ३० कि आपके गुणकिसीके प्रमाण करनके योग्य नहीं न कोई
आपका निरादर करसक्ता है व आप जितेन्द्रिय व सर्व्वोत्तम कर्म्मकर्त्ता
हैं व आपकी कीर्त्ति कभीक्षीण नहीं होसक्ती व सब कार्य्य करनेमें विच-
क्षण पृथिवी के समान क्षमा धारण करनेवाले व अरुणनयनहो ३१ व
आप दृढ़ गात्रों से युक्त महाबलवान धनुर्व्बाण हाथमें लिये मनुष्यदेह
के अभ्युदय करनेवाला राज्यछोड़ अपने अंगसे उत्पन्न मंगल कर्म्म
युक्तहो ३२ इससे अबआपसे प्रार्थना यहहै कि जिस बाणसे हमारे
प्राणप्रिय को माराहै उसी बाणसे हमको भी मारिये जिसमें उसीबा-
णसे मारीजाने के हेतु हमअपने इन पतिके समीपको चलीजायँ क्योंकि
हेबीर हमें बिनाबाली वहां न रमेगा ३३ हे अमलकमलदल नेत्र
स्वर्ग्ग में भी प्राप्तहो जब चारोंओर हमारा प्राणप्रिय निहारेगा व
हमको न देखेगा तोभी नानाप्रकार के पुष्पमणि मुक्तादिकोंसे बारगूंधे
उन चित्र विचित्र वेष धारणकिये अप्सराओं को वह न भजेगा ३४
हेबीर स्वर्ग्गमेंभी बिना हमारे शोक व विवर्णता बालीपावेगा जैसेर-
मणीय पर्व्वतों के तटोंके स्थानोंमेंबिना जानकीजी के तुम पातेहो ३५
तुमअच्छीतरह जानतेहो जैसे स्त्रीविहीन पुरुष दुःख पाताहै क्योंकितु-

म्हारे ऊपरभी आजकल वही दशा भोगतीहै तिससे अब जानतेही हो हमकोभी मारडारो जिसमें हमारे न देखने से उत्पन्न दुःख बाली न सेवनकरें ३६ हे मनुजेन्द्रपुत्र आप बड़ेमहात्माहैं इससे जो यहमानें कि स्त्रीकी हत्याका दोष हमको होगा तो हमको बालीका आत्माहीं समझ मारडारिये तुमको स्त्रीवधका दोष न होगा ३७ धर्म्मशास्त्रके प्रयोगसे व विविधप्रकारके वेदोंकी आज्ञासे स्त्रियां पुरुषसे भिन्ननहीं होतीं बरन पुरुषका रूपही होतीहैं व ज्ञानवानोंकेमतसेस्त्रीदानसमान औरदाननहीं देखाईदेता ३८ इससे हेबीर यहधर्म्मदेख तुमहमको जो हमारे प्रियको देदोगे तो इसदान से हमारे मारने का अधर्म्म योग तुमको न मिलेगा ३९ इससे अति पीड़ित अनाथ पतिके आलिंगन से वहिष्कृत व इस-तरह बध करनेकी प्रार्थना करती हमको न मारनेके योग्य आपनहींहैं क्योंकि हम मातंगबिलासगामी बानरश्रेष्ठ बुद्धिमान् ४० इन्द्र की दी सुवर्णकी माला पहिरे अपने प्रियवाली बिना हे नरेन्द्र बहुत समय तक नहीं जी सक्ती सबप्रकार समर्त्थ महात्मा श्रीरामचन्द्र जीसे जब तारा ने ऐसाकहा तो वे उसको समझाते हुये बोले ४१ हे वीरभार्य्ये यह मरण बिषयक कुमति न करो क्योंकि यह सब लोक ब्रह्मा का बनाया है व ब्रह्माही ने सबके लिये सुख दुःख का योग लिख दिया है यह वेद कहता है कि सब ब्रह्मानेही किया है ४२ सो तुम्हीं नहीं तीनों लोक उन ब्रह्मा के बशीभूत हैं इससे उनके किये बिधान का उल्लंघन नहीं करते इससे शोक न करो जो ब्रह्मा को करनाथा किया रहा अब निर्व्वाहको सो तुम्हारा पुत्र युवराजपदवी पावेगा तुमतिसी तरह फिर परमानन्द पाओगी व सुख भोगोगी ४३ बिधाता ने शूरोंका मरण इसीतरहसे बनायाहै इससे शूरोंकी स्त्रियां बिलापनहींकरतीं ४४ ॥

दो० राम महात्मा परतपन इमितारहि बिलपात ॥
समझायो बहुभांति सो मौन भई सुनिबात १ । ४५ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेकिष्किन्धाकांडेचतुर्व्विंशस्सर्ग्गः २४ ॥

लक्ष्मण सहित श्रीरामचंद्रजी सुग्रीवादिकों के समान शोककर सु-ग्रीव अंगद व तारा को समझाते यह बचन बोले १ कि मृतकजन शोक

के परिताप करने से कल्याण युक्त नहीं होता इससे मरण के पीछे जो कर्म्म करना चाहिये तुमलोग करो २ जो लोककी रीतिहै वह करनी चाहिये सो तो तुम लोगोंने की बहुत रोयापीटा परंतु मरणके पीछेकोई ऐसी युक्ति न करनीचाहिये कि जिससे मरणही न हो क्योंकि अब तो मरण होई गया तो उसके निवारण की युक्ति व्यर्थ है ३ क्योंकि इसलोक में कालही सबका कारणहै व कालही सब कर्म्मों का साधनहै व कालही सबप्राणियों के नियोजन करनेमें कारणहै ४ जो लोग स्वभावके अधीन हो टिकेहैं तिनलोगों का प्रवर्त्तक कालही है इसीसे कोई स्वभावादि कर्म्मों का कर्त्ता नहींहै किन्तु कालही सब करताहै इसीसे कोई जात्यादि विषयक आग्रह करने में समर्थ नहीं ५ कालको काल भी नहीं उल्लंघन करसक्ता इसीसे कालका कभीकोई नाशनहीं करसक्ता इसीसे स्वभाव को प्राप्तहो कोई भी वस्तु कालका उल्लंघन नहींकर सक्ती ६ जो कहो कि यदि काल ऐसाहै तो उसीकी सेवा करनीचाहिये परमात्माकी सेवा क्यों करै सो नहीं क्योंकि स्वप्रकाशक ब्रह्मद्वारा सर्वत्र परिपूर्ण परमात्माके वशीभूत जो काल है तिस कालका न तो कोई सेवा आदि करनेपर भी स्नेह करने से बंधुहै इसीसे उसका कोई कारण नहीं जिससे वह किसीके वश होसकै व न किसी के ऐसापराक्रम है कि उसे वश करसकै व उसके मित्रजाति आदिका सम्बन्ध भी नहीं है ७ धर्म्म अर्थ व काम ये परमात्माधीन कालही के क्रमसे होते हैं इससे जो अच्छीतरह देखनेवाला पुरुषहै वह धर्म्मादिकोंको कालहीके अधीन समझे ८ इसीसे अपनी चंचलप्रकृतिके कारण यद्यपि बालीने अधर्मही किया व तिसीसे अधर्म्महेतु मरणक्रिया का फल उसने पाया परंतु इससमय शिक्षा करने केअर्थ जो बाण से हमनेमारा तो वह पवित्र हो पवित्र लोक को गया ९ अपने धर्म्मके संयोगके हेतु महात्मा बालीस्वर्ग को गया उसने प्राणों की रक्षा नहीं की कि यहां रोय धोय कुछ दिन और परा रहता १० यह काल बड़ा श्रेष्ठ है जिसको बाली गया तिससे अब परिताप करने से कुछ नहीं है जो काल अब है उसके अनुरूप काम करना चाहिये ११ रामचन्द्रजीके वचन के पीछे अन्य वीरों के नाशक लक्ष्मणजी अति उदासीन व नम्र सुग्रीवसे बोले १२ हे सुग्रीव

तारा व अङ्गद के साथ इसका प्रेतकर्म्म करो उसमें प्रथम दाह करने की तयारी करो १३ सेवकोंको आज्ञाकरो कि बहुत सूखे सूखे काष्ठ लावें व दिव्य दिव्य चन्दन लावें जिसमें बालीका संस्कार कियाजाय १४ व दुःखित चित्त अङ्गद को समझावो बुझाओ तुमभी अनारियों कीसी बुद्धि न ग्रहण करो क्योंकि यह पुर तुम्हारेही अधीन है १५ जो जो वस्तु पुष्प वस्त्र घृत तैल सुगन्धित अन्य भी चाहिये सब अङ्गद लावें १६ हे तार तुम बहुत जल्द किष्किन्धा में जाय एक पीनसलावो इस समय जल्दबाजी ही का काम है इससे जल्द जाव १७ व जो बानर बाली व समर्त्थ व पीनस उठाने के योग्य हों वे तयार हों क्योंकि उनको बालीको उठाना परेगा १८ यह कह सुमित्राजी के आनन्द बढ़ाने वाले लक्ष्मणजी अपने भाई के समीप बैठगये १९ लक्ष्मण जीके वचन सुन तार बड़ी जल्दीके मारे हरबराय पीनस के लाने में चित्त लगाये गुहा में पैठा यह तार बाली का प्रधान मन्त्री था २० वहां जाय तार बड़े शूर बानरों केसे चलने के योग्य पीनसबानरों केही कांधों पै धराय झटपट लाया २१ यह पीनस बहुतही उत्तमथा सुन्दर बैठने के लिये आड़ें बनीथीं व स्यन्दनही के समान थी पीनस भरमें कृत्रिम वृक्ष व पक्षी उरेहे थे व सबतरह झालर व हार आदि से बिभूषित था २२ सब अङ्ग उसके बहुत सुन्दर बनेथे पैदर सिपाही हजारों उसमें उरेहेथे सब ओरसे पैठने के लिये सुन्दर दरवाजे बने थे चारों ओर खड़खड़ियां द्वार झरोखे बनेथे इससे जान परताथा कि सिद्धों का बिमान है २३ व बड़ाभारी लम्बा चौड़ा बनाथा बढ़ई लोगों ने बड़ी युक्ति से बनाया था क्रीड़ाकरने के लिये काष्ठ का छोटासा पर्ब्बत भी उसी में बनाथा बनानेवालोंने अपना अतिमनोहर कामउसमें देखलाया था २४ व बड़े बड़े मोलके भूषण हार व चित्रविचित्र पुष्पों के धरने से शोभितथा बन कन्दरादि सब उसमें बनेथे लाल चन्दन सब ओर से उसमें घिसा गया था २५ व कमलादि पुष्पोंकी हजारों माला उसके ऊपर परी थीं व सब ओर लटकतीथीं इसी से प्रातःकाल के सूर्य्य के समान प्रकाशितथा २६ ऐसा पीनस देख श्रीरामचन्द्रजी लक्ष्मण जी से बोले कि अब शीघ्रही इसपै बाली चढ़ायाजाय व प्रेत कर्म्म किये

जायँ २७ तब रोदन करते सुग्रीव व अंगद ने बाली को उठाय उसपै पहुड़ाया २८ मरे बालीको सब उत्तम उत्तम भूषण वस्त्र पुष्प चन्दन मालादिकों से भूषित कर उसपै चढ़ाया २९ तिसके पीछे बानरराज सुग्रीव ने आज्ञा दी कि भाई का पारलौकिक सब काम शास्त्रकेही अनुसार कियाजाय किसीतरह का अन्तर न परै ३० नानाप्रकार के रत्न ले आगे आगे बानर लोग लुटाते चले तिसके पीछे पीछे यह बिमान रूप पीनस चले ३१ हे बानरो जिसतरह महाराजों की क्रियां देखी जाती हैं उसीतरह इन अपने स्वामी बालीकी शक्रियाकरो ३२ इस आज्ञा को पाय तार आदि बानर अङ्गदको आगेकर उसीतरह की क्रिया करने का प्रारम्भ करने लगे जैसे महाराजों के लिये की जातीहै ३३ सब बानर रोदन करते चिघड़ते पुकारते चले जातेथे क्योंकि उनका परम स्नेही बन्धु मरगया था तिसके पीछे जितनी बानरियां बाली के बशीभूत थीं ३४ बीर बीर व प्रिय प्रिय कहकह सब रोदन करती तारा आदि बाली की स्त्रियां कि जिनका प्राणप्रिय मरगयाथा ३५ बड़े जोरसे चिल्लाती गिरती परती सब पीछे पीछे चली जाती थीं तिन बानरियोंके रोदनके शब्दसे उसबनमें ३६ बन व पर्व्वतजालों सबरोय रहेथे इसतरह जाय पर्ब्बत के नीचे बहती नदी के किनारे जहां जल बनाय निकट था ३७ बहुत से बानरों ने जाय चिता बनाई व उसी चिताके निकट वानरों ने अपने कांधेसे उतार विमानसमान वह पीनस धरा ३८ व मारे शोकके ब्याकुल सबके सब एकस्थानपै बैठगये तब तारा अपने पतिको उस बिमान पर शयन करते देख ३९ अपने कोरामें तिसका शिरधर दुःखित हो बिलाप करनेलगी हे वानरोंके महाराज हा नाथ हा हमारे ऊपर दया करनेवाले ४० हाबीर हा महाबाहो हा ममप्रिय हमको देखो अरे शोकसे पीड़ित इस जनको क्यों नहीं देखते ४१ हे मानद मरजाने परभी तुम्हारामुख जानों प्रसन्नहीहै क्योंकि अस्ताचल को प्राप्तहोते हुये सूर्य्यकीसी दीप्ति विद्यमान है ४२ हे वानर जिन रामचन्द्रने एकही बाण रणमें चलायहमसबको विधवाकरदिया वही रामचन्द्र कालरूप धारणकर तुमको लोकान्तर जानेके लिये खींचते हैं ४३ हे राजेन्द्र ये सब तुम्हारी वानरियां व बानर हैं जो बड़े

कठोर मार्ग्ग में पैदर दौरे चले आयेहैं तुम इनको नहीं देखते ४४ येसब भार्य्यातो तुमको बहुत प्रियथीं अब इनको व सुग्रीव को क्यों नहीं देखते ४५ हे राजन् ताराआदि ये तुम्हारे मंत्री व येसब पुरवासी जन तुमको घेरे कष्टितहो रहेहैं इनको क्यों नहीं देखते ४६ हे शत्रुओंके दमन करने वाले अब इन सचिवों को बिदाकीजिये जैसे आगे तुम्हारे संगबिहार करती थीं तैसेही इस समय कामातुर हो वनमें तुम्हारे संग हम लोग फिर क्रीड़ा करेंगी ४७ पतिके शोकसे संय्युक्त इसतरह विलाप करती ताराको मारे शोकके कर्शित वानरियां उठानेलगीं ४८ तब शोककेमारे व्याकुलेन्द्रिय व रोदन करते अंगद सुग्रीव के साथपिता को उठाय चितापै आरोपित करदिया ४९ तिसके पीछे विधिपूर्व्वक अग्नि लगाय अंगदने व्याकुलेन्द्रिय हो महापथको जाते पिताकी प्रदक्षिणा की ५० इसतरह बालीको विधिपूर्व्वक भस्मकर सब वानर जलदेने के लिये उस स्थानसे हटनिर्म्मल जल सहित नदीके घाट पर आये ५१ व सब अंगदको आगेकर सुग्रीव तारा सहित बालीकेलिये जलांजलि देनेलगे ५२ तब अति दीन सुग्रीव के साथ उन्हींके समान शोककर दीनहो रामचन्द्रजीने भी बालीके जल दानादि प्रेतकर्म्म कराये ५३ ॥

कुंडलिका ॥

राघव शरहत अतिबली अतिप्रसिद्ध कपिराज ।
बालीदाह विधानयुत करिसब बिधि सजिसाज ॥
करिसब विधिसजिसाज राजराजाधिपरामहिं ।
दीप्त अनल समतेज सकल शुभगुणगण धामहिं ॥
लक्ष्मण सहतहँ बैठ शत्रुमारण हित बांधव ।
हाथजोरि सुग्रीव गयेजहँ मतिवर राघव १ । ५४

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेकिष्किन्धाकाण्डेपंचविंशस्सर्ग्गः २५ ॥

जब बाली की सब प्रेतक्रिया होगई व सुग्रीव रामचन्द्रजी के निकट आये तो उदासीन मन शोककेमारे सन्तप्त सुग्रीवको चारोंओरसे घेर सुग्रीवके मंत्री वानर खड़े हुये १ फिर सुग्रीव सहित सब वानर सहजही में सबकाम करनेवाले श्रीरामचन्द्रजी के आगे हाथ जोर खड़े

हुये जैसे ब्रह्माजीके आगे सब ऋषिलोग खड़े होतेहैं २ तब सुवर्ण के पर्व्वत सम प्रकाशित प्रातःकाल के सूर्य्य समान शोभायमान पवन के पुत्र श्रीहनुमान्जी हाथजोर बोले ३ हे रामचन्द्रजी आपके प्रसाद से बड़े बड़े दांतवाले महाबलशाली व महात्मा इन वानरों को बड़े कष्टसे मिलने के योग्य यह पिता पितामहों का राज्य सुग्रीव ने पाया ४ इससे अब आपकी आज्ञा पाय सुन्दर अपने नगर में जाय ५ सब सुहृदों के साथ सब कार्य्य ये करेंगे इससे विविधि तरह की सुगन्धित चन्दनादि वस्तु व औषधों से यथाविधि स्नानकर ६ नानाप्रकार के पुष्पों से आपकी ये विशेष पूजाकरेंगे इससे आपयहां से इसगिरिवर की गुहा में बसी किष्किन्धापुरीको चलिये ७ व सुग्रीव को बानरों का राजा बनाय बानरों को हर्षित कीजिये जबशत्रुओं के मारनेवाले रामचन्द्रजी से हनुमान्जीने ऐसाकहा तो ८ बड़ेबुद्धिमान् व बोलने में चतुर श्रीरामचन्द्रजी हनुमान्जी से बोले कि हेसौम्य जबसे हमपिता की आज्ञासे बनको आयेहैं जबतक चौदहबर्ष पूरे न होजायँगे तबतकग्राम वा पुरमें ६ नपैठेंगे हेहनुमन् क्योंकि पिताजी की यहीआज्ञा है उसका पालन अवश्य करना है इससे सबतरह से भरीपूरी किष्किन्धा को जाय १० बानरश्रेष्ठ सुग्रीव को वेदविधि से बहुतही शीघ्रराज्यपर स्थापित करो हनुमान् से ऐसाकह श्रीरामचन्द्रजी सुग्रीव से बोले ११ हेसुग्रीव तुमसब लोक व वेदशास्त्र के वृत्तजानतेहो इससे लोकशास्त्र व वेदके वृत्तान्त जाननेवाले व अधिकबल पराक्रम वाले इसअंगद को युवराज पदवीपर स्थापित करो १२ क्योंकि यहतुम्हारे ज्येष्ठभाई का ज्येष्ठपुत्रहै व बिक्रम में तुम्हारेही समानहै कुछ ऐसानहीं कि कुछकार्य्यही न करसके इससे अवश्ययह अंगद यौवराज्य के योग्यहै १३ व जो कहो कि बिना आपका कार्य्यकिये सुग्रीव का अभिषेक करना उचितनहीं है तो देखोबर्षा समय का पहिलायह श्रावणमास लगचुका जिसमें जलबर्षता है सो ऐसेतीनमास औरभीतो हैं जिनमें बर्षाहोतो है इसीसे येबर्षा के मास कहाते हैं १४ हेसौम्य यहसमय सीताके खोजने लायक नहीं है इससे तुमशुभ अपनी पुरीको जाव व हमलक्ष्मण सहित इसपर्व्वतपर रहेंगे १५ क्योंकि यहपर्व्वत की गुहा बहुतलम्बी चौड़ीहै व बहुत रमणीय

है सबओर से पवन इसमें आताजाता है जलभी इसमें बहुत स्नानपान करने के योग्य है कमलभी इसके भीतरके जलाशयों में बहुत हैं १६ जब कार्तिकमास लगेगा तो रावण के बधके लिये युक्ति करना हमारा यहीविचार है अबतुम अपने स्थानको जाव १७ व अपना को राज्यपर अभिषेचित करावो व अपने इष्टमित्र सुहृदों को हर्षित करावो इसतरह श्रीरामचन्द्रजी की आज्ञापाय बानरों में श्रेष्ठ सुग्रीव १८ बालीकी पाली रमणीय किष्किन्धा पुरीमें पैठे जबबानरों के राजासुग्रीव अपनी पुरीमें आये तो सहस्रों बानर उनके प्रणामकर चारोंओर से खड़ेहुये १९ तिसके पीछे बानरों के स्वामी को आयेदेख सबमन्त्री आदि २० प्रणाम कर पृथिवीपर गिरपरे तबसुग्रीव ने उनको प्रेमसे पूछपूछ उठाया २१ बालीके अन्तःपुर में महाबलवान् सुग्रीव पैठे तब उनभीमबिक्रान्त बानरश्रेष्ठ सुग्रीव को देख २२ सबसुहृदों ने राज्यतिलक किया व सोनेकी डांड़ीलगा उज्ज्वलछत्र उनके लियेलाये २३ व सुवर्ण की डांड़ीलगे बालोंके दो शुक्ल चमर लाये व नानाप्रकार के रत्न व सबबीज सबऔषध इकट्ठा किये २४ व दुधारे वृक्षोंकी बरोह व पुष्प व शुक्ल बहुतबस्त्र व शुक्लही चन्दनाद्यनुलेपन २५ व सुगन्धित माला झूरेके कमल दिव्य चन्दन बिबिधप्रकार के बहुतगन्ध २६ अक्षत सुवर्ण काकुन मधुघृत दधि व्याघ्र का चर्म्म बड़ेमोल की पनहीं २७ व समालम्भन नाम अनुलेपन गोरोचन मैनशिल लाये सुन्दर सुन्दर प्रसन्नचित्त सोलहकन्या आईं २८ तिसके पीछे बानरों में श्रेष्ठ सुग्रीव के अभिषेक करने के लिये प्रथम रत्नबस्त्र व नानाप्रकार के भोजनों से अच्छे अच्छे ब्राह्मणों की पूजाकी गई २९ तिसके पीछे वेदशास्त्र जाननेवाले ब्राह्मण किनारे किनारे कुशबिछाय बीचमें अग्निस्थापनकर व प्रज्वलित अग्नि में मन्त्र पढ़पढ़ पवित्रकर आहुति देनेलगे ३० जबहोम होगया तो सुवर्ण के पावालगे बड़ेमोल के बिछौने बिछे चित्रबिचित्र मालोंसे शोभित रमणीय धवरहर के शृङ्गपै ३१ श्रेष्ठ सिंहासनपर स्थापितकर पूर्व्वको मुहकराय सुग्रीव को बैठाय बिबिधप्रकार के मन्त्र पढ़पढ़ सबनदियों से व नदोंसे व नानाप्रकार के तीर्थोंसे ३२ व सबसमुद्रों से जललाय लाय बानरों ने सुवर्ण के कुम्भों में भर ३३ सुन्दर बैलोंकी सींगोंमें सुवर्ण

के कलशों में भरभर लाय लाय एकत्र किया फिर शास्त्रदृष्ट मार्ग्गानुसार व महर्षियों के कथनानुसार ३४ गज गवाक्ष गवयव शरभ गन्धमादन मैन्द द्विविद हनुमान् व जाम्बवान् ३५ इनलोगों ने परम सुगन्धित जलसे सुग्रीव का अभिषेक किया जैसे आठोबसुओं ने सहस्र नेत्रवाले इन्द्रका अभिषेक कियाथा ३६ जबसुग्रीव का अभिषेक होगया तो सब महात्मा हज़ारों बानरश्रेष्ठ हर्षितहो बड़ेजोर से शब्दकरनेलगे ३७ तिसके पीछे श्रीरामचन्द्रजी के कहने के अनुसार बानरों के राजासुग्रीव ने यौवराज्यपर अङ्गद का अभिषेक किया ३८ जब अंगदकाभी अभिषेक होगया तो सब बानर बड़ी करुणा से सब महात्मालोगभी बहुतअच्छा बहुतअच्छा कह सुग्रीवकी बड़ाई करनेलगे ३९ व जब अंगदमें सुग्रीव रामचन्द्र व लक्ष्मण का ऐसाबर्त्ताव बानरों ने देखा तो सबकेसब प्रसन्न हो बारबार रामचन्द्र व लक्ष्मण की स्तुति करनेलगे ४० व सब किष्किन्धानगरीमें जिधरदेखो हृष्ट पुष्टही जन आनेजानेलगे व ठौर ठौर पताका ध्वजादि बांधने से शोभित होने लगी उस पर्व्वत की गुहा में बसी किष्किन्धानगरी अति रमणीय होगई ४१ ॥

हरिगीतिका ॥

कहि सकल भांति महात्म रघुबर सों महा अभिषेकहू ।
वर सैन्यपति सुग्रीव निजप्रिय रुमहि लहि कहिटेकहू ॥
तब राज्य भोग बिशेष भोगन लग्यहु हर्षित ह्वै भले ।
जिमि इन्द्र भोगत अमरपुर सुखत्यों भली बिधि वैपले १ । ४२

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेकिष्किन्धाकाण्डेषट्‌बिंशस्सर्गः २६ ॥

जब अभिषिक्त सुग्रीव रामचन्द्रजी की आज्ञापाय अपनी किष्किन्धापुरी को चलेगये तो अपने भाई के साथ रामचन्द्र जी प्रवर्षण नाम पर्व्वत पर आये १ जिस पर्व्वतपर शार्दूल व मृग बोला करते व भयङ्कर शब्द करनेवाले सिंह चारोओर घूमते व नानाप्रकारकी झाली लतादि जिसको घेरे व बहुत वृक्षों के झुण्ड के झुण्ड जिसपर लगे २ ऋक्ष बानर गोपुच्छ व बिड़ाल चारो ओर घूमते वह पर्व्वत देखने में मेघोंके समान बिदित होता व नित्यही पवित्र करनेवाला व कल्याणकारीथा ३

तिस पर्व्वत के शिखर में एक बड़ी लम्बी चौड़ी गुहाथी लक्ष्मण स-
हित श्रीरामचन्द्र जी ने निवास करनेके लिये उसे अङ्गीकार किया ४
सुग्रीव से जानों प्रतिज्ञा करी चुकेथे कि वर्षाभर अब हम इस पर्व्वतकी
गुहामें निवास करेंगे इससे वहां जायबसे व उस समय के अनुसार
वचन श्रीरामचन्द्रजी ५ सुशिक्षित व लक्ष्मी बढ़ानेवाले अपने भाईलक्ष्मण
जीसे बोले कि यह पर्व्वत की गुहा बहुत बड़ी है व इस में सब ओर से
हवा आती जाती है ६ हे लक्ष्मण अब वर्षा भर इसी में बसेंगे हे राज-
कुमार यह पर्व्वत का शृंग अति रमणीय है ७ जोकि उजली काली
लाली शिलाओं से शोभित व नानाप्रकार के धातुओं से पूर्ण व नदी
के दादुरों से संयुक्त है ८ व बिबिध प्रकार के वृक्षों के झुण्ड ठौर ठौर
लगे हैं व मनोहर लताभी ठौरठौर लगी हैं इससे चित्र विचित्र है नाना-
प्रकार के मोर आदि पक्षी बोल रहे हैं ९ व मालती कुन्द गुल्म सिन्दु-
वार शिरीष कदम्ब अर्ज्जुन सर्ज्ज आदि पुष्पित वृक्ष लगे हैं १० हे
राजकुमार यह फूले कमलों से भूषित अति मनोहर सरसी हम लोगों
की इस गुहाके वर्षा में जल बढ़ आने के कारण अति निकट होजायगी
११ यह गुहा ईशानकोण की ओर कुछ नीचे को झुकी है इससे बसने
में वड़ा सुखदेयगी व पश्चिम ओर को ऊंचीहै इससे वर्षा में पवन
के झिकोरों से इसके भीतर जल भी न आवेगा १२ हे सौम्य बैठने उ-
ठने के लिये इस गुहा के द्वारे पर देखो यह बराबर कहीं खाली ऊंची
नहीं सुन्दर काले पत्थर की बड़ी लम्बी चौड़ी शिला परीहै अति श्या-
मता के कारण मानों अंजन से बनी हुई विदित होती है १३ हे तात
उत्तर दिशा में यह पर्व्वत का शृंगदेखो कैसा सुन्दर है जानो अंजन
का ढेर है एकत्र होगया है देखने में श्याम मेघ के समान विदित होता
है १४ व इसकी दक्षिण दिशा में भी श्वेत बादर के समान नाना धा-
तुओं से विचित्रित कैलास के समानही एक शृङ्ग विद्यमानहै १५ व इस
गुहाकी पूर्व्व ओर पूर्व्वही को बहती हुई बिना कीचड़ की यह नदी दे-
खतेहो त्रिकूट पर्व्वत पै गंगाजी के समान शोभित होती है १६ इसके
किनारे किनारे चन्दन तिलक साल तमाल अतिमुक्तक पद्मक सरल
अशोक १७ बानीर तिमिश वकुल केतक हिन्ताल व दूसरे तिमिश नीप

बेतस कृतमाल आदि वृक्षोंसे शोभित हैं १८ तीरपरके नानाप्रकार के वृक्षों से सब कहीं ऐसी शोभित है जैसे बसन भूषण धारण किये युवती स्त्री शोभित होती है १९ इसके किनारे सैकरों पक्षी बोलते हैं वे एक दूसरे का अनुराग करते हैं चकई चकवा आदि पक्षियों से भी अलंकृत है २० किनारे भी इसके अति रम्य हैं उनमें हंस सारसादि पक्षियों के रहने से जानों नानाप्रकार के रत्न धारण किये हँसती हुई स्त्री हीके समान शोभित होती है २१ कहीं तो नील कमलों से कहीं कहीं लाल कमलोंसे कहीं शुक्ल कुमुदके पुष्पोंसे व महा विससे शोभाय मान है २२ व अनेक प्रकार के जलके पक्षियोंसे सेवित मयूर व क्रौंचों के शब्दसे नादित मुनि समूहों से सेवित व अति रमणीय यह नदी शोभायमान है २३ चन्दनकी व अर्ज्जुन वृक्षोंकी पंक्तियां देखोतो हमारे मनही के साथ मानों उदित हैं व अति रुचिरहैं २४ हे शत्रुओंके मारने वाले लक्ष्मण यह देश अतिरमणीय है यहां रहनेसे खूब बिहरेंगे इससे अब अच्छी तरह यहीं निवास करेंगे २५ यहांसे चित्र बिचित्र वनवती अति रमणीय सुग्रीवकी पुरी किष्किन्धाभी समीपही परेगी २६ क्योंकि वहांके गाने बजाने का शब्द सुनाई देताहै व जो मृदंगोंके साथ वानर शब्द करते हैं वह भी सुनाई देताहै २७ बानर श्रेष्ठ सुग्रीव अब राज्य व अपनी स्त्री पाय सुहृदों के साथ बड़ी राज्य लक्ष्मी की शोभा पाय निश्चय आनन्दित होतेहोंगे २८ इतना कह बहुत कन्दरा व निकुंज युक्त प्रश्रवण पर्ब्बत पर श्रीरामचन्द्रजी सहित लक्ष्मण वसे २९ यद्यपि उस पर्व्वत पर सब सुन्दर सुन्दर सुखहीथे व जहां देखोद्रव्य ही द्रव्य देखाई देती तथापि श्री रामचन्द्र जी की थोड़ी भी प्रीति उस पर न हुई ३० क्योंकि वे प्राणों से भी अधिक प्रियतमा हरी अपनी भार्य्या सीताजी को बारबार स्मरण करते थे उस पर जब चन्द्रोदय देखतेथे तो विशेष स्मरण करतेथे ३१ तिन जानकी जीके शोक से उठे दुख से रोदन करने के कारण उनका चित्त हत होगयाथा इससे रात्रिको बिस्तरा पर लेटे भी रामचन्द्र जीको निद्रा नहीं आतीथी ३२ शोक परायण हो नित्यही शोक करते रामचन्द्रजी को जानों उन्हीं के समान दुःख मानने वाले लक्ष्मण जी नम्रता पूर्व्वक वचन बोले ३३

हे वीर तुम व्यथा को प्राप्त हो शोचकरने के योग्य नहींहो क्योंकि जो लोग शोच किया करते हैं वे सदा कष्टही पातेहैं यहबात अच्छीतरह जानते हैं ३४ व आप सब भुवनो में सब क्रियाओं के प्रवर्तकहैं व आपही देवस्तुति कारणों के श्रेष्ठ स्थानहैं इसीसे आप आस्तिक हैं व धर्म्म शीलभी आपही हैं व व्यवसायी भी आपही हैं इससे आप सावधानरहिये उसीसे सब कार्य्य सिद्धहोंगे ३५ जो आप इसीतरह का चित्त कियेरहेंगे कोई व्यवसाय न करेंगे तो बिक्रम में महा कुटिलकारी राक्षस को समर में कभी न मार सकोगे ३६ इससे यह शोक जड़ से उखाड़ डारिये व उपाय करने में स्थिर हूजिये तो सहित परिवार तिस राक्षसको आप मारसकेंगे ३७ आप समुद्र बन पर्व्वत सहित महीमण्डलको भी उड़ा सक्तेहो तो बेचारे रावणकी कौन गणना है ३८ अब तो यह बर्षाकाल आया है इससे इसे बीतनेदीजिये शरद काल तक उसकी राह परखिये तिसके पीछे राज्य व गण सहितरावण को आप मारेंगे ३९ हम सोते हुये आपके वीर्य्य को जगाते हैं जैसे दीप्त आहुतियों से समय पर प्रच्छन्न अग्नि जगाया जाता है ४० लक्ष्मण जीके शुभ व हित वचन सुन श्रीरामचन्द्र जी बड़ी बड़ाई कर परम सुहृद् लक्ष्मणजी से बोले ४१ हे लक्ष्मण जो स्नेही स्निग्ध व हित व सत्य बिक्रम लोगों को कहनाचाहिये वह तुमने कहा है ४२ अब हमने यह शोक परित्याग किया जोकि सब कार्य्यों को नष्ट करदेता है अब बिक्रम करने में जिसको कोई रोक न सके ऐसा तेज बढ़ावेंगे ४३ अच्छा अब तुम्हारे वचन पर आरूढ़ हो यहां टिक शरदकाल को परखते हैं व तबतक नदियां व सुग्रीवभी प्रसन्न होंगे ४४ व जो वीर पुरुष होते उनके साथ जो कुछभी उपकार किया जाताहै तोवे उसका प्रत्युपकार अवश्य करते हैं व जोलोग उपकार को मानतेही नहीं वे कुछभी प्रत्युपकार नहीं करते सब धर्म्म शास्त्र का उल्लंघन करजाते हैं इससे सुग्रीव तो बड़े प्रशस्त पुरुषहैं हमारे संग प्रत्युपकार अवश्य करेंगे ४५ रामचन्द्रजी के वचन योग्य बिचार लक्ष्मण जो उनकी बड़ाईकर हाथजोर अति मनोहर दर्शन श्रीरामचन्द्र जीसे अपना ज्ञान प्रकाशित करतेहुये बोले ४६ हे राजन् जो आपने कहा सत्यही है

सुग्रीव बहुतही शीघ्र आपका कार्य्यकरेंगे जबतक शरद आयाचाहेतब-तकपरखिये यह बर्षाकाल शत्रुको दण्ड देने में उपयोगी नहींहै ४७ इससे कोप को जीत शरद ऋतु जबतक आया चाहै तबतक ये चारमास क्षमा कीजिये व सिंहसेवित इस पर्व्वत पै तब तक बसिये आप यहीं बैठेही बैठे चाहैं तो शत्रु के मारने में समर्त्थ हैं ४८ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेकिष्किन्धाकाण्डेसप्तविंशस्सर्गः २७ ॥

बाली को मार सुग्रीव को राज्यदे माल्यवान्नाम पर्व्वतपै बस श्री-रामचन्द्रजी लक्ष्मण से बोले १ कि यह वर्षाकाल आयगया व इसमें वृष्टि होनेलगी देखो पर्व्वताकार मेघोंसे आकाश युक्तहै २ सूर्य्यकीकि-रणोंसे समुद्रों का जल पीकर नवमास तक अपने गर्भ में धारण कर अब अन्तरिक्ष सबरसों का स्थान जल उत्पन्न करताहै ३ मेघोंकी पंक्ति को सोपान बनाय उसकी द्वारा आकाश पर चढ़ कुरैया व अर्ज्जुन पुष्प की मालाओं से सूर्य्य अलंकार करसक्ते हैं ४ सन्ध्या की ललाई सेअ-रुण व अन्तमें श्वेत आकाश उजले कपड़े के खंडोंसे बांधेहुये घावकेस-मान शोभित होताहै ५ मन्द पवन बहने के कारण मानों विश्वास ले रहाहै व सन्ध्या समय की ललाईही मानों चन्दन लगाये है कुछ श्वेत रंगके बादरोंसे घिर जाने के कारण मानों आकाश कामातुरही होगया है ६ देखो बहुत दिनोंसे घाम लगने के कारण कष्टित व नये जलसेसं-सिक्तहो शोक सन्तप्त सीताके समान यह मेघ पंक्ति आंशु छोड़तीहै ७ मेघोंके पेटसे छूटे व कपूर लगेदलों के समान शीतल केतकीके गन्ध के समान महकते पवन जानों अंजलि से पीनेके योग्य होगये हैं ८ यह प्रफुल्लित अर्ज्जुन वृक्षयुक्त व केतकी की सुगन्ध सहितपर्व्वत हतशत्रु सुग्रीव के समान अभिषेक किया जाताहै ९ ये पर्व्वत मेघोंकोही कृष्णा-जिनके समान धारण किये व जल धाराहीकी यज्ञोपवीत सदृश ग्रहण किये व मारुतों से गुहापूर्ण किये वेदाध्ययन में प्रारम्भही कियेसे विदित होतेहैं १० बिजुली रूप सुवर्ण के दण्डसे ताड़ित व भीतर गर्ज्जने का शब्द भरने से आकाश मानों यमयातनाही भोगरहा है ११ यह नील मेघ के आश्रित बिजुली चमक रहीहै सो रावण के अंकमें बैठी जानकी

के समान चमकतीहै १२ मेघोंसे घिरी इसीसे नक्षत्रचन्द्ररहित येदिशा मानों कामी पुरुषों का हितही कररहीहैं क्योंकि चन्द्रोदय से उनको उद्दीपन होता है १३ हे लक्ष्मण कहीं कहीं पर्व्वत के शृङ्गोंपर आंशुओं के वर्षागम में चित्त लगाये फूले कुरैया के वृक्ष शोकसे व्याकुल हमको काम सन्दीपन करातेही से टिके हैं इनको देखो १४ अब वृष्टि होने के कारण कहीं धूलि नहीं देखाई देती वायु शीतल बहता है इसीसे गरमी सब शान्त होगई व इसीसे राजाओं की यात्रा भी रुक गई व इसीसे विदेशी लोग अपने घरको आनेलगे १५ इस वर्षाकालमें अपनी स्त्रियों के साथ चकवा पक्षी मानसरोवर में बसनेकी इच्छासे चले व बारबार वर्षा होने के कारण मार्ग्गोंमें इतना बिकलहर है कि विमान नहीं चल सके १६ बादरों के कहीं होनेसे व कहीं न होनेसे आकाश कहीं प्रकाशित है व कहीं अप्रकाशित इससे शोभित होताहै जैसे लहरी रहित समुद्रका रूप पर्व्वतों से संरुद्ध होनेसे कहीं कहीं प्रकाशित व कहीं कहीं अप्रकाशित रहता है १७ पर्व्वतके धातुओं से अरुण व सांखू कदम्ब के पुष्पोंसे मिश्रित व मयूरों की बोली के पीछे चलता नया जल पर्व्वतकी नदियां शीघ्रता से समुद्रको पहुंचाती हैं १८ भ्रमर लपटे पकेजामुन के फल व सुन्दर पके आमके फल पवन लगनेसे भूमिमें गिरते हैं इससे सब जीव यथेच्छ भोजन करते हैं १९ बिजुली को पताका बनाये बगुलोंकी पंक्ति सहित पर्व्वतेन्द्रके शृङ्गके समानआकृतिसे प्रकाशित बड़े ऊंचे स्वरसे मेघ गर्ज्जतेहैं जैसे समर टिके मदान्ध हाथी गर्ज्जतेहैं२० हे लक्ष्मण वर्षाके जलसे बहुत हरी घास सहित व मोरोंकी नाच सहित व बिना वर्षनेवाले बादरों सहित बनदेखो तो दूसरे समय कैसेशोभित होते हैं २१ व जलका बड़ाभारी भारलादे बक पंक्ति युक्त गर्ज्जते मेघ पर्व्वतों के शृंगोंपर सुस्ताय सुस्ताय फिर चलते हैं २२ गर्भ धारण करने की इच्छा से मेघों की चारों ओर दौरती बगुलों की पांति पवन से कंपित श्वेत कमलोंकी आकाश मालाके समान शोभित होतीहै २३ बीचबीच में इन्द्रबहूटी सहित हरीघास होनेके कारण अङ्गोंमें हरारङ्ग लगाये व लाषके रंगसेरँगा कमलओढ़े स्त्री के समान पृथ्वी शोभित होती है २४ इस वर्षाकालमें श्रीनारायण को धीरेधीरे नींद आसहोती

वनदीशीघ्र सागर को प्राप्तहोती हर्षितहो बक पंक्तिबादरको प्राप्तहोती व कामिनीस्त्री पतिको प्राप्तहोती हैं २५ बनोंमेंमोर नाचरहे हैं कदम्ब वृक्ष फूलरहे हैं बैलगाइयों के संगबिहार कररहे हैं पृथिवी अन्न व बन से शोभायमान होरही है २६ ॥

दो० नदीमेघ मत्तेभबन प्रियाहीन कपिमोर ।
बहत झरत गर्ज्जत रुचत ध्यावत श्वसत सुशोर ॥२७

व केतकी के पुष्पकी सुगन्धसूंघ हर्षितहो व नदियों के निकलने के स्थानके शब्दसे ब्याकुल मतवाले हाथी बनके झरनों में मोरोंके साथ नादकरते हैं २८ कदम्बकी शाखाओं में लटके भ्रमर जलके निपात से हन्यमानहो उत्सवसे बटोरा व पुष्परस से बढ़ामद त्यागेदेते हैं २९ रसीलेकाले बड़ेबड़े फलोंसे जामुन वृक्षोंकीशाखा जानों भ्रमर समूहों से पीहुई बिदित होती हैं ३० पताका रूपबिजुली से अलंकृत व उड़ने के समय महाशब्द करती बगुलोंकी पंक्तियां संग्राम करने को तयार हाथियों के समान शोभित होती हैं ३१ देखोयह पर्व्वत के बनमें चलनेवालाहाथी अपनीगली गली चलाजाताथा परमेघ का गर्ज्जना सुन दूसरेहाथी का शब्दजान युद्धकरने के लिये लौटखड़ा हुआ ३२ कहीं भ्रमरों से गवाते कहीं मयूरों से नचाते कहीं मतवाले हाथियों से प्रमत्त होते इसतरह इनसबों के रहने से बन अनेकप्रकार शोभित होते ३३ कदम्ब सर्ज्ज अर्ज्जुन कन्दल वृक्षोंसे युक्त इसीसे मद्ययुक्त जलसे पूर्ण पृथिवी मत्तमयूरों के नाचके कारण मदपान करने के स्थानकी भूमिके समान शोभित होती है ३४ मोतीके समान उज्ज्वल जल पत्तोंपर लगा इन्द्रका दियापाय प्यासेपक्षी हर्षितहो पीते हैं ३५ बीणारूप भ्रमरों के मुखसे निकला व बानरों के गानेसे तालयुक्तव मृदंग समानमेघोंकेशब्द से उत्पन्न जानोंबनों में सङ्गीत शास्त्रका प्रचार होरहा है ३६ कहींमोरों के नाचने से कहीं बोलने से कहीं वृक्षोंकी डारोंपर बैठने से व कहीं लम्बेपंखों के भूषण रूपहोने से बनोंमें मानों सङ्गीत शास्त्रका प्रचार होरहा है ३७ बहुत दिनोंसे सोतेबानर मेघोंका गर्ज्जनासुन जागउठे हैं अबनये जलकी धाराभी उनके ऊपर परती हैं इससे किलकिला शब्द कररहे हैं ३८ अपने किनारों से चक्रवाकों को दूरकर व जलके बेगसे

किनारों को काट बर्षाके जलसे पूर्णहोने से मदान्धहो भोगकराने की इच्छासे नदियां अपनेपति समुद्र के पासजाती हैं ३९ नीलमेघों में आसक्त नवजल भरेश्याम बादर दवाग्नि से जलेपर्व्वतों की जड़में बँध देवाग्नि से जलेपर्व्वतों के समान शोभितहोते हैं ४० प्रमत्त मयूरों से शब्दायमान बीरबहूटी कृमि सहित हरीघास युक्त व कदम्ब अर्ज्जुन वृक्षोंसे सुगन्धित व सुरम्य वनान्तरों में हाथी घूमते हैं ४१ नये जल की धारासे नष्ट पुष्परस कमलों को छोड़ पुष्परस सहित कदम्ब के नयेपुष्प हर्षितहो भ्रमरपीते हैं ४२ गजेन्द्र मतवाले हैं गजेन्द्र बड़ेबड़े बैलमुदित हैं मृगेन्द्र बनोंमें अपना पराक्रम कररहे हैं नगेन्द्र बड़े बड़े पर्व्वत रम्य हैं नरेन्द्र राजालोग निरुत्साह होगये हैं व मेघोंसे सुरेन्द्र इन्द्रक्रीड़ा करते हैं ४३ बायुके बेगसे उफलाये व शब्द करते हुये समुद्र के समान शब्द करते व महा जलके समूह से आकाश में लम्बायमान मेघ नदियों तड़ागों सरों बापियों व सब पृथिवी को जलसे पूर्ण करते हैं ४४ वृष्टि बहुत होती है पवन बड़े बेगसे बहताहै नदियां अपने किनारे नष्ट कर शीघ्रता सेबहती हैं यहां तक कि मार्ग्ग छोड़ अपनी तराइयों में उद्दण्ड बही जाती हैं ४५ जल इन्द्र प्रेरित पवन से प्राप्त कराये मेघही मानों जल कुम्भ हैं तिनसे स्नान कराये पर्व्वतेन्द्र मनुष्यों से स्नान कराय राजाओं के समान जानों अपना रूप व शोभा देखाते हैं ४६ बादरों से ऐसा आकाश अच्छादित है कि नतो नक्षत्र देखपरते हैं, न सूर्य्य व नये जल के समूहों से धरणी तृप्त होगई व दिशा अन्धकार से ऐसी आच्छादित हुई हैं कहीं प्रकाशही नहीं बिदित होता ४७ पर्व्वतोंके बड़े बड़े शृंग जलकोधारा परनेसे अधिक शोभित होतेहैं जैसे बड़े बड़े झरनों के झरने से मोतीहीके समान लगते हैं ४८ पर्वतोंपर प्रस्खलमान वेग पर्वतों के बड़ेबड़े झरना मयूर बोलती पर्वत की गुहाओंमें टूटे हारकी समान शोभित होतेहैं ४९ शीघ्र बहनेवाले बड़ेबड़े झरनोंसे धोये पर्वतोंके शृंग मुक्ता समूहके समानपर्वतोंकी गुहाओंमें धारण कियेजाते हैं ५० सुरतके आमर्दसे टूटगिरे हुये अप्सराओं के मोतीके गुच्छ जलधाराके साथ सबकहीं गिरते हैं ५१ पक्षियों के बसेरलेने से व कमलोंके सिकुरनेसे व मालतीके विकसनेसे जानपरतो

है कि अब सूर्य्यास्त हुआ ५२ राजाओंकी यात्रा जो शत्रुओंके ऊपर हुआ करतीहै वह अब निवृत्त हुई इसीसे सेना मार्ग्गमें जो जहां रही तहांहीं रहगई कहीं चलती नहीं बैर व मार्ग्ग दोनों जलने समानकर-दियां ५३ सामवेद पढ़नेकी इच्छा किये ब्राह्मणोंका यह भाद्रपद मास की शुक्लतृतीया पढ़नेका समय प्राप्तहुआहै ५४ कोशलाधिप भरत अब कर लेने आदिकी यात्रा से निवृत्त हो व सब पदार्त्थ एकत्र कर आषाढ़ की पौर्णमासी से कुछ विशेष अनुष्ठान करनेलगे होंगे ५५ हमको अ-योध्यामें आये देख प्रजाओंके बड़े कोलाहल शब्द के समान आज कल सरयूनदीका वेग बढ़ाहोगा ५६ शत्रुको जीत राज्यपर टिक स्त्री सहित सुग्रीव इस बड़ी व अच्छी वर्षाका सुख भोगते हैं ५७ पर हे लक्ष्मण हमारा एकतो बड़ाभारी राज्य छूटगया व फिर स्त्री भी हरगई इससे कटतेहुये नदीके किनारोंके समान हम कष्टितहैं ५८ हमारा शोक बहुत बढ़ा है व वर्षा बड़ी दुर्ग्गम है व रावण ऐसा महाशत्रु इसका पार होना बहुत कठिन है ५९ व इसीसे जब सुग्रीव ने आय हमारे प्रणाम कियाथा तो यात्रा करनेके लायक समय बिना व मार्ग्ग अत्यन्त दुर्ग्गम देख हमने उनसे कुछनहीं कहा ६० बहुत दिनोंकेपीछे सुग्रीवने अपनी स्त्री पाईहै व हमारा काम ऐसानहीं जो थोड़ेही दिनों में होजाय इससे हम अभी सुग्रीव से कुछनहीं कहा चाहते ६१ कुछदिन विश्रामकर स-मय आयाजान सुग्रीव आप उपकार जानेंगे इसमें कुछभी संशयनहीं ६२ हे शुभ लक्षण तिससे कालकी प्रतीक्षा करते हम यहां टिकेहैं सुग्रीव नदियों का प्रसाद चाहते हैं ६३ जो वीर के साथ उपकार करो तो वह ज़रूर उसका प्रत्युपकार करता है व जो लोग उपकार कियेको मानते ही नहीं तो वे प्रत्युपकारभी नहींकरते वरन प्रतापियों के मनको भीहर लेते कि जिसमें कोईभी किसीका उपकार न करै ६४ जब लक्ष्मणजी से ऐसाकहा तो इस विषय में विश्वास कर व रामचन्द्रजी के वचनकी बड़ाई कर अति शुभ दर्शन श्रीरामचन्द्रजी से बोले ६५ कि हे नरेन्द्र जैसा आप कहते हैं वैसाही है बहुतही शीघ्र सुग्रीव आपका कार्य क-रेंगे इससे जबतक शरद ऋतु आया चाहै तबतक चुपारहिये रिपुके पकरने व मारने के लिये यही करना ठीकहै ६६ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेकिष्किन्धाकाण्डेऽष्टाविंशस्सर्गः २८ ॥

बिजुली व मेघरहित सारसों के शब्द से नादित रमणीय चांदनीसंयुक्त व बिमल आकाश देख १ व अर्त्थ सम्पन्न धर्म्मार्त्थ से शिथिलअसन्मार्ग्ग में अति लगे एकान्त में स्त्रियों के संग सदा मन लगाये २ अन्य सब कार्य्यों से निवृत्त सब कार्य्य सिद्ध माने स्त्रियों केही संगसदा बिहार करते जो जो उनको बांछित थे सब मनोरथों को प्राप्त ३ अति प्रिय अपनी स्त्री व ताराके साथ रात्रिदिन बिहार करते हुये निर्भय हो सब तरहसे कृतार्त्थ ४ गन्धर्व्व व अप्सराओं के साथ इन्द्रके समान क्रीड़ा को करते सब राज्य कार्य्य मन्त्रियोंको सौंपे मन्त्रियों का कार्य्य भी न देखनेवाले ५ राज्य सन्देह रहित दिनरात्रि कामही की व्यवस्था में लगे सुग्रीव को देख अर्त्थतत्व के जाननेवाले व सब अर्त्थोंको निश्चित किये कालके धर्म्म विशेषता के साथ जानने वाले ६ वाक्य जाननेवाले श्रीहनुमान् जी मनोहर व हेतुमान् बचनों से वाक्य तत्व जाननेवाले वानरराज सुग्रीव को ७ समझाय व प्रसन्नकर सत्य व उनको हित सामधर्म्म अर्त्थ व नीति निपुणप्रेम व प्रीति संय्युक्त विश्वास से निश्चय किये ८ वानर राजके निकट जाय हनुमान् जी बोले हे सुग्रीव आपने राज्य पाया व कुलकी श्रीभी बढ़ाई ९ मित्रों का संग्रह बाकीरहा अब वहभी आप करें क्योंकि जोसामयिक देशकाल जाननेवाला पुरुष मित्रोंके साथ अच्छीतरहसे वर्त्तता है १० तिसका राज्य व कीर्त्ति व प्रताप सब बढ़ता है हेराजन् जिस राजाके दण्डखजाना मित्र व उसका शरीर ये सब बराबर हैं वह बड़ा राज्य भोगता है ११ तिससे अब आपके सब कार्य्य सिद्ध होगयेहैं नाश रहित मार्ग्ग में टिक मित्रका कार्य्य यथाविधि कीजिये १२ क्योंकि सब कार्य्यछोड़ जो मित्रोंका कार्य्य नहीं करता चाहे बड़ा भी बीरहो व बड़े कार्य्य के करने में उद्यतहो परमारे अनर्त्थ के उसके कोई भी कार्य्य नहीं सिद्ध होने पाते १३ जो समय बीतजाने पर आगे पीछे मित्रकार्य्य करते हैं चाहे फिर बहुत भी करडारें तो भी वे मित्र कार्य्यकारी नहीं कहाते १४ हे राजन् जो काल बीतगया व तुमने अपनेमित्र श्रीरामचन्द्र जी का यह

सीताजी का ढूंढ़ना कार्य्य न किया तो १५ तो फिर कालवित् श्रीराम-
चन्द्रजी समय बीत जाने पर फिर तुमसे न कहेंगे यद्यपि उनको बड़ी
जल्दी इस कार्य्य के लियेहै व इसीसे तुम्हारे पासआयेभीहैं १६ क्यों-
कि वे प्रशस्त कुलके हेतु व बन्धुहैं व उनका बलप्रताप किसीके प्रमाण
करने के योग्य नहींहै व न उनके समान किसीमें गुणहैं १७ तिसका
कार्य्य अब तुम करीडारो क्योंकि प्रथम तुम्हारा कार्य्य वे कर चुके हैं
इससे हे वानरराज आप अब वानरों को आज्ञादीजिये कि रामचन्द्र
जी का कार्य्य करें १८ व अभी कुछ थोड़ाही काल बीताहै सो जबतक
कार्य्य करने की आज्ञा नहीं होती तबतक वह व्यतीतकाल नहींहोसक्ता
क्योंकि जो कहने पर भी न कियाजायतो वह कालका व्यतिक्रम कहा-
ताहै १९ हे वानरेश्वर जो रामचन्द्रजी तुम्हारा कार्य्य भीनकरतेतोभी
तुमको उनका कार्य्य करना उचित था फिर अबतो तुम्हारा कार्य्य वे प-
हिलेही करचुके हैं अबतो राज्य व धनसे जैसे बने उनका कार्य्य कर-
नाहीं ठीकहै २० हे वानर व ऋक्षोंके गणके अधीश्वर आप शक्तिमान्
व अति पराक्रमी हैं व सब आपकी आज्ञाके अनुकूल कार्य्य करने वाले
हैं फिर श्रीरामचन्द्रजी की प्रीति करने के विषय में अब आज्ञा देने में
क्यों विलम्ब करते हो २१ व रामचन्द्र को जो कहोतोवे तो अपनेबाणों
से देवता दैत्य सर्प्पादिकों को भी वश करसक्तेहैं केवल तुम्हारी प्रतिज्ञा
को परखते हैं कि इनसे कुछ होताहै वानहीं २२ देखो बालीने कुछउन
का अपराध नहीं किया था पर तुम्हारे अर्थ उन्होंने उसे मारडारा यह
आपका बड़ा प्रिय उन्होंने कियाहै इससे उनकी वैदेहीजी को हमलोग
अवश्य ढूंढ़ेंगे चाहे पृथिवी में मिलें वा आकाश में २३ देवता दानव ग-
न्धर्व्व असुर पवन व यक्ष कोई भी रामचन्द्रजीको भयनहीं करसक्ते फिर
राक्षसों की क्या गणना है २४ तिससे इसतरह के शक्तियुक्त रामचंद्र
जीका कार्य्य सबतरहसे तुमको करना उचित है क्योंकि व पहिलेही
तुम्हारा उपकार करचुकेहैं २५ हे कपीश्वर तुम्हारी आज्ञासे हमलोगों
की गति पाताल पृथ्वी जल आकाश व और ऊपरवाले लोकों में कहीं
भी नहीं रुकसक्ती २६ तिससे अब आज्ञा दीजिये कौन कहांसे तुम्हारा
क्या कार्य्य करलावे ये करोड़ों वानर तुम्हारे आगे खड़े हैं केवल आ-

ज्ञाही चाहते हैं २७ समय पर अच्छीतरहसे कहे हनुमान्जी के बचन सुन महा पराक्रमी सुग्रीवने बड़ी उत्तम मति की २८ प्रथम नील नाम सेनापति को आज्ञादी कि तुम सब दिशाओं के भेजने के लिये सेना इकट्ठी करो २६ कि जिसमें हमारी सबसेना व सेनापति व यूथप सब सावधान हो हमारे पास आवें ३० उनमें जो शीघ्रगामी व उद्योगीहों उनकोहमारी आज्ञा से बहुत जल्द भेजो ३१ व आपभी इस बिषय में शोचलें कि और क्या क्या करना होगा ३२ यह बात सब वानरों से हमारी ओरसे कहदो कि जो वानर बिना सीताजीकी सुधि लिये पन्द्रह दिन के पीछे आवेगा तो उसको ऐसादण्ड दियाजायगा जिसमें उसके प्राणही जातेरहेंगे इसबिषयमें कुछभी बिचार न कियाजायगा ३३ आप अङ्गद सहित हमारी आज्ञापाय जो अच्छे २ वृद्धबानर हैं उनके निकट जायकहें कि राजाकी ऐसी आज्ञा है इतनाकह बानरराज सुग्रीवजी अपने राजमन्दिर को चलेगये ३४ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेकिष्किन्धाकाण्डेएकोनत्रिंशस्सर्ग्गः २६ ॥

जब रामचन्द्रजी के निकट से सुग्रीव अपनी गुहाको चलेगये व आकाश बिनाबादरका हुआ तबबर्षा बीतनेपर श्रीरामचन्द्रजी कामशोकसे पीड़ित हुये १ तबनिर्म्मल आकाश देख चन्द्रमण्डल बिमल देख शरद ऋतुकीरात्रि की चांदनीदेख २ व सुग्रीवको यथेच्छाचारी देख व जानकीजी को नष्टदेख व कालबीता देख परमातुरहो रामचन्द्रजी मोहित हुये ३ एक मुहूर्त्त के पीछे जबचेतहुआ तो अतिमतिमान् श्रीरामचन्द्रजी मनमें टिकी बैदेहीजी का स्मरण करने लगे ४ व उसीसमय बिजुली व मेघोंके न होनेसे आकाश बिमल देख सारसों का बोलना सुन अति दुःखित बाणीसे बिलाप करने लगे ५ सारसोंके शब्दके समान शब्दकरनेवाली सीता जो हमारे सङ्ग सारसों का शब्द सुनती हुई बिहरती थीं अबबिना हमारे सारसोंका शब्दसुन क्या करती होंगी ६ काञ्चन समान निर्म्मल असना के वृक्षदेख हमको बिनादेखे जानकी कैसेरमती होंगी ७ जो मधुर भाषिणी जानकी कलहंसों की बोलीसे बिदित होती थीं वे अब कैसे जानी जाती होंगी ८ स्त्रीके साथचलने वाले चक्रवाकों

का बोल सुन कमल दलनयनी जानकी कैसे स्थिर रहेंगी ६ सरसरिता बापी वन व बड़ेवनदेख मृगबालनयना जानकी बिना हमअबसुख नहीं पाते १० व हमारे बियोग व उनके सौकुमार्य्य से तिन हमारी भामिनी को भी काम शरदके गुणोंसे युक्त अत्यन्त पीड़ित करता होगा ११ इसतरह से सीताजी के शोकसे राजकुमार श्रीरामचन्द्र जी ने बड़ा बिलाप किया जैसे इन्द्रसे जलकी इच्छा करचातक बिलपताहै १२ तिसके पीछे फल लेनेके अर्थ पर्व्वत के कंगूरों पर घूमघाम लौट आय लक्ष्मीवान् लक्ष्मणजी ने अपने बड़े भाई को देखा १३ उस समय श्रीरामचन्द्रजी दुस्सह चिन्तायुक्त व मूर्छित एकान्त निर्ज्जन वनमें अकेले बैठे थे तिनको देख भाई के विषाद से तुरन्त अति दुःखितहो परममनस्वी लक्ष्मणजी बोले १४ हे आर्य्य कामके बशीभूत आत्मा करने से क्याहै क्योंकि इससे अपने शरीर का निरादर होताहै व लज्जाभी इससे होतीहै आप चित्तकी एकाग्रता क्यों त्यागतेहैं इसके त्यागनेसेकौन बहुत उत्तम बात आपने बिचारी है १५ हे तात एकाग्र चित्तहो मन प्रसन्न कीजिये व क्रिया करने का भी प्रारम्भ कीजिये व सहायक कीभी सामर्थ्य देखिये इस विषय में कैसी सहाय करते हैं इससे घबड़ाइयेन कुछ करने का प्रारम्भ कर दीजिये १६ हे मानववंशनाथ जानकीजी के एक तुम्हीं नाथहो आपको छोड़ अन्य पुरुष को वेसुलभ नहींहैं किन्तु अन्य कोई जो उनको ग्रहण किया चाहे तो नाशही होजाय जैसे अग्नि की ज्वाला को प्राप्तहो अग्नि को छोड़ अन्य कोई नहींहै जो न जरसके १७ सुलक्ष्मण युक्त लक्ष्मणजी से श्रीरामचन्द्रजी हित सत्य नीतियुक्त व साम धर्म्म अर्थ सहित बचन बोले १८ हे राजकुमार अब अवश्य कार्य्य देखना चाहिये व कुछ क्रिया विशेष करना चाहिये व अति वृद्धि को प्राप्त बड़े दुःख से सहन के योग्य इस अपने बीर्य्यका फलभी चिन्ता करनेके योग्यहै १९ इतनाकह कमलदलनयनी श्रीजानकीजीका स्मरणकर उदासीनहो लक्ष्मणजीसेबोले २० कि इन्द्र जलसेपृथ्वीकोतृप्तकर उससे अन्न लौटार अब सिद्धकार्य्य हुये २१ व ये बड़े गर्ज्जनेवाले मेघ पर्व्वत व वृक्षोंको आगेकर जलवर्ष शान्त हुये २२ व नील कमल सम श्याम मेघ दशों दिशा हरीकर मद रहित हाथियोंके समानशान्त होगये

अब नहीं बरसते २३ व जलरूप गर्भ युक्त कुरैया व अर्ज्जुन वृक्षों की सुगन्ध से सुगन्धित वर्षाके वायु अब खूब वर्षा कराय शान्त होगये २४ हे लक्ष्मण बादर हाथी व मयूर इनका जो शब्द वर्षा में बहुत होताथा अब निवृत्त होगया २५ मेघोंके वर्षने से पर्व्वतों के कँगूरा व चट्टान ऐसे साफ होगये हैं जानों ये पर्व्वत चन्द्रमा की उजियारी से लीपेगये हैं इससे शोभित होतेहैं २६ शतावरी वृक्ष की डालियों में व नक्षत्र सूर्य्य चन्द्रमा की दीप्ति में व उत्तम हाथियों की लीलाओं में शोभा बांट शरद् ऋतु प्रवृत्त हुआ है २७ अब अनेक आश्रयों की शोभा करनेवाली भी शरद के गण युक्त लक्ष्मी सूर्य्य के किरणों से प्रकाशित कमलों में अधिक शोभित होतीहै २८ शतावरी के पुष्पोंसे सुगन्धित भ्रमर गान युक्त पवन मदान्ध हाथियों का जानों मदही दूर करता हुआ अधिक शोभित होताहै २९ मनोहर व बिशाल पंखबाले कमलके प्यारे कमल रस पीते आये चकवा पक्षियों के साथ हंस क्रीडा करते हैं ३० मतवाले हाथी व दर्प्पित बैल व स्वच्छ जल युक्त नदियों में बहुत तरह से बटी लक्ष्मी शोभित होतीहै ३१ बिना बादरका आकाश देख बनोंमें भूषण रूप पंख गिराय भोग की इच्छासे निवृत्त व शोभारहित मोरध्यान लगाये फिर मेघोंकी चिन्तना करते हैं ३२ मनोहर गन्ध युक्त पुष्प भार से झुके सुवर्ण के रंगके फूलों से लदे देखने से मन हरलेनेवाले असना के वृक्षोंसे जानों बन प्रकाशित होगया है ३३ अपनी २ हथिनियों के साथ रहनेवाले व तड़ाग प्रियकरनेवाले व बनमें रहनेवाले व पुष्प सूंघनेवाले कडूमद बहानेवाले मदकी लालसा करनेवाले उत्तम हाथियों की चालें अब मन्द होगईहैं ३४ देखो मलेशस्त्रोंके समान आकाश चमकताहै नदियोंकी धारा छोटी होगईहैं कमल गन्ध सुगन्धित शीतल बायु बहता है मैल न रहने से दिशा प्रकाशित हैं ३५ कई महीनों से जलकीचड़ घास आदि से ढकी पृथ्वी अब सूर्य्य का घाम लगने से सूखी होगई है इससे आपस में बैर किये राजा लोगों के इधर उधर यात्रा करने के योग्य होगई है ३६ शरदऋतु के गुणों से बढ़े रूप से शोभायमान हर्षितहो धूलि उड़ाते मदान्धबैल युद्ध करने की इच्छा से गाइयों के बीचमें डकरते हैं ३७ काम युक्त अति अनुराग किये अपने

बच्चे संग लिये धीरे धीरे चलती हथिनी वनको जाते मतवाले अपने पतिको घेर उसीके पीछे पीछे चली आती है ३८ नदियों के तीर बैठे मोर अपने विभूषण पंख गिराय मानों सारसोंसे निरादरितही उदास हो उड़जाते हैं ३६ अपने चिघड़ने से कारण्ड व चक्रवाकादि पक्षियोंको डरवाय मद चूते हाथी कमल फूले तड़ागों में खलभलाय खलभलाय जलपीते हैं ४० कीचड़ रहित बालू सहित साफ जल युक्त गाय बैल युत व सारस शब्द विनादित नदियों में हर्षितहो हंस कूदते हैं ४१ नदी बादर व झरनोंमें थोड़ाजल होजानेके कारण उदास पवन मयूर व बानरों का शब्द अब थोड़ा सुनाई देता है ४२ नये बादरों के उदय होने पर बहुत दिनोंसे बसे भूंखे नष्ट शरीर नष्टप्राय व घोर बिषवाले अनेक वर्णा के सर्प बिलों से निकलते हैं ४३ देदीप्यमान चन्द्रमा के किरणों के स्पर्श के हर्ष से नक्षत्रों को प्रकाशित कराती अरुण रंगकी सन्ध्या अपने आप आकाश को छोड़े देतीहै ४४ उदित चन्द्रमा को सुन्दरमुख बनाये व प्रकाशित नक्षत्रोंको मनोहर नेत्रसमझे व चांदनीही को वस्त्र बनाये शुक्र वस्त्र धारण किये स्त्रीके समानरात्रि शोभित होतीहै ४५ पक्के धानोंकी बाली खाय हर्षित हो सारसों की पांति बड़े बेगसे पवन से कम्पित मालाके समान आकाश को दबाये डारती है ४६ हंस सोते व कुमुद युक्त बड़े कुण्डोंका जल मेघहीन पूर्णचन्द्रयुक्त व नक्षत्र गण समेत आकाश के समान रात्रिको शोभित होताहै ४७ चारों ओर फैले हंसों को क्षुद्रघण्टिका बनाये व प्रफुल्लित कमलों को माला बनाये उत्तम बावलियों की लक्ष्मी आज भूषण धारण किये स्त्रियों के समान अधिक शोभित होतीहै ४८ बांशों के शब्द को नगारों का शब्द बनाय प्रातःकाल पवनके लगने से बढ़ा सर्व्वत्र व्याप्त वनके गाय बैलों का शब्द जानों परस्पर पूरितही करता है ४९ नदियों के फूलों को हँसती हुई व मन्द पवन से धीरे धीरे कांपती व धोयेमहीन कपड़ोंके समान प्रकाशित काशोंसे नदियोंके कूल अति शोभित होते हैं ५० बनमें विचरने वाले पुष्प रसपीने में चतुर कमल व असन के फूलों की धूलि लगने से गौर मतवाले व हर्षित भ्रमर गन्ध पाने के लिये पवन के साथ चलते हैं ५१ जलकी स्वच्छता फूलों का फूलनो

क्रौंच पक्षियों का बोल पके धानों का बन मन्द पवन व विमल चंद्रमा ये सब जनाते हैं कि अब वर्षा बीतगई व शरद आई ५२ स्त्रीरूप नदियां मछलियों कोही क्षुद्रघण्टिका के समान धारण किये रात्रि में पतिके संगविहार करनेके कारण प्रातःकाल अलसईके मारे धीरेधीरे चलतीकामिनी के समान धीरे धीरे चलती हैं ५३ चकई चकवा सहित व सेवार सहित होने से मानों दुकूल धारण किये नदियोंके मुख पत्रलेख व रोचना लगाये मानों स्त्रियों के मुखहैं ५४ पियाबासा व असना वृक्षोंके फुलाने से चित्र विचित्र व हर्षित भ्रमरों के कूजने से शोभित बनों में धनुष धारण किये अति प्रचण्ड दण्ड कामवनोंमें उद्यत हुआहै ५५ सुन्दरी वृष्टिसे लोक भर पूर्णकर व नदियों व तड़ागों को भी पूरित कर व पृथिवी को अन्नसे पूर्णकर आकाश छोड़ बादर अब नष्ट होगये ५६ शरद ऋतुकी नदियां धीरे धीरे अपने किनारे देखातीहैं जैसे नवसंगम की लज्जासे नई स्त्रियां धीरे धीरे अपना पेड़ू व जांघें पतिको देखाती हैं ५७ हे लक्ष्मण अब सब जलाशयों में जलसाफ होगया है व सबके किनारे सारसें बोलती हैं व सबों में चकई चकवा बोलते हैं इससे सब शोभित होते हैं ५८ हे सौम्य परस्पर बैर रखनेवाले व जीतनेकी इच्छा किये राजाओं के उद्योग करने का समय आय गयाहै ५९ हे नृपनंदन राजाओं की यह प्रथम यात्रा है पर न हम सुग्रीवही को देखतेहैं न उन का कुछ तैसा उद्योगही देखते हैं ६० असना शतावरी कोबिदार दुपहरी आदि के वृक्ष फुलारहे हैं पर्वतोंके कँगूरों पर देखो तो ६१ हे लक्ष्मण नदियों के कोलमें हंस सारस चकई चकवा कुरर आदि पक्षी बोलते हैं देखो तो ६२ शोकके मारे व्याकुल बिना सीता को देखे ये वर्षा के चार मास हमको सौवर्ष के समान बीते ६३ क्योंकि वे बेचारी विषम दण्डकारण्य को हमारे पीछे चली आई जैसे चकई चकवाके पीछे चली जातीहै ६४ हे लक्ष्मण प्रिया विहीन दुःखार्त्त गतराज्य व देशसे निकाले हुये हमारे ऊपर राजा सुग्रीव दया नहीं करते ६५ सुग्रीव हम को अनाथ हतराज्य व रावण से तिरस्कृत दीन दूर रहनेवाले कामी व अपने शरण में आये जान ६६ इन्हीं कारणों से हमारा निरादर करतेहैं ६७ देखो इस दुर्मति सुग्रीव ने सीताके ढूंढ़देने की प्रतिज्ञा

कर अब कृतार्थ हो अपने घरमें बैठाहै वकुछ स्मरणाही नहीं करता ६८ तिससे किष्किन्धापुरीमें जाय हमारी ओरसे मूर्ख व स्त्रीके सुखमेंआसक्त दुष्ट सुग्रीवसे कहो ६९ कि प्रथम जिन्होंने उपकार कियाहै ऐसेअर्थि-योंकी आशादे व फिर उनकाकाम नहींकरता वह लोकमें अधमपुरुष कहाताहै ७० व जोपुरुषचाहै शुभकहे वा अशुभ पर उसको सत्यहीकर छोड़ता है वह बीरपुरुष कहाताहै ७१ व जोलोग चाहे उनकेसाथ उन्होंने उपकार कियाहो वा न किया हो पर उनमित्रोंका कार्य्य नहीं करते मरनेपर मांसभक्षी कुत्ते शृगालादिभी उनकामांस नहींखाते ७२ हम जानते हैं कि तुम अब निश्चयहै कि सुवर्णकी पीठवाला हमारा धनुषसंग्राममें खींचागया देखा चाहतेहो ७३ व फिर क्रोधकर समर में हमारे धनुषकी प्रत्यंचा का बज्रसमान शब्दसुना चाहते हो ७४ जब तुम ऐसाभी सुग्रीवसे कहोगे व वे न मान इसदशा को प्राप्तभी होंगे तो भी तुमहमारे सहायक बनेहोतो हमें कुछभी चिन्ता नहीं ७५ जिसके लिये यहसब कियागया उसबातको यहवानरराज नहींजानता क्याकहें ७६ देखो वर्षाकाल भरकी प्रतिज्ञा करगये थे पर चार मास बीतगये अभीतक उनको कुछ ज्ञाननहीं परा अपनी स्त्रियोंके संग बिह-रतेहैं ७७ देखो अपनेमन्त्री दीवानादिकों के साथ सवारियों परचढ़चढ़ इधर उधर घूमतेहैं व शोकके मारेदीन हमलोगोंके ऊपर सुग्रीव दया नहींकरते ७८ हे बीर जाव हमारेरोषका जैसा रूपहै सबसुग्रीवसे कहो कोई बात छिपाय न रखना ७९ उनसेकहना कि हेसुग्रीव जिस मार्ग में हो तुम्हारे भाई बालीगयेहैं उसकीगली अबकुछ छोटी नहीं होगई अपनीप्रतिज्ञा पूर्णकरो बालीके पीछेपीछे तुम भी न जाव ८० बालीको तो अकेलेही संग्राममें हमने एकहीबाणसे मारा व प्रतिज्ञाकर उसके विपरीत कामकरने से तुमको तो भाई बन्धु सहित मारडालेंगे ८१ हे पुरुषर्षभ इसविषयमें इतना हमाराकहना व जो जो और भी हित हो सबकहना जिसमेंकाममें शीघ्रताहो बस जाव जल्दीही करो ८२ व यह भी कहना कि हेवानरेश्वर जिसबातकी प्रतिज्ञातुमने कीहै उसको पूरीकरो क्योंकि कहकर करनाहीचाहिये यह सनातनधर्म्म है तुम अब समझपर गये बालीको हमारे बाणोंसे प्रेरित न देखो ८३ बहुत कोपकिये

बारबार कहते अपने बड़ेभाई को देख सुग्रीवके ऊपर लक्ष्मणजी ने बड़ाही कोप किया ८४॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेकिष्किन्धाकाण्डेत्रिंशस्सर्गः ३०॥

कामके वशीभूत दुःखित सदा प्रसन्न चित्त पर शोकके मारे व्याकुल अपने प्रयोजनकी इच्छाकिये नरदेवके पुत्र व अपने ज्येष्ठभाई श्रीरामचन्द्रजीसे श्रीराजकुमार लक्ष्मणजी बोले १ कि इस सुग्रीव की बुद्धि जो काम करना चाहिये उसमें नहीं लगती क्योंकि वह यह नहीं जानता कि हमको राज्य इन्हीं लोगोंके देने से मिली है इससे वह वानर साधुओं के आचरण में नटिकेगा अच्छी तरह राज्य न भोगकरेगा इससे अब वानर राज्यलक्ष्मी यह न भोग करने पावे २ अब यह सुग्रीव बुद्धि अंध होने के कारण सुखों में लग रहाहै अब इसकी मति आपका प्रत्युपकार करने में न लगेगी इससे अब हम इसे मार डारें जिसमें यह अपने वीर बाली भाई को देखे क्योंकि ऐसे अयोग्य को राज्य न देना चाहिये ३ हम अब अपने कोपका वेग न धारण करेंगे इस झूठे सुग्रीव को अभी मारडारेंगे जाने दीजिये रहायह कि सीताजी का खोज कौन लगावेगा सो हम बाली के पुत्र अंगद को राजा बनाय देंगे वही श्री जानकी जी को वानरों के साथ जाय खोज लगावेगा ४ धनुर्बाण धारण किये किष्किन्धा को जाने के लिये तैयार अपने मनकी बात कहते व संग्राम में अति कराल कोपकरनेवाले व अपनी ओर निहारते लक्ष्मणजीसे शत्रुओं के मारनेवाले श्रीरामचन्द्रजी बड़ी नीतिके साथ बोले ५ हे लक्ष्मण तुम्हारे समान धर्म्मज्ञलोग मित्र बधरूप ऐसा महापापनहीं करते क्योंकि जो लोग विवेकसे कोपको नाशतेहैं वे पुरुषवीर व पुरुषोत्तमकहाते हैं इससे कोप न कीजिये ६ हे लक्ष्मण सुग्रीवके साथ जो प्रथमप्रीति कीगईथी व जो जो प्रतिज्ञा उनके सङ्गहुई थी उस उस को स्मरणकरो साध्वाचरणधारण करनेवाले आप अब सुग्रीवके मारडारने का विचार मनसे भी न अङ्गीकारकरें ७ अब अतिकाल तो होहीगयाहै इससे सुग्रीव को युक्तिपूर्व्वक जाय समझायहीदीजिये रूखे वचन भी न कहिये ८ ज्येष्ठभाईके समझाने पर शान्तचित्तहो शत्रुओं के नाशक

लक्ष्मणजी किष्किन्धापुरीको गये ६ वहां पहुंच शुभमतिवाले व अपने भ्राताके हितकरने में निपुण लक्ष्मणजी सुग्रीव के मन्दिरको चले १० उससमय इन्द्रके बज्रके समानकठोर व कालांतक के दण्डसे भी विकराल शृङ्गाकार धनुषले शृङ्गवान् मन्दराचलके समानचले ११ मनमें विचारनेलगे कि जैसे उत्तर प्रत्युत्तर सुग्रीवसे कहने को भाईने कहेहैं उन्हींकेअनुसार कामकरनाहै फिर बुद्धिमें बृहस्पतिके समान तो थेही सब प्रश्नोत्तर शोचलिये १२ व उसीबीचमें भाईके कोपाग्निसे युक्तहुये इससे वायु वेगहो चले अति वेगसे चलने के कारण मार्ग्ग के साखू आदि वृक्षों को तोड़ते उखाड़ते चले जाते १३ इन वृक्षों के सिवाय अन्यभी सैकरों हजारों वृक्ष व पर्व्वत के शृंग तोड़ते उखाड़ते इधर उधर फेंकते जाते १४ शिलाओं को चरणों से चूर्ण किये देते जान पड़ताथा किकोई मतवाला हाथी है तोड़ता फाड़ता चला जाताहै गली तो छोड़दी मारे शीघ्रता के जिधर पाया दबाय लिया १५ जाते जाते इक्ष्वाकु शार्दूल लक्ष्मणजी ने बड़े दुर्ग्गस्थान में पर्व्वतों के बीचमें बनी किष्किन्धापुरी देखी १६ सुग्रीवके ऊपर महाकोप किये ओष्ठसे ओष्ठ चबाते लक्ष्मण जी ने पुरीके बाहर बड़े बड़े बानर घूमते देखे १७ उन सब बानरों ने पुरुषश्रेष्ठ लक्ष्मण जी को देख बड़े बड़े पर्व्वतों के सैकरों शृङ्गलिये व बड़े बड़े वृक्ष भी उखाड़ लिये वे सब बानर पर्व्वताकार थे कोई छोटा न था १८ तिन सबको मारने के लिये आयुध लिये देख लक्ष्मणजी के दूना क्रोध हुआ जैसे बहुत ईंधन डालने से अग्नि प्रचण्ड होताहै १९ लक्ष्मणजी को मारे क्रोधके इधर उधर कूदते देख वानरों ने जाना कि ये तो हम लोगों के लिये कोई काल वा मृत्युही हो आयेहैं बस उनमें से सैकरों भाग खड़े हुये २० बरन एक भी न सामने खड़ाहुआ सबकेसब भागते भागते सुग्रीव के स्थान में जाय कोप युक्त लक्ष्मणजी का उन्हों ने आगमन कहा २१ परंतु वह महाकामी सुग्रीव ताराके संग विहार कर रहा था वानरों के बचन उसने न सुने २२ पर मन्त्रियों की आज्ञासे हर्षित हो पर्व्वत हाथी व मेघोंके आकारके हजारों लाखों बानर लड़ने के लिये किष्किन्धापुरी से बाहर निकले २३ उनमें नख व दांत तो सब के आयुध थे व सब बड़े धीर व विकराल स्वरूप थे सबके बाघों कैसे

दांत थे व सबके महाविकराल मुखथे २४ किसी किसीके तो दश हाथियों का बलथा किसी किसीके सौ हाथियों का किसी किसीके हजार हाथियों के तुल्य पराक्रम था २५ तब हाथों में वृक्षलिये महाबलवान् वानरों से घेरी किष्किन्धा देख लक्ष्मणजी ने बड़ाही क्रोध किया २६ व वे सब महापराक्रमी वानर शहरपनाह से बाहर आये अपने अपने आयुध ले तैयार हो खड़े होगये २७ तब सुग्रीव का प्रमाद व अपने भाई का प्रयोजन देख फिर लक्ष्मणजी बहुत क्रुद्ध हुये २८ व बहुत गरम व ऊंची सांसें लेने लगे कोपके मारे नेत्र लाल होगये उस समय धुआं सहित अग्निके समान रूप होगया २९ बाण व शल्यके समान प्रज्वलित जीभ किये तरकस को फण बनाये अपने तेजको विष समझे पंचमुहा सर्पके समान क्रुद्धहो इधर उधर निहारने लगे ३० तिन को बरते कालाग्नि के समान व कोप कराये हाथी के समान देख मारे भय के अंगद बहुत व्याकुल हुये ३१ अंगद को व्याकुल देख मारे क्रोध के रक्त समान नेत्र किये महायशस्वी लक्ष्मणजी बोले हे वत्स अंगद हमारा आना जाय सुग्रीव से कहो ३२ कि रामचन्द्रजी के छोटे भाई लक्ष्मण भाई के दुःख से अति दुःखित हो तुम्हारे निकट आये हैं व द्वार पै खड़े हैं ३३ उनके वचन में जो प्रीति होतो तैसा काम करो हे वत्स हमारा वचन इस तरह कह शीघ्रही यहां चलेआवो ३४ यह सुन अति शोक युक्त हो सुग्रीवके निकट जाय अंगदने कहाकि लक्ष्मण जी आये हैं ३५ पर क्रोध युक्त लक्ष्मणजी के वचनसुन अंगद बहुतही व्याकुल हुयेथे। इससे बताय उदासीन हो प्रथमतो सुग्रीव के प्रणाम किया तिसके पीछे उनकी स्त्री रुमाके चरणोंकी बन्दना की ३६ फिर भी सुग्रीव के चरण मींजे फिर माता के फिर रुमा के तिसके पीछे लक्ष्मण जीका आना कहा ३७ परंतु सुग्रीव एक तो बहुत औंघायेथे दूसरे कामनद से मोहितथे तीसरे राज्यके मदसे भी व्याकुलथे इससे वे न जाग व न कुछ समझे ३८ तिसके पीछे लक्ष्मण जीको क्रुद्ध देख उन को प्रसन्न करने के लिये वानरोंने किलकिला शब्द किया क्योंकिमारे भय के उनका चित्त मोहित होगयाथा ३९ तिसके पीछे सब वानरों ने सुग्रीव के जगाने के लिये जल प्रवाह के शब्दके व बज्र पातके शब्द

के व सिंहों के नाद के समान शब्द सुग्रीव के समीप जाय किया ४० तिस बड़े शब्द से सुग्रीव जाग तो उठे पर मदसे विह्वल होनेसे नेत्र लाल हो रहेथे व माला भूषणादि धारण किये ब्याकुल चित्तथे ४१ सुग्रीव के जागने के पीछे अंगद ने आयेहुये तिनके दो मन्त्रियोंसे कहा कि लक्ष्मण जीके आने का हाल राजा से समझाय कहो तब सुग्रीव के शुभचिन्तक वे दोनों मन्त्री अंगद सहित राजाके निकट गये ४२ उन में एकका प्लक्ष नामथा दूसरेका प्रभाव ये दोनों अर्थ व धर्म्म के मन्त्री थे लक्ष्मण के आने के बिषयकी जो ऊंची नीची बातेंथी कहनेलगे ४३ पहिले सुग्रीव को सार्त्थक व निश्चित वचनों से बहुत समझाय प्रसन्न किया जैसे इन्द्रको देवतालोग प्रसन्नकरतेहैं ४४ तिसकेपीछे कहनेलगे कि सत्यप्रतिज्ञ महा भाग्यवाले दोनों भाई श्रीरामचन्द्रजी व लक्ष्मण जी जो आज कल मनुष्य शरीर धारण कियेहैं व राज्य करनेके योग्य हैं व जिन्होंने तुमको राज्यदिलायाहै ४५ तिनमें एक भाईलक्ष्मण धनुर्बाण धारण किये द्वारपै बैठेहैं जिनके भयसे ब्याकुल ये सब बानर शब्द करतेहैं ४६ वही रामचन्द्रजीकेभ्राता लक्ष्मणजी कि जिनकेरामचन्द्रजी का वचनही सारथि है व जो कर्त्तव्य है उस बिषय में जिनका निश्चय है सो रामचन्द्रजीही की आज्ञा से यहां आये हैं ४७ व उन्हीं लक्ष्मण जी ने इन तारा के पुत्र अंगदको तुम्हारे समीप शीघ्रता से भेजाहै ४८ हे बानर राज वे लक्ष्मण अभी कहींगये नहीं तुम्हारे द्वारपै अपनी दृष्टि से बानरों को भस्मही करते से खड़े हैं ४९ हे महाराज अपने पुत्र व बान्धवों के साथ जाय तिनको प्रणाम करो जिसमें अभी उनका रोष शांत होजाय ५० हे राजन् जैसी धर्म्मात्मा श्रीरामचन्द्रकी आज्ञा लक्ष्मण जी बतावें वैसा काम करो व जो प्रतिज्ञा सीताजी के ढुंढ़ाने के लिये आपनेकीहै उसको पूरीकरो जिसमें तुमभी सत्यप्रतिज्ञ ठहरो ५१॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेकिष्किन्धाकाण्डेएकत्रिंशस्सर्गः ३१॥

अंगद व उन मंत्रियों के वचन सुन लक्ष्मणजी को कुपित जान सुग्रीव आसन से उठ खड़ेहुये १ व इस विषय का गुरु व लाघव विचार मंत्र जाननेवाले अपने मंत्रियोंसे मंत्रमें बड़े कुशल व मंत्रों में अति नि-

श्वास रखनेवाले सुग्रीव बोले २ कि न तो हमने कुछ रामचंद्रजी को दुर्वचन कहा न कोई अपराधही किया फिर श्रीरामचंद्रजी के भ्राता किसलिये क्रोध कियेहैं यही अपने चित्तमें विचारतेहैं ३ पर हमारे विचार में तो यही आताहै कि जो हमारे शत्रु हैं जो अपनी वुद्धिसे क्षुद्र बातें समझाया करते व अंतःकरण के मलिन हैं उन्होंने जो दोष हमने कियेभी नहीं मृषा वही कह कह लक्ष्मणजी को अघवादिया इसीसे क्रोधकियेहैं अन्यथा इनको हमारे ऊपर कभी न क्रोध होता ४ इसविषयमें यथामति व यथाविधि सब लोग विचार करो व उसका निश्चय करो कि यही बातहै ५ व हमको न श्रीरामचंद्रही से कुछ भयहै न लक्ष्मणही से पर हां विना अपराध किये मित्रका कोप व्याकुलताही कराता है क्योंकि लोग कहने लगेंगे कि ये मित्र द्रोहीहैं जोतो रामचंद्रजीने कोप किया नहीं तो उनके साथ जो जो कोई उपकार भी करता उसकी ओर नहीं दृष्टि करते ६ मित्र करना तो सहज है पर मित्रकी रक्षा बहुत कठिन है क्योंकि चित्तों की अनित्यता से थोड़ेसे भी अपराध में भेद परजाता है ७ व हमको इसलिये रामचंद्रजी से डरते हैं कि उन्होंने हमारेसाथ उपकार किया पर हमने उनका प्रत्युपकार अभी नहीं करपाया ८ सुग्रीवने जब ऐसा कहा तो वानरोंमें श्रेष्ठ हनुमानजी वानरों के बीचमें अपने तर्कसे बोले ९ हे वानरगणराज जो तुम उत्तम उपकार नहीं भूलते तो आश्चर्य की बात नहीं है क्योंकि महात्माओं का स्वभावही ऐसा होता १० अब श्रीरामचंद्रजी की ओर देखना चाहिये कि उन महापराक्रमी व वीरशिरोमणि ने भय दूरहीसे त्याग तुम्हारा प्रिय करनेके लिये इन्द्रसम पराक्रमी बालीको मारडाला ११ फिर अब क्रुद्धभी हुये तो भी उन्होंने भ्रातृप्रेमके लक्ष्मीके बढ़ानेवाले अपने भाई लक्ष्मणजी को भेजा १२ पर तुमतो असावधान चित्त हो इससे सीताजीको ढूंढ़ानेको जो कहाथा नहीं जानते अब उसका समय आय गयाहै क्योंकि फूली शतावरीके वृक्षों से श्यामसुंदर शरद प्रवृत्त हुई है १३ निर्म्मल ग्रह नक्षत्रादिकों के होनेसे व मेघोंके न होनेसे आकाश निर्म्मल होगया है व सब दिशा स्वच्छ होगई हैं नदियां व तड़ाग भी सब स्वच्छ होगये १४ हे वानरश्रेष्ठ अब सबतरह से

उद्योग का काल प्राप्तहुआ परतुम प्रमत्तहोनहीं जानते इसीसे लक्ष्मण यहां आये १५ अब लक्ष्मणकी जवानीस्त्री हरजाने के कारण दुःखित श्रीरामचन्द्रजीके कठोरवचन सुन क्षमाकरना ऐसा न हो तुम भी कुछ दुर्व्वचन कहनेलगो १६ क्योंकि फिर तुमने तो अपराधही कियाहै इससे इसकेसिवाय और उपायनहीं देखाईदेती केवलहाथ जोड़ लक्ष्मण को प्रसन्नकरो उनकी ऊंची नीची बातें सहो १७ अच्छे मन्त्रियों को यही उचित है कि राजाके हितकी बातकहें इसीसे भयछोड़ हम ढीठे बचन कहतेहैं १८ व जो कहो कि इसमेंहमारा कौनहितहै कार्य्यतो रामचन्द्र का सिद्धहोगा सो नहीं क्योंकि रामचन्द्रजी जो क्रोधकर धनुष उठावें तो देवता असुर गन्धर्व्वादि सहित सब जगत् अपनी वशमें करसक्ते हैं १९ इससे फिर वे कोप करानेके योग्यनहींहैं क्योंकि प्रथमसे प्रसन्न होरहेहैं व तुम्हारेसाथतो जानो प्रथम उपकारभी करचुकेहैं इससे तुमको किसीतरह ऐसा न चाहिये कि उनको कोपकराओ २० इससे हे राजन् तुम पुत्र स्त्री व अपने सुहृदोंके सङ्ग जाय उनके प्रणामकर अपनी प्रतिज्ञा पूरीकरो इसीमें तुम्हारा कल्याणहै जैसे स्त्रीका कल्याण पति के अधीन रहनेही से होताहै २१ हे कपीन्द्र राम व लक्ष्मणकी आज्ञा तुमको मनसेभी उल्लंघन करना योग्यनहींहै क्योंकि सुरेन्द्रके समान तेजस्वी मनुष्यावतार धारणकिये श्रीरामचन्द्रजी का बल तुम अपने मनसे खूब जानते हो २२ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेकिष्किन्धाकाण्डेद्वात्रिंशस्सर्गः ३२ ॥

वहां हनुमान्‌जी ने तो सुग्रीव से सब समझाय बुझाय कहा यहां अंगद को सुग्रीव के निकट भेज रामचन्द्रजी की आज्ञासे आये शत्रुओं के हन्ता लक्ष्मणजी किष्किन्धापुरी में पैठे १ व द्वारपै टिके महाबल पराक्रमी वानर लोग लक्ष्मणजी को देख हाथ जोर सबके सब खड़े होरहे २ व इनको क्रोधके मारे ऊंची सांसलेते देख सब वानर भयभीत हो लक्ष्मणको रोंक न सके ३ इसलिये बनाय भीतरतक चलेगये देखा तो वह गुहा सब रत्नोंसे बनीथी इससे अति रम्यथी सबओरसे वन फूल रहे थे ठौर ठौर रत्नों के ढेर लगे थे ४ बड़े बड़े धवरहर सब ओर

से बने थे नानाप्रकार के रत्नोंसे शोभित होती थी सब ऋतुओं में फूलने फरनेवाले वृक्षोंसे उप शोभित थी ५ व देवता गन्धर्व्वके पुत्र व वानरों से शोभित थी क्योंकि ये सब देवादि दिव्यमाला व वस्त्रादि धारण करने के कारण अति दर्शनीय रूप थे ६ चन्दन अगरु व कमल की सुगन्ध से सुगन्धित मदिरा व मधुपीनेवाले लोग चौहटे में घूमरहेथे ७ वहां नानाप्रकार की पर्व्वतसे निकली नदियां भी बहती थीं उनको भी लक्ष्मणजी ने देखा ८ आगे चल जब राजमार्ग्ग में पहुंचे तो अंगद मैन्द द्विविद गवय गवाक्ष गज शरभ ९ विद्युन्माली सम्पाति सूर्य्याक्ष हनूमान् वीरबाहु सुबाहु महात्मा नल १० कुमुद सुषेण तार जाम्बवान् दधिवक्र नील सुपाटल सुनेत्र ११ इन मुख्य मुख्य वानरों के अति विचित्र मन्दिर लक्ष्मणजीने बनेदेखे १२ ये सब मन्दिर उजलेबादरके समान प्रकाशित व चन्दनादि सुगन्धित वस्तुओं व मालाओं से भरे बहुत तरहके धन धान्य भरे सबमें सैकरों उत्तम स्त्रियां विद्यमान थीं इससे सब शोभित होते १३ इन सब मन्दिरों के बीचमें कुछलाल व उजले रंगके पर्व्वत से घिरेथे इसीसे बड़े दुःखसे अनारी मनुष्य जाय सक्ते इसतरह का इन्द्र भवन सदृश सुग्रीव का मन्दिर लक्ष्मणजी ने देखा १४ वह राजमन्दिर उजले धवरहरों के शिखरोंसे जो कैलासके शिखरके समानथे व सब समयों में फूलने फलनेवाले वृक्षोंसे शोभित १५ इनके सिवाय और भी इन्द्रके दिये धनादि व श्याम मेघघटा के समान कल्पवृक्षादि से शोभित था क्योंकि इन वृक्षोंकी छाया बड़ी शीतल होती १६ व बड़े बड़े बलवान् बानर हाथमें खड्गलिये द्वारपर खड़ेथेसबओरसेदिव्यमालाटंगीथीं व पक्केसुवर्णका बन्दनवारबँधाथा १७ इसतरह के रम्य सुग्रीवके मन्दिर में बिना रोंक टोंक लक्ष्मणजी पैठे जैसे बादर के बीच में सूर्य्य पैठते हैं १८ जाते जाते सवारी आसनादि युक्त सात फाटक नांघ अति गुप्त व मनोहर सुग्रीव की स्त्रियों के रहनेवाला मन्दिर देखा १९ उसमें सैकरों सोने चांदी के पलंग परेथे उनपै बड़े बड़े मोल के बिस्तरा परेथे २० पैठतेही पैठते गाने बजाने वालों का मधुर शब्द सुनाई दिया बीणाआदि बाजे बाजतेथेताल स्वरके साथ गाना होरहाथा २१ जब उसके बनाय भीतरपैठे तो रूप यौवन से भ-

ष्ठित सबतरह के उत्तम उत्तम भूषण वस्त्र धारणकिये विविधप्रकार की बहुत स्त्रियां सुग्रीव के भवन में लक्ष्मणजीने देखीं २२ बेसबदासी दासियों से पूर्ण फूलों की माला धारणकिये व अन्य नानाप्रकार के भूषण बस्त्रादि धारण कियेथीं २३ फिरदेखा तो जितने सुग्रीवके सेवक थे कोई अतृप्त नथा न कोई स्वामी का कार्य्य करने में सुस्ती करता था व न कोई उचित बस्त्र भूषण से रहित था २४ आगे और पैठे तो स्त्रियों के नूपुर व क्षुद्रघण्टिका आदि भूषणों के शब्द सुनाई दिये उन्हें सुन अपनाकी बनाय स्त्रियोंके सन्निकट पहुंचे जान लक्ष्मणजी अति लज्जित हुये २५ व उन शब्दों के सुनने से रोष का वेग जाता रहा तब सुग्रीव क सज्जुग होने के लिये बड़े जोर से लक्ष्मण जीने अपने धनुषपै टङ्कोर दिया जिससे सब दिशा पूर्ण होगईं २६ वह स्त्रियों के समूह का चरित्र देख लक्ष्मणजी कुछ संकुचित होगये इससे एकान्त में एक स्थान पैखड़े होगये. २७ व तिस शब्द से बानरराज सुग्रीव लक्ष्मण जीका आगमन जान भयभीत हो आसन पर से हरबराय उठ खड़ेहुये २८ व कहा कि जैसा हमसे अंगदने कहाथा कि लक्ष्मणजी आयेहैं सो सत्य हीहै भ्रातृवत्सल लक्ष्मण प्राप्तही हुये २९ अंगदके कहनेसे तो जानाहीथा पर धनुष का शब्द सुनते सुनते तो बनाय जाना कि लक्ष्मण जी आयगये इसीसे सुग्रीव का मुख सूखगया ३० तब मारे भयके व्याकुल चित्त हो सुग्रीव अपनी परमप्यारी तारा से बोले ३१ हे प्रिये रोष करने का क्या कारण है जिससे कि प्रकृति से कोमल स्वभाव लक्ष्मण जी क्रोध युक्तहो यहां आयेहैं ३२ भला तुम लक्ष्मण के रोष करनेका कौन कारण देखती हो जो कहें कि योंहीं कोप किया होगा सोतो बिना कुछकारण ये नरश्रेष्ठ लक्ष्मणजी कोपही नहींकरते ३३ जो हम लोगों ने कुछ इनका अप्रिय कियाहीतो तुम्हीं अपने मनसे बिचारो व बिचार फिर जो कुछ कर्त्तव्य हो करो ३४ अथवा तुम्हीं जाय उनके दर्शनकरो व समझाने के योग्य वचन कहकह उनको प्रसन्न करो ३५ तुमको देख बिशुद्धात्मा लक्ष्मणजी कोप न करेंगे क्योंकि स्त्रियों के ऊपर महात्मा लोग दारुण कोप नहींकरते ३६ जब तुम्हारे समझाने से वे प्रसन्नहो जायँगे तो हमभी उन कमलदल नयनको देखेंगे ३७ यह सुन मद के

मारे बिह्वल नेत्र कटिसूत्र छुद्रघंटिका बांधे व सुन्दर लक्षण युक्त तारा बहुत नम्रहो लक्ष्मणजीके निकट गई ३८ तिस बानरराज की पत्नी ताराको देख महात्मा लक्ष्मणजी ने नीचे मुख कर लिया व उदासीन होगये व स्त्री के निकट खड़े होनेसे कोप भी निवृत्त होगया ३९ पर मदिरापान करने के कारण व लक्ष्मणजी के कुछ न कोप करने से तारा कुछभी लज्जित न हुई प्रेम की ढिठाई से बहुत समझाती हुई बोली ४० हे मनुजेन्द्रपुत्र तुम्हारे कोप का मूल क्या है तुम्हारी आज्ञा में कौन नहीं टिकता वह कौन है जो सूखे वृक्षों के बनमें लग दावाग्नि से नहीं डरता ४१ तिसका सान्त्वपूर्व्व वचनसुन निश्शङ्क हो लक्ष्मण जी प्रेम युक्त अपना प्रयोजन कहने लगे ४२ हे तारे यह तुम्हारा पति काम में ऐसा प्रवृत्त होगया है कि इसने धर्म्म अर्थका संग्रहही लोप करदिया तुम इसको समझाती नहीं हो ४३ देखो वह अपने राज्यके अर्थ शोक परायण हम लोगों की ओर नहीं देखता अपनेमंत्री दीवानादिकों के संग केवल कामही को सेवता है ४४ देखोतुम्हारे पतिने चारमास का वादा कियाथा सो बीत गये पर वह ऐसा मदान्ध है कि आप बिहार कर रहाहै हमारे कार्य्यकीसुधिही नहींकरता ४५ धर्म्म अर्थ सिद्धिके लिये अति मादकपदार्त्थ खानानहीं अच्छाहोता क्योंकि मदिरादि मादकपदार्त्थ पीनेखानेसे अर्त्थ काम व धर्म्मसब जातरहते हैं ४६ जो उपकारीके साथ प्रत्युपकार नहींकरता वह महा धर्म्म लोपकारक है व गुणवान् मित्रके कार्य्यका नाश करनेसे अर्त्थका भी लोपहोताहै ४७ तुम्हारे पतिने अर्त्थ गुणश्रेष्ठ व सत्य धर्म्म परायण श्रीरामचन्द्र ऐसे मित्रको छोड़दिया तो दोनों लोकोंके सुख छोड़दिये व सनातन धर्म्म की कुछ उसके पास व्यवस्थाही नहीं रही ४८ जो सुग्रीव को करना चाहिये वह हमने कहा अब तुमने कार्य्य का निश्चय जानलियाहै जाय सुग्रीव से सबकहो ४९ धर्म्म अर्त्थ युक्त व मधुर स्वभाव सहित लक्ष्मणजी के बचन सुन तारा श्रीरामचन्द्रके कार्य्यके योग्य बचन बोली ५० हे भूपाल पुत्र यहकोप का समय नहींहै क्योंकि अपने जनके ऊपर कोप नहीं किया जाता व वेतो तुम्हारेही अर्त्थ की इच्छा किये रहतेहैं इससे जो कोई प्रमाद की भी बात करे तो भी तुमको सहलेना चाहिये ५१

हे कुमार गुणों से श्रेष्ठ तुम्हारे समान पुरुष अपने अधीन पुरुषके ऊपर कोई कोप न करेगा व न कोई तुम्हारे सदृश बिचारवान् क्रोध के बशीभूतही होगा ५२ हे सुग्रीवादिकों के पालक तुम्हारे कोपका कारण हम जानतीहैं व सीताजी के ढूंढ़ने के योग्य समय अब आयाहै वह भी जानतीहैं व तुममें जो हमलोगों को कर्त्तव्यहै वहभी जानती हैं व जो सुग्रीवने बिलम्ब किया वहभी जानतीहैं व जो अब करना चाहिये वह भी जानती हैं ५३ हे नरश्रेष्ठ कामका जैसा असह्य बलहै वहभी हम जानतीहैं क्योंकि जिसके कारण अबतक सुग्रीव स्त्रियोंमें लगेरहे व यह भी जानती हैं कि अब कामालय स्त्रियोंमें सुग्रीव अत्यासक्त नहीं हैं ५४ व कामके बशीभूत पुरुष के जानने में तुम्हारी यथार्थ बुद्धि नहींहै क्योंकि तुम यहनहीं जानते कि कामी पुरुषको न मारना चाहिये इसीसे तुम क्रोधके बशीभूतहुये हो कामके बशमें परने से मनुष्य भी अर्थ धर्म्म व देश कालको नहीं जानता फिर बानर न जाने तो क्या आश्चर्य्य है ५५ तिससे काममें प्रवृत्त व कामातुर होनेसे निर्लज्ज व तुम्हारी डरसे हमलोगों में लुके अपने भाई सुग्रीव के अपराध क्षमा करो ५६ देखो धर्म्म व तपस्या करने में आसक्त महर्षि लोगभी कामकेबशीभूतहो मोहके बन्धनमें परजाते हैं फिर स्वभावही से चंचल यह बानर शरीर राजा सुग्रीव सुखोंमें क्यों न आसक्त होजाय ५७ इसतरहमहा अर्थ युक्त बचन अप्रमेय लक्ष्मणजी से खेद सहित कह मदसेघिहवलाक्षीहो अपने पतिके हितदायक बचन फिर बोली ५८ हेनरोत्तम यद्यपि सुग्रीव कामके बशभी हैं तथापि आपके कार्य्य साधन करने के लिये उन्होंने पहिलेही से उद्योग कर रक्खाहै ५९ इसीसे ये महा पराक्रमी यथेच्छा रूपधारी नाना पर्व्वतों के निवासी किड़ोरों हजारों लाखों वानर आयेहैं ६० जिससे कि सखाको समझानाचाहिये व आपने समझायही दिया इसबात का पालन किया इससे आइये भीतर चलिये जो कहिये कि वहां पर स्त्रियोंके बीचमें जाना अनुचितहै कैसेजायँ सोकुछ नहीं क्योंकि मित्र भावसे पर स्त्रियोंका देखना सज्जनों का अधर्म्मनहींहै ६१ जब ताराने ऐसाकहा व फिर बार बार कहा तो शत्रुओंके नाश करनेवाले लक्ष्मणजी सुग्रीवके जनाने मन्दिरमें पैठे ६२ व तिसके

पीछे सुवर्णके बहुमूल्य आसन पै बैठे जिसपर बड़ेमोल का बिछौना बिछाया था ६३ दिव्य भूषण धारण किये अति दिव्य रूप व अतिय-शस्वी दिव्यमाला व दिव्य वस्त्र धारण किये इन्द्रके समान दुर्ज्जय ६४ व दिव्य आभरण वस्त्रादि पहिरे चारों ओरसे स्त्रियोंसे सेवित सुग्रीव को देख लक्ष्मणजी ने बड़ा कोपकिया ६५ व रुमानाम अपनी स्त्री को बड़े जोरसे छपटाय बड़े आसन पै बैठे सुवर्ण समवर्ण सुग्रीव अतिबीर रूप व विशाल नेत्र लक्ष्मणजी को देखा ६६ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेकिष्किन्धाकाण्डेत्रयस्त्रिंशस्सर्गः ३३ ॥

व रोंक टोंक क्रोधकिये पुरुषश्रेष्ठ पैठेहुये लक्ष्मणजीको देख सुग्रीव बहुत व्यथितहुये १ क्रोधकिये ऊधी सांसें लेते तेजसे देदीप्यमान् भाई के दुःखसे दुःखित लक्ष्मणजीको देख २ वानरोंके राजासुग्रीव सुवर्णका आसन छोड़ अति अलंकृत इन्द्रध्वजकेसमान भूमिमें गिरपरे ३ सुग्रीव को गिरतेदेख रुमाआदि स्त्रियांभी आकाशमें पूर्णमासीके चन्द्रमाके चारों ओर ताराओंके समान जायगिरीं ४ तबरक्तसमनेत्र श्रीमान् लक्ष्मणजी इधर उधर टहरनेलगे व सुग्रीव हाथजोरमहा कल्पवृक्षके समान खड़े होगये ५ स्त्रियोंके बीचमें खड़े रुमाको सहायक बनाये सुग्रीवको नक्षत्र सहितचन्द्रमाके समान देख क्रोधकर लक्ष्मण जी बोले ६ कि पराक्रम व परिवार संयुक्त दयावान् जितेन्द्रिय उपकार जाननेवाला व सत्यवादी राजा इसलोक में पूजित होताहै ७ व जो राजा अधर्म्म में टिक उप-कारी मित्रों के साथ मिथ्या प्रतिज्ञा करतेहैं उनसे अधिक महा हिंसक कौन है वरनवेही महा हत्यारे हैं ८ ॥

दो० तुरग बिषय कानृत कहे शत तुरंग बध दोष ॥
इमि गोबिषयक अनृत कहसहस सुरभिवधचोष १
पुरुष बिषय कानृतकहे स्वजन आतम बधकेर ॥
दोषहोत अरु पुरुषवर अनृत दोषकर ढेर २ । ९

व हे सुग्रीव जो लोग प्रथम मित्रों की ओरसे उपकार पाय चुकतेहैं व फिर उनका प्रत्युपकार नहीं करते वेही लोग कृतघ्न कहाते व वेही ब लोगों से वध्य हैं १० यह सब लोकों के नमस्कार करने के योग्य

श्लोक ब्रह्माजी ने कृतघ्नपुरुषको देख क्रोध करगायाहै हमारा बनाया नहीं है ११ व महात्मा लोगों ने भी गोवध करनेवाले व मदिरा पान करनेवाले व चोर व व्रत भंग करने वाले पुरुषोंकेलिये तो पाप मिटाने के लिये कुछ युक्ति बनाई है परन्तु कृतघ्न पुरुष के पाप मिटानेके लिये कोई भी युक्ति नहीं बनाई १२ हे बानर जिससे कि तुमने पहिले अपना काम रामचन्द्र जीसे करालिया व अब उन के साथ प्रत्युपकार नहीं करते इससे तुम बड़े अनारी व कृतघ्न व मिथ्यावादी हो १३ अबरामचन्द्रजी की ओरसे कृतार्त्थ हो सीता जीके ढूंढ़ने में यत्नकरो १४ क्योंकि तुमको यही करनाचाहिये परंतु तुमतो ऐसे ग्रामीण सुखों में आसक्त होगयेहो कि तुमने अपनी प्रतिज्ञाही छोड़दी तुमको मेंड़ककीबोली बोलते सर्प्प के समान दुष्ट स्वभाव श्रीरामचन्द्रजी नहीं जानतेथे १५ इसीसे महात्मा व महाभाग व करुणाकर श्रीरामचन्द्रजी ने तुम कुष्टात्मा को बानरोंका राज्य दिया १६ अब जो महात्मा श्रीरामचन्द्रजी का उपकार तुम नहीं जानते तो इन हमारे तीक्ष्ण बाणोंसे हत हो शीघ्रही अपने भाई बाली के दर्शन करोगे १७ हे सुग्रीव जिस मार्ग्गमें होकर मृतक बाली गया है वह मार्ग्ग सांकर नहीं होगया इससे जो प्रतिज्ञा तुमने कीहै उसपै टिको बाली के मार्ग्ग में न चलो १८ तुम रामचन्द्र जीका कार्य्य मनसे भी नहीं देखते इससे इक्ष्वाकुबंशियों में श्रेष्ठ श्री रामचन्द्रजी के धनुषसे छूटे वज्र समान बाण तुम अवश्यदेखोगे व तिनके देखने से सुखसेवन न करोगे १६ ॥

इत्यार्षेरामायणेबाल्मीकीयेकिष्किन्धाकाण्डेचतुस्त्रिंशस्सर्ग्गः ३४ ॥

तेज के मारे देदीप्यमान ऐसा कहतेहुये लक्ष्मण जीसे पूर्णचन्द्रमुखी तारा बोली १ हे लक्ष्मण ये बानरों के राजा सुग्रीव आप के बड़े मुख से कठोर वचन सुनने के योग्य नहीं हैं इससे आप बानरराज से ऐसे वचन न कहिये २ क्योंकि ये सुग्रीव नतो अकृतज्ञ हैं न शठ न दारुण स्वभाव न मिथ्याबादी व न कुटिल ३ हे बीरजोउपकार श्रीरामचन्द्रजीने रण में इनके संग कियाहै वह और कोई नहीं कर सक्ता सो वह इनको भूल नहीं गया ४ क्योंकि श्रीरामचन्द्रही के प्रसादसे सु-

ग्रीव ने कीर्ति निरन्तर राज्य रूमा व हमको पाया है ५ जोकहोकि उप-
कार भूलेनहीं तो प्रत्युपकार करनेमें बिलम्ब क्योंकिया इसका कारण
यहहै कि बहुत दिनोंतक सुग्रीव दुःख में परेरहे अब उत्तम सुख पाय
समयको नहीं जानते जैसे महा मुनि बिश्वामित्रजी कालको भूलगये
थे ६ देखो वे महामुनि घृताचीनाम अप्सरा के संग दश बर्ष तक बि-
हार करते रहे पर उन्होंने जाना कि अभी एकही दिन बीता है ७
हे काल जाननेवालों में श्रेष्ठ जब महा तेजस्वी दूरदर्शी बिस्वामित्र
जी नेही न काल जाना तो इतरजन की कौन गणना है ८ इससे हे
लक्ष्मण देहधर्म्म को प्राप्त थकेथकाये व कामके विषयों से अतृप्त
सुग्रीव के अपराध श्रीरामचन्द्र जी से क्षमा कराइये ९ हे तात
लक्ष्मण बिना निश्चयार्त्थजाने अविचारसे प्राकृती मनुष्यों के समान
आप क्रोध के बशीभूत न हों १० क्योंकि तुम्हारे समान सत्वयुक्तपुरुष
बिनाविचार किये रोष के बशमें नहीं परते ११ हम सुग्रीवकेलिये आप
से प्रार्थना करतीहैं यह बड़ाभारी क्रोध जो आपने कियाहै उसे अब
त्यागिये १२ क्योंकि हमारे मतसे तो सुग्रीव को चाहिये कि रूमा हम
अङ्गद राज्य धन धान्य व पशु सबको रामचन्द्रजी का प्रियकरने के
लिये छोड़दें १३ व हम यहभी जानतीहैं कि उस राक्षसाधम रावणको
मार सुग्रीव रोहिणी सहित चन्द्रमा के समान सीतासहित श्रीरामचंद्र
जी को लावेंगे १४ जो कहिये कि अभी क्यों नहीं लाते तो लङ्कामें
इस समय एक अर्व्व नब्बेहज़ार तीन सौ राक्षसहैं १५ फिरबिना उन
सबोंको मारडारे रावणको कोई नहींमारसक्ता जिसने सीताहरीहै १६
सो तीनसो राक्षसों को सुग्रीव अकेले मारसक्तेहैं व दुष्ट कर्म्मकारी पर-
नारीहारी व्यभिचारी रावणको भी मारसक्तेहैं १७ राक्षसों की यह
संख्या सब देशोंके वृत्तान्तजाननेवाले वालीके मुखसे हमने सुनी थी
इसीसे कहतीहैं कुछहम रावणकी सेना व उसका बलअच्छीतरहनहीं
जानतीं १८ व तुम्हारी सहायता के निमित्त बहुत से बानर बड़े २
बहुत बानरों को बुलानेके लिये भेजेगयेहैं १९ ये सुग्रीव आजकल तिन
सबकी राहदेखतेहैं कि कबआवें इसीसे रामचन्द्रजी का कार्य्यकरनेको
सुग्रीव अभीनहीं गयेथे २० हां जो मर्य्यादा उनबानरों के आनेकेलिये

की गईथी वह आजपूरीहोगी इससे आजही सबकेसब बानर आवेंगे २१ ऋक्षसैकरोंकोटि गोपुच्छ सहस्रों व अन्य बानर भी आज तुम्हारे पास आवेंगे २२ मारेकोपके अरुण तुम्हारे नयन मुखदेख सबबानर मारेडर के शान्त होगये २३ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेकिष्किन्धाकाण्डेपञ्चत्रिंशस्सर्गः ३५ ॥

जब नम्रहो ताराने ऐसे धर्म्मयुक्त वचन कहे तो कोमल स्वभाव लक्ष्मणजीने तिसके वचन अङ्गीकारकिये १ जब लक्ष्मणजीने ताराके बचनमान कोपछोड़दिया तो सुग्रीव ने भी लक्ष्मण की ओरसे महाभय छोड़दिया जैसे कोई ओदावस्त्र छोड़देताहै २ तिसकेपीछे सुग्रीवने अपने गलकी अतिगुणवती व मादकमाला तोड़डाली कि तुरन्त मदरहित होगये ३ व अतिबलवान् लक्ष्मणजीसे बड़ी नम्रतासे उनको हर्षितसी करातेहुये बोले ४ हेलक्ष्मण नष्टलक्ष्मी कीर्त्ति व निरंतर बानरोंका राज्य हमने श्रीरामचन्द्रही के प्रसादसे फिरपायाहै ५ भलाऐसा कौन है जो अपने तेजसे देदीप्यमान व सर्व्वत्र प्रसिद्ध श्रीरामचन्द्रजी के सदृश काम करसके फिर चाहे एककलासे उसका अवतारभी हो पर सोलह कलासे अवतारलिये श्रीरामचन्द्रजी का प्रत्युपकार कौन करसक्ताहै ६ रहा सीताजीका पाना सोतो धर्म्मात्मा श्रीरामचन्द्रजी अपनेही तेजसे रावणकोमारेंगे व सीताको पावेंगे केवल हमसहायमात्रहोंगे ७ क्योंकि जिन श्रीरामचन्द्रजी ने सातसांखूकेवृक्ष व पर्व्वत व पृथ्वी सब एकही बाणसे विदीर्णकरदिया तिनको किसीकी सहायता से क्या है ८ हे लक्ष्मण जिनके धनुष के टङ्कोर के शब्द से पर्व्वत सहित भूमि कांपनेलगी तिनको किसीकी सहायतासे क्याहै ९ हां तिनमहाराजाधिराज श्रीरामचन्द्रजीके पीछेपीछे हमभीचलेजायँगेजबवेरावणकेमारनेकेलिये जायँगे १० जो कुछहमने उनके बचनोंका उल्लंघन भी कियाहो तो भी अपनासेवक जान वा प्रेमपात्र जान हमारे अपराध क्षमाकरेंगे क्योंकि सेवकोंके अपराधोंकी ओर कोई भी दृष्टिनहीं देता ११ जबमहात्मा सुग्रीवने ऐसाकहा तोलक्ष्मणजी बहुत प्रसन्नहुये व प्रेमसे बोले १२ हे सुग्रीव हमारेभाई श्रीरामचन्द्रजी सबतरहसे तुमको नाथपाय सनाथ

होंगे क्योंकि तुमबड़े नम्रहो १३ हेसुग्रीव जो तुम्हारा ऐसाप्रभावहै व जो ऐसा शौच है तो तुमअवश्य वानरोंकेराज्यके योग्यहो१४ हे सुग्रीव तुम्हारीसहायतासे प्रतापी श्रीरामचन्द्रजी बहुतहीजल्द शत्रुओंको मारेंगेइसमें कुछभीसन्देह नहींहै १५ हेसुग्रीव धर्म्मज्ञ कृतज्ञ व संग्राममें से न लौटनेवाले तुम्हारे बचन सबतरहसे सिद्धहैं १६ व सामर्थ्य होनेपरभी हमारे भाई व तुमको छोड़ और कौन दोष जाननेवाला पुरुष ऐसीनम्रता से बातेंकरेगा १७हे बानरश्रेष्ठ तुमविक्रम से व बलसे भी रामचन्द्रजीकेही समानहो इसीसे देवताओं ने बहुतदिनों के लिये तुमको सहायक बनाया है १८ हां पर इतना कार्य्यकरो कि अभीयहांसे चल भार्य्याहरण के दुःखसे दुःखित अपने सखा श्रीरामचन्द्रजी को समझावो हमभी साथचलते हैं१९ व हेसखे शोककेमारे व्याकुल श्रीरामचन्द्रजीके कठोर बचन जो हमने तुमसेकहा सोक्षमा कीजिये २० ॥

इत्यार्षेरामायणेबाल्मीकीयेकिष्किन्धाकाण्डेषट्त्रिंशस्सर्गः ३६ ॥

अबमहात्मा लक्ष्मणजी ने ऐसाकहा तो निकट खड़े हनुमान् से सुग्रीव बोले १ कि महेन्द्राचल हिमालय विन्ध्याचल कैलास व मन्दराचल पर्व्वतों के शिखरों पर जो बानरहों २ व जो पश्चिम दिशाके समुद्र के उसपारतक के प्रातःसूर्य्यसम प्रकाशित अस्ताचल पर्व्वत के निकट वाले साठहजार पर्व्वतोंपर टिकेहों ३ व जोसन्ध्याकाल के बादर के समानवाले उदय गिरिपरहों व जोपद्माचल पर्व्वतपै बड़ेभयंकर बानरहों ४ व जोअंजन व मेघके सदृशवाले व महागजेन्द्रों के समान पराक्रमी बानर अंजननाम पर्व्वतपर बसते हैं ५ व जोमहा शैलकी गुहामें बसते हैं व जो सुमेरु पर्व्वतपर सुवर्णके रंगके बानर बसतेहैं ६ व जो सूर्य्य के वर्णके व महामेघवाले बानर महारुण पर्व्वतपर हैं व मधुपान किया करते हैं ७ व इनस्थानों के सिवाय जो अतिसुगन्धित व रमणीय बड़े बड़े सबओर के बनोंमें व तपस्वियों के आश्रमों में बानर बसतेहों ८ तिनतिन सबपृथिवी भरके बानरों को अच्छे अच्छे बेगवान् बानरों को भेजभेज सामदानादि उपायों से तुमशीघ्रही बुलावो ९ यद्यपि इनसब स्थानोंपर हमप्रथमही बानरों के बुलाने के लिये बानर भेजचुके हैं त-

थापि उनको जल्दीके साथ आनेके लिये तुमफिर और बानर भेजो १०
व जो बानर कामकी बासनामें बहुतलिप्तहों व जो स्वभावही से बड़ीदेरी
से कामकरते हैं उनको शीघ्रही हमारे पासलावो ११ जो आजसे दश-
दिन के भीतर हमारी आज्ञासे न आवेंगे वे दुष्टबानर राजाज्ञा दूषण
करनेके कारण मारडारे जायँ बचने न पावें १२ जो बानर हमारी आ-
ज्ञामें टिकेहों उनके सैकरों हजारों व किरोड़ों हमारी आज्ञासे अभीजायँ
देर न करें १३ व जो बानर मेघपर्व्वत सदृश हैं जानों आकाश को आ-
च्छादित करते हैं वे अति घोररूप बानरश्रेष्ठ अभीहमारी आज्ञासे उन
बानरों को शीघ्रता कराने के लिये यहांसे अभीजायँ १४ वे पृथिवी
भर की गली जाननेवाले बानर हमारी आज्ञासे शीघ्र जाय सब
बानरों को बुलालावें १५ बानरराज सुग्रीवजी के बचन सुन हनु-
मान् ने सबदिशाओं में बानरभेजे १६ वे बानर अन्तरिक्ष व आकाश
मार्ग्गहो राजाकी आज्ञासे उसीक्षण चले १७ व सबसमुद्र पर्व्वत बन
व तड़ागों के निकटजाय रामचन्द्रजीके कार्यके लिये सब बानरोंको
आज्ञादेनेलगे १८ वह मृत्युकालकेसमान सुग्रीवकीआज्ञासुन मारेभय-
के सब बानर किष्किन्धापुरी के निकट आये १९ उनमें अंजनाचल से
अंजनके रंगके बानर तीनकिरोड़ जहां रामचन्द्रजीथे आये २० व जिस
पर्व्वतपै सूर्य्यनारायण अस्तहोतेहैं उस गिरिवरपरसे दशकिरोड़बानर
आये २१ व कैलासपर्व्वतके शिखरोंपरसे सिंहके गर्दनापरके बालोंके
रंगके हजारकिरोड़ बानरआये २२ व हिमवान् पर्व्वतपरके सहस्रों
किरोड़ोंके सहस्रबानर जोकि फलफूलादि खाय खाय जीतेथे आये २३
अरुणरंगके अतिभयंकर व भयंकरकर्म्मकारी सहस्रकोटिबानर विन्ध्या-
चलपरसे आये २४ व क्षीरसमुद्रके तीरके रहनेवाले तमाल बन के
निवासी व नारियल खानेवाले बानरोंकी तो गिनतीही नहीं कि कितने
आये २५ इस तरहसे बनों पर्व्वतों व नदियों से बड़ी भारी बानरों की
सेना सूर्य्य को पीतीही हुईसी आई २६ व जो बानर शीघ्रता कराने
के लिये भेजे गयेथे उन्हों ने हिमालय पर्व्वत पै एक बड़ा भारी वृक्ष
देखा २७ वह वृक्ष ऐसाहै कि पूर्व्वकालमें उस महागिरिहिमवान् पर
अति मनोहर महादेव जी का यज्ञ हुआ था जिससे सब देवों का मन

सन्तुष्ट होगया था २८ व उस यज्ञमें खीर आदिअन्नोंके परने से अमृत तुल्य स्वादुवाले फल व मूल उत्पन्न हुये वानरोंने जाय सब फलमूल देखे २९ तिस यज्ञके अन्नसे उत्पन्न मनोहर मूल फल जो एक बार खाताहै वह मास भरतक अघाया बना रहता है ३० वे फल व मूल वानरों ने ग्रहण किये व नानाप्रकार के औषधि भी ग्रहण किये ३१ व उस यज्ञस्थानसे सुग्रीवका प्रियकरनेके लिये अतिसुगन्धितपुष्प वानरलोग लाये ३२ व पृथिवी में जितने वानर थे सब को शीघ्रता के साथ तैयार कर सबके सब आगे होआये ३३ वेसब वानरएकही मुहूर्त में सब कहीं से किष्किन्धापुरी में आये जहां राजा सुग्रीव रहतेथे ३४ वे वानर सब औषधि व सब फल मूल लाय सुग्रीव को दे बोले ३५ कि हम लोग सब पर्व्वतों पर होआये व सब वनोंमें भीगये पृथिवी में कोई ऐसा स्थान नहीं जहां हम लोग न गये हों पर आपकी आज्ञा से सबजन आते जाते हैं ३६ वानरों के ऐसे वचन सुन वानरोंके राजा सुग्रीव प्रसन्न हो जितनी भेंटकी वस्तुथी ग्रहण की ३७ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेकिष्किन्धाकांडेसप्तत्रिंशस्सर्गः ३७ ॥

जो भेंटकी बस्तु वानर ठौर ठौर से लाये थे सबले सुग्रीव ने वानरों को ठौर टिकने के लिये आज्ञादी १ तिन शूरवीर व बहुत बार कार्य्य किये वानरों को बिदाकर सुग्रीव ने अपना को व रामचन्द्रजी कोभीकृतार्थ माना कि बस अब इन वानरों से सब कार्य्य बन जायँगे २ तिस के पीछे अति बलवान् सब वानरोंमें श्रेष्ठ सुग्रीवको हर्षितकरातेलक्ष्मण जी बोले ३ हे सुग्रीव जो तुम्हारी इच्छा हो तो अब किष्किन्धासे सब जन चलें लक्ष्मणजी के ऐसे सुन्दर बचन सुन ४ सुग्रीव अति प्रसन्न हो लक्ष्मणजी से बोले कि बहुत अच्छा हमको तो आप की आज्ञा से काम करनाही है चलिये चलें ५ शुभलक्षणयुक्त लक्ष्मणजीसे ऐसाकह सुग्रीव ने तारा आदि स्त्रियों को घर जानेके लिये बिदाकिया ६ व वानरों से बड़े जोर से कहा कि तुमलोग यहां आवो तिसके ऐसे बचनसुन सब वानर शीघ्रही वहां आय गये ७ ये वानर तारादि स्त्रियों को भी देख सक्ते थे इनको आये देख सूर्य्य समान रंग सुग्रीव तिन वानरों से

बोले ८ हे वानरो हमारी शिविका बहुत जल्द लावो तिसके ऐसे वचनसुन बड़े पराक्रमी वानरलोग ६ बड़ी सुन्दर शिविका लाये तिस शिविका को देख वानरराज सुग्रीव १० लक्ष्मणजी से बोले कि हे लक्ष्मणजी आप इस पै शीघ्र चढ़िये यह कह सुग्रीव उस सुवर्ण की शिविका पर ११ सहित लक्ष्मण सवार हुये बहुतसे वानर उसमें नहे गयेथे सुग्रीव के ऊपर उज्ज्वल रंगका छत्र लगाया गया १२ व शुक्लवालों का चमर भी चारों ओर होता था चलने के समय शंख तुरुही आदि बाजा भी बाजने लगे व बन्दीगण स्तुति भी करनेलगे १३ तिसके पीछे नानाप्रकार के शस्त्रास्त्र धारण किये वानरों के साथ उत्तम राज्यश्रीपाय सुग्रीव जी चले १४ इस समाज के साथ जहां रामचन्द्रजी थे वहीं को सुग्रीव गये व श्रीरामसेवित उस देशमें पहुंचे १५ व लक्ष्मण सहित सुग्रीव शिविका पर से उतरे व रामचन्द्रजी के निकट जाय हाथ जोरे खड़े हुये १६ जब सुग्रीव हाथ जोर खड़े हुये तो वानरोंनेभी हाथजोरा रामचन्द्रजी भी उन सबों को ऐसा देख १७ व वानरोंकी सेना देख सुग्रीव के ऊपर बहुत प्रसन्नहुये व चरणोंपर परे सुग्रीवको अपने हाथोंसेपकड़ उठाया १८ व मारे प्रेमसे व मानसे छातीमें लगाय सुग्रीव से मिले बनाय मिलचुल बोले सुग्रीव बैठो १६ जब सुग्रीव बैठगये तो श्रीरामचन्द्रजी बोले हे सुग्रीव जो मनुष्य धर्म्म अर्थ व काम की सेवा अपने अपने समय पर करता है २० वही राजा कहाताहै व जो अर्थ धर्म्म छोड़ केवल कामही का सेवन करता है २१ वह जानो वृक्षकी फुनगी पर सोता जब गिर परता तभी जागता है व जो राजा शत्रुओं के मारने में व मित्रों के संग्रह करने में लगा रहता है २२ वह अर्थ धर्म्म काम तीनों का सेवन करता व धर्म्म से संयुक्त होता है सौम्य अब उद्योग करनेका समयआय गयाहै २३ अबवानरों से व अपनेमन्त्रियों से सलाह करो यह सुन सुग्रीव रामचन्द्रजीसे बोले २४ हे महाराज प्रनष्ट शोभा कीर्त्ति व निरन्तर वानरों का राज्य आपके प्रसादसे हमने फिर पाया २५ हे जीतनेवालों में श्रेष्ठ श्रीरामचन्द्रजी तुम्हारे प्रसादसे प्रसन्न तुम्हारे भाई लक्ष्मणजीके किये उपकार का प्रत्युपकार न करे वह सब पुरुषों का दूषण करनेवाला है २६ ये सैकड़ों वानर पृथिवी भरके वानरों को

काम यहां आयेहैं २७ हे राघव ये सब ऋक्ष वानर व गोपुच्छ बड़े शूर घोरदर्शन व सब वन पर्व्वतों परके भी मार्ग्ग जाननेवाले हैं २८ व देवता गन्धर्व्वों के पुत्र इच्छाचारी ये सब वानर अपनी अपनी सेना सहित मार्ग्ग में मिलते जावेंगे २६ इनसेनापति वानरोंके संग सौलाष किशोर दशहजार नील ३० अर्ब्बुद सौअर्ब्बुद दशअर्ब्बुद किशोर अर्ब्बुद हजारअर्ब्बुद तीसहजारअर्ब्बुद आदि वानर ३१ इन्द्रसम पराक्रमी आप केलिये आवेंगे सब पर्व्वताकार व मेघकेरंगके होंगे व सुमेरु विन्ध्या च-रणादि पर्व्वतों परके रहनेवाले होंगे ३२ आपके सामने वेही वानर आवेंगे जो सहित परिवार रावण को युद्धमें मार श्रीजनककिशोरी जी को आन देंगे ३३ ॥

दो० कपि पति कर उद्योग लषि निज आज्ञा बशजानि ॥
हर्षित भे रघुवंश मणि विकशित मुखकर पानि १ । ३४ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेकिष्किन्धाकाण्डेऽष्टत्रिंशस्सर्ग्गः ३८ ॥

धर्म्मधारियोंमें श्रेष्ठ श्रीरामचन्द्र जी ऐसा कहते हुये सुग्रीवकोहाथजोरे देख दोनों बाहें पसार मिले १ व बोले कि जो इन्द्र जल बरसाते हैं तो कुछ आश्चर्य्य की बात नहींहै व ये सूर्य्य जो अपने सहस्त्रों किरणों से आकाश का अन्धकार दूर कर प्रकाशित करते हैं तो आश्चर्य्य नहीं २ व जो अपनी प्रभा से चन्द्रमा रात्रि निर्म्मल करते हैं तो इसमें भी कुछ आश्चर्य्य की बात नहीं है व वैसेही तुम्हारे सदृश पुरुष जो मित्रों के साथ प्रीति करैं तो आश्चर्य्य नहीं है ३ इसी तरह से जो जो अच्छी बातें तुममें हों उनमें कुछ आश्चर्य्य नहीं है सुग्रीव हम तुमको अच्छी तरह जानते हैं कि तुम निरन्तर प्रियवादी हो ४ हे सखे तुम्हारी स-हायता से संग्राम में हम सब शत्रुओं को जीतेंगे तुम्हीं हमारे सुहृद व मित्र हो इससे हमारी सहाय करो ५ राक्षसों में अधम रावण जानकी को अपने नाश के लिये हरलेगया है जैसे अनुह्लाद इन्द्राणी को ले-जाना चाहता था ६ इससे हम बहुतही जल्द अपने तीक्ष्ण बाणों से रावण का बध करेंगे जैसे इन्द्राणीके पिता व अनुह्लादका बध शत्रुओं

के मारनेवाले इन्द्रने किया था ७ रामचन्द्रजी सुग्रीव से ऐसा बत-
लायहीं रहे थे कि गरम व घनी धूलि चारों ओरसे उठी व आकाश में
सूर्य्य की प्रभा आच्छादित होगई ८ तिस अँधियारीसे दूषित हो सब
दिशा बनाय मूँदगईं व बन समुद्र पर्व्वत सहित सब पृथिवी चलउठी
९ तिसके पीछे पर्व्वताकार बड़े बड़े दांतवाले महाबल असंख्य वा-
नरों से सम्पूर्ण पृथिवी पूर्ण होगई १० व एक निमेष मात्र में सैकरों
किरोर यूथप वानरोंसे पृथिवी पूर्णहोगई ११ नदी पर्व्वत समुद्रादिकों
के रहनेवाले व अन्य बनवासी महाबलवान् मेघ सम गर्ज्जनेवाले
वानर आये १२ उनमें बहुततो प्रातःकालके सूर्य्यके रंगके बहुत चन्द्रमा
सम गोरे बहुत कमल की धूलिके रंगके बहुत श्वेतरंगके बहुत सु-
वर्णके रंगके थे १३ उनमें दश किरोर हजार वानर संगलिये अतिबीर
शतबलि नाम वानर आय देखपरा १४ व अनेक बहुत सहस्रकोटि वा-
नर संग लिये सुवर्ण पर्व्वत के समान अति वीर्य्यवान् तारा का पिता
देखपरा १५ व तिसके पीछे किरोर हजार वानर संग लिये सुग्रीव का
श्वशुर रुमा का पिता आया १६ तिसके पीछे कमल की धूलिके रंगका
व प्रातःकाल के सूर्य्य के रंगके मुखवाला महाबुद्धिवान् वानरों में श्रेष्ठ
व सब वानरों में अति सज्जन १७ अनेक सहस्र वानर संगलिये हनु-
मान् का पिता केसरी नाम वानर आया १८ व गोपुच्छ जातिवाले
वानरों का महाराज अति पराक्रमी गवाक्ष नाम वानर हजार किरोर
वानरसंगले देखपरा १९ व अतिभयंकर बेगवाले दोहजार किरोर ऋक्ष
संगलिये शत्रुओं को नाशकरनेवाला धूम्रनाम ऋक्षआया २० व तिसके
पीछे महाबलवान् व घोररूप तीनकिरोड़ वानर संग लिये पनसनाम
यूथप आया २१ व नीलअंजनके ढेरके समान शरीर धारणकिये महा-
काय नीलनामयूथप दशकिरोड़ वानर संगले आया २२ तिसके पीछे
काञ्चन के पर्व्वत के आकार का महापराक्रमी गवयनाम वानर पांच
किरोर वानर संग ले आया २३ तिसके पीछे महाबलवान् दरीमुख
नाम यूथप हजारकिरोर वानर संग ले आया व सुग्रीव के सामने
खड़ा हुआ २४ तिसके पीछे अश्विनी के पुत्र मैन्द व द्विविद दो यूथप
हजारहजार कोटि वानर संगलिये आये २५ तिसके पीछे महाबलवान्

गजनामयूथप तीनकिड़ोर वानरलेआया व फिरजाम्बवाननाम ऋक्षोंका
महाराज २६ दशकिड़ोर ऋक्षले सुग्रीवके वशमेंआया व रुमन्वान् नाम
अतितेजस्वी व पराक्रमी वानर वानरराज सुग्रीव के पास २७ सौकि-
ड़ोर वानर सङ्गले आया तिसकेपीछे लाख किड़ोर वानर साथलिये २८
महापराक्रमी गन्धमादन नाम यूथप आया तिसके पीछे हजारपद्म व
हजारशङ्ख वानर सङ्गलिये २९ अपनेपिता बालीके तुल्य पराक्रमी यु-
वराज अङ्गदनाम अतिबुद्धिमान् वानर यूथप शिरोमणि आया तिसके
पीछे नक्षत्रों के समान प्रकाशित अतिभीम पराक्रमी वानर सङ्गलिये
तारनाम यूथप आया ३० इसके संग पांचकिड़ोर वानर अतिप्रचण्डथे
तिसकेपीछे अतिबीर इन्द्रभानुनाम यूथप ३१ ग्यारह किड़ोर वानरले
देखाई दिया तिसकेपीछे प्रातःकाल के सूर्य्यके रंगका रम्भनाम यूथप
३२ ग्यारह हजार एकसौ वानरले आया तिसकेपीछे दुर्म्मुखनाम यूथप
३३ दोकिड़ोर वानर संगलिये वहांआया तिसकेपीछे कैलास पर्व्वत
के शिखरके आकार के महापराक्रमी हजार किड़ोर वानरसंगलिये ३४
हनुमान् नामयूथप देखपरे तिसकेपीछे नलनाम महावीर्य्य यूथप ३५
सौकिड़ोर एकहजार एकसौ वानर संगले आया तिसकेपीछे दशकिड़ोर
वानरले दधिमुखनाम यूथप पहुंचा ३६ इसीतरह महात्मा सुग्रीव के
आगे शरभ कुमुद वह्नि व रम्भआदि यूथपआये ३७ इतनेतो गिनाये
पर इनआदि औरभी बहुत वानर इच्छाचारी सबपृथिवी व बनपर्व्वतादि
घूमते घूमते ३८ नानानाम के यूथप आये जिनकी गिनतीही नहीं है
वे सबआये व आयआय पृथिवीपर बैठतेगये ३९ कोईतो उनमें कूदतेही
चलेआतेथे कोईतड़कतेही कोईगर्ज्जतेही सबोंनेआय सुग्रीव को चारोंओर
से घेरलिया जैसेबादर सूर्य्यको घेरलेते हैं ४० व जितने वानरथे सब
बहुतशब्द करतेथे व सबमहाबलीथे सबकेसब आयआय सुग्रीव के माथ
नवाय नवाय अपना आगमन बतातेथे ४१ व औरबहुत वानर अपने
सबवानरों को अपने काबूमें किये सुग्रीव के निकट आयहाथ जोरजोर
खड़ेहुये ४२ तिनसब वानरश्रेष्ठों को सुग्रीव श्रीरामचन्द्रजी को सौंप
हाथजोड़ उनसेबोले ४३ हे श्रीरामचन्द्रजी येवानर जिसतरह बनोंमें व
पर्व्वतोंपर सुखसे रहतेथे उसीतरह इनको देख सुखित राखने में आप

समर्थ हैं क्योंकि इनकाबल अच्छी तरह आप देखतेही देखके जान जायँगे ४४ ॥

इत्यार्षेरामायणेकिष्किन्धाकाण्डेवाल्मीकीयेएकोनचत्वा-
रिंशस्सर्गः ३९ ॥

इसकेपीछे वानरराज सुग्रीव पुरुषशार्दूल श्रीरामचन्द्रजी से बोले १ कि जो बली कामचारी महेन्द्राचलके समान वानरेन्द्र हमारे राज्यमेंरहते हैं वे सबआये व उचित स्थानमें टिके हैं २ ये सब बड़े पराक्रमी बड़े बल-वान् और वानरोंको अपने साथलाये हैं व सबदैत्यों व दानवों के समान बलवान् हैं ३ ये सबयुद्धमें शूरतारखते बड़े बलवान्हैं इसीसे इनको थका कभी लागताहीनहीं इसीसे पराक्रमोंमें विख्यातहैं व उद्योग करनेमें बड़े प्रबलहैं इससे उत्तमहैं ४ ये वानर पृथिवी व जलों मेंबसतेहैं व बहुतसे प-र्वतोंपरके रहनेवाले हैं ये जो किड़ोरोंवानरोंके झुण्ड आये हैं सब आपके किंकर हैं ५ व सब आज्ञाकारी हैं सब गुरूके हितमें निरतहैं इससे सब आपका अभीष्टकार्य्य सिद्ध करेंगे ६ ये दैत्य दानवोंके समान पराक्रमी हजारों किड़ोरों वानर सङ्गलिये यहां आये हैं ७ हे नरशार्दूल जो इस समय कहनेके योग्यहो कहिये व आज्ञादीजिये यह सैन्य आपके वशमें है कुछ इन लोगोंके योग्य आज्ञाहो ८ यद्यपि ये लोग हमारी जानमें सब काम जानतेहैं तथापि आप यथोचित आज्ञादीजिये ९ जब सुग्रीवने ऐसा कहा तो महाराजाधिराज दशरथजीकेपुत्र श्रीरामचंद्रजी दोनोंबाहों से भेंटकर बोले १० हे सौम्य जिस देशमें रावण बसता हो उस देशका पता लगावो व जो जानकी जीतीहों वा न जीतीहों तो उसका भी पता लगावो ११ जब पता लगजाय व जानकी जीती हों तो तुम्हारे सङ्ग चलके रावण को सहित परिवार विध्वंस करदेंगे १२ पर हे वानरेन्द्र इस कार्य्यके करनेमें हम समर्थ नहीं हैं व न लक्ष्मणही समर्थ हैं हे वानरराज इस कार्य्यके सिद्ध करनेमें तुम्हीं समर्थ हो व तुम्हीं कारण हो १३ हे मित्र तुम्हीं हमारे कार्य्य का विनिश्चय करो क्योंकि जो हमारा कार्य्यहै तुम अच्छीतरह से जानते हो १४ क्योंकि तुम्हीं हमारे सुहृद दूसरे बलवान् चतुर व सबकार्य्य जाननेवाले हो फिर जो आप

कोपसे उत्पन्न तेजसे महा हयमुख उत्पन्न हुआहै ४८ इस अद्भुतहयमुख का भोजन वहांके जलके सब निवासीहैं इसीसे उससागरमें रहनेवालों का रोदन ४६ सुनाईदेताहै ये लोग उसी हयमुखके देखनेसे मारेभयके रोदन कियाकरतेहैं इसस्वादुजलसमुद्रके उत्तरकेकिनारेपर तेरह योजन पर ५० सुवर्ण का एक बड़ाभारी पर्व्वतहै वहां एक चन्द्रमा के समान प्रकाशित धरणी धारण करनेवाला ५१ कमल व विशालनयन पर्व्वत के आगे बैठे सब देवताओं के नमस्कारकरने के योग्य अनन्तनाम सर्प्प देखोगे ५२ इन अनन्तजीके सहस्रतोशिरहैं नीलरङ्गका वस्त्रधारण किये रहतेहैं व तीनशिरका सुवर्णका केतु भूततालपर्व्वत के आगे विराजमानहै ५३ इसतालके नीचेवेदी भीबनीहै इसतालकी पूर्व्वओर देवताओंका बनायासुवर्णमय उदयपर्व्वतहै ५४ इसपर्व्वतकी एककोटिसौ योजन की चौड़ीहै व आकाश कोछूतीहै ५५इसपर्व्वतके ऊपर साल ताल तमाल व कर्णिकार सबसुवर्णहीकेबनेलगेहैं व सब सूर्य्यकेसमान प्रकाशितहैं ५६ तिसपर्व्वत का एकयोजनभर चौड़ा व दशयोजन ऊंचा सौमनस नाम सोनेहीका शृङ्गहै ५७ जबभगवान् वामनजीने वलिके यज्ञमें सबलोक नापेथे तबइसी-शृङ्गपै अपना पहिला चरण उठाय धराथा व दूसरापद सुमेरु पर्व्वत के शृङ्गपै धराथा ५८ जब जम्बूद्वीपके उत्तर ओर घूम भगवान् सूर्य्य इधर देखाई देतेहैं तो पहिले इसीबड़े ऊंचे शिखरपर देखाई देतेहैं ५६ व इसीशृंगपर वैखानसनाम वालखिल्य महर्षिलोग बड़ेतपस्वी सूर्य्यही के समान प्रकाशित देखाई देतेहैं ६० व इसी सौमनसनाम शृङ्गपर जबसूर्य्य आतेहैं तभीसब प्राणियों को देखाई देता व सबको प्रकाश विदित होताहै इसीके आगे सुदर्शनद्वीप प्रकाशित होताहै ६१ तिसपर्व्वतके भी पृष्ठ कन्दरा व बनोंमें जानकी सहितरावण को तुमलोग ढूंढ़ना ६२ इसीसुवर्ण के पर्व्वत व महात्मा सूर्य्यके तेजसे प्रातःकालकी सन्ध्या लाल देखाई देतीहै ६३ ब्रह्माजीने सबसे पूर्व्वकाल में यहसूर्य्योदय होनेका उदय पर्व्वत बनाया यह पृथ्वी व सबजनों के प्रवृत्तिहोने का द्वारहै इसीसे इसदिशा को पूर्व्वदिशा कहते हैं ६४ तिस पर्व्वत के पृष्ठ निर्झर व गुहाओं में वैदेही सहित रावण को तुमलोग ढूंढ़ना ६५ तिसके आगे फिर पूर्व्वदिशा अगम्य है वहांकोई नहींजाय

सका क्योंकि कोई देवताभी वहां नहीं रहते व न सूर्य्य वा चन्द्रमा का प्रकाशही वहां रहता इससेसब अन्धकारही अन्धकार देखाई देताहै ६६ इतने पर्व्वत नदियां कन्दरा देशआदि हमनेकहे जो कहेभी नहीं वहांभी जानकीजी को ढूंढ़ना ६७ हेवानरो तुमजहांतक सूर्य्यका प्रकाश है व जहांतक मर्य्यादा बँधीहै वहीं तक जाय सक्तेहो व वहीं तक हम भी जानतेभी हैं आगेहम कुछनहीं जानते ६८ रावण के मन्दिरतक जाय वहांसे उदयाचल पर्य्यन्त जानकी को ढूंढ़ना व एकमास के भीतरही लौटआना ६९ एकमहीना से ऊपर न लगाना व जोमाससे अधिकवहां लगावेगा उसकोहम मारडारेंगे सोभी यहनहीं कि मासभर में इधर उधर घूमघाम चलेआवो नहीं जानकी का पतालगायकर मासही भरमें आना ७० ॥

दो० बनपर्व्वत नदनदि सहित पूर्व्वदिशा अवलोकि ।
रघुनन्दन प्रियजानकिहि लषिकपि सुखितअशोकि १।७१

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेकिष्किन्धाकाण्डेचत्वारिंशस्सर्गः ४० ॥

इसतरह पूर्व्वदिशा को बानरोंकी बड़ीसेनाभेज सुग्रीवने बहुत अच्छे अच्छे बानरों को दक्षिण दिशाको भेजा १ उनमें नील अग्निसुत हनुमान् पितामहसुत महापराक्रमी जाम्बवान् २ सुहोत्र शरारि शरगुल्म गज गवाक्ष गवय सुषेण वृषभ ३ मैन्द द्विविद तारांकपिता सुषेण गन्धमादन उल्कामुख अनंग येदोनों अग्निके पुत्रथे ४ इनके सिवाय अङ्गदादि अन्य बेगविक्रमसम्पन्न बानरों को विशेष पदार्थ जाननेवाले बानरराज सुग्रीवनेभेजे ५ जितने बानर दक्षिण दिशाकोभेजे उनसबों के अगुआ व मालिक महाबली अङ्गद को बनाया ६ उसदक्षिण दिशामें जो कठिन कठिन देश पर्व्वत समुद्र नद्यादिथे सुग्रीव ने सबबानरों से बताया ७ व कहा कि आर्य्यावर्त्त देशसे दक्षिण दिशाकोचल ढूंढ़ने का प्रारम्भकरो वहां प्रथम सौश्टङ्ग का बिन्ध्याचल मिलेगा उसपै नाना प्रकार के वृक्षलतादि लगेहैं फिर महासर्प्पनिषेवित नर्म्मदानदी अति रमणीय मिलेगी ८ तिसके पीछे गोदावरी व कृष्णाबेणी महानदियां मिलेंगी फिरमेखल उत्कल दशार्णआदि देशमिलेंगे ९ फिरअब्रुवन्ती अवन्ती

पुरी मिलेगी इन सबको देखोगे फिर विदर्भ ऋष्टिक माहिषक १०
फिर मत्स्य कलिङ्ग कौशिक इन देशों को अच्छीतरह ढूंढ़ नदी गुहा
सहित दण्डकारण्य में ढूंढ़ना ११ तिसके पीछे दूसरी गोदावरी नदी
मिलेगी तिसके आगे अन्ध्र पुण्ड्र चोल पाण्ड्य केरल १२ आदिदेश व
अयोमुख नाम नानाधातुमण्डित पर्व्वत इसके बड़े विचित्र शिखर हैं
वनभी यहांका सदा पुष्पितही बनारहताहै १३ उसके ऊपर चन्दनका
भी वनहै इस पर्व्वतको खूबही ढूंढ़ना तिसके पीछे स्वच्छजलकी दिव्य
१४ अप्सरावों से सेवित कावेरीनदी देखोगे तिसके आगे मलयाचल
मिलेगा तहां बैठे ऋषियोंमें श्रेष्ठ अगस्त्यजीको देखोगे १५ फिर प्रसन्न
हो तिन महात्मा अगस्त्यकी आज्ञासे चल १६ बड़ीभारी ताम्रपर्णीनदी
देखोगे इसमें बड़ेबड़े ग्राह रहते हैं यह नदी चन्दनादि वृक्षोंसे सुगंधित
नानाप्रकार के द्वीपोंकी माला पहिरे १७ समुद्रमें जाय मिलतीहै जैसे
युवती स्त्री सर्व्व शृङ्गारकिये अपने पतिको जाय मिलतीहै १८ हे वानरो
तिसके पीछे पाण्ड्यवंशियों का फाटक देखोगे तिसके पीछे समुद्र के
निकट पहुंचोगे १६ फिर अगस्त्यजीसे सब समाचारजान महेन्द्रपर्वत
पर जाय उसके चित्रविचित्र शृङ्गोंपर चढ़ २० समुद्र उतरना यह
महेन्द्राचल सुवर्णमय है व समुद्रमें बिलकुल पैठाहै व नानाप्रकार के
प्रफुल्लित वृक्षोंसे शोभायमान है २१ व देवता ऋषि अप्सरा सिद्धचारणों
के समूहसे शोभितहै व अति मनोहर है २२ इस पर्व्वतपर इन्द्र प्रत्येक
अमावास्या व पूर्णमासी को आया करते हैं जिस समुद्र के उत्तर तट पै
महेन्द्राचल है उसीके दक्षिण तटपर सौ योजनका लम्बाचौड़ा एकद्वीप
है २३ उसमें कोई मनुष्यनहीं जायसक्ता उसको सबओरसे ढूंढ़ना तहां
सब तरहसे सीताको ढूंढ़ना २४ वह देशबधकरनेके योग्य दुष्टात्मा राक्षसों
के अधिप रावणका है जिसराक्षसकी दीप्ति इन्द्रके समानहै २५ इसदक्षि-
ण समुद्र में एक अङ्गारकानाम राक्षसीरहती है वह ऊपरजाते जीवकी छा-
याहीपकर खींचलेती व झट भोजनकरजाती है इससे बड़ी सावधानी से
उतरना २६ हेवानरो संशयरहितहो सबदेशोंको संशयरहितकर अमित
तेजस्वी श्रीरामचन्द्रजीकी पत्नी श्रीजानकीजीको ढूंढ़ना २७ तिस लङ्कापुरी
को नांघजब उसके दक्षिण ओरके समुद्रके निकट पहुंचवा वहां एकसब स

स्पतियुक्त सिद्धचारणादि सेवित २८ चन्द्र सूर्य्यके किरणोंसे प्रकाशित समुद्रके भीतर विपुलशृंगोंसे आकाशको प्रकाशितही करता पुष्पितकनाम पर्व्वत है २६ तिस पर्व्वतका एक सुवर्णका शृङ्गहै तिसपर सूर्य्यनारायण रहतेहैं व दूसरा चांदीका शृङ्गहै उसपै चन्द्रमा निवास करते हैं ३० इस पर्व्वतको नतो कृतघ्नलोग देखते न निर्लज्जमूर्ख न नास्तिक लोग इससे इस पर्व्वतको अच्छीतरह प्रणामकर ढूंढ़ना ३१ तिस पर्व्वत के आगे चौदह योजनपर सूर्य्यवान्नाम पर्व्वत है ३२ तिसके आगे सदाफर वृक्षोंसे शोभित अति मनोहर वैद्युतनाम पर्व्वत है ३३ हे बानरो तहां बड़ेबड़े मोलके फल मूलादि अति मीठे खाय आगेको बढ़ना ३४ तहांहीं नेत्र व मनका प्रियकारी कुंजर नाम पर्व्वत है इसीपर बिश्वकर्म्माका बनाया अगस्त्यजीका स्थानहै ३५ वह स्थान योजनभरका चौड़ा व दश योजनका ऊंचा नानाप्रकार के रत्नोंसे बिभूषित है ३६ तिसी कुंजर पर्व्वतपर सर्प्पों का घर बड़े चौहट्टे आदि युक्त सबओर से रक्षित ३७ व सबबड़े बड़े घोरदांतवाले व अतिबिषधर सर्प्पोंसे रक्षित भोगवती नामपुरी है जिसमें अतिघोररूप सर्प्पों के राजा वासुकिजी रहते हैं ३८ उसभोगवती पुरीमें जाय जितने देश उसके अंजरे पँजरे हों सबएक ओरसे ढूंढ़ना ३६ उसदेशको नांघ जब आगे चलोगे तो बैलके आकार का सर्व्वरत्नमय ऋषभनाम पर्व्वत मिलेगा ४० इसपर्व्वतपर गोरोचन पद्मक हरि श्याम आदि दिव्यचन्दन अग्निसम प्रकाशित उत्पन्नहोते हैं ४१ परन्तु यहचन्दन देख तुमलोग न छूना क्योंकि उसबनकी रक्षा सेहित नामगन्धर्व्व करते हैं ४२ क्योंकि तिसपर्व्वतपर सूर्य्यसम प्रकाशित शैलूष ग्रामणी शिक्ष शुक व बभ्रुनाम पांचगन्धर्व्वराज रहते हैं ४३ व उसपर सूर्य्यचन्द्राग्नि के समान प्रकाशित शरीर पुण्यात्मा लोगों के रहने के स्थानबने हैं इससे वहां स्वर्गसुख जीतनेवाले लोग बसते हैं ४४ तिसके आगे अतिदारुण पितरों का लोकहै जहां यमराजजीकी राजधानी संयमिनीनाम पुरी है वहां आपलोग क्षणमात्रभी नहीं बससक्के ४५ हेबानरो बस यहांहींतक तुमलोग ढूंढ़सक्तेहो व जासक्तेहो क्योंकि इससे आगेफिर किसी प्राणीकी गतिनहीं है ४६ जोजो स्थान हमने गिनाये हैं व जो और तुमको मार्ग्गमें अँजरेपँजरे मिलें सबमें जा-

नकीजी का खोजलगाय लौटना ४७ इनमेंसे जो बानर सीताजी का खोजलगाय एकमास के भीतर लौट आवेगा वह हमारेहीतुल्य विभव भोगेगा ४८ व तिसके समान हमको दूसरा प्रियतर न होगा वरनवह हमको प्राणोंसे भी अधिक प्रियहोगा व जो वहबहुत भी अपराध करेगा तोभी हमारा भाईही होगा ४९ ॥

कुण्डलिका ॥

तुमसब बानर अमितबल अमित पराक्रम पूर ।
बहुगुण युतशुभ कुलनमहँ जन्मलीन्ह भ्रमदूर ॥
जन्मलीन्ह भ्रमदूर करहु अबतौन उपाऊ ।
राजराज मिथिलेश सुताकहँ ज्यहि बिधि लाऊ ॥
यहतुम्हार पुरुषार्थ सुनहु कपिबरहु आजसब ।
खोजहु चित्तलगाय जनकतनयाकहँ तुमसब १ । ५० ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेकिष्किन्धाकाण्डेएकचत्वारिंशस्सर्गः ४१॥

दक्षिण दिशाकी ओर बानरोंकोभेज सुग्रीवमेघाकार सुषेणनामबानर से बोले१ येसुषेण ताराकेपिता व बाली व सुग्रीवकेश्वशुरथे इससे इनके प्रणामकरहाथजोर सुग्रीव बोले २ व मरीचि मुनिकेपुत्र अर्चिष्मान्नाम महाबानरसे जोकि अतिशूरबीर कपिवरोंसे सेवित महेन्द्राचलसम आकार व प्रकाशित३ बुद्धिविक्रम सम्पन्न गरुड़सम दीप्तिमान्थे व मरीचि के सुन्दरमाला धारणकिये मारीचनाम अतिगुणधाम और४ ऋषिथे उन सब को पश्चिम दिशा को जानेके लिये आज्ञादी इनकेसाथ दोलाष यूथप बानरथे अन्यबानरोंकी कौनगिनतीकरै५ हेबानरो सुषेणसहित तुमलोग जायढूंढ़ो प्रथमसौराष्ट्रदेश मिलेगाफिरवाह्लीक फिरचन्द्रचित्र६ फिरधन धान्ययुक्त अन्यदेश व बहुतसे पुर पुन्नागगहन कुक्षि व कुलोहालक ७ व केतक खण्डादि सब ढूंढ़ना हेबानरश्रेष्ठो व सब पश्चिम वाहिनी शीतल जलवाली नदियांभी ढूंढ़ना ८ तपस्वियोंके बन व बड़ेबड़े दुर्गम पर्व्वत व बनस्थलियां व निर्जलदेश व शीतल शिला ९ व नानापर्व्वत समूहयुक्त पश्चिम दिशा ढूंढ़ना फिर पश्चिम समुद्र देखोगे १० जिसमें बड़ेबड़े नाकमगर आदि जलजन्तु भरेहैं तिसके पीछे केतक खण्डमें

तमाल बनमें ११ व नारियलके बनोंमें वानरलोग बिहार करैंगे पर इन सबस्थानोंमें सीताजी को ढूंढ़ना व उसदुष्ट रावणका स्थानभी १२समुद्र के किनारेके सब पर्व्वत व बन व मुरवी पत्तन व अतिरमणीय अटीपुर १३ अवन्ती अङ्गलोपा अलक्षितबन व नानाप्रकार के राज्य व बड़ेबड़ेबन१४ वहांजातेजाते सिन्धुनद व समुद्रकासङ्गममिलेगा वहांएक बड़ाभारी सोमगिरि नाम पर्व्वतहै जिसपर सौकँगूरेहैं जिनप्रत्येक पर सैकरों हज़ारों वृक्षहैं १५ तिनसब शृङ्गोंपर जो सिंह रहतेहैं उनसबोंके पंखहैं उन्होंके बलसे पक्षियोंके समान उड़तेहैं व समुद्रसे बड़ीबड़ी मछलियों व बनसे बड़ेबड़ेहाथियों को जीतेपकड़ अपने खेलनेके लिये स्थानों परलातेहैं १६ इससे उन सिंहोंके स्थानोंपर हाथी मेघोंके समान गर्ज्जा करतेहैं १७ व उसके किनारेके समुद्रमेंभी बिचरा करतेहैं इस पर्व्वतका एक शृङ्ग सुवर्णकाहै वहइतना ऊंचाहै कि स्वर्ग्गतक चलागयाहै व उसपै चित्र विचित्र वृक्षलगेहैं १८ सबबानरोंको चाहिये कि जल्दीकेसाथ सबस्थान ढूंढ़ें व तिसी समुद्रके बीचमें पारिपात्र नाम पर्व्वतहै इसकी कोटि सौ योजन कीहै१९ हेबानरो उसका देखना बड़ाही दुर्ग्गमहै पर तुमलोग देखोगे वहां चोबीश कोटि गन्धर्व्वरहतेहैं२० येसब अग्निके समान तेजस्वी व अतिघोररूप स्वच्छाचारी अग्निकी ज्वालाके समान प्रकाशित चारों ओरसे घूमाकरतेहैं२१ परन्तु कोईबानर उनको पीड़ित न करै व कोईबानर वहांका एकभी फल तोड़ै२२ क्योंकि वे गन्धर्व्वलोग बड़े पराक्रमी व बड़ेबीर बड़ेही दुस्सहहैं वही वहांके फल मूल फूलखातेहैं २३ तहां यत्नपूर्व्वक जानकी जीको खोजना तुमलोग अपनी बानरोंकी प्रकृति केअनुसार कूदते फांदते ढूंढ़ने चलेजाना गन्धर्व्व बिनाकुछ अपराध कियेकुछभी न बोलेंगे २४ उसी स्थानपै वैदूर्य्य मणिके रंगका वहीराकी चमकका नानाप्रकार के वृक्षोंसे शोभित २५सौयोजनकाआयतशोभायमान बज्र नाम महापर्व्वतहै उसकी बड़ी बड़ी गुहा ढूंढ़ना२६ उससे कुछे कही दूर समुद्रके चतुर्थांशमें चक्रवान्नाम पर्व्वत हे उसीपर बैठकर बिश्वकर्म्माने सहस्त्रआरा गजका चक्र बनायाहै २७ व उसीसामने समुद्र में पैठ श्रीबिष्णु भगवानूने पञ्चजननाम दैत्य वहयग्रीव को माराहै व वहांसे चक्र शंख लायेहैं २८ तिसपर्व्वतके रमणीय शृंगों व बिशाल गुहा-

ओंमें रावण व जानकीको ढूंढ़ना२६ व फिर उसके आगे अथाह समुद्रमें चौंसठि योजनका बराहनाम पर्व्वतहै इसकेसबशृंग सुवर्णकेहैं ३० उस पर्व्वतपर एक सुवर्णका प्राग्ज्योतिष नामपुरहै तिसमें एकदुष्टात्मा नरक नाम दानव बसताहै ३१ तिसपर्व्वतके रम्यशृङ्गोंपर व बिशालगुहाओंमें रावण व जानकीजीको ढूंढ़ना ३२ तिस पर्व्वत को नांघ हज़ारों निर्झ्झर युक्त सर्व्व सौबर्णनाम पर्व्वत देखाईदेगा ३३ इसपर्व्वतक चारोंओर हाथी शूकर सिंह व्याग्घ्र गर्ज्जा करते हैं ३४ जिस सौवर्णनाम पर्व्वत पर हरितरङ्गके घोड़ेवाले इंद्रजीका देवताओंने अभिषेक कियाहै उसका मेघ भी नामहै ३५ तिस महेन्द्रपालित पर्व्वतको नांघ साठिहज़ार सुवर्णके पर्व्वत देखोगे ३६ येसब पर्व्वत प्रातःकालके सूर्य्यके समान प्रकाशित हैं व सब ओरसे इनपर सुवर्णहीके पुष्पित वृक्ष लगेहैं ३७ तिन साठिह- जारपर्व्वतोंके बीचमें एकअत्युत्तम पर्व्वतोंका राजा मेरुनाम पर्व्वतहै इस पर्वतको प्रसन्नहो कभी सूर्य्यनारायणने बरदान दियाथा ३८ उसका प्र- सङ्ग यहहै कि एकसमय सूर्य्यनारायणने उस पर्व्वतसे कहा कि दिनको वा रात्रिको जो कोई तुम्हारे ऊपरआवेंगे सबसुवर्णमय शरीरहोजायँगे ३९ व जो देवता दानव गन्धर्व्व तुम्हारे ऊपर बसेंगे वेभी कांचन के रङ्गके हो भक्त होजायँगे ४० व विश्वदेव वसु मरुत देवता इसपर्व्वतपर आय सांयं सन्ध्योपासन करते हैं ४१ व सूर्य्यकी पूजा करते हैं जब वे लोग पूजा करचुकते हैं तब सूर्य्य अस्ताचल पर्व्वत को चले जातेहैं ४२ मेरु पर्व्वतपरस दशहजार योजनपर अस्ताचलनाम पर्व्वतहै तहांसे तहांतक सूर्य्य एक घड़ीमें जाते हैं ४३ व उसी अस्ताचल के शृङ्गपर सूर्य्यसम प्रकाशित प्रासादगण संयुक्त विश्वकर्म्माका बनाया ४४ नानाप्रकारके पक्षियोंसे सेवित नानाप्रकारके वृक्षोंसे समाकुल महात्मा वरुणजीका स्थानहै ४५ मेरु व अस्ताचलके बीचमें दशशाखा का सुवर्णमय तालका एकवृक्षहै ४६ तिन तिन सब दुर्गमस्थानोंमें व तड़ाग नदियोंमें जानकी जी व रावण को ढूंढ़ना ४७ उसी मेरु पर्व्वतपर परमधर्म्मज्ञ व अपने तेजसे प्रकाशित ब्रह्माके समान देदीप्यमान मेरुसावर्णिनाम महर्षि ४८ सूर्य्यसम प्रकाशित बसते हैं उनके आगे भूमिमें गिर प्रणामकर जानकी जीके समाचार पूंछना ४९ रात्रि मिटानेके लिये सूर्य्यनारायण इतनेही

देशोंको प्रकाशितकर सन्ध्यासमय अस्ताचलको चलेजाते हैं ५० हे बानरो बस यहींतक सब बानर जायसक्ते हैं जहांतक सूर्य्यका प्रकाश रहता है व जहांतक मर्य्यादाहै बस इसके पीछेतो हमभी कुछनहीं जानते फिर तुमको कहां ढूंढ़ने को बतावें ५१ इससे अब यहां से अस्ताचल पर्य्यंत जहां रावणका स्थानहो वहांतक जाय वैदेहीका पताले मासपूर्ण होते होते लौटआवो ५२ मास भर से ऊपर न बसना व जो उसके ऊपर बसेगा उसको हम मारडारेंगे यहनहीं कि तुम्हीं लोगोंको भेजते हों नहीं तुमलोगोंके साथ हमारे श्वशुर सुषेण भी जायँगे ५३ तुमसब लोग इनकी कही बात सुनना व कहाकरना क्योंकि ये महाबल पराक्रमी हमारे श्वशुर हैं इससे गुरुहैं ५४ व आपलोग भी बड़ेबड़े पराक्रमी हैं व सब कर्मोंका प्रमाण जानते हैं तथापि इन्हीं के कहेको प्रमाण मान पश्चिम दिशा ढूंढ़ना ५५ भाई जब यह काम होजायगा तो सब जन कृतार्थ होंगे इससे हमारे बतायेके विशेष और भी जो विचार इस विषय में जिसको आवे सो भी करना वह भी हमको प्रिय होगा ५६ आपलोग देशकालानुसार जैसे कार्य्य बनता देखना वैसाकरना बहुत कहने से क्याहै ५७ ॥

दो० कपिसुषेण मुखबचन सुनि कपिपति के सुबिनीत ।
आज्ञाले कपिराज की चलेपश्चिम युतप्रीत १ । ५८ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेकिष्किन्धाकाण्डेद्विचत्वारिंशस्सर्ग्गः ४२ ॥

सुग्रीव अपने श्वशुर सुषेण को पश्चिम दिशाको जानेके लिये कह शतबलिनाम बानर से बोले १ जोबचन सबबानरों के राजा सुग्रीव ने कहे वे अपने लिये व श्रीरामचन्द्रजी के लिये हितथे २ कहा कि शतबलि तुम अपने मेरके सहस्र बानरले व वैवस्वत के बंशके मन्त्रियों के सङ्ग यात्राकरो ३ सो हिमालय पर्व्वतको कर्णभूषण बनाये उत्तरदिशामें परम यशस्विनी श्रीरामचन्द्रजी की पत्नी जानकीजीको एकओर से ढूंढ़ो ४ जबइस कार्य्यसे निवृत्तहोंगे श्रीरामचन्द्रजी का प्रिय होजायगा तोहम लोग ऋणसे छूटेंगे तुमलोग भी तो इसबिषय को अच्छीतरह जानतेहो क्योंकि कृतार्थों के जाननेवालों में श्रेष्ठहो ५ देखोमहात्मा श्रीरामच-

न्द्रजी ने हमलोगों का कितना प्रियकिया है जो अब उनका प्रत्युपकार
होतो हमलोगों का जन्म सफलहो ६ क्योंकि जोपुरुष किसी प्रयोजन
वाले पुरुष का प्रयोजन सिद्ध करदेताहै उसका जन्म सफल होजाता है
व जोकि पूर्व्वमें अपनेसंग उपकार करचुका है ऐसे अर्थीका प्रत्युपकार
करने से बढ़के कौनबात होगी यहसब से बढ़कर है ७ इसबात को
अपने मनोंमें अच्छी तरहधर हमलोगों के हितैषी आपलोग ऐसाउपाय
करें जिसमें जानकी देखपरें ८ क्योंकि येशत्रुओं के पुर जीतनेवाले पु-
रुषोत्तम श्रीरामचन्द्रजी सबप्राणियों के मान्य व पूज्यहैं पर हमलोगों
के ऊपर प्रीति करते हैं ६ इससे इनवनों के दुर्ग्गम स्थान व नदी प-
र्व्वतादि में अपनी बुद्धि व बिक्रम के बश जैसाबनै जानकीजी को ढूंढ़ो
१० इस उत्तरदिशाके जानेमें म्लेच्छ पुलिन्द शूरसेन प्रस्थल भरत कुरु
मद्रक ११ काम्बोज यमन शक आदिदेशोंके पुरपत्तनादि ढूंढ़ हिमालय
पर्व्वत ढूंढ़ना १२ फिर लोध्र पद्मकखण्ड व देवदारुओं के बनमें रावण
व वैदेही को ढूंढ़ना १३ तिसकेपीछे सोमाश्रमपर जाय देवगन्धर्व्व से-
वित कालनाम महाशृङ्गपर जावगे १४ तिसपर्व्वत की बड़ीगुहाओं में
व पर्व्वत के दुर्ग्गम स्थानों में निन्दारहित जानकीजी को ढूंढ़ना १५
तिसकेपीछे हिमालय पर्व्वतको नांघ सुदर्शननाम महापर्व्वतदेखोगे १६
तिसकेपीछे नानाप्रकार के पक्षी व वृक्षोंसे भूषित पक्षियोंकाही निवास
स्थान देवसखनाम पर्व्वत देखोगे १७ तिसपर्व्वत के सुवर्ण के खण्डोंमें
व गुहाओं में रावण व वैदेही को बनाय ढूंढ़ना १८ तिसके आगे फिर
सौयोजन का लम्बा चौड़ा एक ऊसर मिलेगा जिसमें पर्व्वत नदी वृक्ष
कोई नहीं न कोई प्राणीही उसमें रहसक्ता है इससे आकाश मार्ग्ग
होकर जानाहोगा १६ इसबड़े भारीरोमहर्षण ऊसरको नांघ श्वेतरंग का
कैलास पर्व्वत सबलोग देखोगे २० तिसपर श्वेतमेघ के रंगका सुवर्णसे
बना विश्वकर्म्मा का बनाया अतिरमणीय कुबेर का मन्दिर देखोगे २१
वहांएक बड़ाभारी उत्तम नानाप्रकार के कमलोंसे भूषित हंसकारण्ड-
वादि पक्षीभरे अप्सराओं से सेवित २२ तिस कैलासपर विश्रवा के
पुत्र कुबेर जी गुह्यक व यक्षोंके साथ विहार करतेहैं इनके सब देवता
नमस्कार करते हैं २३ तिस पर्व्वत के चन्द्रवत्प्रकाशित पर्व्वतों व

१ हेबानरो उस उत्तरकुरुदेश
गुहाओं में रावण व वैदेहीजी को सब [illegible] प्राणीकी गतिनहीं है ५८
उसीके निकटही क्रौंचनाम पर्व्वत मिलेगा [illegible] वसे जायसक्ते हैं इससे
से पैठना क्योंकि उसमें पैठना बहुत कठिनहै [illegible] ना ५९ हेबानरश्रेष्ठो
पर सूर्य्यवत्प्रकाशित देवताओंके भी प्रार्थना [illegible] जहांकी कुछ म-
व बड़े महात्मा ऋषिलोग रहते हैं २६ इस क्रौंच [illegible] हमने बताये हैं
शृङ्ग व शिखर नितम्ब दर्दुरादिमेंभी अच्छी तरह [illegible] भी ढूंढ़ना
२७ इसी क्रौंच पर्व्वत के ही एक शिखरको मानस [illegible] का महा
पै कोई वृक्षनहीं है इससे किसी प्राणीकी वहांगति नहीं [illegible] नों तुम
क्षसादिकों की भी नहींहै पक्षी भी नहीं रहते परन्तु देश [illegible] थंहो
सबकी कामना पूरण करता है २८ इससे युक्तिपूर्वक तुम [illegible] नी
पर्व्वतके भी बड़े २ व छोटे २ शृङ्गोंपर ढूंढ़ना जब क्रौंच पर्व्वत [illegible]
जावगे तो मैनाकनाम पर्व्वतमिलेगा २९ इसपर मयनाम दैत्यने [illegible]
बूते अपना मन्दिर बनाया है मैनाकके भी छोटे बड़े सब कँगूरा ढूंढ़ना
व कन्दरा भी ३० इस पर्व्वतपर किन्नरों की स्त्रियां किशोरों रहती हैं
इसके आगे सिद्धसेवित देशहै ३१ इससे वहां सिद्ध वैखानस वाल-
खिल्य आदि तपस्वीलोग तपस्या करने से निर्म्मल होरहे हैं इससे
वन्दना करनेके योग्यहैं ३२ इससे विनय के साथ इन लोगोंसे सीता
जी की प्रवृत्ति पूंछनी चाहिये तहांही सुवर्ण के कमलोंसे पूर्ण वैखानस
सर है ३३ उसमें प्रातःकाल के सूर्य्यके समान प्रकाशित सुन्दर हंस
विहरा करते हैं व कुवेर की सवारी का सार्वभौम नाम हाथी अपनी
हथिनियों को संगलिये वहां नित्य आताहै ३४ उस सरके नांघनेपर
चन्द्र सूर्य्यरहित व नक्षत्ररहित मेघहीन व नित्य आकाश है ३५ वहदेश
केवल तपसिद्ध तपस्वियों के प्रकाशही से मानों सूर्य्यके किरणोंसे ही
प्रकाशित है ३६ उस देशके आगे शैलोदानाम नदीहै तिसके दोनों
किनारोंपर कीचकनाम बाँश उत्पन्न हैं ३७ वहीबाँश उनसिद्धोंको उस
नदीके उसपारको लेजातेहैं फिर उसपारसे इसपारको लातेहैं व इसी
नदीके उसपार उत्तर कुरुदेश हैं जिनमें पुण्यात्मा लोगही रह सक्ते हैं
पापात्मा नहीं ३८ इस देशमें सुवर्ण के पुष्पयुक्त व स्वच्छ जलयुत व
नील वैडूर्य्यपत्र सहितहजारों नदियांहैं ३९ नदियोंके सिवाय सुवर्ण

स्य अरुण कमलयुक्त प्रातःकाल के सूर्य्यके समान प्रकाशित तड़ाग वाप्यादि शोभित होतेहैं ४० उस देशमें बड़े बड़े मोलके मणि व रत्न व सुवर्ण सम पुष्परस ४१ व नीलकमलोंके वनसते विद्यमानहैं व जितनी नदियां उस देशमें हैं सब गोल गोल मोतियों से मणियों व घनों से ४२ शोभित हैं व सबके किनारे सुवर्णहीके बनेहैं व उनके किनारोंपर रत्नों के वृक्ष विद्यमान हैं ४३ पुष्प सबोंमें सुवर्ण के लगेहैं अग्नि समान सब प्रकाशितहैं व सब वृक्षोंमें नित्यही पुष्प फल लगेरहते पक्षीबोला करते ४४ किसी किसी वृक्षसे दिव्य गन्ध रस व सब कामना के पदार्थ चूते हैं व किसी किसी वृक्षमें नानाप्रकार के उत्तम उत्तम वस्त्रही फरतेहैं ४५ किसी किसीमें मोती व वैदूर्य्य मणिके बूटा वेलि बने उत्तम उत्तमभूषण फरतेहैं इनमें स्त्रियों व पुरुषों के भी पहिरनेके योग्य हैं ४६ किसी किसी में सबऋतुओं के पहिरनेवाले वस्त्रही फरते हैं व किसी किसी में बड़ेबड़े मोलके स्यलोने फरते हैं ४७ किसी किसीमें चित्रविचित्र बिछौने फरते हैं किसीकिसीमें अतिमनोहर मालाही फरती हैं ४८ किसीकिसीमें बड़ेमोलकी पीनेखानेकी वस्तु फरती हैं व किसी किसीमेंसब शुभगुणयुक्त व रूपयौवनसम्पन्न स्त्रियां फरती हैं ४६ उसदेश में गन्धर्व्व किन्नर सिद्ध नाग विद्याधर सुवर्ण सम देदीप्यमान अपनी स्त्रियों के सङ्ग विहार करते हैं ५० वहांसब पुण्यात्मालोग बसते हैं व सबरसिकही बसते व सब कामकलामें प्रवीणलोग अपनी अपनी स्त्रियोंके सङ्ग विहरतेबसे हैं बिनास्त्री का कोईभी पुरुषनहीं न बिनापुरुष की कोई स्त्री ५१ उसदेश में सर्व्वत्र गाने बजाने व हँसनेकाही अतिमनोरम शब्द सुनाई दियाकरता है ५२ न तोकोई वहां अप्रसन्न पुरुषरहै न कोई असत् पदार्थोंके प्रियकरनेवाला व दिनदिन वहां अतिमनोरम गुणबढ़ा करते हैं ५३ इसउत्तर कुरुदेश के नांघनेपर फिर उत्तरमहासागर मिलता है तहां पर्वतरूप सोमगिरि के नामसे प्रसिद्ध एकपर्व्वत है ५४ जो देवतालोग इन्द्रलोक व ब्रह्मलोक में विराजते हैं वे उसपर्व्वत को स्वर्गमेंटिका देखतेहैं ५५ यद्यपि उसदेशमें सूर्य्यनहींहैं तथापि वह उसी पर्व्वतही के प्रकाश से सूर्य्यही के प्रकाश से जानों प्रकाशित रहता है ५६ उसपर्व्वतपर विश्वात्मा एकादशमूर्त्तिरूप भगवान् महादेवजी व

ब्रह्माजी सबमहर्षियों के सङ्ग बसते हैं ५७ हेवानरो उस उत्तरकुरुदेश में तुमलोग न जाना क्योंकि वहां अन्यकिसी प्राणीकी गतिनहीं है ५८ क्योंकि उस सोमगिरिपै देवतालोगभी बड़ेही दुःखसे जायसक्ते हैं इससे तुमलोग भी उसपर्व्वत को देख शीघ्रही लौटपरना ५९ हेवानरश्रेष्ठो बसतुमलोग यहांहीतक जायसक्तेहो जहां सूर्य्यनहीं व जहांकी कुछ मर्य्यादानहीं वहहमभी नहीं जानते ६० जोजो स्थान हमने बताये हैं सब रत्ती रत्ती ढूंढ़ना व जोहमारे कहनेसे रहगयाहो उसको भी ढूंढ़ना ६१ जो जानकीजी को देख तुमलोग आये तो श्रीरामचन्द्रजी का महा प्रियहोगा व उनसेभी अधिक हमारा प्रिय होगा व सबकर्म्म जानों तुम लोग करचुके केवल सीताजी को देखआवो ६२ तिसकेपीछे कृतार्त्थहो अपने भाई बन्धुओं के साथहमसे पूजितहो शान्तचित्तहो अपनी अपनी स्त्रियोंके संगनिर्भय पृथ्वीमें विहार करोगे ६३ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेकिष्किन्धाकाण्डेत्रिचत्वारिंशस्सर्गः ४३ ॥

सुग्रीवजीने यद्यपि सबबानरोंकोसब ओर जानेकेलियेआज्ञादी तथापि कार्य्य सिद्धकरनेकी आशा बिशेष रीतिसे हनुमान् जीहीसे थी इससे कपियोंमें श्रेष्ठ श्री हनुमान् जीसे १ येहनुमान् पवन के पुत्र व बड़े पराक्रमीथे इससे सबबानरोंके राजा सुग्रीव जी इन्हींसे बोले २ हेवानर श्रेष्ठ तुम्हारे जानेकी रोक नतो कहीं भूमिमेंहै नअन्तरिक्षमें न आकाशमें न देवपुरीमें नजलोंमें ३ इसके सिवाय असुर गंधर्व्व नाग नर देवता व सहित पर्व्वत सबपृथ्वी व सब ऊंचे नीचेके लोक तुमसब जानतेहो ४ हेबीर गति बेग तेज शीघ्रता सबतुममें महातेजस्वी तुम्हारे पितापवनहींके समानहैं५ तेजमेंभी तुम्हारे समान आज कल पृथ्वी मण्डलमें नहीं देखाई देता इससे जिसयुक्तिसे सीता मिलें वह तुम्हीं अपने मनसे बिचारो ६ हेहनुमन् बल बुद्धि पराक्रम नीति व देशकालानुसार कार्य्य करना येसब पदार्त्थ तुम्हींमेंहैं ७ इसी अवसरमें श्रीरामचन्द्र जीने भी जानाकिसत्यसत्यकार्य्यकी सिद्धि इन्हीं हनुमानहीमें है यहजान बिचार करनेलगे ८ बिचारतेबिचारते बिचारा कि देखो इतने वानरहैं पर कार्य्य सिद्धहोनेके बिषयमें सुग्रीवका निश्चयबिश्वास हनुमानहीमें पर हमारे

विचारसे अतिनिश्चयहै कि कार्य्यसाधन इन्हींसेहोगा ९ तिससे ये अच्छी तरहसे आनेबूझे कार्य्योंकेकरनेसे परखे परखाये व स्वामीके कृपापात्रहनुमानसे अब कार्य्यकेफलकी उदय होगी१० कार्य्य करनेमें तत्पर हनुमा- को देखहर्षितहो सबइन्द्रियां व मनप्रसन्नकर श्रीरामचन्द्रजीने माना कि वसअबकार्य्यसिद्ध होगया ११ ऐसा विचार श्रीराजराज महाराज श्री रामचन्द्रजीने अपनेनामसे अङ्कित जानकीजीके बिश्वासआनेकेलियेमुंदरी हनुमान्जीकोदी१२ व कहाकि हेबानरश्रेष्ठ इस चिह्नसे जनककुमारी तुमकोहमारेनिकटसेआयेझट जानजायँगी१३ हेबीर पराक्रमयुक्त तुम्हारा कार्य्य करना सुग्रीवका सन्देशही हमसे बताताहै१४ बानरश्रेष्ठ हनुमान् वहमुंदरीले हाथजोर प्रणामकर श्रीरामचन्द्रजीके चरणारबिंदोंकेप्रणाम करचले१५ चलनेके समय सब बानरों की बड़ी भारी सेनाको हर्षित कराते ऐसे शोभितहुये जैसेबिना बादरके आकाशमें नक्षत्रोंके साथ पूर्णमासीका चंद्रमा शोभित होताहै १६ हेमहाबीर अबजिसतरहसे जानकी मिलें वही उपायकरो हमने जानलिया कितुम्हारेबलकीथाहनहींहै१७॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेकिष्किंधाकाण्डेचतुश्चत्वारिंशस्सर्गः ४४॥

१ जबसब चलनेको तैयार हुये तो सुग्रीवजी रामचंद्रजीकाकार्य्य सिद्ध होनेके लिये सबबानरश्रेष्ठों से बोले १ हेबानरश्रेष्ठो हमारी अति कराल आज्ञाकी ओर ख्याल किये रामचंद्रजीके कार्य्यकी ओर ध्यान दिये रहना २ इसतरह स्वामीकी कड़ी आज्ञापाय सब बानरलोग टीड़ीकेसमान हुरं घारआले व सब ओरे पसरगये रामचंद्रजी भी अपने भाई लक्ष्मणजी के साथ प्रस्रवण पर्व्वतपर बसे ३ इसमास के पीछे सीताजीके हाल मिलेंमे इसबातकी राह परखनेलगे व पर्व्वतराज से युक्त उत्तर दिशा को ४ शतबलिनाम महायोधा अपनी सेनालेचला व विनतनाम यूथप पूर्व्व दिशाको चला५ व तार अंगदादिकों के साथ पवनतनय हनुमान्जी अगस्त्यजीकी दक्षिणदिशाको चले६ व बानरोंका सुषेणनामयूथप पश्चिम दिशाको चला इसदिशाके बरुणजी स्वामीहैं ७ सब दिशाओंको वानरोंको भेज बानरराज सुग्रीव अपने मनमेंबहुत आनन्दित हुये ८ इस तरह बानरों के राजा सुग्रीवकी आज्ञापाय सब बानर अपनी अपनी

दिशाकीओर चले ६ चलनेके समय भेजे बानर अपनी अपनी दिशा
कर कर दौरे व नाद भी करनेलगे दुर्गम स्थान देश प्रदेशादि
को भेजा तो वे सब हाथ जोरजोर ासे बताया था सब बानरों
आवेंगे व रावण को मारडारेंगे ११ पर्व्वतों में ढूंढ़ा ३ सब
रावण संग्राममें मिलगया तो अकेलेही मा ते थे रात्रि को फिर
कों का मानमथनकर जानकीजी को लावेंगे १२ के फल लगे वृक्ष
कहनेलगे कि आपलोग थकगयेहोंतो बैठें यदि पाताल सोते ५ जिस
तोभी हम लेआवेंगे १३ हमसबवृक्ष कँपादेंगे सबपर्व र्वत पर आय
डारेंगे व पृथिवी फाड़डारेंगेसमुद्रोंको इधरउधर खलभ ड आदि ढूंढ़
अकेले चारसौकोश नांघसक्तेहैं इसमेंकुछभी सन्देहनहीं १५ महाबल-
पर्व्वत व बनोंमें व पातालकेभीमध्यमेंकहीं हमारीगति कोईनहीं यूथप
१६ इसतरह से सबबानरों ने अलग अलग अपनाहाल सुग्रीव तरह
सबकेसब अपने बलके अहङ्कार के मारे ऐंठचले जातेथे १७॥ ग

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेकिष्किन्धाकाण्डेपञ्चचत्वारिंशस्सर्गः ४५॥

जबसब बानर चलेगये तो श्रीरामचन्द्रजीने सुग्रीव से पूछा कि आप इस भूमण्डल के समाचार एकओर से कैसेजानत हैं १ सुग्रीवजी रा- मचन्द्रजी से बोले कि सुनिये हम विस्तारपूर्व्वक सब आपसे कहते हैं २ जब महिषाकार दुन्दुभि दैत्यको बालीने खेदा तो वह मलयाचलतक भागगया ३ वहांजाय मलयाचल की गुहामें दुन्दुभि पैठगया उसके मारने की इच्छासे बालीभी उसीमें पैठा ४ हमको वर्षदिनतक वहांखड़े रहने को कह बाली गयाथा इससे उसगुहा के द्वारपै वर्षदिनतक हम खड़ेरहे परबाली उसकोमार न निकला ५ तिसकेपीछे गुहासे रुधिर की धारा निकली वह देख हम अपने भाई के विषाद से बहुत कष्टित व विस्मितहुये ६ फिरहमारी बुद्धिमें आया कि निश्चय हमारे बड़े भाई मारेगये इसलिये बिलके दरवाजेपर हमने एक बड़ीभारी शिला धरदी ७ इसबिचारसे कि जो महिषाकृति वहदानव इसशिला को उठाने ल- गेगा तो आपदबकर मरजायगा यहबिचार भाईकेजीने से निराश होगये तो किष्किन्धा पुरीको चलेआये ८ यहां सबराज्य व तारा रुमा आदि

स्त्रियों को पाय मित्रोंकेसंग निर्भयहो बसनेलगे ९ कुछदिनों के पीछे उसदुन्दुभिको मार बानरश्रेष्ठ बालीआया तो हमने मारेगौरवके व मारे भयसे फिरउनको राज्यदेदिया १० परन्तुवह दुष्टात्माबाली हमारे मारडारने की इच्छासे पीछेपीछे दौरने लगा व हमअपने मन्त्रियों के संग भागनेलगे ११ यहांतक कि हमारी समाज की समाज उसबाली के भयसे दौड़ीदौड़ी फिरनेलगी मार्गमें नानाप्रकार की नदियां व बन नगर पुरादि देखते सुनते भागा करते १२ यहांतक कि जितनी पृथिवी दर्पणोदरतल के समान है उसको लुकेठ के समान एक समूहा के साथ दौरते हुये हमगाय के खुरके गढ़ाके समान नांघआये १३ पहिले पूर्वदिशा को जाय वहां विविधप्रकार के वृक्ष पर्वत कन्दरा व विविध प्रकारके सर नद्यादि देखे १४ जातेजाते उदय पर्वत देखा जो नानाप्रकार के धातुओं से मण्डितथा व नित्यही अप्सराओं का स्थान क्षीरसमुद्र जायदेखा १५ तबवहां भी जायबाली पहुंचा तबहम फिर वहां से भागआये १६ व दक्षिणदिशा की ओरभागे इसदिशामें आर्य्यावर्त्त देश की अपेक्षा पहिले विन्ध्याचल मिला जिसपर नानाप्रकार के पक्षी वृक्षोंपर बोलतेथे १७ फिरपर्वत व वृक्षोंके बीचोंमें भागते भागते दक्षिण दिशाको गये वहांभी जाय बाली पहुँचा १८ तब हम भाग पश्चिम दिशा को गये वहां अस्तपर्वत तक चलेगये जब हम अस्त पर्वत पर पहुंचे तो वहां भी वालीके आनेकी खबर जानी तो उत्तरदिशाको भागे १९ उधर हिमाचल व सुमेरु पर्वतादि देखते भालते उत्तर के महासागर तक पहुंचे तब भी वाली के मारे शरण नपाया २० तब मतिबुद्धिसम्पन्न हनुमान्नाम बानर हमसे बोले कि हेराजन् इस समय हमको स्मरण आया है जैसा कि बानरराज वाली २१ मतंग मुनि के शापसे शापित उस आश्रम पर जब पैठेगा तो वालीके मूंड़ के सौ टुकड़े हो जायँगे २२ इससे उस स्थान पर हम लोगों का बास सुखसे होगा इसीसे हेराजकुमार हमऋष्यमूक पर्वतपर रहनेलगे २३ तब फिर मतंग के भयसे बाली वहां न आयसका हे राजन् इस तरहसे हमने यह पृथ्वी प्रत्यक्ष में देखी व देख भाल गुहामें आय बैठे २४ ॥
इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेकिष्किन्धाकाण्डेषट्चत्वारिंशस्सर्गः ॥४६॥

जानकी जीके देखनेकेलिये सुग्रीवके भेजे बानर अपनी अपनी दिशा कोगये १ वे सर नदी काछा आकाश नगर दुर्ग्गम स्थान देश प्रदेशादि चारों ओर से ढूंढ़नेलगे २ सुग्रीव ने जिसक्रमसे बताया था सब बानरों के यूथप उसी तरह उन उन देशों व बनों व पर्व्वतों में ढूंढ़ा ३ सब बानर दिन को आकाशमार्ग्ग हो सीता जीको ढूंढ़ते थे रात्रि को फिर पृथिवी में आय जाते थे ४ उन बानरों को सब ऋतुके फल लगे वृक्ष मिलतेथे रात्रिको सबके सब एकत्र बैठ फलादि खाते व सोते ५ जिस दिन गयेथे उसके महीना भर पर सब बानर प्रस्रवण पर्व्वत पर आय सुग्रीव जीसे निराश होकर बोले ६ पूर्व्व दिशाके नदी पहाड़ आदि ढूंढ़ अपने मन्त्रियों के साथ सीता जीको बिना देखे विनत नाम महाबलवान् यूथप आया ७ इसी तरह सहित समाज शतवलिनाम महायूथप उत्तरदिशा ढूंढ़ बिना सीता की सुधिपाये ही लौट आया ८ इसी तरह पश्चिमदिशा रत्ती रत्ती ढूंढ़ सुषेण नाम यूथप जिस दिन मासपूर्ण हुआ सुग्रीव के पास आय पहुंचा ९ व उसी प्रस्रवण पर्व्वत पर बैठे रामचन्द्र व सुग्रीव से सुषेण बोला १० कि हमनें सब पर्व्वत बन नदियां तड़ाग व सब देश ग्राम पुरादि ढूंढ़े ११ व जो जो गुहादि स्थान तुमने बताये थे सब ढूंढ़े व नाना प्रकार के कुंजादि सबढूंढ़े १२ सब बनपर्व्वत दुर्ग्गस्थान सहितप्रमाण ढूंढ़े ढुंढ़ाये १३ उनमें जो बहुत सघन बनादि थे उनको फिर फिर ढूंढ़ा १४ पर जानकी को न पाया अब उदारजीव परमपराक्रमी हनुमान् जनकनन्दनी के समाचार जानेंगे इसमें कुछ भी सन्देह नहीं क्योंकि जिस दिशा को सीताजी गई हैं पवनतनय महात्मा हनुमान् उसी दिशा को गयेहैं १५ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेकिष्किन्धाकाण्डेसप्तचत्वारिंशस्सर्ग्गः ४७ ॥

और तार अंगदादि बानरोंके साथ हनुमान्जी सुग्रीवने जहां जानेको कहा था गये १ हनुमान् बहुत दूरजाय विन्ध्याचलकी गुहा आदिढूंढ़ने लगे २ पर्व्वत नदी दुर्ग्ग सर बहुत वृक्ष व वृक्षसमूह पर्व्वत बनकेवृक्ष ३ इनसबों में बानरोंने अच्छीतरह ढूंढ़ा पर जनकनन्दनी सीताजी को न देखा ४ वे बानर मूलफलादि खातेपीते जहांतहां बैठते उठते ढूंढ़नेलगे ५ वहदेश नानाप्रकारकी गुहा बन दुर्ग्गम स्थान होने के कारण व

निर्ज्जन निर्ज्जलहोनेसे शून्य व अतिभयानकथा६ तिसदेशको छोड़ उ-
सीतरह के और दुर्ग्गमवनोंमें ढूंढ़ा परकुछ पता न लगा तो बहुत दुःखित
हुये ७ तिसकेपीछे निर्भयहो एक अन्यदेशमेंपैठे जहांके सबवृक्ष पुष्प
फलपत्र वर्ज्जितथे कोईकभी फरतेहीनथे ८ नदियां सबवहां बिनाजलकी
थीं मूलभी वहांबनाय दुर्ल्लभथे महिषा मृग हाथी आदिजिव भी कोई न
थे ६ व्याग्घ्र सिंह पक्षी व अन्यभीबनके वा गवँई के कोईभी जीववहां न
थे न कोईवृक्ष न औषधी न वल्ली न वीरुध १० व न उस देशमें सुन्दर
सचिक्कण प्रफुल्लित कमल सहित तडागथे जो दर्शनीयहोते इसीसे उ-
नमें भ्रमरभी नहीं आतेथे ११ इसका कारण यहथा कि वहां पराफ्राध
असहनशील सत्यवादी तपोधन नियमों से दुःप्रधर्ष महर्षिकण्डुजी रहते
थे १२ तिसबनमें उनमहर्षि का दशवर्ष का पुत्र मरगया तिससे महा-
मुनिने बड़ा क्रोधकर उस बन को शाप देदिया १३ तिसी कारण उस
बनमें कोईनहीं रहता न वृक्षोंमें फलादिहीलगते न नदियोंमें जलरहता
न उसमें कहीं किसीकी रक्षाका स्थानहीथा इसीसे कोई मृगपक्षी नहीं
रहसक्ता उनबानरों ने उसबनके भी नदीपहाड़ आदिसब ढूंढ़े १४ परउन
महात्मों ने वहांभी जनकात्मजाको न देखा १५ व न उनके हरनेवाले
रावणही को कहीं देखा क्योंकि सुग्रीवने कहाथा कि इसदुष्टका भी
अवश्यही पतालगाना १६ थोड़ीदूर आगेजाय बानरों ने देखा तो एक
बड़ा भयानकवन देखपरा उसमें एक बड़ा भारी असुर बैठाथा बानरों
ने देखा तो पर्व्वताकार पड़ाथा १७ उसको देख सबबानर मारने को
दौड़ेतब उसनेभी सबबानरोंसे कहाखड़ेहो अभीतुम सबोंको मारडारता
हूँ १८ इतनाकह मूकाउठाय बानरोंकी ओर दौरा उसको दौरता आता
देख बालीके पुत्र अङ्गदने १६ जाना कि यहरावण है इससे एकलात
जोरसे मारा उतलात के लागतेही मुखसे रुधिर डाकता २० पर्व्वताकार
असुर भूमिमें गिरपरा व मृतक होगया तिसके मरने से बानरलोग वि-
जयपाय हर्षितहुये २१ व सबोंने सबबन ढूंढ़ा जबसब ढूंढ़हुये तो आगे
को बढ़े २२ व उन्होंने एकऔरबड़ाभयानक बनदेखापर्व्वतकी कन्दराभी
कईदेखीं २३ उनको भी रत्तीरत्तीढूंढ़ उदासहोवृक्षोंकेनीचे बैठगये२४॥
इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेकिष्किन्धाकाण्डेऽष्टचत्वारिंशस्सर्ग्गः ४८॥

इसकेपीछे थकेहुये महाप्राज्ञ अङ्गदजी सबबानरों को समझाय बोले १ कि बन पर्व्वतनदी दुर्गम गहन दरी गुहा आदिसब ढूंढ़े २परजानकी नहींदेख परतीं व न दुष्टात्मा पापी सीताजी के हरनेवाला राक्षसही देखपरा ३ व समयभी बहुतबीतचुका व सुग्रीवकी आज्ञाबड़ीकड़ीहै इससे आपलोग फिरढूंढ़ें४ अब आलस्य शोक निद्राछोड़ऐसेढूंढ़ो जिसमेंजानकी कोपायही जायँ ५ जिससे कि खेद न करना सामर्थ्य रखना मन नछोटा करना ये कामकार्य्य सिद्धिके कारणहैं इससे हम यह बातकहते हैं ६ हे बानरो अभी इसबन को ढूंढ़ो व खेदछोड़ फिरफिरढूंढ़ो७ क्योंकि जोकर्म्म किया जाता है उसका फल अवश्य मिलता है इससे सन्तोष कर बैठ रहना ठीक नहीं काम करतेही करते कुछ पै कुछ होही रहेगा ८ भाई सुग्रीव राजा बड़े क्रोधी व तीक्ष्णदण्डकारी हैं तिनसे सदा डरना चाहिये व महात्मा श्रीरामचन्द्रजी से भी डरनाही चाहिये ६ हे बानरो तुमसब लोगोंके हितके लिये हमने कहाहै जो रुचे तो करो जो जिसकाम के करनेमें समर्थहो वह वहीकरै वा और जो कुछ तुमलोगों ने बिचारा हो सोभी कहो १० अंगद के वचन सुन प्यास व परिश्रम से खिन्न मधुरवाणीसे गन्धमादन नाम बानर बोला ११ हे बानरो जो बात अंगद कहते हैं वह तुम सबलोगोंके हित व योग्यहै इससे इनका कहना अवश्य करो १२ चलो सबजन फिर सब पर्व्वत कन्दरा शिला बन व पर्व्वतोंके शून्यस्थानढूंढ़ें १३ जैसाकुछ महात्मा सुग्रीव ने बताया है उसीरीतिसे बन पर्व्वत व सब दुर्ग्गमस्थानढूंढ़ें १४ यहसुन सबबानर उठ विन्ध्याचल के आस पास की सब दक्षिण दिशा ढूंढ़ने लगे १५ तब एक शरद ऋतुके बादर के रङ्गका शृङ्ग कन्दरादि युक्त चाँदीका पर्व्वत उन्होंने देखा उसपरचढ़ १६ उसी पर्व्वतपर सीताजी के दर्शन की इच्छा किये सब बानरों ने सप्तपर्ण बन व लोध्रबन देखा व सबमें जानकी जीको ढूंढ़ा १७ उस समय बानरों ने कूदफाँद बड़ा परिश्रम किया इससे थकगये पर रामचन्द्रजी की प्राणप्रिया जानकीजी को न देखा १८ वह बहुत कन्दरायुक्त पर्व्वत देख सब बानरलोग उस पर इधर उधर देखते चढ़े १६ जब बड़ी देरतक इधरउधर घूमतेघूमते थक गये तो व्याकुल हो पर्व्वत से उतर एकदोघड़ी वृक्षों के नीचे आय बैठे

२० मुहूर्त्तभर सुस्ताने से जब उनका कुछ थकामिटा तो फिर सम्पूर्ण दक्षिण दिशा ढूंढ़ने के लिये सब बानर उद्यत हुये २१ विन्ध्याचल से आरम्भकर जहांतक दक्षिण दिशा सुग्रीवने बताईथी हनुमानादि सब बानर उसके ढूंढ़ने को चले २२ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेकिष्किन्धाकाण्डेएकोनपंचाशत्तमस्सर्गः४९॥

तार व अङ्गद को सङ्गले हनुमान् जी विन्ध्याचल के बन कन्दरा व दुर्गम स्थान एक ओरसे ढूंढ़नेलगे १ देखा तो सब गुहाओं में व्याघ्र सिंहादि जीव भरेथे व उस पर्व्वतपर विमल जलसहित हज़ारोंझरना झरते थे २ तिस पर्व्वतके दक्षिण व पश्चिमवाले कोण पर सब बानर पहुंचे वहां बसतेबसते बहुत समय लगा ३ वह पर्व्वत बड़ा दुर्गमथा क्योंकि नानाप्रकार की गुहा व बनादि उसमें विद्यमान थे पर श्री हनुमान्‌जीने उसकोभी यत्नपूर्व्वक रत्तीरत्ती ढूंढ़ा ४ ढूंढ़नेकेसमय निकट ही निकट सब गज गवाक्ष गवय शरभ गन्धमादन ५ मैन्द द्विविद हनुमान् जाम्बवान् अङ्गद व तार ये सब बनमें घूमते थे ६ पर्व्वत समूह युक्त दक्षिण दिशाढूंढ़ते ढूंढ़ते बानरों ने एक बड़ाभारी खोह देखा ७ उसका ऋक्षबिल तो नाम था व अतिदुर्ग्गम दानव से रक्षित लताओं से ढंकाथा भूख प्यासके मारे व्याकुल थके पानीकी इच्छा किये ८ वह ऋक्षबिल बानरों ने देखा व जाना क्योंकि क्रौंच हंस सारसादि पक्षी उसमें से निकलते देखपरे ९ जल से भींगे व कमल रजसे अरुण चकई चकवा भी देखाई दिये सुगन्ध भी उससे आय रही थी पर जाना वहां का बड़ा कठिन था तहां पहुंच १० सब बानर मारे विस्मयके व्याकुल हुये व उस बिलके विषय में सब बानरों को बड़ी शंका हुई ११ बड़े तेजस्वी व बड़े बलवान् सब नानाप्रकार के जीवों से पूर्ण बलिके स्थान के समान उस बिलद्वार पर पहुंचे १२ यह बिल बड़े दुःखसे देखने के योग्य अति घोर व सब तरह से थाह लेने के अयोग्य थी तिस को देख बमके सब बिषय जाननेवाले पवनतनय हनुमान् जी १३ बड़े भयानक बानरों से बोले हे बानरो पर्व्वत समूह पूर्ण दक्षिण दिशा के सब देशढूंढ़ा १४ इससे हम सब थक गये पर जानकी जीको नहां

देखते व इस बिलसे हंस क्रौंच सारस १५ व जलसे भीजे चक्रवाक निकलते हैं इससे निश्चय होताहै कितो यहां जलपूर्ण कूपहै वा कोई कुण्ड १६ इसीसे इसके द्वारपै हरे व चीकने वृक्षलगेहैं इतना कह उस महा अँधेरे बिलमें सब केसब पैठे १७ वहां नतो चन्द्रमा का प्रकाश था न सूर्य्य का इससे उसके देखतेही रोमखड़े होगये देखातो तिससे सिंह व मृग पक्षी निकलते थे १८ पर सब बानर उसमें पैठगये वहां नतो उन बानरों की दृष्टि हतहुई न तेज न पराक्रम १९ जैसे बायुकी गति कहीं नहीं रुकती वैसेही उनकी गति व दृष्टि वहां नहीं रुकी इससे वेकपिकुंजर बड़े बेग से उस बिलमें घुसे २० उसके भीतर शोभित व सुखद बहुत सुन्दर स्थान दूरसे देखा व तिस नानाप्रकारके वृक्षलगे भयानक बिलमें २१ एकदूसरे को पकड़े चारकोश तकउस अँधेरे में चलेगये मारेप्यास के मूर्च्छितहो भ्रान्तचित्त होगये २२ व उसबिल में थककर गिरपरे कुछ कालतक परेरहे गली चलने के कारण दुर्ब्बल तो होही गयेथे इससे औरथकगये २३ इधर उधर निहार जाना कि बससबहम सबइसी में मरे फिर बड़े यत्न से चले तो आगे एक बहुत प्रकाशित बन देखाई दिया २४ उसमें सब अग्निसमान प्रकाशित वृक्ष लगे थे वृक्षोंमें साल तालतमाल पुन्नाग वंजुल धव २५ चम्पक नागवृक्ष कर्णिकार येसब पुष्पित लगेथे सबमें सुन्दर सुन्दरसुबर्णहीके पल्लव व गुच्छ लगे थे २६ उन पर जो लतायें चढ़ीथीं वहीमानों सुबर्ण के गहने थे सबके थाल्हा वैदूर्य्यमणि के बनेथे २७ सबवृक्ष तो सुबर्णमय होने से प्रकाशितथे व तड़ागों में नील वैदूर्य्यमणि के सजीव पक्षी कूजतेथे २८ प्रातःकालीन सूर्य्यके रंगके बड़ेबड़े वृक्ष सुबर्णमय लगे व सबमछलियां सुबर्णहीकी थीं कमलभी सबसुबर्णकेहीथे २९ इसतरहकी तो तलैयां सैकरों वहांदेखीं व सुबर्णही के सैकरों बिमान वहांधरेथे बहुत चांदीकेभी थे ३० सबझरोखे भी सुबर्णही के बनेथे व उनमें मोतियोंकी झालर लगीथी सुबर्ण व चांदीही के बने वैदूर्य्यमणि युक्त ३१ तहां नानाप्रकार के मन्दिर बानरोंने देखे व फलफूले मूंगा व मणियों के वृक्ष देखे ३२ व सबओर से सुबर्णही के भ्रमर व मधु व मणियों व सुबर्ण के चित्र व मणियों व सुबर्णकेही शयन करने व बैठने उठने के आसन

२० मुहूर्त्तभर सुस्ताने से जब उनका कुछ थकामिटा तो फिर सम्पूर्ण दक्षिण दिशा ढूंढ़ने के लिये सब बानर उद्यत हुये २१ विन्ध्याचल से प्रारम्भकर जहांतक दक्षिण दिशा सुग्रीवने बताईथी हनुमानादि सब बानर उसके ढूंढ़ने को चले २२ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेकिष्किन्धाकाण्डेएकोनपंचाशत्तमस्सर्गः४६॥

तार व अङ्गद को सङ्गले हनुमान् जी विन्ध्याचल के बन कन्दरा व दुर्ग्गम स्थान एक ओरसे ढूंढ़नेलगे १ देखा तो सब गुहाओं में व्याघ्र सिंहादि जीव भरेथे व उस पर्व्वतपर विमल जलसहित हज़ारोंझरना झरते थे २ तिस पर्व्वतके दक्षिण व पश्चिमवाले कोण पर सब बानर पहुंचे वहां बसतेबसते बहुत समय लगा ३ वह पर्व्वत बड़ा दुर्ग्गमथा क्योंकि नानाप्रकार की गुहा व बनादि उसमें विद्यमान थे पर श्री हनुमान्जीने उसकोभी यत्नपूर्व्वक रत्तीरत्ती ढूंढ़ा ४ ढूंढ़नेकेसमय निकट ही निकट सब गज गवाक्ष गवय शरभ गन्धमादन ५ मैन्द द्विविद हनुमान् जाम्बवान् अङ्गद व तार ये सब बनमें घूमते थे ६ पर्व्वत समूह युक्त दक्षिण दिशाढूंढ़ते ढूंढ़ते बानरों ने एक बड़ाभारी खोह देखा ७ उसका ऋक्षबिल तो नाम था व अतिदुर्ग्गम दानव से रक्षित लताओं से ढँकाथा भूख प्यासके मारे व्याकुल थके पानीकी इच्छा किये ८ वह ऋक्षबिल बानरों ने देखा व जाना क्योंकि क्रौंच हंस सारसादि पक्षी उसमें से निकलते देखपरे ९ जल से भीगे व कमल रजसे अरुण चकई चकवा भी देखाई दिये सुगन्ध भी उससे आय रही थी पर जाना वहां का बड़ा कठिन था तहां पहुंच १० सब बानर मारे विस्मयके व्याकुल हुये व उस बिलके विषय में सब बानरों को बड़ी शंका हुई ११ बड़े तेजस्वी व बड़े बलवान् सब नानाप्रकार के जीवों से पूर्ण बलिके स्थान के समान उस बिलद्वार पर पहुंचे १२ यह बिल बड़े दुःखसे देखने के योग्य अति घोर व सब तरह से थाह लेने के अयोग्य थी तिस को देख चमके सब विषय जाननेवाले पवनतनय हनुमान् जी १३ बड़े भयानक बानरों से बोले हेबानरो पर्व्वत समूह पूर्ण दक्षिण दिशा के सब देशढूंढ़ा १४ इससे हम सब थक गये पर जानकी जीको नहां

देखते व इस बिलसे हंस क्रौंच सारस १५ व जलसे भीजे चक्रवाक निकलते हैं इससे निश्चय होताहै कितो यहां जलपूर्ण कूपहै वा कोई कुण्ड १६ इसीसे इसके द्वारपै हरे व चीकने वृक्षलगेहैं इतना कह उस महा अँधेरे बिलमें सब केसब पैठे १७ वहां नतो चन्द्रमा का प्रकाश था न सूर्य्य का इससे उसके देखतेही रोमखड़े होगये देखातो तिससे सिंह व मृग पक्षी निकलते थे १८ पर सब बानर उसमें पैठगये वहां नतो उन बानरों की दृष्टि हतहुई न तेज न पराक्रम १९ जैसे बायुकी गति कहीं नहीं रुंकती वैसेही उनकी गति व दृष्टि वहां नहीं रुंकी इससे वेकपिकुंजर बड़े बेग से उस बिलमें घुंसे २० उसके भीतर शोभित व सुखद बहुत सुन्दर स्थान दूरसे देखा व तिस नानाप्रकारके वृक्षलगे भयानक बिलमें २१ एकदूसरे को पकड़े चारकोश तकउस अँधेरे में चलेगये मारेप्यास के मूर्च्छितहो भ्रान्तचित्त होगये २२ व उसबिल में थककर गिरपरे कुछ कालतक परेरहे गली चलने के कारण दुर्बल तो होही गयेथे इससे औरथकगये २३ इधर उधर निहार जाना कि बसअबहम सबइसी में मरे फिर बड़े यत्न से चले तो आगे एक बहुत प्रकाशित बन देखाई दिया २४ उसमें सब अग्निसमान प्रकाशित वृक्ष लगे थे वृक्षोंमें साल तालतमाल पुन्नाग वंजुल धव २५ चम्पक नागवृक्ष कर्णिकार येसब पुष्पित लगेथे सबमें सुन्दर सुन्दरसुबर्णहीके पल्लव व गुच्छ लगे थे २६ उन पर जो लतायें चढ़ीथीं वहीमानों सुबर्ण के गहने थे सबके थाल्हा वैदूर्य्यमणि के बनेथे २७ सबवृक्ष तो सुबर्णमय होने से प्रकाशितथे व तड़ागों में नील वैदूर्य्यमणि के सजीव पक्षी कुजतेथे २८ प्रातःकालीन सूर्य्यके रंगके बड़ेबड़े वृक्ष सुबर्णमय लगे व सबमछलियां सुबर्णहीकी थीं कमलभी सबसुबर्णकेहीथे २९ इसतरहकी तो तलैयां सैकरों वहांदेखीं व सुबर्णही के सैकरों बिमान वहांधरेथे बहुत चांदीकेभी थे ३० सबझरोखे भी सुबर्णही के बनेथे व उनमें मोतियोंकी झालर लगीथी सुबर्ण व चांदीही के बने वैदूर्य्यमणि युक्त ३१ तहां नानाप्रकार के मन्दिर बानरोंने देखे व फलफूल मूंगा व मणियों के वृक्ष देखे ३२ व सबओर से सुबर्णही के भूसर व मधु व मणियों व सुबर्ण के चित्र व मणियों व सुबर्णकेही शयन करने व बैठने उठने के आसन

नकीजी का खोजलगाय लौटना ४७ इनमेंसे जो वानर सीताजी का खोजलगाय एकमास के भीतर लौट आवेगा वह हमारेहीतुल्य विभव भोगेगा ४८ व तिसके समान हमको दूसरा प्रियतर न होगा वरन्वह हमको प्राणोंसे भी अधिक प्रियहोगा व जो वहबहुत भी अपराध करेगा तोभी हमारा भाईही होगा ४९ ॥

कुण्डलिका ॥

तुमसब वानर अमितबल अमित पराक्रम पूर ।
बहुगुण युतशुभ कुलनमहँ जन्मलीन्ह भ्रमदूर ॥
जन्मलीन्ह भ्रमदूर करहु अवतौन उपाऊ ।
राजराज मिथिलेश सुताकहँ ज्यहि विधि लाऊ ॥
यहतुम्हार पुरुषार्थ सुनहु कपिवरहु आजसब ।
खोजहु चित्तलगाय जनकतनयाकहँ तुमसब १ । ५०

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेकिष्किन्धाकाण्डेएकचत्वारिंशस्सर्गः ४१॥

दक्षिण दिशाको ओर बानरोंकोभेज सुग्रीवमेघाकार सुषेणनामबानर से बोले१ येसुषेण ताराकेपिता व बाली व सुग्रीवकेश्वशुरथे इससे इनके प्रणामकर हाथजोर सुग्रीव बोले२ व मरीचि मुनिकेपुत्र अर्चिष्मान्नाम महाबानरसे जोकि अतिशूरबीर कपिवरोंसे सेवित महेन्द्राचलसम आकार व प्रकाशित३ बुद्धिविक्रम सम्पन्न गरुड़सम दीप्तिमान्थे व मरीचि के सुन्दरमाला धारणकिये मारीचनाम अतिगुणधाम औ४ ऋषिथे उन सब को पश्चिम दिशाको जानेके लिये आज्ञादी इनकेसाथ दोलाष यूथप बानरथे अन्यबानरोंकी कौनगिनतीकरै५ हेबानरो सुषेणसहित तुमलोग जायढूंढ़ो प्रथमसौराष्ट्रदेश मिलेगाफिरबाह्लीक फिरचन्द्रचित्र६ फिरधन धान्ययुक्त अन्यदेश व बहुतसे पुर पुन्नागगहन कुक्षि व कुलोद्दालक ७ व केतक खण्डादि सब ढूंढ़ना हेबानरश्रेष्ठो व सब पश्चिम वाहिनी शीतजलवालीनदियांभी ढूंढ़ना ८ तपस्वियोंके बन व बड़ेबड़े दुर्गम पर्वत व बनस्थलियां व निर्जलदेश व शीतल शिला ९ व नानापर्वतसमूहयुक्त पश्चिम दिशा ढूंढ़ना फिर पश्चिम समुद्र देखोगे १० जिसमें बड़ेबड़े नाकमगर आदि जलजन्तु भरेहैं तिसके पीछे केतक खण्ड व

तमालबनमें ११ व नारियलके बनोंमें वानरलोग विहार करेंगे पर इन सबस्थानोंमें सीताजी को ढूंढ़ना व उसदुष्ट रावणका स्थानभी १२ समुद्र के किनारेके सब पर्व्वत व बन व मुरवी पत्तन व अतिरमणीय अटीपुर १३ अवन्ती अङ्गलोपा अलक्षितबन व नानाप्रकार के राज्य व बडेबड़ेबन १४ वहांजातेजाते सिन्धुनद व समुद्रकासङ्गम मिलेगा वहांएक बड़ाभारी सोमगिरि नाम पर्व्वतहै जिसपर सौकँगूरेहैं जिनप्रत्येक पर सैकरों हज़ारों वृक्षहैं १५ तिनसब शृङ्गोंपर जो सिंह रहतेहैं उनसबोंके पंखहैं उन्होंके बलसे पक्षियोंके समान उड़तेहैं व समुद्रसे बड़ीबड़ी मछलियों व बनसे बड़ेबड़ेहाथियों को जीतेपकड़ अपने खेलनेके लिये स्थानों परलातेहैं १६ इससे उनसिंहोंके स्थानोंपर हाथी मेघोंके समान गर्ज्जा करतेहैं १७ व उसके किनारेके समुद्रमेंभी बिचरा करतेहैं इस पर्व्वतका एक शृङ्ग सुवर्णकाहै वहइतना ऊंचाहै किस्वर्ग्गतक चलागयाहै व उसपै चित्र विचित्र वृक्षलगेहैं १८ सबबानरोंको चाहिये कि जल्दीकेसाथ सबस्थान ढूंढ़ें व तिसी समुद्रके बीचमें पारिपात्र नाम पर्व्वतहै इसकी कोटि सौ योजन कीहै १९ हेबानरो उसका देखना बड़ाही दुर्ग्गमहै पर तुमलोग देखोगे वहां चौबीश कोटि गन्धर्व्वरहतेहैं २० येसब अग्निके समान तेजस्वी व अतिघोररूप स्वच्छाचारी अग्निकी ज्वालाके समान प्रकाशित चारों ओरसे घूमाकरतेहैं २१ परन्तु कोईबानर उनको पीड़ित न करै व कोईबानर वहांका एकभी फल तोड़ै २२ क्योंकि वे गन्धर्व्वलोग बड़े पराक्रमी व बड़ेबीर बड़ेही दुस्सहहैं वही वहांके फल मूल फूलखातेहैं २३ तहां यत्नपूर्व्वक जानकी जीको खोजना तुमलोग अपनी बानरोंकी प्रकृति केअनुसार कूदते फांदते ढूंढ़ने चलेजाना गन्धर्व्व बिनाकुछ अपराध कियेकुछभी न बोलेंगे २४ उसी स्थानपै वैदूर्य्य मणिके रंगका व हीराकी चमकका नानाप्रकार के वृक्षोंसे शोभित २५ सौयोजनकाआयतशोभायमान बज्रनाम महापर्व्वतहै उसकी बड़ी बड़ी गुहा ढूंढ़ना २६ उससे कुछे कही दूर समुद्रके चतुर्थांशमें चक्रवान्नाम पर्व्वत हे उसीपर बैठकर बिश्वकर्म्माने सहस्त्रआरा गजका चक्र बनायाहै २७ व उसीसामने समुद्र में पैठ श्रीबिष्णु भगवान्ने पञ्चजननाम दैत्य वहयग्रीव को माराहै व वहांसे चक्र शंख लायेहैं २८ तिसपर्व्वतके रमणीय शृंगों व बिशाल गुहा-

ओंमें रावण व जानकीको ढूंढ़ना २६ व फिर उसके आगे अथाह समुद्रमें
चौंसठि योजनका बराहनाम पर्व्वतहै इसकेसबशृंग सुवर्णकेहैं ३० उस
पर्व्वतपर एक सुवर्णका प्राग्ज्योतिष नामपुरहै तिसमें एकदुष्टात्मा नरक
नाम दानव बसताहै ३१ तिसपर्व्वतके रम्यशृङ्गोंपर व बिशालगुहाओंमें
रावण व जानकीजीको ढूंढ़ना ३२ तिस पर्व्वत को नांघ हज़ारों निर्झर
युक्त सर्व्व सौवर्णनाम पर्व्वत देखाईदेगा ३३ इसपर्व्वतके चारोंओर हाथी
शूकर सिंह व्याघ्र गर्ज्जा करते हैं ३४ जिस सौवर्णनाम पर्व्वत पर
हरितरङ्गके घोड़ेवाले इंद्रजीका देवताओंने अभिषेक कियाहै उसका मेघ
भी नामहै ३५ तिस महेन्द्रपालित पर्व्वतको नांघ साठिहज़ार सुवर्णके
पर्व्वत देखोगे ३६ येसब पर्व्वत प्रातःकालके सूर्य्यके समान प्रकाशित
हैं व सब ओरसे इनपर सुवर्णहीके पुष्पित वृक्ष लगेहैं ३७ तिन साठिह-
जारपर्व्वतोंके बीचमें एकअत्युत्तम पर्व्वतोंका राजा मेरुनाम पर्व्वतहै इस
पर्वतको प्रसन्नहो कभी सूर्य्यनारायणने बरदान दियाथा ३८ उसका प्र-
सङ्ग यहहै कि एकसमय सूर्य्यनारायणने उस पर्व्वतसे कहा कि दिनको
वा रात्रिको जो कोई तुम्हारे ऊपरआवेंगे सबसुवर्णमय शरीरहोजायँगे ३९
व जो देवता दानव गन्धर्व्व तुम्हारे ऊपर बसेंगे वेभी कांचन के रङ्ग के
हो भक्त होजायँगे ४० व विश्वदेव वसु मरुत देवता इसपर्व्वतपर आय
सायं सन्ध्योपासन करते हैं ४१ व सूर्य्यकी पूजा करते हैं जब वे लोग
पूजा करचुकते हैं तब सूर्य्य अस्ताचल पर्व्वत को चले जातेहैं ४२ मेरु
पर्व्वतपरसे दशहजार योजनपर अस्ताचलनाम पर्व्वतहै तहांसे तहांतक
सूर्य्य एक घड़ीमें जाते हैं ४३ व उसी अस्ताचल के शृङ्गपर सूर्य्यसम
प्रकाशित प्रासादगण संयुक्त विश्वकर्म्माका बनाया ४४ नानाप्रकारके
पक्षियोंसे सेवित नानाप्रकारके वृक्षोंसे समाकुल महात्मा वरुणजी का
स्थानहै ४५ मेरु व अस्ताचलके बीचमें दशशाखा का सुवर्णमय तालका
एकवृक्षहै ४६ तिन तिन सब दुर्गमस्थानोंमें व तड़ाग नदियोंमें जानकी
जी व रावण को ढूंढ़ना ४७ उसी मेरु पर्व्वतपर परमधर्म्मज्ञ व अपने
तेजसे प्रकाशित ब्रह्माके समान देदीप्यमान मेरुसावर्णिनाम महर्षि ४८
सूर्य्यसम प्रकाशित बसते हैं उनके आगे भूमिमें गिर प्रणामकर जानकी
जीके समाचार पूंछना ४९ रात्रि मिटानेके लिये सूर्य्यनारायण इतनेही

देशोंको प्रकाशितकर सन्ध्यासमय अस्ताचलको चलेजाते हैं ५० हे बानरो बस यहींतक सब बानर जायसक्ते हैं जहांतक सूर्य्यका प्रकाश रहता है व जहांतक मर्य्यादाहै बस इसके पीछेतो हमभी कुछनहीं जानते फिर तुमको कहां ढूंढ़ने को बतावें ५१ इससे अब यहां से अस्ताचल पर्य्यंत जहां रावणका स्थानहो वहांतक जाय वैदेहीका पताले मासपूर्ण होते होते लौटआवो ५२ मास भर से ऊपर न बसना व जो उसके ऊपर बसेगा उसको हम मारडारेंगे यहनहीं कि तुम्हीं लोगोंको भेजते हों नहीं तुमलोगोंके साथ हमारे श्वशुर सुषेण भी जायँगे ५३ तुमसब लोग इनकी कही बात सुनना व कहाकरना क्योंकि ये महाबल पराक्रमी हमारे श्वशुर हैं इससे गुरुहैं ५४ व आपलोग भी बड़ेबड़े पराक्रमी हैं व सब कर्मोंका प्रमाण जानते हैं तथापि इन्हीं के कहेको प्रमाण मान पश्चिम दिशा ढूंढ़ना ५५ भाई जब यह काम होजायगा तो सब जन कृतार्थ होंगे इससे हमारे बतायेके विशेष और भी जो विचार इस विषय में जिसको आवे सो भी करना वह भी हमको प्रिय होगा ५६ आपलोग देशकालानुसार जैसे कार्य्य बनता देखना वैसाकरना बहुत कहने से क्याहै ५७॥

दो० कपिसुषेण मुखवचन सुनि कपिपति के सुबिनीत।
आज्ञाले कपिराज की चलेपच्छिम युतप्रीत १।५८॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेकिष्किन्धाकाण्डेद्विचत्वारिंशस्सर्गः ४२ ॥

सुग्रीव अपने श्वशुर सुषेण को पश्चिम दिशाको जानेके लिये कह शतबलिनाम बानर से बोले १ जोवचन सबबानरों के राजा सुग्रीव ने कहे वे अपने लिये व श्रीरामचन्द्रजी के लिये हितथे २ कहा कि शतबलि तुम अपने मेरके सहस्र बानरले व वैवस्वत के बंशके मन्त्रियों के सङ्ग यात्राकरो ३ सो हिमालय पर्व्वतको कर्णभूषण बनाये उत्तरदिशामें परम यशस्विनी श्रीरामचन्द्रजी की पत्नी जानकीजीको एकओर से ढूंढ़ो ४ जबइस कार्य्यसे निवृत्तहोंगे श्रीरामचन्द्रजी का प्रिय होजायगा तोहम लोग ऋणसे छूटेंगे तुमलोग भी तो इसबिषय को अच्छीतरह जानतेहो क्योंकि कृतार्थों के जाननेवालों में श्रेष्ठहो ५ देखोमहात्मा श्रीरामच-

न्द्रजी ने हमलोगों का कितना प्रियकिया है जो अब उनका प्रत्युपकार
होतो हमलोगों का जन्म सफलहो ६ क्योंकि जोपुरुष किसी प्रयोजन
वाले पुरुष का प्रयोजन सिद्ध करदेताहै उसका जन्म सफल होजाता है
व जोकि पूर्व्वमें अपनेसंग उपकार करचुका है ऐसे अर्थीका प्रत्युपकार
करने से बढ़के कौनबात होगी यहसब से बढ़कर है ७ इसबात को
अपने मनोंमें अच्छी तरहधर हमलोगों के हितैषी आपलोग ऐसाउपाय
करें जिसमें जानकी देखपरें ८ क्योंकि येशत्रुओं के पुर जीतनेवाले पु-
रुषोत्तम श्रीरामचन्द्रजी सबप्राणियों के मान्य व पूज्यहैं पर हमलोगों
के ऊपर प्रीति करते हैं ९ इससे इनवनों के दुर्गम स्थान व नदी प-
र्व्वतादि में अपनी बुद्धि व विक्रम के वश जैसाबनै जानकीजी को ढूंढ़ो
१० इस उत्तरदिशाके जानेमें म्लेच्छ पुलिन्द शूरसेन प्रस्थल भरत कुरु
मद्रक ११ काम्बोज यमन शक आदिदेशोंके पुरपत्तनादि ढूंढ़ हिमालय
पर्व्वत ढूंढ़ना १२ फिर लोध्र पद्मकखण्ड व देवदारुओं के बनमें रावण
व वैदेही को ढूंढ़ना १३ तिसकेपीछे सोमाश्रमपर जाय देवगन्धर्व्व से-
वित कालनाम महाशृङ्गपर जावगे १४ तिसपर्व्वत की बड़ीगुहाओं में
व पर्व्वत के दुर्गम स्थानों में निन्दारहित जानकीजी को ढूंढ़ना १५
तिसकेपीछे हिमालय पर्व्वतको नांघ सुदर्शननाम महापर्व्वतदेखोगे १६
तिसकेपीछे नानाप्रकार के पक्षी व वृक्षोंसे भूषित पक्षियोंकाही निवास
स्थान देवसखनाम पर्व्वत देखोगे १७ तिसपर्व्वत के सुवर्ण के खण्डोंमें
व गुहाओं में रावण व वैदेही को बनाय ढूंढ़ना १८ तिसके आगे फिर
सौयोजन का लम्बा चौड़ा एक ऊसर मिलैगा जिसमें पर्व्वत नदी वृक्ष
कोई नहीं न कोई प्राणीही उसमें रहसक्ता है इससे आकाश मार्ग्ग
होकर जानाहोगा १९ इसबड़े भारीरोमहर्षण ऊसरको नांघ श्वेतरंग का
कैलास पर्व्वत सबलोग देखोगे २० तिसपर श्वेतमेघ के रंगका सुवर्णसे
बना विश्वकर्म्मा का बनाया अतिरमणीय कुबेर का मन्दिर देखोगे २१
वहांएक बड़ाभारी उत्तम नानाप्रकार के कमलोंसे भूषित हंसकारण्ड-
वादि पक्षीभरे अप्सराओं से सेवित, २२ तिस कैलासपर विश्रवा के
पुत्र कुबेर जी गुह्यक व यक्षोंके साथ विहार करतेहैं इनके सब देवता
नमस्कार करते हैं २३ तिस पर्व्वत के चन्द्रवत्प्रकाशित पर्व्वतों व

गुहाओं में रावण व वैदेहीजी को सबओर ढूंढ़ ढूंढ़ खोजना २४ फिर उसीके निकटही क्रौंचनाम पर्व्वत मिलेगा वहां पहुंच बड़ी सावधानी से पैठना क्योंकि उसमें पैठना बहुत कठिनहै २५ क्योंकि इस पर्व्वत पर सूर्य्यवत्प्रकाशित देवताओंके भी प्रार्थना करने के योग्य देवरूप व बड़े महात्मा ऋषिलोग रहते हैं २६ इस क्रौंच पर्व्वतकी ओर गुहा शृङ्ग व शिखर नितम्ब दर्दुरादिमेंभी अच्छी तरह जानकीजी को ढूंढ़ना २७ इसी क्रौंच पर्ब्बत के ही एक शिखरको मानस पर्ब्बत नाम है इस पै कोई वृक्षनहीं है इससे किसी प्राणीकी वहांगति नहींहै देवता राक्षसादिकों की भी नहींहै पक्षी भी नहीं रहते परन्तु दर्शनमात्रही से सबकी कामना पूरण करता है २८ इससे युक्तिपूर्वक तुमलोग उस पर्ब्बतके भी बड़े २ व छोटे २ शृङ्गोंपर ढूंढ़ना जब क्रौंच पर्ब्बत नांघ जावगे तो मैनाकनाम पर्ब्बतमिलेगा २९ इसपर मयनाम दैत्यने अपने बूते अपना मन्दिर बनाया है मैनाकके भी छोटे बड़े सब कँगूरा ढूंढ़ना व कन्दरा भी ३० इस पर्ब्बतपर किन्नरों की स्त्रियां किशोरीं रहती हैं इसके आगे सिद्धसेवित देशहै ३१ इससे वहां सिद्ध वैखानस वालखिल्य आदि तपस्वीलोग तपस्या करने से निर्म्मल होरहे हैं इससे वन्दना करनेके योग्यहैं ३२ इससे विनय के साथ इन लोगोंसे सीता जी की प्रवृत्ति पूंछनी चाहिये तहांही सुवर्ण के कमलोंसे पूर्ण वैखानस सर है ३३ उसमें प्रातःकाल के सूर्य्यके समान प्रकाशित सुन्दर हंस विहरा करते हैं व कुवेर की सवारी का सार्व्वभौम नाम हाथी अपनी हथिनियों को संगलिये वहां नित्य आताहै ३४ उस सरके नांघनेपर चन्द्रसूर्य्यरहित व नक्षत्ररहित मेघहीन व नित्य आकाश है ३५ वहदेश केवल तपस्सिद्ध तपस्वियों के प्रकाशही से मानों सूर्य्यके किरणोंसे ही प्रकाशित है ३६ उस देशके आगे शैलोदानाम नदीहै तिसके दोनों किनारोंपर कीचकनाम बांश उत्पन्न हैं ३७ वहीबांश उनसिद्धोंको उस नदीके उसपारको लेजातेहैं फिर उसपारसे इसपारको लातेहैं व इसी नदीके उसपार उत्तर कुरुदेश हैं जिनमें पुण्यात्मा लोगही रह सकते हैं पापात्मा नहीं ३८ इस देशमें सुवर्ण के पुष्पयुक्त व स्वच्छ जलयुत व नील वैदूर्य्यपत्र सहितहजारों नदियांहैं ३९ नदियोंके सिवाय सुवर्ण

मय अरुण कमलयुक्त प्रातःकाल के सूर्य्यके समान प्रकाशित तड़ाग वाप्यादि शोभित होतेहैं ४० उस देशमें बड़े बड़े मोलके मणि व रत्न व सुवर्ण सम पुष्परस ४१ व नीलकमलोंके वनसत विद्यमानहैं व जितनी नदियां उस देशमें हैं सब गोल गोल मोतियों से मणियों व धनों से ४२ शोभित हैं व सबके किनारे सुवर्णहीके बनेहैं व उनके किनारोंपर रत्नों के वृक्ष विद्यमान हैं ४३ पुष्प सबोंमें सुवर्ण के लगेहैं अग्नि समान सब प्रकाशितहैं व सब वृक्षोंमें नित्यही पुष्प फल लगेरहते पक्षीबोला करते ४४ किसी किसी वृक्षसे दिव्य गन्ध रस व सब कामना के पदार्थ चूते हैं व किसी किसी वृक्षमें नानाप्रकार के उत्तम उत्तम वस्त्रही फरतेहैं ४५ किसी किसीमें मोती व वैदूर्य्य मणिके बुट्टा बेलि बने उत्तम उत्तमभूषण फरतेहैं इनमें स्त्रियों व पुरुषों के भी पहिरनेके योग्य हैं ४६ किसी किसी में सबऋतुओं के पहिरनेवाले वस्त्रही फरते हैं व किसी किसी में बड़ेबड़े मोलके ख्यलोने फरते हैं ४७ किसी किसीमें चित्रविचित्र बिछौने फरते हैं किसीकिसीमें अतिमनोहर मालाही फरती हैं ४८ किसीकिसीमें बड़ेमोलकी पीनेखानेकी बस्तु फरती हैं व किसी किसीमेंसब शुभगुणयुक्त व रूपयौवनसम्पन्न स्त्रियां फरती हैं ४९ उसदेश में गन्धर्व्व किन्नर सिद्ध नाग विद्याधर सुवर्ण सम देदीप्यमान अपनी स्त्रियों के सङ्ग विहार करते हैं ५० वहांसब पुण्यात्मालोग बसते हैं व सबरसिकही बसते व सब कामकलामें प्रवीणलोग अपनी अपनी स्त्रियोंके सङ्ग विहरतेबसे हैं बिनास्त्री का कोईभी पुरुषनहीं न बिनापुरुष की कोई स्त्री ५१ उसदेश में सर्व्वत्र गाने बजाने व हँसनेकाही अतिमनोरम शब्द सुनाई दियाकरता है ५२ न तोकोई वहां अप्रसन्न पुरुषरहै न कोई अप्रिय पदार्थोंके प्रियकरनेवाला व दिनदिन वहां अतिमनोरम गुणबढ़ा करते हैं ५३ इसउत्तर कुरुदेश के नांघनेपर फिर उत्तरमहासागर मिलता है तहां पालारूप सोमगिरि के नामसे प्रसिद्ध एकपर्व्वत है ५४ जो देवतालोग इन्द्रलोक व ब्रह्मलोक में विराजते हैं वे उसपर्व्वत को स्वर्गमेंटिका देखतेहैं ५५ यद्यपि उसदेशमें सूर्य्यनहींहैं तथापि वह उसी पर्व्वतही के प्रकाश से सूर्य्यही के प्रकाश से जानों प्रकाशित रहता है ५६ उसपर्व्वतपर विश्वात्मा एकादशमूर्त्तिरूप भगवान् महादेवजी व

ब्रह्माजी सबमहर्षियों के सङ्ग बसते हैं ५७ हेवानरो उस उत्तरकुरुदेश में तुमलोग न जाना क्योंकि वहां अन्यकिसी प्राणीकी गतिनहीं है ५८ क्योंकि उस सोमगिरिपै देवतालोगभी बड़ेही दुःखसे जायसक्ते हैं इससे तुमलोग भी उसपर्व्वत को देख शीघ्रही लौटपरना ५९ हेवानरश्रेष्ठो बसतुमलोग यहांहीतक जायसक्तेहो जहां सूर्य्यनहीं व जहांकी कुछ मर्य्यादानहीं वहहमभी नहीं जानते ६० जोजो स्थान हमने बताये हैं सब रत्ती रत्ती ढूंढ़ना व जोहमारे कहनेसे रहगयाहो उसको भी ढूंढ़ना ६१ जो जानकीजी को देख तुमलोग आये तो श्रीरामचन्द्रजी का महा प्रियहोगा व उनसेभी अधिक हमारा प्रिय होगा व सबकर्म्म जानों तुम लोग करचुके केवल सीताजी को देखआवो ६२ तिसकेपीछे कृतार्थहो अपने भाई बन्धुओं के साथहमसे पूजितहो शान्तचित्तहो अपनी अपनी स्त्रियोंके संगनिर्भय पृथ्वीमें विहार करोगे ६३ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेकिष्किन्धाकाण्डेत्रिचत्वारिंशस्सर्गः ४३ ॥

सुग्रीवजीने यद्यपि सबबानरोंकोसब ओर जानेकेलियेआज्ञादी तथापि कार्य्य सिद्धकरनेकी आशा बिशेष रीतिसे हनुमान् जीहीसे थी इससे कपियोंमें श्रेष्ठ श्री हनुमन्त जीसे १ येहनुमान् पवन के पुत्र व बड़े पराक्रमीथे इससे सबवानरोंके राजा सुग्रीव जी इन्हींसे बोले २ हेवानर श्रेष्ठ तुम्हारे जानेकी रोंक नतो कहीं भूमिमेंहै नअन्तरिक्षमें न आकाशमें न देवपुरीमें न जलोंमें ३ इसके सिवाय असुर गंधर्व्व नाग नर देवता व सहित पर्व्वत सबपृथ्वी व सब ऊंचे नीचेके लोक तुमसब जानतेहो ४ हेवीर गति वेग तेज शीघ्रता सबतुममें महातेजस्वी तुम्हारे पितापवनहींके समानहैं ५ तेजमेंभी तुम्हारे समान आज कल पृथ्वी मण्डलमें नहीं देखाई देता इससे जिसयुक्तिसे सीता मिलें वह तुम्हीं अपने मनसे बिचारो ६ हेहनुमन् बल बुद्धि पराक्रम नीति व देशकालानुसार कार्य्य करना येसब पदार्थ तुम्हींमेंहैं ७ इसी अवसरमें श्रीरामचन्द्र जीने भी जानाकिसत्यसत्यकार्य्यकी सिद्धि इन्हीं हनुमानहीमें है यहजान बिचार करनेलगे ८ बिचारतेबिचारते बिचारा कि देखो इतने वानरहैं पर कार्य्य सिद्धहोनेके बिषयमें सुग्रीवका निश्चयबिश्वास हनुमानहीमें पर हमारे

बिचारसे अतिनिश्चयहै कि कार्य्यसाधन इन्हींसेहोगा ६ तिससे ये अच्छी तरहसे जानेबूझे कार्य्योंकेकरनेसे परखे परखाये व स्वामीके कृपापात्रहनुमान्‌से अब कार्य्यकेफलकी उदय होगी १० कार्य्य करनेमें तत्पर हनुमान्‌को देखहर्षितहो सबइन्द्रियां व मनप्रसन्नकर श्रीरामचन्द्रजीने माना कि बसअबकार्य्यसिद्ध होगया ११ ऐसा बिचार श्रीराजराज महाराज श्रीरामचन्द्रजीने अपनेनामसे अङ्कित जानकीजीके बिश्वासआनेकेलियेमुंदरी हनुमान्‌जीकोदी १२ व कहाकि हेबानरश्रेष्ठ इस चिह्नसे जनककुमारी तुमकोहमारेनिकटसेआयेझट जानजायँगी १३ हेवीर पराक्रमयुक्त तुम्हारा कार्य्य करना सुग्रीवका सन्देशही हमसे बतातीहै १४ बानरश्रेष्ठ हनुमान् वहमुंदरीले हाथजोर प्रणामकर श्रीरामचन्द्रजीके चरणारबिंदोंकेप्रणाम करचले १५ चलनेके समय सब बानरों की बड़ी भारी सेनाको हर्षित कराते ऐसे शोभितहुये जैसेबिना बादरके आकाशमें नक्षत्रोंके साथ पूर्णमासीका चंद्रमा शोभित होताहै १६ हेमहाबीर अबजिसतरहसे जानकी मिलें वही उपायकरो हमने जानलिया कितुम्हारेबलकीथाहनहींहै १७ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेकिष्किंधाकाण्डेचतुश्चत्वारिंशस्सर्गः ४४ ॥

१ जबसब जलनेको तैयार हुये तो सुग्रीवजी रामचंद्रजीकाकार्य्य सिद्ध होनेके लिये सबबानरश्रेष्ठों से बोले १ हेबानरश्रेष्ठो हमारी अतिकराल आज्ञाकी ओर ख्यालकिये रामचंद्रजीके कार्य्यकी ओर ध्यानदिये रहना २ इसतरह स्वामीकी कड़ी आज्ञापाय सब बानरलोग टीड़ीकेसमान हुर्र मारचले व सब ओर पसरगये रामचंद्रजी भी अपने भाई लक्ष्मणजी के साथ प्रस्रवण पर्व्वतपर बसे ३ इसमास के पीछे सीताजीके हाल मिलेंगे इसबातकी राह परखनेलगे व पर्व्वतराज से युक्त उत्तर दिशा को ४ शतबलि नाम महायोधा अपनी सेनालेचला व बिनतनाम यूथप पूर्व्व दिशाको चला ५ व तार अंगदादिकों के साथ पवनतनय हनुमान्‌जी अगस्त्यजीकी दक्षिणदिशाको चले ६ व बानरोंका सुषेणनामयूथप पश्चिम दिशाको चला इसदिशाके बरुणजी स्वामीहैं ७ सब दिशाओंको बानरोंको भेज बानरराज सुग्रीव अपने मनमेंबहुत आनन्दित हुये ८ इस तरह बानरों के राजा सुग्रीवकी आज्ञापाय सब बानर अपनी अपनी

दिशाकीओर चले ६ चलनेके समय सबकेसब जोरसेबोले व गर्ज्जे क्रोध कर कर दौरे व नाद भी करनेलगे १० जब इसतरह सुग्रीव ने वानरों को भेजा तो वे सब हाथ जोरजोर कहनेलगे कि हम सीता को ले आवेंगे व रावण को मारडारेंगे ११ कोईकोई कहनेलगे कि जो हमको रावण संग्राममें मिलगया तो अकेलेही मारडारेंगे व औरउसके सहायकों का मानमथनकर जानकीजी को लावेंगे १२ कोई कोई आपस में कहनेलगे कि आपलोग थकगयेहोंतो बैठें यदि पातालमेंभी जानकीहोंगी तोभी हम लेआवेंगे १३ हमसबवृक्ष कँपादेंगे सबपर्व्वतों को तोड़फोड़डारेंगे व पृथिवी फाड़डारेंगेसमुद्रोंको इधरउधर खलभलायदेंगे १४ हम अकेले चारसौकोश नांघसक्तेहैं इसमेंकुछभी सन्देहनहीं १५ भूतलसागर पर्व्वत व बनोंमें व पातालकेभीमध्यमेंकहीं हमारीगति कोईनहींरोकसक्ता १६ इसतरह से सबवानरों ने अलग अलग अपनाहाल सुग्रीव से कहा सबकेसब अपने बलके अहङ्कार के मारे ऐंठचले जातेथे १७ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेकिष्किन्धाकाण्डेपञ्चचत्वारिंशस्सर्गः ४५ ॥

जबसब बानर चलेगये तो श्रीरामचन्द्रजीने सुग्रीव से पूछा कि आप इस भूमण्डल के समाचार एकओर से कैसेजानत हैं १ सुग्रीवजी रामचन्द्रजी से बोले कि सुनिये हम विस्तारपूर्व्वक सब आपसे कहते हैं २ जब महिषाकार दुन्दुभि दैत्यको बालीने खेदा तो वह मलयाचलतक भागगया ३ वहांजाय मलयाचल की गुहामें दुन्दुभि पैठगया उसके मारने की इच्छासे बालीभी उसीमें पैठा ४ हमको बर्षदिनतक वहांखड़े रहने को कह बाली गयाथा इससे उसगुहा के द्वारपै बर्षदिनतक हम खड़ेरहे परबाली उसकोमार न निकला ५ तिसकेपीछे गुहासे रुधिर की धारा निकली वह देख हम अपने भाई के विषाद से बहुत कष्टित व विस्मितहुये ६ फिरहमारी बुद्धिमें आया कि निश्चय हमारे बड़े भाई मारेगये इसलिये बिलके दरवाजेपर हमने एक बड़ीभारी शिला वढ़ँकादी ७ इसबिचारसे कि जो महिषाकृति वहदानव इसशिला को उठाने लगेगा तो आपदबकर मरजायगा यहबिचार भाईकेजीने से निराश होगये तो किष्किन्धा पुरीको चलेआये ८ यहां सबराज्य व तारा रुमा आदि

स्त्रियों को पाय मित्रोंकेसंग निर्भयहो बसनेलगे ६ कुछदिनों के पीछे उसदुन्दुभिको मार बानरश्रेष्ठ बालीआया तो हमने मारेगौरवके व मारे भयसे फिरउनको राज्यदेदिया १० परन्तुवह दुष्टात्माबाली हमारे मारडारने की इच्छासे पीछेपीछे दौरने लगा व हमअपने मन्त्रियों के संग भागनेलगे ११ यहांतक कि हमारी समाज की समाज उसबाली के भयसे दौड़ीदौड़ी फिरनेलगी मार्गमें नानाप्रकार की नदियां व बन नगर पुरादि देखते सुनते भागा करते १२ यहांतक कि जितनी पृथिवी दर्पणोदरतल के समान है उसको लुकेठ के समान एक सब्बहदा के साथ दौरते हुये हमगाय के खुरके गढ़ाके समान नांघआये १३ पहिले पूर्व्वदिशा को जाय वहां विविधप्रकार के वृक्ष पर्व्वत कन्दरा व विविध प्रकारके सर नद्यादि देखे १४ जातेजाते उदय पर्व्वत देखा जो नानाप्रकार के धातुओं से मण्डितथा व नित्यही अप्सराओं का स्थान क्षीरसमुद्र जायदेखा १५ तबवहां भी जायबाली पहुंचा तबहम फिर वहां से भागआये १६ व दक्षिणदिशा की ओरभागे इसदिशामें आर्य्यावर्त्त देश की अपेक्षा पहिले विन्ध्याचल मिला जिसपर नानाप्रकार के पक्षी वृक्षोंपर बोलतेथे १७ फिरपर्व्वत व वृक्षोंके बीचेंमें भागते भागते दक्षिण दिशाको गये वहांभी जाय बाली पहुँचा १८ तब हम भाग पश्चिम दिशा को गये वहां अस्तपर्व्वत तक चलगये जब हम अस्त पर्व्वत पर पहुंचे तो वहां भी बालीके आनेकी खबर जानी तो उत्तरदिशाको भागे १९ उधर हिमाचल व सुमेरु पर्व्वतादि देखते भालते उत्तर के महासागर तक पहुंचे तब भी बाली के मारे शरण नपाया २० तब अतिबुद्धिसम्पन्न हनुमान्नाम बानर हमसे बोले कि हेराजन् इस समय हमको स्मरण आया है जैसा कि बानरराज बाली २१ मतंग मुनि के शापसे शापित उस आश्रम पर जब पैठेगा तो बालीके मूंड़ के सौ टुकड़े हो जायँगे २२ इससे उस स्थान पर हम लोगों का बास सुखसे होगा इसीसे हेराजकुमार हमऋष्यमूक पर्व्वतपर रहनेलगे २३ तब फिर मतंगके भयसे बाली वहां न आयसका हे राजन् इस तरहसे हमने यह पृथ्वी प्रत्यक्ष में देखी व देख भाल गुहामें आय बैठे २४ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेकिष्किन्धाकाण्डेषट्चत्वारिंशस्सर्गः ४६ ॥

जानकी जीके देखनेकेलिये सुग्रीवके भेजे बानर अपनी अपनी दिशा कोगये १वे सर नदी कांछा आकाश नगर दुर्ग्गम स्थान देश प्रदेशादि चारों ओर से ढूंढ़नेलगे २ सुग्रीव ने जिसक्रमसे बताया था सब बानरों के यूथप उसी तरह उन उन देशों व बनों व पर्व्वतों में ढूंढ़ा ३ सब बानर दिन को आकाशमार्ग्ग हो सीता जीको ढूंढ़ते थे रात्रि को फिर पृथिवी में आय जाते थे ४ उन बानरों को सब ऋतुके फल लगे वृक्ष मिलतेथे रात्रिको सबके सब एकत्र बैठ फलादि खाते व सोते ५ जिस दिन गयेथे उसके महीना भर पर सब बानर प्रस्रवण पर्व्वत पर आय सुग्रीव जीसे निराश होकर बोले ६ पूर्व्व दिशाके नदी पहाड़ आदि ढूंढ़ अपने मन्त्रियों के साथ सीता जीको बिना देखे विनत नाम महाबलवान् यूथप आया ७ इसी तरह सहित समाज शतवलिनाम महायूथप उत्तरदिशा ढूंढ़ बिना सीता की सुधिपाये ही लौट आया ८ इसी तरह पश्चिमदिशा रत्ती रत्ती ढूंढ़ सुषेण नाम यूथप जिस दिन मासपूर्ण हुआ सुग्रीव के पास आय पहुंचा ९ व उसी प्रस्रवण पर्व्वत पर बैठे रामचन्द्र व सुग्रीव से सुषेण बोला १० कि हमने सब पर्व्वत बन नदियां तडाग व सब देश ग्राम पुरादि ढूंढ़े ११ व जो जो गुहादि स्थान तुमने बताये थे सब ढूंढ़े व नाना प्रकार के कुंजादि सबढूंढ़े १२ सब बनपर्व्वत दुर्ग्गस्थान सहितप्रमाण ढूंढ़े ढुंढ़ाये १३ उनमें जो बहुत सघन बनादि थे उनको फिर फिर ढूंढ़ा १४ पर जानकी को न पाया अब उदारजीव परमपराक्रमी हनुमान् जनकनन्दनी के समाचार जानेंगे इसमें कुछ भी सन्देह नहीं क्योंकि जिस दिशा को सीताजी गई हैं पवनतनय महात्मा हनुमान् उसी दिशा को गयेहैं १५ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेकिष्किन्धाकाण्डेसप्तचत्वारिंशस्सर्ग्गः ४७ ॥

और तार अंगदादि बानरोंके साथ हनुमान्जी सुग्रीवने जहां जानेको कहा था गये १ हनुमान् बहुत दूरजाय विन्ध्याचलकी गुहा आदिढूंढ़ने लगे २ पर्व्वत नदी दुर्ग्ग सर बहुत वृक्ष व वृक्षसमूह पर्व्वत बनकेवृक्ष ३ इनसबों में बानरोंने अच्छीतरह ढूंढ़ा पर जनकनन्दनी सीताजी को न देखा ४ वे बानर मूलफलादि खातेपीते जहांतहां बैठते उठते ढूंढ़नेलगे ५ वहदेश नानाप्रकारकी गुहा बन दुर्ग्गम स्थान होने के कारण व

निर्ज्जन निर्ज्जलहोनेसे शून्य व अतिभयानकथा६ तिसदेशको छोड़ उ-
सीतरह के और दुर्गमवनोंमें ढूंढ़ा परकुछ पता न लगा तो बहुत दुःखित
हुये ७ तिसकेपीछे निर्भयहो एक अन्यदेशमेंपैठे जहांके सबवृक्ष पुष्प
फलपत्र वर्ज्जितथे कोईकभी फरतेहीनथे ८ नदियां सबवहां बिनाजलकी
थीं मूलभी वहांबनाय दुर्ल्लभथे महिषा मृग हाथी आदिजीव भी कोई न
थे ९ व्याघ्र सिंह पक्षी व अन्यभीबनके वा गवँई के कोईभी जीववहां न
थे न कोईवृक्ष न औषधी न वल्ली न वीरुध १० व न उस देशमें सुन्दर
सचिक्कण प्रफुल्लित कमल सहित तडागथे जो दर्शनीयहोते इसीसे उ-
नमें भ्रमरभी नहीं आतेथे ११ इसका कारण यहथा कि वहां परापराध
असहनशील सत्यवादी तपोधन नियमों से दुःप्रधर्ष महर्षिकण्डुजी रहते
थे १२ तिसबनमें उनमहर्षि का दशबर्ष का पुत्र मरगया तिससे महा-
मुनिने बड़ा क्रोधकर उस बन को शाप देदिया १३ तिसी कारण उस
बनमें कोईनहीं रहता न वृक्षोंमें फलादिहीलगते न नदियोंमें जलरहता
न उसमें कहीं किसीकी रक्षाका स्थानहीथा इसीसे कोई मृगपक्षी नहीं
रहसक्ता उनबानरों ने उसबनके भी नदीपहाड़ आदिसब ढूंढ़े १४ परउन
महात्मों ने वहांभी जनकात्मजाको न देखा १५ व न उनके हरनेवाले
रावणही को कहीं देखा क्योंकि सुग्रीवने कहाथा कि उसदुष्टका भी
अवश्यही पतालगाना १६ थोड़ीदूर आगेजाय बानरों ने देखा तो एक
बड़ा भयानकवन देखपरा उसमें एक बड़ा भारी असुर बैठाथा बानरों
ने देखा तो पर्व्वताकार पड़ाथा १७ उसको देख सबबानर मारने को
दौड़ेतब उसनेभी सबबानरोंसे कहाखड़ेहो अभीतुम सबोंको मारडारता
हूँ १८ इतनाकह मूकाउठाय बानरोंकी ओर दौरा उसको दौरता आता
देख बालीके पुत्र अङ्गदने १९ जाना कि यहरावण है इससे एकलात
जोरसे मारा उतलात के लागतेही मुखसे रुधिर डाकता २० पर्व्वताकार
असुर भूमिमें गिरपरा व मृतक होगया तिसके मरने से बानरलोग बि-
जयपाय हर्षितहुये २१ व सबोंने सबबन ढूंढ़ा जबसब ढूंढ़हुये तो आगे
को बढ़े २२ व उन्होंने एकऔरबड़ाभयानक बनदेखापर्व्वतकी कन्दराभी
कईदेखीं २३ उनको भी रत्तीरत्तीढूंढ़ उदासहोवृक्षोंकेनीचे बैठगये२४॥
इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेकिष्किन्धाकाण्डेऽष्टचत्वारिंशस्सर्गः ४८॥

इसकेपीछे थकेहुये महाप्राज्ञ अङ्गदजी सबबानरों को समझाय बोले १ कि बन पर्व्वतनदी दुर्गम गहन दरी गुहा आदिसब ढूंढ़े २परजानकी नहींदेख परतीं व न दुष्टात्मा पापी सीताजी के हरनेवाला राक्षसही देखपरा ३ व समयभी बहुतबीतचुका व सुग्रीवकी आज्ञाबड़ी कड़ीहै इससे आपलोग फिरढूंढ़ें ४ अब आलस्य शोक निद्राछोड़ ऐसेढूंढ़ो जिसमेंजानकी कोपायही जायँ ५ जिससे कि खेद न करना सामर्थ्य रखना मन नछोटा करना ये कामकार्य्य सिद्धिके कारणहैं इससे हम यह बातकहते हैं ६ हे बानरो अभी इसबन को ढूंढ़ो व खेदछोड़ फिरफिरढूंढ़ो ७ क्योंकि जोकर्म्म किया जाता है उसका फल अवश्य मिलता है इससे सन्तोष कर बैठ रहना ठीक नहीं काम करतेही करते कुछ पै कुछ होही रहेगा ८ भाई सुग्रीव राजा बड़े क्रोधी व तीक्ष्णदण्डकारी हैं तिनसे सदा डरना चाहिये व महात्मा श्रीरामचन्द्रजी से भी डरनाही चाहिये ९ हे बानरो तुमसब लोगोंके हितके लिये हमने कहाहै जो रुचे तो करो जो जिसकाम के करनेमें समर्थहो वह वहीकरै वा और जो कुछ तुमलोगों ने बिचारा हो सोभी कहो १० अंगद के वचन सुन प्यास व परिश्रम से खिन्न मधुरवाणीसे गन्धमादन नाम बानर बोला ११ हे बानरो जो बात अंगद कहते हैं वह तुम सबलोगोंके हित व योग्यहै इससे इनका कहना अवश्य करो १२ चलो सबजन फिर सब पर्व्वत कन्दरा शिला बन व पर्व्वतोंके शून्यस्थानढूंढ़ें १३ जैसाकुछ महात्मा सुग्रीव ने बताया है उसीरीतिसे बन पर्व्वत व सब दुर्गमस्थानढूंढ़ें १४ यहसुन सबबानर उठ विन्ध्याचल के आस पास की सब दक्षिण दिशा ढूंढ़ने लगे १५ तब एक शरद ऋतुके बादर के रङ्गका शृङ्ग कन्दरादि युक्त चाँदीका पर्व्वत उन्होंने देखा उसपरचढ़ १६ उसी पर्व्वतपर सीताजी के दर्शन की इच्छा किये सब बानरों ने सप्तपर्ण बन व लोध्रबन देखा व सबमें जानकी जीको ढूंढ़ा १७ उस समय बानरों ने कूदफाँद बड़ा परिश्रम किया इससे थकगये पर रामचन्द्रजी की प्राणप्रिया जानकीजी को न देखा १८ वह बहुत कन्दरायुक्त पर्व्वत देख सब बानरलोग उस पर इधर उधर देखते चढ़े १९ जब बड़ी देरतक इधरउधर घूमतेघूमते थक गये तो व्याकुल हो पर्व्वत से उतर एकदोघड़ी वृक्षों के नीचे आय बैठे

२० मुहूर्त्तभर सुस्ताने से जब उनका कुछ थकामिटा तो फिर सम्पूर्ण दक्षिण दिशा ढूंढ़ने के लिये सब बानर उद्यत हुये २१ विन्ध्याचल से प्रारम्भकर जहांतक दक्षिण दिशा सुग्रीवने बताईथी हनुमानादि सब बानर उसके ढूंढ़ने को चले २२ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेकिष्किन्धाकाण्डेएकोनपंचाशत्तमस्सर्गः४९॥

तार व अङ्गद को सङ्गले हनुमान् जी विन्ध्याचलके बन कन्दरा व दुर्गम स्थान एक ओरसे ढूंढ़नेलगे १ देखा तो सब गुहाओं में व्याघ्र सिंहादि जीव भरेथे व उस पर्व्वतपर विमल जलसहित हज़ारोंझरना झरते थे २ तिस पर्व्वतके दक्षिण व पश्चिमवाले कोण पर सब बानर पहुंचे वहां बसतेबसते बहुत समय लगा ३ वह पर्व्वत बड़ा दुर्गमथा क्योंकि नानाप्रकार की गुहा व बनादि उसमें विद्यमान थे पर श्री हनुमान्जीने उसकोभी यत्नपूर्व्वक रत्तीरत्ती ढूंढ़ा ४ ढूंढ़नेकेसमय निकट ही निकट सब गज गवाक्ष गवय शरभ गन्धमादन ५ मैन्द द्विविद हनुमान् जाम्बवान् अङ्गद व तार ये सब बनमें घूमते थे ६ पर्व्वत समूह युक्त दक्षिण दिशाढूंढ़ते ढूंढ़ते बानरों ने एक बड़ाभारी खोह देखा ७ उसका ऋक्षबिल तो नाम था व अतिदुर्गम दानव से रक्षित लताओं से ढँकाथा भूख प्यासके मारे व्याकुल थके पानीकी इच्छा किये ८ वह ऋक्षबिल बानरों ने देखा व जाना क्योंकि क्रौंच हंस सारसादि पक्षी उसमें से निकलते देखपरे ९ जल से भीगे व कमल रजसे अरुण चकई चकवा भी देखाई दिये सुगन्ध भी उससे आय रही थी पर जाना वहां का बड़ा कठिन था तहां पहुंच १० सब बानर मारे विस्मयके व्याकुल हुये व उस बिलके विषय में सब बानरों को बड़ी शंका हुई ११ बड़े तेजस्वी व बड़े बलवान् सब नानाप्रकार के जीवों से पूर्ण बलिके स्थान के समान उस बिलद्वार पर पहुंचे १२ यह बिल बड़े दुःखसे देखने के योग्य अति घोर व सब तरह से थाह लेने के अयोग्य थी तिस को देख बमके सब विषय जाननेवाले पवनतनय हनुमान् जी १३ बड़े भयानक बानरों से बोले हेबानरो पर्व्वत समूह पूर्ण दक्षिण दिशा के सब देशढूंढ़ा १४ इससे हम सब थक गये पर जानकी जीको नहीं

देखते व इस बिलसे हंस क्रौंच सारस १५ व जलसे भीजे चक्रवाक निकलते हैं इससे निश्चय होताहै कितो यहां जलपूर्ण कूपहै वा कोई कुण्ड १६ इसीसे इसके द्वारपै हरे व चीकने वृक्षलगेहैं इतना कह उस महा अँधेरे बिलमें सब केसव पैठे १७ वहां नतो चन्द्रमा का प्रकाश था न सूर्य्य का इससे उसके देखतेही रोमखड़े होगये देखातो तिससे सिंह व मृग पक्षी निकलते थे १८ पर सब बानर उसमें पैठगये वहां नतो उन बानरों की दृष्टि हतहुई न तेज न पराक्रम १९ जैसे बायुकी गति कहीं नहीं रुकती वैसेही उनकी गति व दृष्टि वहां नहीं रुकी इससे वेकपिकुंजर बड़े बेग से उस बिलमें घुंसे २० उसके भीतर शोभित व सुखद बहुत सुन्दर स्थान दूरसे देखा व तिस नानाप्रकारके वृक्षलगे भयानक बिलमें २१ एकदूसरे को पकड़े चारकोश तकउस अँधेरे में चलेगये मारेप्यास के मूर्च्छितहो भ्रान्तचित्त होगये २२ व उसबिल में थककर गिरपरे कुछ कालतक परेरहे गली चलने के कारण दुर्व्वल तो होही गयेथे इससे औरथकगये २३ इधर उधर निहार जाना कि बसअबहम सबइसी में मरे फिर बड़े यत्न से चले तो आगे एक बहुत प्रकाशित बन देखाई दिया २४ उसमें सब अग्निसमान प्रकाशित वृक्ष लगे थे वृक्षोंमें साल तालतमाल पुन्नाग वंजुल धव २५ चम्पक नागवृक्ष कर्णिकार येसब पुष्पित लगेथे सबमें सुन्दर सुन्दरसुवर्णहीके पल्लव व गुच्छ लगे थे २६ उन पर जो लतायें चढ़ीथीं वहीमानों सुवर्ण के गहने थे सबके थाल्हा वैदूर्य्यमणि के बनेथे २७ सबवृक्ष तो सुवर्णमय होने से प्रकाशितथे व तड़ागों में नील वैदूर्य्यमणि के सजीव पक्षी कूजतेथे २८ प्रातःकालीन सूर्य्यके रंगके बड़ेबड़े वृक्ष सुवर्णमय लगे व सबमछलियां सुवर्णहीकी थीं कमलभी सबसुवर्णकेहीथे२९ इसतरहकी तो तलैयां सैकरों वहांदेखीं व सुवर्णही के सैकरों बिमान वहांधरेथे बहुत चांदीकेभी थे ३० सबझरोखे भी सुवर्णही के बनेथे व उनमें मोतियोंकी झालर लगीथी सुवर्ण व चांदीही के बने वैदूर्य्यमणि युक्त ३१ तहां नानाप्रकार के मन्दिर बानरोंने देखे व फलफूल मूंगा व मणियों के वृक्ष देखे ३२ व सबओर से सुवर्णही के भ्रमर व मधु व मणियों व सुवर्ण के चित्र व मणियों व सुवर्णकेही शयन करने व बैठने उठने के आसन

घरेथे ३३ विविध प्रकार के व अति विशाल ये सब पदार्त्थ बानरों ने देखे ३४ सोने चांदी व कांस्यके बर्त्तनोंकी तो राशिदेखीं अगरु व चन्दनोंके ढेरके ढेर ३५ व अति पवित्र मूल फलादि भोजन के पदार्त्थ व नाना प्रकारके मीठे रसीले पानकरनेके पदार्त्थ ३६ बड़े बड़े मोलके दिव्य वस्त्रों के ढेरके चित्र विचित्र दुशाला व मृगचर्म्मों के भी ढेर ये सब पदार्त्थ तहां ढूंढ़ते बानरोंने देखे ३७ जाते जाते बनाय जब निकट गये तो एक स्त्री देख पड़ी ३८ उसको चीर मृगचर्म्म धारण किये तपस्या करती व अपने तेजसे प्रकाशित व नियताहार देख वानर बहुत डरे ३९ व मारे विस्मय के चारों ओरसे घेर खड़ेहोगये ४० तब पर्व्वताकार हनुमान् जी हाथ जोड़ व उस वृद्धाके प्रणामकर पूंछनेलगे कि तुम कौनहो व यह भवन बन बिल व ये रत्न किसके हैं बताओ तो ४१ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेकिष्किन्धाकाण्डेपञ्चाशत्तमस्सर्ग्गः ५० ॥

इतना कह चीर व मृगचर्म्म धारण किये उस धर्म्मचारिणी तपस्विनी से हनुमान् जी बोले १ कि हमलोग मारे क्षुधा पिपासाके खिन्न व थके इस प्रकाशित खोहमें पैठ आये २ व इसमें पैठने का कारण पिपासित होना है पर यहां आय ये विविध प्रकार के अद्भुत पदार्त्थ देखे ३ व देखतेही सबलोग सम्भ्रान्तचित्तहो मूर्च्छित होगये बतावो प्रातःकालीन सूर्य्य के समान प्रकाशित ये सुवर्ण के वृक्ष किसके हैं ४ व पवित्र मूलफलादि खाने के पदार्त्थ किसके हैं व ये काञ्चनके विमान व चाँदीके घर किसके हैं ५ मणियों की झालर लगे सुवर्णके झरोखे ये किसके हैं व फूलेफरे पुण्यदायकमहकुये ६ सुवर्णमय ये वृक्ष किसके तेजसे बनेहैं व ये सुवर्णके कमल विमल जलमें कैसे बनेहैं ७ व सुवर्ण के कछुहा व मछलियां कैसे बनीहैं भला तुम्हारेही अनुभावसे बनेहैं वा और किसी के प्रताप से ८ अब इस बातको न जाननेवाले हम सब लोगोंसे बताइये जब धर्म्मचारिणी उस तपस्विनी से हनुमान् जी ने ऐसा कहा तो ९ वह सब प्राणियों के ऊपर दया करनेवाली तपस्वी हनुमान्जी से बोली हे बानर श्रेष्ठ एक महातेजस्वी मय नाम दानवहै १० तिसीने अपनी मायासे यह काञ्चन का बन बनाया है वह आगे

दानवों का थवई हुआथा ११ जिसने यह सुवर्ण का दिव्य भवनोत्तम बनायाहै उसने महाबनमें हज़ार वर्षतक तपस्याकी १२ तो ब्रह्माजी से जितना उशनाजी का धनहै सबपाया अर्थात् उसको सब प्रकार के पदार्त्थों का बनाना आयगया तब उसने आय यह सब उत्तम बनादि बनाया १३ व इस अपने बनाये बनमें सुखपूर्व्वक कुछ दिन तक बसा रहा पर कुछ दिनके पीछे वह हेमानाम अप्सरा के सङ्ग भोग करने लगा १४ इसबात को जान युद्धमें इन्द्रने उसको मारडारा तब ब्रह्मा जीने यह उत्तमबन १५ व यह यथेच्छा भोग व सुवर्णमय गृह हेमा अप्सराको देडारा व हम मेरुसावर्णिकी कन्याहैं व स्वयम्प्रभा हमारा नामहै पर उस हेमाके बनकी १६ रक्षा करती हैं वह नृत्यगीत जानने वाली हेमा हमारी सखीहै १७ उसने हमसे कहाहै कि हमारा स्थान रखाया करना इसीसे हम यह महाबन रखातीहैं अब तुमलोग अपने समाचार बतावो किस कार्य्यके लिये वा किसके हेतु दुर्ग्गम बन पर्व्वतादिकों में घूमते हो १८ व इस दुर्ग्गम बनमें तुम लोग कैसेआये अब पवित्र भोजन मूलफलादि १९ भोजनकर व जल पानकर अपना सब वृत्तान्त हमसे कहो ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेकिष्किन्धाकाण्डेएकपञ्चाशत्तमस्सर्ग्गः ५१ ॥

जब वे सब बानर खाय पी चुके तो वह धर्म्मचारिणी तापसी स्वयम्प्रभा बानरों से बोली १ हे बानरो जो फल खाने से तुम्हारा थका मिटाहो व यदि यह समाचार हमारे सुनने के योग्य हो तो हम सुना चाहती हैं कहो २ तिसके ऐसे बचनसुन पवनतनय हनुमान् बड़ी कोमलता के साथ सब यथाक्रम कहनेलगे ३ कि सब लोकोंके राजा इन्द्र वरुणके समान दशरथजीके पुत्र श्रीरामचन्द्र दण्डकारण्य को आये ४ उनके साथ उनके छोटे भाई लक्ष्मण व उनकी भार्य्या जानकी भी थीं तिनकी भार्य्या जनस्थानसे बलवान् रावणहर लेगया ५ तिन रामचन्द्र जीके सखा बड़ेबीर सुग्रीव नामबानरराज हुयेहैं जिन्होंने हमलोगों को भेजाहै ६ इससे हमलोग इस दक्षिण दिशाको इन अङ्गदादि बानरोंके सङ्ग आयेहैं ७ उन्होंने यह आज्ञा दीहै कि कामरूपी उस दुष्ट रावण

को व जानकीजीको ढूंढ़ो ८ इससे हमलोग सब दक्षिणदिशा ढूंढ़तेढूंढ़ते समुद्रके किनारे तक पहुंचे व भूखे होनेके कारण वृक्षोंके नीचे बैठगये ९ अबहम सब ऐसे विवर्णमुख हो चिन्तायुक्त होगये हैं कि चिन्ताके समुद्र में डूबतेहैं जानो पारही न उतरेंगे १० आते आते चारों ओर निहारते यहां आये तो लता व वृक्षोंसे घिरी महा अँधेरे से ढँकी यह विल देख परी ११ देखातो यहांसे जल पी पी व पंख ओदेकिये हंस कुरर सारसादि पक्षी निकलतेथे १२ तब हमनें कहा कि बानरो इसमें अच्छीतरहसे पैठो यहसुन इनसब बानरों के मनमें यह बात आई कि अवश्य पैठना चाहिये १३ यह शोचविचार सब लोग इसमें पैठे पर अँधेरा बड़ाहै इससे मारे भयके एक दूसरे का हाथ पकड़ेरहा १४ इसतरहसे हमलोग एकाएकी इस अँधेरी बिलमें पैठे बस यही हमलोगों का कार्यहै व इसीके लिये वनमें आये १५ व मारे भूखोंके दुःखित हो तुम्हारे पास आये यहां तुमनें आतिथ्य धर्म्मसे फल व मूल दिये १६ भूखों के मारे पीड़ित हम लोगोंने खाये अब भूखोंके मारे मरतेहुये हमलोगोंकी रक्षा जो तुमनेकी १७ उसके बदलेमें ये बानरतुम्हारा कौन प्रत्युपकार करें बतावो जब सब बानरोंने स्वयम्प्रभासे ऐसा कहा तो१८ वहसबवानरों केयूथपोंसे बोली कि हम सब वानरोंसे प्रसन्न हैं १९ व अपने धर्म्मसे चलतीहुई हमारा किसी बातसे कुछ काम नहीं है जब उस तापसी ने ऐसे धर्म्मयुक्त बचनकहे २० तो तिस प्रशंसिताचरणवाली तापसी से हनुमान्जी बोले हे धर्म्मचारिणि हमसब तुमको अपना रक्षक जानतेहैं २१ वह यहहै कि महात्मा सुग्रीवने जो नियम हमलोगों के लिये कर दियाथा कि सिवाय जानकीके ढूंढ़नेके और काम न करना सो इसविल मेंही परेपरे वह समयबीताजाताहै २२ इससे सुग्रीवकेवचनका उल्लंघन करनेसे आयुर्हीन हम लोगोंको तुम इस विलसे किसी यत्नसे निकालो जिसमें देर न लगै २३ सुग्रीवके भयसे शङ्कित हमलोगों की रक्षाकरो हे धर्म्मचारिणि अभी हमको बहुत बड़ा काम करना है २४ इस गुहामें परे हैं वह भी काम नहीं करसके जब हनुमान्जीने ऐसाकहा तो तापसी बोली २५ कि जोकोईबिना हमारी आज्ञा यहांचलाआताहै उसका यहां सेजीता जाना हम दुर्ल्लभ मानती हैं परन्तुनियमपूर्व्वककियेहुये अपने

तपःप्रभाव से २६ सब बानरों को इस बिलसे बाहर निकालदेंगी पर हे बानरश्रेष्ठो तुम सब अपने अपने नेत्र मूंदो २७ क्योंकि बिना नेत्र मूंदे तुमलोग यहांसे निकलनहीं सक्ते तब सब बानरों ने अपने सुकुमार हाथोंकी अँगुलियों से २८ अपने अपने नेत्र झटपट मूंदे व निकलनेकी कामनासे हर्षित हुये व सब महात्मा बानरोंने हाथोंसे मुख मूंद लिया २९ कि एक निमिष मात्रमें तिसने सब बानरोंको उस बिलसे बाहर करदिया व तिन सबोंसे वह धर्म्मचारिणी तापसी बोली ३० उस महा विषम बिलसे निकले बानरों को समझाय कहनेलगी कि नानाप्रकार के वृक्ष लतादि युक्त शोभायमान विन्ध्याचल यहीहै ३१ व यह दूसरा प्रस्रवण पर्व्वतहै व यह समुद्रहै हे बानरो तुम्हारा कल्याणहो हम अपने भवन को जायँगी इतनाकह स्वयम्प्रभा लक्ष्मीयुक्त अपने घरमें पैठगई ३२ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेकिष्किन्धाकाण्डेद्विपञ्चाशत्तमस्सर्गः ५२ ॥

तिसकेपीछे अतिघोर गर्ज्जता लहरों से आकुल अपार समुद्र बानरों ने देखा १ जबये बानरमय की मायासेबने उसमन्दिर में रहे तबसुग्रीव ने जो एकमास का वादा करदियाथा बीतगया २ तब बिन्ध्याचल के उसएक पुष्पित वृक्षयुक्त पर्व्वतपै बैठ महात्मा सबबानर बड़ीचिन्ता को प्राप्तहुये ३ तिसकेपीछे देखातो वहांके वृक्षोंमें फूललगेथे सबलता वृक्षोंमें लपटीजाती थीं बिदित होताथा कि जानों बसन्तऋतु आयगया इसबात को जान सबबानर लोग बड़े शंकितहुये ४ सबोंने जाना कि बसन्तऋतु सत्य सत्य आयगया सन्देश का समय नष्ट होगया इससे व्याकुल हो सबके सब धरणीपर गिरपरे ५ तब तिन अति शिष्ट वृद्ध बानरों को बड़ा मानकर अति मधुर बाणीसे ६ सिंह वृषस्कंध मोटे व लम्बे भुजवाले युवराज महाचतुर व पण्डित अङ्गदजी बोले ७ हे बानरो हम सब लोग बानरराज सुग्रीवकी आज्ञासे किष्किन्धा से निकले पर मास पूर्ण होगया क्या तुमलोग नहीं जानते ८ हमलोग क्वारके महीने के प्रारम्भही में घरसे निकलेथे वह मास तो बीतगया अब इसका क्या उत्तर दिया जायगा ९ आप लोगोंसे इसलिये पूछते हैं कि तुम लोग नीतिशास्त्र में बड़े चतुर हो इससे प्रत्येक कार्य्य में तुमको विश्वास है

व सब अपने स्वामी के हित कार्य्यों में निरत हो इसीसे सब कामों में भेजेजाते हो १० सब कर्म्मों में तुमलोगोंके समान कोई नहीं है क्योंकि सब दिशों में तुम्हारा पौरुष विश्रुत है तुमसब हमारे साथ सुग्रीव के भेजेहुये आयेहो ११ इससमय तक जिस कार्य्यके लिये नियत हैं कुछ नहीं हुआ भला बिना सुग्रीवकी आज्ञाकिये कौन सुखीहोगा १२ इससे सुग्रीव का नियतकाल अब बीतजाने के कारण सब बानरों को यही उचित है कि कहीं नद्यादि पुण्यस्थानमें बैठ प्राणत्याग करदें १३ क्योंकि एक तो सुग्रीव प्रकृतिही से तीक्ष्ण स्वभाव हैं फिर सबके राजा हैं हमलोग जो अपराध करके जायँगे तो वे क्षमा न करेंगे १४ बिना सीता की सुधि लिये जानेपर सुग्रीव पापही करेंगे तिससे लावो यहीं मरने के लिये बैठें १५ अब धन स्त्री गृह पुत्र सबको छोड़ो क्योंकि जैसे यहां से गये कि सबको राजाने मारडारा १६ सो सुग्रीवके हाथोंसे मारेजाने से यहींका मरना ठीकहै जो कहो कि अपने हाथसे विष का भी वृक्ष लगाय अपनेही हाथों वह नहीं काटता फिर तुमको युवराजपदवी दे कैसे मारेंगे यहबात कुछनहीं क्योंकि हमको सुग्रीवने युवराजपदवी नहीं दी १७ किन्तु महाराजाधिराज श्रीरामचन्द्र महात्माने दी है व सुग्रीव तो हमसे पूर्व्वहीसे वैर बांधेहैं जैसेही देखेंगे कि ये कार्य्य नहीं करआये १८ तैसेही तीक्ष्ण दण्डसे हमको मारडारेंगे यह हमें निश्चय है वहां चल सुहृदों को दुःख देखाने से क्या है १९ बस पुण्यस्थान समुद्र का तट भी यहां है इससे इसी स्थान का मरना ठीक है २० अंगदजी की ऐसी बाणी सुन सब बानर अति करुणाबचन बोले २१ कि हां सुग्रीव तो जानो प्रकृतिही से तीक्ष्ण स्वभाव हैं व श्रीरामचन्द्रजी भी अपनी प्रिया में अनुरक्त हैं जब देखेंगे कि ये लोग बिना कार्य्यही किये चले आये हैं २२ बिना बैदेहीजीको देखेही चले आयेहैं तो रामचन्द्रजी का प्रिय करने के लिये अवश्य हमलोगों को मारडारेगा २३ भाई अपराधकर हमलोगों को उचित नहीं कि स्वामी के निकट जायँ क्योंकि हमलोग सुग्रीवके प्रधानभूत हैं २४ इससे सीताजीकी प्रवृत्ति बिनापाये हम सुग्रीवके पास कभी न जायँगे बरन यमपुरको जायँगे वह ठीकहै २५ बानरों के भयार्द्दित वचन सुन तार नाम यूथप बोला कि

विषाद करने का कुछ भी काम नहीं जो सब जनोंको रुचे तो आवो इस बिलमें पैठ कुछ दिन बसें २६ इस स्थानपै मायासे बना अति दुर्ग्गम बहुत कन्द मूलफलादि सहित खानेपीनेके लियेहै इसमें बैठेरहें न यहां कोई इन्द्रका भयहै न कोई रामचन्द्रहीका न सुग्रीवही का २७ अंगद के अनुकूल बचनसुन सब बानर विश्वास में आय बोले कि भाई जैसा करनेसे हमलोगोंके प्राण न जायँ वैसाकरो २८ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेकिष्किन्धाकांडेत्रिपंचाशत्तमस्सर्ग्गः ५३ ॥

चन्द्रसम तेजस्वी तारबानंरने जब ऐसाकहा तो हनुमान्‌जीने जाना कि बस अब अंगद का राज्य गया १ क्योंकि जब अष्टांग बुद्धि युक्त व चारबल संयुक्त व चतुर्द्दशगुण सहित हो अंगद भी ऐसा समझते हैं २ फिर तेज बल व पराक्रम से निरन्तर पूर्ण जैसे शुक्लपक्ष में प्रतिदिन बढ़ताहुआ चन्द्रमा शोभासे पूर्ण होताहै ३ बुद्धिमें बृहस्पति के समान विक्रममें अपने पिताके तुल्य व तार बानर से सेवित जैसे शुक्रके बचन से इन्द्र सेवित होते हैं ४ ऐसे अंगद को अपने स्वामी सुग्रीव के अर्थ सुस्त देख सर्व्वशास्त्र विशारद हनुमान् भर्त्ताके अर्थमें संय्योजित करने लगे ५ जो साम दान भेद दण्ड ये चार उपाय हैं उनमें तीसरे उपाय भेदसे सब बानरों को भेदितकिया ६ जब सब बानरोंमें भेदपरगया तो अंगद को डरवाने लगे उस समय बिबिधप्रकार के ऐसे बचन कहे जिनसे भय हो व कोप भी हो ७ हे तारानन्दन अंगद तुम युद्धमें अपने पिताके समान हो इससे जैसे तुम्हारे पिता जी राज्य करते थे वैसेही तुम भी करसक्ते हो ८ परन्तु ये सब नित्यचंचलचित्त बानर बिना अपने पुत्र व स्त्रियोंके तुम्हारी आज्ञा यहां बनमें बैठे बैठे न करेंगे ९ हम तुम से प्रत्यक्ष में कहते हैं कि ये लोग तुमको प्रसन्न न रक्खेंगे जैसे कि ये जाम्बवान् नील वसुहोत्र १० व हम ये सब लोग तुम्हारे साम दान दण्ड भेदोंसे सुग्रीव की ओरसे नहीं खिंचसक्ते ११ जो कहो कि अच्छा तुमलोग सुग्रीव के पास चले जाव हम अकेले उनसे बिगाड़कर यहीं बैठें गे तो यह भी ठीक नहीं क्योंकि बलवान् से बैरकर दुर्व्वल को चाहिये कि एक ठिकाने आसन लगाय न बैठे १२ व जो तुम इस तार

की बताई बिलको अपनी रक्षा करनेवाली समझतेहो तो इसका विदारण करना लक्ष्मणके बाणोंका बहुत थोड़ासा कामहै १३ जब मयने यहपुर बनाया था तब इन्द्र ने कोप से बज्र चलाया था उससे तो इस बिलमें केवल द्वार के आकार का एक छेदही होगया था परन्तु लक्ष्मण अपने तीक्ष्ण बाणोंसे इसे पत्तांके पुरके समान रत्तीरत्ती उड़ादेंगे १४ क्योंकि लक्ष्मणजीके ऐसे बहुत बाण हैं जो बज्रके तुल्यहैं इससे वे पर्व्वतों को भी दारण करसक्ते हैं १५ हे अङ्गद जैसेही तुम यहां सुग्रीव व रामचंद्र जीसे बिछड़कर एकान्त में बैठे तैसेही ये सब बानर तुमको छोड़देंगे क्योंकि इस बातका इन लोगों ने निश्चय करलिया है १६ ये बानर तुमको पीछेदार अवश्य सुग्रीवके पास चलेजायँगे क्योंकि एक तो अपने पुत्र स्त्रियों को सुमिरते हैं दूसरे नित्य भूखे रहने से ऊबगये हैं तीसरे कहीं सोने बैठने लेटने की इनको जगह नहीं मिलती १७ इससे जब तुमको ये सुहृद छोड़देंगे व हित चाहनेवाले बन्धु भी छोड़देंगे तो तुम किंचित हिलतेहुये तृणसे भी डरने लगोगे १८ अब ऐसा करो जिसमें रामचन्द्रके बिमुखों के मारनेवाले महावेग व दुःखसे सहने के योग्य व घोर लक्ष्मणजी के बाण तुमको कहीं मार न डारें १९ कदाचित् हम लोगोंके साथ नम्रताके साथ तुम सुग्रीवके निकट जावगे तो वे तुमको धीरेधीरे अवश्य राजसिंहासनपर बैठावेंगे २० क्योंकि तुम्हारे पितृव्य बड़े धर्म्मराज प्रीति करनेवाले व दृढ़ व्रतधारी सत्यप्रतिज्ञ पवित्र हैं वे तुमको कभी न मारडारेंगे २१ इसके सिवाय सुग्रीव तुम्हारी माताका बड़ा प्रिय करते हैं क्योंकि उनके प्राण तुम्हारी माताहीके हितके लियेहैं व सुग्रीवके कोई और पुत्र भी नहीं है कि राज्य उसको देंगे इससे अङ्गद तुम अवश्य चलो २२ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेकिष्किन्धाकाण्डेचतुःपंचाशत्तमस्सर्गः ५४॥

नम्रता सहित धर्म्मयुक्त व स्वामीके सत्कार में संयुक्त हनुमानजी के बचनसुन अङ्गद बोले १ कि अस्थिरता मनकी पवित्रता सलज्जता सरलता विक्रम व धैर्य्य सुग्रीव में नहीं है २ क्योंकि जिस सुग्रीव ने अपने ज्येष्ठभाई की स्त्री जो कि माताके समान होती है फिर रानी तिसको

अपनी स्त्री बनायलिया ऐसा निन्दितकर्म्म किया ३ फिर जिसको भाई ने कहदिया था कि बिलके द्वारपै खड़ेरहना पर उस दुष्टने युद्धके भयसे बिलके द्वारमें शिला देदी वहदुष्ट धर्म्म कैसे जानता है ४ फिर भाई के विषय की बात जाने दीजिये अग्नि को साखी दे रामचन्द्रजी का हाथ पकड़ा जिन महायशस्वी श्रीरामचन्द्रजीने इतना बड़ाभारी उपकारकिया तिनको भी सुग्रीव भूलगये तो भला वे किसका सुकृत स्मरण करेंगे ५ व जो उन्होंने सीताजीके ढूंढ़नेको बानर भेजे हैं सो धर्म्मके भयसे डरके नहीं किन्तु लक्ष्मणजीके भयसे भेजा है फिर तिसमें धर्म्म कैसे हो ६ इससे धर्म्मशास्त्र के प्रतिकूल चलनेवाले पापी कृतघ्न व बलात्कारी तिस सुग्रीवके विषयमें सबप्रकार से श्रेष्ठ व निर्मली कुलमें उत्पन्न कौन पुरुष विश्वास करेगा ७ फिर चाहे सुग्रीव धर्म्मवान् हो चाहे अधर्म्मवान् उससे कुछभी कामनहीं यद्यपि उनको अभी पुत्र नहीं फिर क्या होही गा नहीं जब होगा तभी उसको राज्यपर बैठावेंगे व शत्रुके पुत्र हमको काहेको जिलावेंगे ८ फिर विनष्टशक्ति भिन्नमंत्राव अपराधी हम किष्कि-न्धाको जाय अनाथ व दुखियों के समान कैसे जियें ९ हम जानते हैं कि शठ क्रूर निर्लज्ज सुग्रीव राज्यके कारण हमको अल्पदण्डसे मरवा-डालेगा या जन्म पर्य्यंत के लिये कारागृह में बँधुआ करेगा १० फिर उस बँधोई वा मरनेसे तो यहीं समुद्रहीके किनारे का मरना अच्छा है इससे अब सब बानरो हमको समुद्र तीरपै मरनेके लिये आज्ञा देवो व अपने अपने गृहको जाव ११ हम यहीं मरही जायँगे किष्किन्धाको कभी न जायँगे तुम लोगों को वहां जानेके लिये आज्ञा देते हैं खुशीसे चले जाव १२ अब हमारी ओरसे पहिले प्रणामकह राजासे कुशलपूंछना व प्रणामहीके साथ महाबलशाली श्रीरामचन्द्र व लक्ष्मणसेभीपूंछना १३ व वहीराजा व छोटे हमारेपिता सुग्रीवसे भी प्रणाम पूर्व्वकही कुशल पूंछना व हमारीमाता रुमासे आरोग्य पूर्व्वक कुशल कहना १४ व ह-मारीमाता ताराजी को आपलोग अच्छीतरह से समझादेना क्योंकि वे प्रकृतिसेही पुत्रको बहुत प्यारकरती हैं व बड़ीही करुणावतीव तपस्विनी हैं १५ इसमें कुछ सन्देह नहीं कि जैसेही हमको यहांमरासुनेंगी कि वेभी अपने प्राणछोड़ देंगी यहसब कहाकै कहकै बाप्रणामकर १६ रोदना

करते अङ्गद भूमिमें कुशबिछाय मरने के लिये उदासहो बैठगये तिसको कुशोंपर बैठेदेख सबबानर रोनेलगे १७ उससमय रोदन करकर सबके सब सुग्रीव की निन्दा व बालीकी प्रशंसा करनेलगे १८ व बालिपुत्र के वैसे बचनसुन सबबानर भी मरनेपर उतारूहुये १९ व सबकेसब समुद्र के जलसे आचमनकर पूर्व्वको मुखकर समुद्र के उत्तर के किनारेपर दक्षिण की ओरको कुशोंकी फुनगीकर उनपै मरने के लिये बैठगये २० सबकेयही इच्छाहुई कि अबमृतकही होजायँ तो अच्छा है यहकहने लगे व बैठकर सबबोले कि देखो रामचन्द्रजी को तो बनबास हुआ व दशरथजी का मरण २१ व जनस्थान निवासियों का बध व जटायुका भी बध जानकीजी का हरण व बालीका बध २२ व रामचन्द्रजी का सुग्रीव के ऊपर कोपहुआ जैसेबानरों ने ऐसाकहाहै कि एकबड़ी भारी बिपत्ति उनके ऊपर आई २३ कि जिससे ये सबपर्व्वत शृङ्गसमान बानर एकपर्व्वतपर हूह कर कूदकूद चढ़े वहपर्व्वत झरना सहित शब्दायमान हुआ जैसेजोर से गर्ज्जतेहुये बादरोंसे आकाश शब्दायमानहोजाता है २४॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेकिष्किन्धाकाण्डेपञ्चपञ्चाशत्तमस्सर्ग्गः ५५॥

वहभय रूपबिपत्ति यहहै कि जिसपर्व्वतपर सब बानरलोग चढ़गये थे उस पर एक गृध्रराज रहता था वह इन लोगों का बोल सुन आय पहुंचा १ इसगृध्र का सम्पातितो नामथा व चिरंजीवीथा जटायु का यह भाईथा बड़ापौरुषी व बड़ाही प्रसिद्ध पक्षीथा २ वहउस बिन्ध्य पर्व्वत की कन्दरा से निकल बानरों को समीपही बैठेदेख बहुत हर्षितहो यह बोला कि ३ भाई ब्रह्मालोक में सबको पूर्व्वकर्म्मानुसार फलदेते हैं इससे देखो बहुतदिनों के पीछे हमारे लिये उन्होंने यहभोजन भेजा है ४ अब इनसब बानरों को एकओर से हमखाते चलेजायँगे क्योंकि येमरने पर तो उतारूही हैं जैसेजैसे मरते जायँगे वैसेवैसे हमखाते जायँगे तिन बानरों को देख वहगृध्रपक्षी ऐसेबचन बोला ५ तिसपक्षी के ऐसेबचन सुन अंगदने जाना कि यहतो हमलोगों को भक्षणही किया चाहता है इससे बड़ीयुक्ति व बुद्धिमत्ताके साथ हनुमान्‌से बोले ६ कि देखो गृध्रके ओढ़र से साक्षात् यमराजजी बानरोंकी बिपत्तिके लिये इसदेशमें आयेहैं

देखो न तो रामचन्द्रही का कार्य्य किया न सुग्रीवही की आज्ञाकी बेचारे बानरों को एकाएकी यहबिपत्ति आयगई ८ देखो जानकीजी के अर्थजटायु नामगृध्रने जो प्रियकर्म्म किया वहतुम लोगोंने सम्पूर्ण कभीसुना है अबहम सुनाते हैं ६ देखो जैसेहम सबलोग अपने प्राणछोड़ रामचन्द्रजी का कार्य्य करनेपर उतारू हैं ऐसेही सब पशुपक्ष्यादि जीव भी उतारूरहते हैं १० व सबपरस्परभी स्नेह व करुणाके मारे उपकार करते हैं तिससे तुमलोग भी तिसके उपकार के लिये अपना से अपना जीवत्यागो ११ देखो धर्म्मज्ञ जटायु ने रामचन्द्रजी का कैसा प्रियकिया व हमलोग भी रामचन्द्रही के अर्थ थकेथकाये कैसे अपना अपना जी त्याग करनेपर बैठे हैं १२ व बनदुर्ग्ग में कितना ढूंढ़ा परजानकीजी को न देखपाया देखो गृध्रराज जटायु समरमें रावणके हाथों मारागया अब परम सुखीहो बैकुण्ठ को चलागया व सुग्रीव के भयसे भी छूटगया १३ देखो जटायुके व दशरथजीके मरनेसे व वैदेहीजीके हरनेसे हम लोग इससन्देहको पहुंचे कि रामचन्द्रजीको शीघ्र सुखहोगा वा नहीं १४ देखो राम लक्ष्मण व सीता का वनवास व रामचन्द्रजीके बाणसे बाली का वध १५ व श्रीरामचन्द्रजी के कोपसे सबराक्षसोंका बध ये सबकाम कैकेयीके वरदानहींसे विकारको प्राप्तहुये १६ यह दुःखद वानरों की वार्त्ता सुन व पृथ्वीमें परे वानरोंको देख महामति गृध्रराज चकित हो ऐसे कृपणवचन बोले १७ तिसीतरहसे अङ्गदके मुखसे निकले वचन सुन अति तीक्ष्णटोंटवाले सैम्पाति बड़े जोरसे बोले १८ कि प्राणों से भी अधिक प्रियतर हमारेभाई जटायुके वधका हाल यह कौन कहताहै जिससे हमारा मन कँपता है १६ जनस्थानमें राक्षससे व गृध्रसे कैसे युद्धहुआ आज हमने बहुतदिनोंके पीछे अपनेभाईका नाम सुना २० पर हमअपने आप इस पर्व्वतपरसे उतरनहीं सक्ते इससे चाहते हैं कि आप लोग उतारलें हम तुमलोगोंके ऊपर गुणज्ञ व विक्रमोंसे प्रशंसनीय अपने छोटे भाईके २१ बहुतदिनों के पीछे नाम लेनेसे बहुतसन्तुष्ट हुये तिससे हेवानरश्रेष्ठो हम अपनेभाईका विनाश सुनाचाहतेहैं २२ व जनस्थाननिवासी हमारे भाई जटायुके दशरथजी सखा कैसेहुये २३ जिस दशरथजीके गुरुजनोंके प्रिय रामचन्द्रजी ज्येष्ठपुत्रहुये हम सूर्य्यके कि-

रवोंसे पंख जरजानेके कारण उड़नहीं सक्ते २४ पर इस पर्व्वत परसे उतरना चाहतेहैं हेशत्रुओं के मारनेवाले वानरो २५ ॥

इत्यार्षेश्रीरामायणेवाल्मीकीयेकिष्किन्धाकाण्डेषट्पंचाशत्तमस्सर्गः ५६ ॥

यद्यपि मारेशोकके गृध्रराजके वचन अच्छीतरह निकले भी न थे तथापिसुन तिसके कर्म्मोंसे शंकितहो वानरोंने विश्वास न माना १ वे लोग तो मरनेके लिये बैठेहीथे गृध्रकोदेख उन्होंने क्रूरही बुद्धिकी अपनेमनमें यही बिचारा कि हम सबलोगोंको यह पक्षी भक्षणहीं करलेगा २ सो हमलोगोंको क्या हमतो मरनेपर बैठेहीहैं जो यह पक्षी खायजाय तो जानों सबतरहसे कृतार्थही होजायँ ३ आपसमें यह सम्मतिकर सब वानरोंने तिस पर्व्वतके शृङ्ग परसे सम्पाति को उतारा व फिर अङ्गद बोले ४ हेपक्षिन् हमारेबड़े एक ऋक्षराजनाम वानरेन्द्रहुये ये बड़ेप्रतापी थे व सब वानरोंके राजाथे इनके दो पुत्रहुये ५ एक सुग्रीव दूसरे बाली ये दोनों अति बलवान्हुये उनमें लोकमें अतिप्रसिद्धकर्म्मा हमारे पिता बाली राजाहुये६ उन्हींदिनोंमें सबसंसार भरके राजा श्रीरामचन्द्र जी इक्ष्वाकुवंशियोंमें महारथी महाराजदशरथजी के पुत्र दण्डकारण्य को आये ७ उनके सङ्ग उनकेछोटे भाई लक्ष्मणजी व उनकी महारानी सीताजीभी थीं येमहाराज अपने पिताजीकी आज्ञासे धर्म्ममार्ग्गमें टिक बनको आये ८ तिन रामचन्द्रजीकी भार्य्या जनस्थानसे लङ्काका राजा रावण बलसे हरलेगया वहां रामचन्द्रजी के पिताके मित्र जटायुनाम गृध्रराजथे ९ उन्होंने देखा तो आकाशमार्ग्गहो सीताजीको रावण हरे लिये जाता था इसलिये उसको विरथकर जटायुने सीताजी को छीन लिया परंतु वे एक तो वृद्धहीथे पर लड़ते लड़ते थक भीगये तो संग्राम में रावणने उनको मारडारा १० इसतरहसे तिस बलवान् रावणने गृध्रराजको मारडारा व श्रीरामचन्द्रजीने अपने हाथों से उनकी दाहक्रियाकी इससे वे उत्तमगतिको प्राप्तहुये ११ तिसके पीछे महात्मा हमारे पितृव्य सुग्रीवके साथ श्रीरामचन्द्रजीने मित्रताकी इससे उन्होंने हमारे पिताको मारडारा १२ हमारे पिताने मंत्रियों सहित सुग्रीव को ऋष्यमूकपर्व्वत पर रूंधरक्खाथा इससे रामचन्द्रजीने बाली को मार

सुग्रीवको राजा बनाया १३ व तिन्हींने सुग्रीवको वानरोंके राज्य पर स्थापित भी करदिया इससे वे सब वानरों के चक्रवर्त्ती राजाहुये तिसी ने हम लोगों को भेजाहै १४ इसतरह से हम सबलोग ढूंढ़तेहैं पर वैदेहीजी को नहीं पाते जैसे रात्रिको सूर्य्यकी प्रभा नहीं मिलती १५ हम लोग सब दण्डकारण्य ढूंढ़ते २ अज्ञान केमारे एक धरणी के बिवरमें पैठगये १६ वह बिल मयकी माया से बनाथा उसीको ढूंढ़ते २ हम लोगों का वह मास बीतगया जो राजाने ढूंढ़नेके लिये नियत करदिया था १७ इससे वानरराज के आज्ञाकारी हम लोग राजा की मर्य्यादा को नांघजाने के कारण मरने के लिये इस स्थान पर बैठेहैं १८ क्योंकि जब रामचन्द्र जी व सुग्रीव व लक्ष्मण जी क्रोध करेंगे तो भी हम लोग यहां से जीतेहुये वहां चलेभीजायँ तोभी फिरहमलोगोंका जीनानहींहोसक्ता १९॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेकिष्किन्धाकाण्डेसप्तपंचाशत्तमस्सर्गः ५७॥

प्राण छोड़नेपर उतारू वानरोंके ऐसे करुणापूर्वक बचन सुन बाष्प के मारे कण्ठावरुद्धहो गृध्रराज बड़े शब्द से बोले १ हे वानरो जिसको तुम लोग संग्राममें रावण से मारा बतातेहो वह जटायु हमारा छोटा भाईहै २ क्या करें एक तो वृद्ध दूसरे पंख नहीं तिससे येबचन सहतेहैं व इसीसे अब हममें यह शक्ति नहीं है कि भाई कादावँ उस दुष्ट रावण से लें ३ हम व जटायु दोनों भाई जीतनेकी इच्छासे वृत्रासुर के संग्राम में उड़ते २ सूर्य्यके निकट पहुंचगये ४ आकाशमार्ग में घूमते २ मारे बेग के और आगे चलेगये जब बनाय सूर्य्य के रथके सन्निकट पहुंचे तो मारे गर्म्मी के जटायु बहुत व्याकुलहुआ ५ हमने अपने भाईको सूर्य्य किरणों से पीडित व अति बिह्वल देख मारे स्नेहके अपने पंखोंसे ढांक लिया६ इसलिये हमारे पंख भस्म होगये व इस बिन्ध्यपर्व्वत पर गिरपरेजब से यहां गिरेहैं हमने अपने भाई के समाचार नहीं पाये ७ जब जटायु के भाई सम्पातिने ऐसा कहा तो महाप्राज्ञ युवराज अंगद तिनसे फिर बोले ८ कि तुम्हारे कहने से हमने जाना कि तुम जटायु के भाई हो यदि सत्य २ उन्हीं जटायुके भाईहो व उस दुष्ट राक्षस का स्थानजानतेहो तो बतावो ९ अदूरदर्शी राक्षसाधम वह रावण जो कहीं तुम्हारे निकटही

रहताहो वा दूरपर तुम जानतेहोतो बतावो १० यहसुन जटायुका ज्येष्ठ
भाई सम्पाति अपने योग्य वचन बानरोंको हर्षित कराता बोला ११
हेबानरो क्याकहें अबतो हमारे पंखजरगयेहैं इससे व वृद्धतासे पराक्रम
भी नहींरहा इससे बचनमात्र से श्रीरामचन्द्रजी की उत्तम सहायता
करेंगे १२ व हमवरुणलोक व जहां तक बामनजीने नापाहै वे लोक व
जहां देवासुर संग्राम हुआहै व जहां अमृत मथागयाहै सबकुछ जानतेहैं
१३ यद्यपि बुढ़पाके मारे हमाराशरीर ग्रसितहै व प्राण भी अब बनाय
शिथिल होगयेहैं तथापि यह रामचन्द्रजीका कार्य्यहमको सबसे पहिले
करनाहै १४ युवावस्थाको प्राप्त अति रूपवती सब भूषणोंसे भूषित दुष्टा-
त्मा रावणसे हरी १५ राम२ व लक्ष्मण २ पुकारती भूषण निकार २
बहाती व अपनेगात्र पीटती१६ सीताको हमने देखाहै तिनसीताका रेश-
मी बस्त्र सूर्य्यकी प्रभाके समान उस राक्षसके निकट शोभित होता था
जैसे आकाशमें विजुली शोभित होतीहै १७ तुम्हारे कहनेसे हमने जाना
कि वे रामचन्द्रजीकी सीताजी हैं अब सुनो हम उस राक्षसका स्थान
बताते हैं १८ वह बिश्रवा का तो पुत्रहै व कुबेर का भाई व लंकापुरी में
रहताहै रावणजानो उस का नामही है १६ यहां से सौयोजन पर समुद्र
के बीचमें लंकापुरी है यह अति रमणीयपुरी विश्वकर्म्माने बनाईहै २०
उसपुरीमें सब सुवर्णमय तोदरवाजे लगेहैं व सुवर्णहीकी चित्र विचित्र
वेदियां बनीहैं व बड़े बड़े सुवर्णहीके राजमन्दिर बनेहैं व सर्व्वत्र वह
पुरी समान भूमिहै २१ बाहरकी शहरपनाह भी सुवर्णही की है इससे
सूर्य्यसमान प्रकाशित होतीहै तिसपुरीमें रेशमी वस्त्र धारणकिये अति
दीन जानकी बसतीहैं २२ वहांरावणके जनानेमें रोंकीहैं व राक्षसियां
रखातीहैं इससे वहीं जनकराजाकी कन्याजानकीजीको देखोगे २३ यह
लंकाचारोंओरसे समुद्रसेघिरीहै इससे जबसौयोजन समुद्रउतरोगे तभी
देखोगे२४ बिना दक्षिणकूलपैगये रावणको न देखोगे इससे हेवानरो
अब अपना अपना विक्रम देखावो २५ हम अपने ज्ञानसे निश्चय कर
देखतेहैं कि तुमलोग जरूर जानकीको देखआवोगेजोकबूतर आदिधान्य
जीवी पक्षीहैं वे आकाशमार्ग्गहोकर उड़तेहैं इससे प्रथममार्ग्ग इन्हींका
है २६ व दूसरा इससे कुछऊंचे काकोंका व जो फलादिखाते हैं बकुले व

क्रौंच कुरर आदि तीसरेमार्ग्गमें इनसे भी कुछ ऊंचे उड़ते हैं २७ बाज इनसे ऊंचे चौथेमार्ग्गमें चलते व गृध्र इनसे ऊंचे पांचयेंमार्ग्गमें व बल वीर्य्ययुक्त व रूप यौवनशाली २८ हंसोंका इनसे भी ऊंचे छठांमार्ग्गहै व गरुड़ादिकों की गति इनसे भी ऊंचीहै हेवानरो गरुड़हीसे हमलोगों का जन्महै २६ जिस राक्षस रावणने जानकीहरण रूप निन्दितकर्म्म कियाहै उससे हमको भी भाईका बदला लेनाहै ३० हम यहींसे रावण व जानकी दोनोंजनों को देखतेहैं क्योंकि हम लोगोंको भी गरुड़के समान दिव्य दृष्टि व बलहै ३१ तिससे हेवानरो हमलोग अपने आहारहीके बलसे सौयोजनसे कुछ अधिक दूरतक देखतेहैं ३२ हम लोगों की वृत्तिस्वभावहीसे दूरहीसे देखनेकी ब्रह्माने बनाईहै व मुरुगोंकीजिस वृक्ष पर वेरहतेहैं उसकी जड़तक दृष्टिपहुंचतीहै दूरतक नहीं यही उनकी वृत्तिहै ३३ अब इस खारीपानीवाले समुद्र के नांघनेका कोई उपाय बिचारो वहांपहुंच कार्य्य सिद्धिको पहुंचोगे ३४ अब हम चाहते हैं कि आपलोग हमको समुद्रके निकट लेचलो क्योंकिहम स्वर्ग्ग पहुंचे अपनेभाईको जलांजलि दियाचाहते हैं ३५ तिसकेपीछे महापराक्रमी वानर पक्षजरे सम्पातिको समुद्रके निकटलेगये ३६ जब उन्होंने अपने भाईको जलांजलिदिया तो जहांसम्पाति रहतेथे वहींपहुंचाय जानकीजी का ठीकठीक पतापाय बहुत हर्षितहुये ३७ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेकिष्किन्धाकाण्डेऽष्टपञ्चाशत्तमस्सर्गः ५८ ॥

तिसकेपीछे अमृतवत्स्वादु गृध्रराजके वचनसुन सबवानरश्रेष्ठ बहुत हर्षितहुये १ व वानरश्रेष्ठ जाम्बवान् सब वानरों को सङ्गले एकाएकी पृथ्वीपरसे उचक पर्व्वतपर बैठे सम्पातिसे बोले २ यद्यपि एकबार सम्पाति सब बतायचुके तथापि मारेशोकके जाम्बवान् उससमय सावधान न थे इससे फिरपूछनेलगे कि सीताकहांहैं व हरणके समयकिसने देखा व कौन हरलेगया यह सबआप बतावें व इनबेचारे वानरोंकीगति हों ३ वह कौनहै जो रामचन्द्र व लक्ष्मणजीके वज्रवेगसम चलनेवाले बाणोंका विक्रमकी नहीं चिन्तनाकरता ४ व मरनेसे निवृत्त व सीताजी के वृत्तान्त सुननेमें एकाग्रचित्त वानरोंको समझाते सम्पाति फिर उनसे

बोले ५ सुनो जिसतरहसे हमने वैदेहीका हरणसुनाहै कहतेहैं व जिसने हमसेकहाहै व जहां मृगनयनी जानकीजीहैं सबबतातेहैं ६ हमइसबड़े लम्बे चौड़े व दुर्गमपर्व्वतपर बहुतदिनोंसे रहतेहैं जबसे कि हमारे पंख भस्महोगये व विक्रमजाता रहा प्राणभी शिथिलहोगये ७ हमको पर्व्वत पैपरासुन सुपार्श्वनाम पुत्र हमारे प्रणामकरनेके लियेआया वह बेचारा तबसे कुछ थोड़ा बहुतहमको आहार पहुंचाता है ८ गन्धर्वोंमें काम बहुत तीक्ष्णहोता व सर्प्पों में कोप तीक्ष्णहोता व मृग डरते बहुत हैं इसीतरह हम लोगोंमें भूख बड़ी रहती है ९ इससे एकदिन क्षुधार्त्त होनेके कारण आहारकी इच्छाकिये हमारा पुत्र प्रातःकालही गयापर सन्ध्याको बिना मांसहीकालौटआया १० आहार न पानेके कारण हमनेउसअपने पुत्रको बहुतफटकारा तो वह प्रीति बढ़ानेवाला हमारा पुत्र हमारे प्रणामकर नि-श्चययुक्त बचनहमसे बोला ११ हे तात हमबहुतदेरतक आपके लिये मांस लेनेको आकाश में उड़गये व महेन्द्राचलपर खड़ेहोरहे १२ वहांसमुद्रमें चलनेवाले हजारों जीव नीचे को मुखकर हमने रोंके १३ तहां हमने देखातो सूर्य्योदय के समान देदीप्यमान स्त्री को सङ्गलिये एक अंजनके पर्व्वत के समान चला जाता १४ तो हमने निश्चय किया कि आहार के लिये आज इन्हीं दोनों को लेजायँ तब उस पुरुषने हम से राह मांगा कि हमें जाने दो १५ क्योंकि सामयुक्त पुरुषोंका मारनेवाले भूतल में कोई नहीं है चाहे नीच भी हो फिर तुम्हारे तुल्य लोगों को कौन कहै १६ यहकह वह अपने तेजसे अति बेगित आकाश मार्ग्ग हो चला व हम आकाशगामी प्राणियों से मिल पूजितहुये १७ व महर्षियों ने कहा कि बड़े भाग्यकी बात है जो इसको स्त्री सहित तुमने जानेदिया यदि न जानेदेते तो यह न जायसक्ता १८ यह कह उन महर्षियों ने हमसे बताया कि यह राक्षसों का राजा रावण है १९ तब हमने भी जाना कि यह श्रीरामचंद्रजी की भार्य्या है जिसके मारे शोक के सब आभरण गिरेपरते हैं व रेशमी वस्त्र भी शिथिलहुआ जाताहै २० व मूड़े के बार छूटे राम व लक्ष्मणजी का नाम ले ले रोती चली जाती है यह कालकी गति बड़ी कठिन है २१ इसलिये सुपार्श्व ने सब हमसे कहा यह सुनकर हमारी भी बुद्धि पराक्रम की ओर न हुई २२ क्योंकि

अपक्ष पक्षी कैसे किसी कर्म्मका प्रारम्भ करें हां जो कुछ बुद्धिके गुणानुसार हम करसक्ते हैं २३ वह सुनो पर तुम लोगोंके पौरुष का आश्रित है वचन व बुद्धिसे हम तुम सब लोगों का प्रिय करेंगे २४ क्योंकि जो श्रीरामचन्द्रजी का कार्य्य है वह हमाराही है इससे तुम लोग तो बड़े बलवान् व यशस्वी २५ व बानरराजके भेजेहुये हो इससे देवताओं से भी बड़े कष्टसे प्राप्त होनेके योग्य हो व रामचन्द्र व लक्ष्मणजीके बाण २६ तीनो लोकोंकी रक्षा करने व नाशकरने के लिये समर्थ हैं यद्यपि रावण तेज बल युक्तहै २७ तथापि सबतरह से समर्थ आप लोगों को कुछ दुष्कर नहीं है तिससे अब वृथा समय बिताने से कुछ लाभ नहीं बुद्धि निश्चय करो २८ क्योंकि आप लोगों के सदृश बुद्धिमान् लोग कर्म्मों में नहीं घबड़ाते २९ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेकिष्किंधाकांडेएकोनषष्ठितमस्सर्गः ५९ ॥

जब अपने भाई जटायु को स्नानकर जलांजलि दे सम्पाति उस रमणीक पर्व्वतपर बैठे तो सब बानरों के यूथप भी घेर घेर बैठे १ उस समय सब बानरोंके बीचमें बैठे अङ्गद से विश्वास उत्पन्न कराय संपाति फिर बोले २ हे बानरो अब हल्ला मिटाय सब लोग बचन सुनो जिस तरह से हम जानकी को जानते हैं सत्य सत्य कहेंगे ३ जब हम सूर्य्य किरणों से पक्ष जरजाने के कारण व्याकुलहुये तो इस विन्ध्याचल के शिखरपर आय गिरे ४ तब छः रात्रिके पीछे जब मूर्च्छा जागी तो भी विवश व विह्वलही रहे इससे सब दिशोंकी ओर निहारते थे पर कुछ सूझता न था ५ तिसके पीछे सब सागर पर्व्वत नदियां व तड़ाग बन देश प्रदेश देख हमारे मनमें यह विवेक हुआ ६ तब जाना कि हर्षित पक्षिगणोंसे भरा कन्दरा शृङ्गादियुक्त दक्षिण समुद्रके किनारे यह विन्ध्य नाम पर्वत है ७ इससे यहां बैठे उन दिनोंमें इस पुण्य व वेदपूजित स्थान पर बड़े तपस्वी एक चन्द्रमानाम ऋषिथे ८ तिनऋषि बिना हमको यहां बसते ८ आठहजारवर्ष बीतचुके इसके प्रथमही वे चन्द्रमाजी स्वर्ग्ग को चलेगयेथे ९ जबहम प्रथम इसपर्व्वतके शिखरपरगिरेतोबड़ेकष्टसेधीरे२ उसशिखर से उतरे बड़ेतीक्ष्ण कुशवाली पृथ्वी में फिरआये १० उन्हीं

ऋषिको देखने के लिये इतने कष्टसे पर्व्वतपर से हमउतरे क्योंकि उ-
नके पास हम व जटायु आगे बहुतबार गयेथे ११ तिनके आश्रमपर ब-
हुत सुगन्धित पवन बहाकरता बिनाफला फूला कोई भी वृक्ष वहां नहीं
था १२ ऐसेपुण्याश्रम पर आय एकवृक्ष के नीचेहम बैठगये व भगवान्
चन्द्रमाजी को देखने की इच्छासे परखने लगे १३ देखातो अग्निसम
ज्वलिततेज मुनिस्नान किये उत्तर को मुखकिये आतेथे १४ मुनिके चारों
ओर ऋक्ष शृमर व्याघ्र सिंह व नानाप्रकार के सर्प्पचले आते थे जैसे
दाताको घेरेसब प्राणी चलते हैं १५ जबमुनि अपने आश्रमपर पहुंच गये
तो वेसबजीव लौटगये जैसेराजा जबराज महल में चलाजाता तो सब
मन्त्री दीवानादि लौटपरते हैं १६ ऋषिजी हमको देख बहुत प्रसन्न
हुये फिर आश्रम के भीतर चलेगये एकमुहूर्त्त के पीछेगृह से निकल ह-
मसे कार्य्य पूंछने लगे १७ हेसौम्य तुमतो रोमोंकी बिकलता से चीन्हही
नहीं परते पक्षतो दोनों अग्निसे जरगये हैं शरीर में केवल प्राणही प्राण
हैं १८ हमतुम दोनोंगृध्रों को पूर्व्वसमय में कईबार देखचुके हैं व जानते
हैं कि तुमलोगों का बायुसम वेगथा १९ तुम्हारा सम्पातिनाम है व
तुम्हारे एकछोटे भाई का जटायु नामथा तुमदोनों मनुष्य का रूपधारण
कर कईबार हमारे चरणोंपर गिरेथे २० तुम्हारे कौनव्याधि है व पक्ष
क्यों गिरपरे वा किसने तुमको यहदण्ड दियाहै सबयथावत् कहो २१॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेकिष्किन्धाकाण्डेपष्टितमस्सर्गः ६० ॥

तबहमने अपना दारुण कर्म्म व सूर्य्य के निकट जाने का प्रसंगकहा
१ हेभगवन् बड़ेबड़े घाव होजानेके कारण मारेलज्जा के व्याकुलेन्द्रिय
व थकेसे बोलने की शक्ति हममें नहींरही २ हम व जटायु दोनोंजन
अपना अपना पराक्रम जानने के लिये मारे अहङ्कार से मोहितहो आ-
काश में उड़े ३ कैलास पर्व्वतपर मुनिलोगों के आगे बाजीलगायाथा कि
जबतक सूर्य्य अस्तहों तिसके पहिलेही दोनोंजन छूकर फिरपृथ्वी में
चलेआवें ४ उनके रथकी पहियों के अनुसार सबनगर देखभाल डारें ५
उस आनेजाने के समय कहींतो बाजों का शब्द व कहीं भूषणों का कहीं
गातीहुई लालबस्त्र धारण किये स्त्रियोंको देखते चलेआवें ६ ऐसीप्रतिज्ञा

कर दोनों भाई उड़े व आकाश मार्ग्गहो सूर्य्यमण्डल के निकटतक चलेगये वहां एकबड़ी हरीघास का बनदेखा ७ फिर पृथ्वी देखी तो पहाड़ों से घिरीथी व नदियोंसे भी सूत्रोंके समान पुहीथी ८ हिमवान् व बिन्ध्य व सुमेरुपर्व्वत ऊपर से जलाकार पृथिवी में सर्प्पाकार देखाई देतेथे ९ ऐसादेख हमारे बहुत पसीना व खेद व महाभय उत्पन्न हुई व मोहमूर्च्छा भी प्राप्तहुई १० उससमय नतो हमको दक्षिण दिशा बिदित होतीथी न आग्नेयी न पश्चिमा बरन सबलोक ऐसा जानपरता था कि जानों युगान्तमें अग्निलगने से लोकदग्ध होगये हैं ११ व हमारा मनभी फिरनेत्र को पाय हतहोगया तबबड़े यत्नसे मन व नेत्र अच्छी तरह सँभार १२ फिरबड़े यत्नसे सूर्य्यको निहारा तो हमलोगों को सूर्य्य उससमय पृथ्वीके तुल्य देखाई दिये १३ तबजटायु हमसे बिना पूछेही पृथ्वीमें गिरपरा तिसको देख हमने भी आकाश से अपना को छुड़ाया १४ व दोनों अपने पङ्खों से जटायु को ढांपलिया इससे जटायु के पङ्ख न जरे परमारे प्रमाद के हमारे पङ्ख जरगये इससेहम बायुमार्ग्ग से गिरपरे १५ जटायु को तोहमजानते हैं कि वे जनस्थान में गिरे व हम बिन्ध्य पर्व्वत के ऊपर पर पङ्ख जरने के कारण हमतो बनायजड़ होगये १६ इससे राज्य व पक्षसेहीन होगये भाईभी संगसे छूटगया बिक्रमभी जाता रहा सबतरह से मरनेही के लिये पर्व्वतपर से उतरे हैं १७॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेकिष्किन्धाकाण्डेएकषष्ठितमस्सर्ग्गः ६१ ॥

इसतरह हम मुनिसे कह बारबार रोदनकरनेलगे व दुःखित होगये तब मुहूर्त्तभर तक मुनि ध्यानदे देख हमसे फिरबोले १ कि तुम्हारेपंख फिर और जमेंगे व नेत्र प्राण विक्रम व बलभी फिर वैसाही होजायगा २ क्योंकि पुराणमें हमने यहभविष्यबात सुनरक्खीहै व तपस्या के प्रभावसे हमने देखभी लिया जानो सुनेयेही इससे अच्छीतरह बिदित होगयाहै ३ कि इक्ष्वाकुवंशियोंके बढ़ानेवाले एक राजा दशरथ होंगे तिसके रामनाम महातेजस्वी पुत्रहोंगे ४ वे अपनेभाई लक्ष्मणके साथ बनको जायँगे क्योंकि तिसी अर्थ उनके पिता उनको आज्ञा देंगे ५ रावणनाम राक्षस उनकी भार्य्याहरलेजायगा उस राक्षसेन्द्रको असुर

दानव देव कोई नहीं मारसका वही जनस्थानसे हरलेजायगा ६ पर उन परम यशस्विनी मैथिलीजीको वह रावण नानाप्रकारके उत्तमउत्तम पदार्थ भोजनकरनेको ललचावेगा पर वे कुछ भी न भोजन करेंगी ७ इस बातको जान इन्द्रजी परमअन्न जानकीजीको देजायँगे जो अमृत रूपही होगा व जो देवताओंको भी दुर्लभहै ८ इन्द्रके निकट से अन्न वह अन्नजानकीजी पाय उसमेंसे अग्रभाग निकाल रामचन्द्रजीके पास पहुंचानेके लिये पृथ्वीमें छोड़देंगी ९ उससमय यह मन्त्रपढ़ेंगी कि ॥

दो० जियतहोय पति मोर जो अरु देवरहु सप्रीव ॥
देवलोक गत होहिं वा तदपियअन्नलहु पीव ॥ १ ॥ १० ॥

तब रामचन्द्रके भेजे वानर दूत यहां आवेंगे उनसे तुम रामचन्द्र जीकी रानीके समाचार बतायदेना ११ इससे सबतरहसे तुमको यहां से कहीं जाना उचितनहीं है क्योंकि पक्षहीन तुम कहांजावगे अब देश व काल परखौ अपनेपंख तभी तुम पाय जावगे १२ यद्यपि हम अभी तुमको पक्षयुक्तकर सक्तेहैं तथापि नहींकरते क्योंकि जो तुम यहींरहोगे तो जानकीजी के समाचार बताय सब लोकोंका कामकरोगे व जो अभी पंखहोजायँगे तो नहीं जानते कहां उड़चलेजाव १३ व तुमको भी तो तिन दोनोंराजकुमार श्रीरामचन्द्र व लक्ष्मणका कार्य करना व ब्राह्मणोंका गुरुओंका व मुनिलोगों का व इन्द्रका उचितहै इससे अभी ऐसेहीरहो १४ क्याकहें हमभी तो राम लक्ष्मणदोनों भाइयोंको देखनाचाहते हैं पर क्याकरें बहुतदिनों तक अब प्राण धारणकरना नहींचाहते इससे शरीर छोड़ेंगे परमतत्वार्थदर्शी महर्षि ने हमसे ऐसा कहा १५ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेकिष्किन्धाकाण्डेद्विषष्टितमस्सर्गः ६२ ॥

ऐसेऐसे बहुत वचनकह हमारी बड़ाईकर वार्त्ताकरनेमें बड़े चतुरचंद्रमा मुनि अपनेगृहमें पैठगये १ तब हम उसकन्दरासे धीरेधीरे रेंगते रेंगते आयकर इस विन्ध्यके शिखरपर फिर चढ़आये व तभीसे आपलोगों की गली देखतेथे कि कब आतेहैं २ सोमुनिके कहनेको इससमय कुछ अधिक आठहजारवर्ष हुये पर देशकाल परखतेपरखते मुनिके वचन हम अपने हृदयमें कियेहैं ३ चन्द्रमामुनि तो महाप्रयाणकर स्वर्गको चलेगये

पर नानाप्रकारके वितर्कोंसे युक्त हमको वहसन्ताप जारताहै ४ परमरण में बुद्धि बारबार लगाकरतीहै उसे मुनिकेवचनोंसे रोंकाकरते हैं जोबुद्धि मुनिने हमको दीथी वही हमारे प्राणोंकी रक्षाकरती है ५ हम दुष्टात्मा रावणका बल जानतेथे इससे अपनेपुत्रको हमने बहुत कुछ दुतुकारा व भयभीत किया ६ कि तूने जानकीकी रक्षा क्यों न की तिन जानकी का बिलाप सुन व राम लक्ष्मणको सीतासे बियोजित सुन ७ हमारेपुत्रने दशरथ जीके स्नेह से हमारा प्रिय नहीं किया क्या कहें उसको उस अल्प बल रावणसे सीता जीको छुड़ायही लेना उचित था हमको यह पश्चात्तापही रहगया बानरोंके आगे सम्पाति ऐसा कहतेही थे ८ कि उन्हीं बानरों के सामनेही सम्पाति के दोनों पंख जम आये तब पक्ष सहित अपना शरीर देख ९ सम्पाति बड़ेहर्षित हुये व बानरोंसे बोले कि राजर्षिचन्द्रमा जीके प्रसाद से १० सूर्य्य के किरणों से जरे हमारे पंख फिर हो आये व जो पराक्रम हमारे युवावस्था मेंथा ११ वही बल व पौरुष आज हमारे होताहै सब तरहसे यत्नकरो सीताको पावोगे १२ क्योंकि हमारा पक्ष लाभ तुमलोगों का बिश्वासकारकहै पक्षियों में उत्तम सम्पाति बानरों से ऐसा कह १३ पक्षियों की गति जानने की इच्छासे उस पर्व्वत के शृङ्गपर से उड़े तिनके बचन सुन प्रसन्नमन हो १४ सब बानर बिक्रम करने को तयार हुये १५ व पवन समान बिक्रम धारी बानरपौरुष पाय अभिजित मुहूर्त्त में जानकी जीके ढूंढ़ने को चले १६॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेकिष्किन्धाकाण्डेत्रिषष्टितमस्सर्गः ६३॥

जब गृध्रराज सम्पाति ने ऐसाकहा तो प्रीतियुक्त हो सब सिंहसम बिक्रमी बानर एकत्र हो बड़े जोर से गर्ज्जे १ व रावण के नाशकारक सम्पाति के बचनसुन हर्षित हो सीताजी के दर्शन की इच्छा किये सब वहां से आगेचले २ व तहां पहुंच बड़े भीम बिक्रमी बानरोंने समुद्र देखा मानो सब लोकों का प्रतिबिम्ब रूप स्थित था ३ व दक्षिण समुद्र के उत्तर ओर के किनारे पर जाय महाबली सब बानर बैठे ४ समुद्र कहीं २ कमलहरों के कारण सोय रहाथा कहीं २ बहुत लहरियों के हेतु मानों क्रीडा कर रहाथा व कहीं कहीं पर्व्वताकार जलराशियोंसे घिराथा ५ व पातालवासी दानवोंसे भी भराथा इससे देखतेही रोम खड़े होते थे ऐसे

समुद्र को देख बानरबड़े बिषादको प्राप्तहुयेद् जबआकाशके समान बड़े
दुःखसे पारजानेके योग्य समुद्रको देखा तो सब बानरएक सङ्गहो बिषाद
करनेलगे व कहनेलगे कि भलाअब कैसे कार्य्यहोगा७ समुद्रको देखतेही
सेनाको व्याकुल देख बानरोंमेंश्रेष्ठ अङ्गदजी सब बानरों को समझाने व
प्रोत्साहित करनेलगे ८ कि हेबानरो तुमलोग बिषादमेंमन न करोक्योंं
कि बिषादमें बड़े दोषहोतेहैं व बिषाद पुरुषको ऐसा नाशता है जैसे क्रुद्ध
सर्प्पबालक कोनाशताहै ९ जोपुरुष बिक्रमकरनेकेसमय बिषादकासेवन
करताहै उसकातेज हीन होजाता इसीसे कोई कार्य्य उसका किया नहीं
सिद्ध होता१०ऐसा कहते २ जबवह रात्रि बीतगई तो सब बानरोंकेसाथ
अङ्गदफिर सलाह करनेलगे ११ उस समय बानरों की सेना अङ्गद के
चारोंओर बैठी इन्द्रके सब ओर बैठी देव सेनाकेसमान शोभित हुई १२
उससमय उस बानरोंकी सेनाको अङ्गद व हनुमान को छोड़ और कौन
रोंक व सँभार सक्ताथा १३ तब तिन वृद्ध बानरों को व उस सैन्यको
समझाय अङ्गद अर्थ युक्त बचन बोले १४ कि भला आप लोगोंमें इस
समय समुद्रकौन नांघेगा व सुग्रीव को कौन सत्यप्रतिज्ञ करेगा १५
कौन बीर बानर सौयोजन नांघेगा व इन सब यूथपों को महा भयसेकौन
छोड़ावेगा १६ व किसके प्रसाद से यहांसे लौट सुखीहो कार्य्य सिद्ध
कर हम लोग अपने स्त्री पुत्रादि देखेंगे १७ व किसके प्रसाद से महा
बली रामचन्द्रजी व लक्ष्मण व सुग्रीव कोहर्षितहो हमलोग प्राप्तहोंगे
१८ जो कोई बानर यहां आपलोगोंमें समुद्र नांघजानेमेंसमर्थहो वह
पुण्यरूप अभय दक्षिणा हमलोगों कोदेवे १९ अङ्गद का बचनसुन कोई
कुछ भी न बोला सबबानरों की सेनानिश्चलाहीसी होगई २० तबसब
बानरों से बानरश्रेष्ठ अङ्गद फिरबोले कि तुम सबलोग बलवानों में श्रेष्ठ
व दृढ़ बिक्रमहो व कलंक रहितवंशमें उत्पन्न हुयेहो व बारबार पूजित
होतेहो २१ तुमलोगों को जानेमें कोई अवरोध न होगा इससे हेबानर
श्रेष्ठो नांघने में जिसको जितनीशक्तिहो सबलोग कहो २२ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेकिष्किन्धाकाण्डेचतुष्षष्ठितमस्सर्गः६४ ॥

तबअङ्गद के बचनसुन सबबानरश्रेष्ठ चलने में अपना अपना उत्साह
क्रमपूर्व्वक कहने लगे १ उनमें गजगवाक्ष गवय शरभ गन्धमादन मैन्द

द्विविद अङ्गद जाम्बवान्थे २ गजनेकहा कि हमतो दशयोजनलांघसक्ते हैं गवाक्षने कहा हम बीशयोजन चलेजावेंगे ३ व शरभ बानर तहांसब बानरों से बोला कि हेबानरो हमतो तीशयोजन कूदजायँगे ४ व ऋषभ नामबानर तहांसब बानरों से बोला कि हमएक कुदका में चालीश योजन चलेजायँगे इसमेंकुछ संशय नहीं है ५ व महातेजस्वी गन्धमादन नाम बानर सबबानरों से बोला कि भाई हमतो पचाश योजन एकी कुदका में चलेजायँगे इसमें कुछ संशय नहीं है ६ व मैन्दनाम बानर सबबानरोंसे तहांबोला कि हमतो साठयोजन कूदसक्तेहैं ७ तिसकेपीछे महातेजस्वी द्विविदनाम बानर,बोला कि हमसत्तर योजन चलेजायँगे इसमें सन्देह नहीं ८ व महातेजस्वी महापराक्रमी बानरों में श्रेष्ठ सुषेण नामबानर बोला कि हमतो अशीयोजन एककुदका में कूदना जानते हैं ९ जबतिन सबोंने ऐसाकहा तो सबका अनुमानकर सबोंसे वृद्ध जाम्बवान्जी बोले १० कि पूर्व्वकाल में हमारी भी कुछगतिथी व पराक्रम भी कुछथा परन्तु वहीहम इससमय वृद्धता को प्राप्त हैं ११ परन्तु जिसलिये सुग्रीव व रामचन्द्रजी दोनोंजन निश्चय किये हैं वहकार्य्य इस अवस्था को प्राप्तहोनेपर भी हमनहीं त्यागसक्ते १२ परन्तु इस समय तो हमारी जहांतक गति है सुनो हम नव्वेयोजन एककुदका में अबभी जायसक्ते हैं इसमें कुछ सन्देह नहीं १३ तिनबानरों से जाम्बवान् ने कहा कि हमइतनीही दूरनहीं जायसक्तेथे १४ बरन राजाबलि की यज्ञ में जबसनातन भगवान् विष्णु वामनजी तीनोंलोक नापने के लिये बढ़ेथे तब हमने प्रदक्षिणा कीथी १५ वहीहम इससमय वृद्धहोगये हैं इसीसे कूदनेमेंमन्दविक्रम होगये हैं जबहम युवाथे तब हमारे समान औरकिसी के बलनथा १६ पर इससमय तो हमअपनेबूते इतनाही कूदसक्ते हैं व इतना कूदने से इसकार्य्य की सिद्धि न होगी १७ इसके पीछे महाप्राज्ञ अङ्गदजी जाम्बवान् महाकपि का अनुमान कर अति उदार अर्थयुक्त बचन बोले १८ कि हमयह सौयोजनकूद जाया सक्ते हैं परन्तु लौटने के समय निश्चय नहीं कि लौट सकेंगे वा नहीं १९ बोलनेमें बड़े चतुर जाम्बवान् जी बानरों में श्रेष्ठ अङ्गदजी से बोले कि हे बानरश्रेष्ठ हम तुम्हारे गमन की शक्ति जानते हैं कि तुम आयजाय सक्ते

हो २० सो यह नहीं कि इतनीही दूर जायसक्के वरन सैकरों हजारों योजन कूद जासक्तेहो व फिर लौट भी सक्ते हो २१ पर हे तात स्वामी सबको प्रेषयिता होता वह प्रेष्य कभीनहीं होसक्ता २२ आप हमलोगों के स्वामीहैं इससे स्त्रीके समान रक्षाकरनेके योग्य हैं क्योंकि जैसे स्त्री की रक्षाकरनी चाहिये इसीतरह स्वामीकी रक्षा चाहिये आप इससैन्य भरके स्वामी व स्त्रीके समान रक्षणीय हैं हे परन्तप यह शास्त्रकी मर्यादा है २३ जिससे आप स्त्रीके समान पालनीय हैं इससे निश्चय इसकार्य के मूल आपही हैं २४ कार्य्यवेत्ता लोग यही निश्चय करते हैं कि कार्य के मूल की रक्षा अवश्य करनी चाहिये क्योंकि जो मूल बना रहता है तभी सब गुणों का फलोदय सिद्ध होताहै २५ तिससे हे सिद्ध विक्रम आप इस कार्य्यके साधन हैं क्योंकि सबतरह की बुद्धि व विक्रमसे तुम सम्पन्न हो इससे तुम्हीं इस कार्य्यके हेतुहो २६ हे कपिसत्तम हमलोगों के गुरु व गुरुपुत्र व हित तुम्हीं हो व तुम्हारे आश्रयीभूत हो हमलोग इस कार्य्यके साधनमें समर्थ हैं २७ जब जाम्बवान् जीने ऐसाकहा तो वालीके पुत्र अङ्गदजी उत्तर देनेलगे २८ कि जो हम न जायँगे न औरही कोई वानरश्रेष्ठ जायगा तो फिर हमलोगोंको चाहिये कि मरनेकेलिये कहीं कुशबिछाय बैठें २९ क्योंकि बुद्धिमान् बानरराज का बिना संदेश किये किष्किन्धा जानेमें भी तो प्राणोंकी रक्षा नहीं देखते ३० क्योंकि सुग्रीव प्रसन्न हो बहुत द्रव्य देनेमें व कोप करने में भी समर्थ हैं फिर बिना उनका सन्देशकिये जानेमें विनाश तो होहीगा ३१ तिससे आप ऐसी युक्ति विचारिये जिससे यह जानकी दर्शनरूप कार्य्य सम्पन्न हो इसकी हानि न होनेपावे क्योंकि आप सबकुछ जानते हैं व इस कार्य्यके साधक आपही हैं ३२ जब अङ्गदजी ने ऐसाकहा तो बानरों में श्रेष्ठ जाम्बवान् जी अङ्गद से उत्तर देनेलगे ३३ हे वीर जो तुम्हारा कार्य्य साधन करेगा तिस हनुमान् को हम प्रेरणा करते हैं इससे तुम्हारे कार्य्यका कोई अङ्ग न हीन होगा ३४ तिसके पीछे बानरों में श्रेष्ठ सब कार्य्य करनेमें विश्वस्त सुखपूर्वक एकान्त में बैठे बानरवीर हनुमान् जी से बानरोंमें श्रेष्ठ जाम्बवान् जी बोले ३५ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीये किष्किन्धाकाण्डेपंचषष्टितमस्सर्गः ६५ ॥

अनेक सैकरों व सहस्रों बानरों की सेना दुःखित देख जाम्बवान्जी हनुमान्जी से बोले १ हे वीर व सर्व्वशास्त्रवेत्ताओं में श्रेष्ठ हनुमान्जी एकान्त में मौन धारण किये क्यों बैठे हो बानर जनों के कल्याण की बात क्यों नहीं कहते २ हे हनुमन् तुम तेज व बल में बानरों के राजा सुग्रीव व रामचन्द्र व लक्ष्मण के तुल्य हो ३ व अरिष्टनेमि के पुत्र महाबलवान् सब पक्षियों में उत्तम विनता के तनय जिनको गरुड़ कहते हैं ४ उन महाबलवान् पक्षी को हमने बहुत बार देखा कि समुद्र में सर्पों को पकड़ पकड़ ऊपर को खींचते थे ५ उनके पंखों में जो बल व वीर्य्य है वह तुम्हारे भुजों के बल वीर्य्य के सदृश है तिसी से तुम्हारा विक्रम व बल कोई नहीं दूर करसक्ता ६ इससे हे बानरश्रेष्ठ तुम्हारा बल बुद्धि तेज व पराक्रम सब प्राणियों से विशेष है तुम अपना को क्यों नहीं स्मरण करते ७ न कहो यह बल हमारे कहां से आया तो इसका कारण यह है कि सब अप्सराओं में श्रेष्ठ अप्सरा जो पुंजिकस्थला है उसी का अंजना भी नाम हुआ जो केसरी नाम बानर की स्त्री हुई ८ यह अपने रूप से तीनों लोकों में विख्यात थी इसके समान भूतल में कोई स्त्री उस समय नहीं थी यह ऋषि के शाप के कारण बानरी हुई परन्तु शिव की कृपा से बानर जाति में यथेच्छरूप धरणी हुई ९ यह अंजना कुंजर नाम महात्मा वा नरेन्द्र की कन्या थी वह मनुष्य की देह धारणकर रूपयौबन संयुक्त १० विचित्र माला भूषण पहिरे व रेशमी बस्त्र ओढ़े पहिरे किसी समय बर्षाकाल के मेघ के तुल्य पर्व्वत पर घूमती थी ११ पर्व्वत पर बैठी हुई तिस बिशालाक्षी का पीले व अरुण अंचल का सूक्ष्मबस्त्र पवन के लगने से छूटपरा १२ तब पवन देवने तिसकी गोल जंघा उतार व एक में मिली करू व एक में संलग्नमोटे कड़े स्तन व सुन्दर रमणीय मुख देखा १३ तिस बृहन्नितम्बिनी व सूक्ष्म कटिवाली शुभसर्व्वाङ्गी परम यशस्विनी को देखतेही कामवेग से पवन मोहित होगये १४ व मदन से सर्व्वाङ्ग पीड़ितहो तिस अनिन्दिता में लीनहो उन पवनदेवने अपने लम्बेभुजों से पकड़ अच्छीतरह लपटाय लिया १५ परवह पतिव्रता सदाचारिणी बोली कि हमारा एकपतीव्रत कौन नाशना चाहता है १६ अंजना के बचनसुन पवन देवबोले हे सुश्रोणि हम तुमको अधर्म्म हेतुसे मृतप्राय नहीं करते

तुम्हारे मनको भयनहीं है १७ क्योंकि हमकेवल मनसे तुमको लपटाय गये हैं इससे तुम्हारा पातिव्रत भी न भङ्गहोगा व वीर्य्यवान् बुद्धिसम्पन्न पुत्रउत्पन्न होगा १८ वहपुत्र महासत्त्व महातेजस्वी व महाबल पराक्रमी नांघने व कूदने में हमारेही तुल्यहोगा १९ हेवानरश्रेष्ठ जबपवन ने ऐसाकहा तो वहतुम्हारी माता अंजना बहुत प्रसन्न हुई व गुहामें जाय तुमको उत्पन्न किया २० फिरतुम बालहीथे कि वनमें सूर्य्यको उदित देखजाना कि फलहै इसलिये कूदकर स्वर्ग को चलेगये २१ वहांतीन सहस्र एकसौ योजन ऊंचेजाय सूर्य्यके तेजसे कँपाये भी गये परन्तु वि-षाद को न प्राप्तहुये २२ वरन औरऊंचे को चलेही गये तबबड़ा कोपकर महातेजस्वीइन्द्रनेतुम्हारेऊपर वज्रचलाया२३तबउस शिखरपरतुम्हारी बाईंदाढ़ टूटगई इसीसे तुम्हारा हनुमान नामहुआ २४ तबतुम को मारे गये देख मारेक्रोध के तीनोंलोकों में वायुने बहनाही छोड़दिया २५ तो तीनोंलोक संक्षुभित होनेके कारण सबदेवता बहुत व्याकुलहो क्रोधयुक्त पवन को प्रसन्न करने लगे २६ जबपवन प्रसन्न हुये तो ब्रह्माजी ने तुमको वरदिया कि हेतात संग्राम में शस्त्रास्त्र से तुम्हारा वध नहो व सत्य पराक्रमहोवो २७ व तुमको वज्रलगनेपर भी नीरोग्य देख प्रसन्न हो इन्द्रने उत्तम वरदान दिया २८ कि जावजब तुमचाहोगे तभी तु-म्हारा मरण होगा औरकिसी उपाय से न होगा सो तुमकेसरी नाम वानर के क्षेत्रज पुत्रहो तुम्हारा विक्रम अति भयानक है २९ व पवन के औरसपुत्रहो तेजसे उन्हीं के समानहो हेवत्स तुमवायु के सुतहो व कू-दने चलने आदिमें तिन्हींके समानहो ३० हमसब इससमय मरेही बैठे हैं इससे आपहम सबकी रक्षाकरें क्योंकि चतुरता व विक्रम सम्पन्नहोने से जानो दूसरे सुग्रीवहीहो ३१ हेतात जबवामनजी का चरण बढ़ा था व त्रिलोकी उन्होंने नापीथी तब हमने पर्व्वत वनसहित तीनोंलोकों की भूमिइक्कीशबार प्रदक्षिणाकी ३२ व जिन औषधियोंसे अमृतउत्पन्न हुआ है देवतावोंकी आज्ञासे वे औषधियां लाये तबहमारे बड़ा बलथा ३३ वही हम इस समय वृद्ध होगयेहैं इससे पराक्रम हीन होगयेहैं इस समय हम लोगोंकेबीचमें आपही सबसे अधिक गुणवानहैं ३४ तिससे हे सब चलने कूदनेवालोंमें श्रेष्ठ विशेष पराक्रम कर उछलो क्योंकि यह वानरों

को सेना तुम्हारा वीर्य्य देखा चाहतीहै ३५ हे बानर शार्दूल उठो समुद्र को नांघ जाव क्योंकि यह समुद्रको नांघनेकी जो तुम्हारी चालहै वह सब लोगों की रक्षा करनेवालीहै ३६ देखो तो सब बानर व्याकुल होरहेहैं हनुमान् जी क्या उपेक्षा कररहे हो हेमहावेग जैसे बामनजीने तीनोंलोक एकहीबार नापडारेथे वैसेही समुद्र को कूद तो जाव ३७ ॥

दो० ॥ पवनात्मज अतिवेग कपि कपिवर प्रेरित होय ।
हर्षित कीन प्लवंगमत सैन्यहि रूप बनोय ॥ १ ॥ ३८ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेकिष्किन्धाकाण्डेषट्षष्ठितमस्सर्गः ॥ ६६ ॥

एका एकी तिन बानरोत्तम हनुमान्जीको सौयोजन का समुद्र नांघने के लिये बढ़े व मारे बेगके पूर्ण देख १ एकाएकी सब शोक छोड़ मारे हर्षसेभरे सब बानर गर्ज्जने लगे व महा बलवान हनुमान्जीकी स्तुति करनेलगे २ व सब ओरसे हनुमान्जी को देखते बहुत हर्षित व विस्मित हुये जैसे तीन फालसे तीनोंलोक नापने को उद्यत नारायण बामनजी को देख सब प्रजा हर्षित हुई थी ३ जब हनुमान्जी की बड़ी स्तुति बानरोंने की तो महाबलवान् महाबीर जी बढ़े व पूंछ हिलाय मारे हर्षके बलको प्राप्तहुये ४ वृद्ध बानरों के स्तुति करने से तेज से पूर्ण हनुमानजी का रूप अद्भुत होगया ५ जिसतरह बड़े भारी पर्ब्बत के खोहमें सिंह जँभोई लेताहै तैसेही पवनके औरसपुत्र हनुमान् जी जँभोई लेनेलगे ६ तिन बुद्धिमान् हनुमान्जी का जैसे बिधूम अग्निके समान मुख सूर्य्य सदृश शोभित हुआ ७ तब बानरोंके बीचसे उठ हर्षित तनुहो सब वृद्ध बानरोंके प्रणामकर हनुमान्जी बोले ८ कि अग्निका सखा बलवान् अप्रमेय व आकाशगामी पवन जो पर्ब्बतों के अग्रभाग तोड़ डारता है ९ तिस महात्मा शीघ्रगामी व बेगवान् पवनके हम औरसपुत्र हैं इसीसे कूदने नांघने आदिमें तिन्हींके तुल्यहैं १० अतिविस्तीर्ण आकाश में कुयेही से सहस्रों सुमेरु पर्ब्बत बिनाकहीं विश्राम किये हम नांघ सक्तहैं ११ व अपने बाहुके बेगसे उछाले समुद्रसे पर्ब्बत नदी कुण्ड सहित सबलोक डुबासक्ते हैं १२ बड़े बड़े ग्राहयुक्त समुद्र हमारी जंघाके बेगसे उछलाय सक्ते हैं १३ नानाप्रकार के पक्षियों से सेवित

आकाश में उड़ते हुये सर्प्पों के भक्षण करनेवाले हज़ारों गरुड़ों को
हम नांघ सक्तेहैं १४ उदयाचल से चलेहुये प्रकाशित सूर्य्य जबतक
अस्तहुआ चाहें कि हम उनसे आगे जाय सक्तेहैं १५ व तहांसे फिर
बिना भूमि छुयेही बड़े बेगसे लौट सक्ते हैं १६ सब आकाश गामियों
को नांघ सक्ते हैं व सब सागर शोष लेंगे व पृथिवी अपने ऊपर धारण
करेंगे १७ हेबानरो कूदनेके समय सब पर्व्वत चूर्णकरदेंगे व बड़ेबेगसे
कूदने के समय सब समुद्र शोषलेंगे १८ लताओं व सब वृक्षों के पुष्प
जब हम आकाश मार्ग्ग हो उड़ेंगे तो हमारे पीछे पीछे चलजायँगे १९
जबहम घोर आकाश में चलेंगे व उछलेंगे तो आकाश में हमारा मार्ग्ग
स्वातीकि मार्ग्ग के समान होजायगा २० हेबानरो महामेरु सम प्रका-
शित हमको देखो व कूदतेहुये हमेंसब प्राणी भी देखेंगे २१ जब हम
सब आकाश को घूम मानों आकाश को लीलतेहीसे चलेंगे तो सबमेघों
को कँपादेंगे व पर्व्वतों को डगमगादेंगे व चलने के समय सागर भी
सब शोषलेंगे २२ गरुड़ की वा पवन की वा हमारी गति समानहै इस
से महा बलवान् गरुड़ व पवन को छोड़ २३ और किसीमें हम यह
शक्ति नहीं देखते जोकि हमारे चलनेके समय पीछे पीछे चलाजाय २४
एक निमेखमात्र के अन्तर में निरालम्ब हो एकाएकी आकाश को उड़
जायँगे जैसे बादरसे बिजुली चमककर दूसरे बादरमें चलीजातीहै २५
समुद्र नांघने के समय हमारा रूप तीनोंलोक नापने के समय विष्णु
बामनजी के समान होगा २६ हे बानरो अबतुम सबलोग परमानन्दित
होवो क्योंकि हम अपनी बुद्धिसे भी देखते हैं व हमारे मनकी चेष्टाभी
यही बताती है कि हम जानकीजी को जरूरही देखेंगे २७ क्योंकिबेग
में तो हम पवनके तुल्यहैं व शीघ्रचलने में गरुड़के समान इससे दश
हज़ार योजन हम सहज में निराधार कूद जायँगे हमारी मतिमें यह
बातहै २८ कहो तो वज्रसहित इन्द्रके हाथसे वा ब्रह्माजीके हाथसे ज़ब-
रदस्ती जाय अमृतले यहां धरदें २९ व कहो तो लंकापुरी ही उठाय
यहां धरदें हमारा मनतो यही चाहता है जब अमित प्रभाव बानरों में
श्रेष्ठ हनुमान्जी ऐसा गर्ज्जे तो सब बानर अति हर्षित हो इनकीओर
देखने लगे ३० जातिवालों के शोकनाशक हनुमान्जीके ऐसे बचनसुन

बानरों में श्रेष्ठ जाम्बवान्जी हर्षितहो बोले ३१ हेवीर केसरीकेपुत्र तुम पवनके पुत्रहो हेतात तुमने अपनी जातिवालोंका बड़ाभारी शोक नाशा ३२ व ये जो सब बानर यहां आयेहैं वे तुम्हारी कल्याणदायक शोभा से शोभित हैं व तुम्हारी यात्राके समय अर्थ सिद्ध होने के लिये मंगल पाठ पढ़ेंगे ३३ अबतुम ऋषियों के प्रसाद से वृद्ध बानरों के मतसे व गुरुओंके प्रसादसे समुद्रको नांघो ३४ जब तक तुम आवोगे तब तक हमलोग एक पांवसे खड़े रहेंगे क्योंकि सब बानरों का जीवन तुम्हारा आधीनहीहै ३५ तब बानर शार्दूल हनुमान्जी तिन बानरोंसे बोलेकि लोकमें कूदने के समय हमारा बेगकोई न धारण करसकेगा ३६ किन्तु शिलासमूहयुक्त इस महेन्द्राचल के ये शिखर बड़ेभीहैं व पुष्टभीहैं ३७ कि जिननाना प्रकार के वृक्षलगे व बिचित्र धातुओं से भूषित शिखरों पर बड़े बेगसे चढ़ हम कूदेंगे ३८ जबहमसौ योजन कूदने के लिये यहां खड़ेहोंगे तो यही बड़ेभारी शिखर हमारावेग धारण करेंगे ३९ यहकह पवनके समान बेगवान् बलवान् हनुमान् जी पर्व्वतों में श्रेष्ठ महेन्द्राचलपै कूदकर चढ़े ४० उस महेन्द्राचलपर नानाप्रकार के पुष्प लगेथे मृगलोग हरी हरी घास चररहे थे लता व पुष्प भरे थे नित्य फूलने फरने वाले वृक्ष लगेथे ४१ सिंह शार्दूलादि घूमते थे मतवाले हाथी फिरतेथे मतवाले पक्षी शब्दकरतेथे झरनोंसे जल बहरहाथा ४२ ऐसे महेन्द्राचल पर बड़े बड़े शृंगोंसे भी ऊंचे महा बलवान् बानरों में महान् हनुमान् जी बिचरने लगे ४३ महात्मा हनुमान्जी ने कूदने के लिये जैसेही अपने भुजोंसे महेन्द्राचलको पकड़ हिलाया कि उसपर के सिंहादि जीव चिचर उठे इससे जानपड़ा कि वह पर्व्वतही मदान्ध हाथीके समान चिघड़ता है ४४ व उसकी सब शिला इधर उधर खरे भरा उठीं इसीसे झरना गिरपरे जितने मृग पक्षी व हाथी थे डरगये सबवृक्ष कँप उठे ४५ ॥

चौ० मादकरस मादित गन्धर्वा । नाग पक्षिगण मिथुनक सर्वा ॥ विद्याधरगण सहित विराजा । गिरिमहेन्द्र सानुन सों भ्राजा १ । ४६ ये सब त्यागिचले त्यहिकाला । निकरि परानि तहांके व्याला ॥ शैल शृङ्गनिपते बहुतासू । पवनतनय जबकीन निवासू २ । ४७॥ पवन सहित

पवनाशन सारे । जहँ विनिस्सृत कहँ फुफुकारे ॥ सो गिरियुक्त ... इमि आशा । देखत बनत न कहत समाजा ३। ४८ तासु आस कंकुल ऋषि वृन्दा । गिरि तजि चले न तनिक अनन्दा ॥ महाश्वय महँ संगि विहीना । पथिक समान दीन पिरि दीना ४। ४९ सहित वेग वेगित हनुमाना । हरि करवीर वीर प्रभाना ॥ महानुभाव समाहित मानस । लंकहि चल्यो नहीं कछु आलस ५। ५० ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेकिष्किन्धाकाण्डेसप्तषष्टितमस्सर्गः॥६७॥

समाप्तोऽयंवाल्मीकीयरामायणस्यकिष्किन्धाकाण्डश्चतुर्थः॥४॥

नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
वेदान्त	**राग**	गोपीचंद भरतरी	स्वयम्बोध
योगवाशिष्ठ	रागप्रकाश	कथा श्रीगंगाजी	ज्ञान चालीसी
आनंदाऽमृतवर्षिणी	लावनी	अवधयात्रा	दोहावली
सांख्यतत्वकौमुदी	**क़िस्सा वग़ैरह**	भरतरीगीत	बालाबोध
काव्य	नानार्थनैसंग्रहावली	दानलीला व नागलीला	विद्यार्थीकी प्रथम पुस्तक
सूरसागर	ब्रह्मसार	दोहावलीरत्नावली	किताबजंत्री
कृष्णासागर	शिवसिंहसरोज	गोकर्णमाहात्म्य	गणितकामधेनु
विश्रामसागर	भक्तमाल	श्रीगोपालसहस्रनाम	लीलावती
प्रेमसागर	इन्द्रसभा	कथासत्यनारायण स॰	पटवारियोंकी पुस्तक ४ भा॰
व्रजविलास बड़ा व छोटा	विक्रमविलास	हनूनाटक	**वैद्यकभाषा**
कृष्णप्रिया	बैतालपच्चीसी	हनुमानबाहुक	निघण्ट
विजयमुक्तावली	सिंहासनबत्तीसी	जनकपच्चीसी	अमरबिनोद
अनेकार्थ	पद्मावतीखण्ड	हरिहरसपुराननिर्गुण प॰	वैद्यजीवन
छन्दोर्णवपिंगल	शुकबहत्तरी	दावली	औषधिसंग्रहकल्पवल्ली
रसराज	बकावलीसुमन	बनयात्रा	अमृतसागरबड़ा व छोटा
सतसई मूल व सटीक	चहारदरवेश	कायस्थवर्णनिर्णय	वैद्यमनोत्सव
सभाविलास	क़िस्सा हातिमताई	विहारवृंदावन	रसायन प्रकाश
तुलसी शब्दार्थ प्रकाश	अपूर्वकथा	समरबिहारवृंदावन	तूलाजुल गुर्बा
भजनावली	क़िस्सा गुलसनोबर	कल्प भाष्य	दिल लगन
प्रेमरत्न	सहस्ररजनी चरित्र	लक्ष्मीसरस्वतीसंवाद	**ज्योतिषभाषा**
युगुलविलास	राबिन्सनकाइतिहास	उपदेशचन्द्रिका	जातकचन्द्रिका
चित्रचन्द्रिका	सीताहरण	मंगलबिनोद	जातकालंकार
बारहमासा बलदेवप्रसाद	सतीबिलास	विजयचन्द्रिका	दैवज्ञाभरण
मनोहर लहरी	क़िस्सा मर्द औरत	सिद्धांतसंग्रह	ज्ञानस्वरोदय
गंगालहरी	संगीत प्रह्लाद	नवीनसंग्रह	रमलसार
यमुनालहरी	**मुतफ़र्क़ात**	रामविनयशतक	रमल नौरत्न
जगद्विनोद	शनिश्चरकी कथा	**फ़ारसी**	इन्द्रजाल
शृंगारबत्तीसी	ज्ञानमाला	अक्षरावली	लीलावती संस्कृत

नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
संस्कृत की पुस्तकें	संस्कृत उर्दू टीका	उर्दू कैथी महाजनी	व शिमाली २८ सन् १८७७ ई०
लघुकौमुदी	मनुस्मृति	टिकट के लाइसन्स का	तरमीम मजमूआ ज़ाबिता
सिद्धान्त चन्द्रिका	विष्णुहारीत	ऐक्ट २ सन् १८७४ ई०	फ़ौजदारी ११ सन् १८७४ ई०
भाषातत्व प्रकाश	महिम्न स्तोत्र	नागरी	तक़ावी के क़ायदे
पंचमहायज्ञ	व्रतार्क	ऐक्ट लगान मग़रबी व	सवाल व जवाब पुलिस
निर्णयसिन्धु	याज्ञवल्क्य स्मृति	शिमाली १० सन् १८५९ ई०	अवध रुहेल खण्ड रेलवे
कर्म्मविपाक	संस्कृत भाषा टी०	इंडियन पिनल कोर्ट मज-	का दस्तूरुल अमल
संग्रहशिरोमणि	अमरकोष तीनों काण्ड	मूआ ज़ाबिता फ़ौजदारी	ताज़ीरात हिन्द
भगवद्गीता पचरत्न	याज्ञवल्क्य स्मृति	ऐक्ट २५ सन् १८६१ ई०	महाभारत सबल सिंहकृ-
दुर्गापाठ मूल व सटीक	संध्या पद्धति	ऐक्ट रजिस्टरी २० सन्	१- आदिपर्व्व
विष्णु भागवत	व्रतार्क	१८६६ ई०	२- सभापर्व्व
कथाअमद्वितीया	भगवद्गीता टीका ह-	ऐक्ट स्टाम्प १ सन् १८६२ ई०	३- विराट् पर्व्व
अपराध भंजन स्तोत्र	भगवद्गीता टीका आ-	ऐक्ट स्टाम्प अदालत २६	४- उद्योगपर्व्व
कायस्थ कुल भास्कर	गीतगोविंद	सन् १८६७ ई०	५- भीष्मपर्व्व
कायस्थ धर्म्म निरूपण	कथा सत्यनारायण स-	मजमूआ ऐक्ट अवध ल-	६- द्रोणपर्व्व
तथा छोटा	टीक	गान १८ सन् १८६८ ई०	७- कर्णपर्व्व
मथुरा सभा	शार्ङ्गधर संहिता	पुख़्तादारी २६ सन् १८६६	८- शल्य पर्व्व
ज्योतिष	पाराशरी सटीक	ई० वग़ैरह	९- गदा पर्व्व
मुहूर्त्त गणपति	शीघ्रबोध सटीक	ऐक्ट स्टाम्प दस्तावेज़ात	१०- स्त्रीपर्व्व
मुहूर्त्त चक्रदीपिका	लघुजातक	१८ सन् १८६९ ई०	११- स्वर्गारोहण
मुहूर्त्तचिन्तामणि स-	परमार्थसार	ऐक्ट ताल्लुक़ेदारान मक़-	किताबें जो छप रही हैं
मुहूर्त्तदीपक	सामुद्रिक	बूज़ अवध २४ सन्	उनके नाम नीचे लिखे हैं
वृहज्जातक सटीक	गरुड़ पुराण	१८७० ई०	मदन पारिजात
जातकालंकार	राम बियाहोत्सव	ऐक्ट चौपायों का मदाख़ि-	मार्कण्डेय पुराण उर्दू टी-
जातकाभरण	अपरोक्षानुभव	लत बेजा १ सन् १८७७ ई०	का सहित
होरामकरन्द	लग्नचन्द्रिका	ऐक्ट मजमूआ ज़ाबिता-	ऐक्ट १४ सन् १८८२ ई०
मुहूर्त्त मार्त्तण्ड सटीक	क़ानून कैथी	फ़ौजदारी १० सन् १८७२ ई०	दीवानी
षट्पञ्चाशिका	पटवारियों के क़ायदे	ऐक्ट मालगुज़ारी मग़रबी	

